Barcode : 99999990293212
Title - Jyotishsar
Author - Shukdeva
Language - sanskrit
Pages - 252
Publication Year - 1953
Barcode EAN.UCC-13

श्रीः ।

ज्योतिषसार ।

ज्योतिर्विद्वरशुकदेवविरचित ।

पण्डित–केशवप्रसादजीशर्माद्विवेदीकृत-

भाषाटीकासमेत ।

Sa 5G
50K17D17

यह पुस्तक

राधाकृष्ण मिश्रसे अनेक मुहूर्त चक्र आदिक
अधिक बढवाय शोधन कराय,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत १९५६, शके १८२१.

इस पुस्तकका रजिस्टरी सब हक "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है.

प्रस्तावना.

समस्त ज्योतिषी पंडितोंको तथा ज्योतिषके विद्यार्थियोंको सविनय विदित करताहूं कि, अहो समस्त विद्वज्जन तथा विद्यार्थिजन हो! मनुष्य-मात्रोंको प्रवृत्ति केवल सुखप्राप्तिके लियेही होतीहै. सुखपदका अर्थ मनको संतोष कहाताहै. मनका संतोष शारीरिकक्रियाके आश्रयसे रहता है. तहाँ प्रत्यक्ष जिसका फल दीखनेमें आताहै ऐसा ज्योतिःशास्त्र सबसे अधिक शारीरिक सुखदायक होनेसे सर्वजनसंमान्य है. यह सर्वत्र प्रसिद्ध है.

वह ज्योतिःशास्त्र चारलक्ष ग्रंथ होनेसे सांप्रतकालके अल्पायुषी मंदबुद्धि मनुष्योंको पढनमें अशक्य है. इससे कोई पढता नहीं है. समग्र शास्त्र न पढनेसे उस शास्त्रमें कहाहुआ सर्व पदार्थका ज्ञानभी नहीं होताहै. जिससे मनुष्योंको कौनसे कार्य करनेमें कौनसा योग उपयोगी होताहै यह ज्ञानहोना दुर्लभहै.इसलिये सर्वजनोपकारक पंडितवर्य श्रीशुकदेवजीने यह सर्वज्योतिःशास्त्रका सार लेकर"ज्योतिषसार"ऐसा अन्वर्थनामक ग्रंथ निर्माणकिया है. इस ग्रंथका आबालवृद्ध सर्वलोगोंको उपयोग होनेके लिये आग्राकॉलेज संस्कृताध्यापक पण्डितवर्य्य केशवप्रसादजीने इसके ऊपर सरल हिंदीभाषाटीका बनाय छपवाईथी. अब वही ग्रंथ उन्होंने मुझको सब रजिस्टरी हक्के साथ अपनी सौजन्यतासे दियाहै. वह मैंने मित्र राधाकृष्णजीमिश्रसे अधिक चक्र और शोध तथा अन्य अन्य अनेक ग्रंथोंके वचन इत्यादि अभ्यंतर मिलाकर बहुतही बढवायके निज "श्रीवेङ्कटेश्वर"छापाखानामें छापकर प्रसिद्ध कियाहै. अब मैं सर्वज्योतिःशास्त्रानुरागियोंको सविनय प्रार्थना करताहूं कि, यह ज्योतिषसार पुस्तक पहलेकी अपेक्षासे बहुत ही बढ गया, तोभी विद्वानोंकी सेवामें पूर्ववत् स्वल्पही मूल्यसे रवाना होताहै. इसलिये ग्राहकजन इस अपूर्व ग्रंथके संग्रहमें त्वरा करके सांसारिक सुखानुभव करेंगे.

आपका--खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

श्रीः ।

अथ ज्योतिषसारस्थविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
मङ्गलाचरणम् ...	१	रवि ...	१७
शकप्रकरण ...	२	सोम ...	,,
संवत्सरपरिज्ञान ...	,,	भौम ...	१८
संवत्परिज्ञान ...	,,	बुध ...	,,
संवत्सरनामानि ...	,,	गुरु ...	,,
संवत्सरोंके फल ...	३	शुक्र ...	,,
संवत्सरोंके स्वामी ...	,,	शनि ...	,,
संवत्सरोंके भेद ...	४	वारोंके देवताअधिदेवताकृत्य ...	१९
अन्यमतसे स्वामीफल ...	,,	विचारकरनेका कालपरिमाण ...	,,
ऋतुप्रकरण ...	,,	दोषादोष ...	,,
अयन ...	,,	कृत्य ...	,,
शुभाशुभ कर्म ...	,,	तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ ...	,,
संक्रांत्यनुसारऋतु ...	५	वस्त्रपरिधान ...	२०
राशिअनुसारऋतु ...	,,	श्मश्रुकर्म ...	,,
मासप्रकरण ...	६	विद्यारंभ ...	,,
मासपरिज्ञान ...	,,	वारकोष्ठक ...	२१
चांद्र मास ...	,,	नक्षत्रपरिज्ञान ...	,,
सौर मास ...	,,	कोष्ठक ...	२४
सावन मास ...	,,	कार्य्याकार्य्यविचार ...	२५
नाक्षत्र मास ...	,,	अधोमुखनक्षत्र ...	,,
मासोंके नाम व सूर्य देवता ...	,,	तिर्यङ्मुख नक्षत्र ...	,,
वारोंके अनुसार मास फल ...	७	ऊर्ध्वमुख नक्षत्र ...	,,
पक्ष ...	,,	ध्रुवनक्षत्र ...	,,
अधिकमास ...	८	मृदु नक्षत्र ...	२६
क्षयमास ...	,,	लघु नक्षत्र ...	,,
संवत्सरफल अधिकमासस्वामी इत्यादिक चक्र ...	९	तीक्ष्ण नक्षत्र ...	,,
तिथिप्रकरण ...	१३	चर नक्षत्र ...	,,
तिथिसंज्ञापरिज्ञान और उनके फल ...	१४	उग्र नक्षत्र ...	,,
कोष्ठक ...	१५	मिश्र नक्षत्र ...	२७
अष्ट दिशाओंके स्वामी ...	१६	नष्टवस्तुज्ञान ...	२७
ग्रहोंके वर्ण वा जाति ...	१७	नक्षत्रानुसार प्रश्न ...	,,
वारोंमें कर्तव्य कर्म ...	,,	तिथिवारनक्षत्रानुसार प्रश्न ...	२८
		मद्यारंभमुहूर्त ...	२९

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
नवीनवस्त्रधारणका	२९	योगोंके नाम	३८
मोती सुवर्णआदिका	"	योगोंकी वर्जितघटी	३९
पुंसवनका	३०	करणजाननेकी रीति	"
कर्णवेधका	"	नाम	"
अन्नप्राशनका	"	कोष्ठक	४०
श्मश्रुकर्मका	"	कल्याणी	"
दंतबंधनका	३१	संक्रांति	४१
श्मश्रुकर्म आवश्यक	"	कोष्ठक वारनक्षत्रानुसार	"
श्मश्रुकर्ममें वर्ज्य	"	करणकोष्ठक	४३
मौंजीबंधन	३२	फलश्रुति	४४
विवाहनक्षत्र	"	संक्रांतिमुहूर्त	४५
अग्निहोत्रके	"	द्वितीयप्रकार	"
विद्याभ्यासके	"	धान्यलेनेका विचार	"
औषधी लेनेके	"	नक्षत्रानुसार संक्रांतिपीडा	४६
रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभ विचार	३३	जन्मनक्षत्रोंका फल	"
रोगमुक्तिहोनेका प्रमाण	"	संक्रांतिका स्वरूप	"
रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र	"	चंद्रसे संक्रांतिवर्णफल	"
रोगमुक्तिस्नानलग्न	३४	राश्यनुसारचंद्र	४७
लताऔषधिलगानेका	"	पुण्यकाल	
कूपारंभ	"	ग्रहणप्रकार	"
द्रव्य देनेलेनेका	"	चंद्रग्रहणकीप्रवृत्ति	"
हाथी लेनेदेनेका	"	सूर्यग्रहण	"
घोडालेनेका देनेका	३५	राश्यनुसार शुभाशुभ फल	४८
गवादि पशुलेनेका	"	द्वितीय पक्ष	"
गौ लेने तथा बेचनेका	"	ऋतुप्रकरण	"
तृणकाष्ठादिसंग्रहका	"	मासफल	४९
हलधारण करनेका	३६	तिथिफल	"
बीज बोनेका	"	ग्रहण और संक्रांति	"
राश्यनुसार चंद्रोदयका फल	"	वारफल	
पुष्यनक्षत्रके गुणदोष	"	नक्षत्रफल	५०
सर्पदंशमें वर्जित	३७	योगफल	५१
गाना सीखनेका	"	करणफल	"
राज्याभिषेकका	"	राशिफल	५२
राजदर्शनका	"	होराफल	"
द्वितीयाके चंद्रोदयका	३८	लग्नफल	"
योगप्रकरण	"	ग्रहोंका फल	५३
		रक्तफल	"
		कालफल	"

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
पहिले वस्त्रोंका फल	५४	माता पिताके नाशक	६८
रजस्वलाधर्म	"	मृत्युकारक	"
गर्भाधानमुहूर्त	५५	ग्रहोंकी दृष्टि	६९
ऋतुकी १६ रात्रि	"	ग्रहोंका उच्चत्व व नीचत्व .. .	७०
तिथिवारमुहूर्त	५६	जन्मलग्नका फल	"
नक्षत्र	"	स्त्रीजातक	७१
गर्भिणीपुंसवन	५७	कोष्ठक	७४
वारफल	"	अष्टोत्तरीकी महादशा	७५
सीमन्तोन्नयनविष्णुबली...	५८	सख्याका क्रम	"
पक्षच्छिद्रा तिथि	"	अतर्दशालानेका क्रम	"
मासेश्वरज्ञानमाह	"	कोष्ठक	७६
गर्भिणीधर्म	५९	विंशोत्तरी महादशा और अतर्दशा...	७८
गर्भिणीप्रश्न	"	दशाओंकी भोक्तृ व भोग्यकी रीति...	"
प्रसूतिस्थानप्रवेशन	"	विंशोत्तरीक्रमकोष्ठक	७९
प्रसूतिकालका प्रश्न	६०	महादशा अतर्दशा फल	८०
तिथिगंडान्त	"	रविकी दशा	"
लग्नगडान्त	६१	चद्रकी दशा	"
नक्षत्रगंडान्त	"	भौमकी दशा	"
जातक	"	राहुकी अतर्दशा	"
जन्मकालका शुभाशुभ... .. .	६३	गुरुकी अतर्दशा	८१
गडान्तकाल	"	शनिकी अतर्दशा	"
कृष्णचतुर्दशीका फल	"	बुधकी अतर्दशा	"
अमावास्याके फल	"	केतुकी अतर्दशा	"
दिनक्षयादितिथिफल	"	शुक्रकी अतर्दशा	८२
ज्येष्ठानक्षत्रका फल	६२	योगिनीदशाक्रम ...	"
मूलका फल	"	वर्षसख्या	"
जन्मकालमें मूलनक्षत्र कहा है .. तिसका ज्ञान	६३	योगिनीदशाका कोष्ठक	८३
		अतर्दशाका फल .	"
आश्लेषा नक्षत्रका नराकारचक्र ..	६४	वर्षदशा...	८५
जन्मकालके ग्रहोंका फल	"	सूर्यकी दशाफल	८६
पुरुपजातक कोष्ठक	६६	चद्रकी दशा ...	"
जन्मकालमेबालककेमृत्युकारकग्रह	"	मगलकी	"
जन्मकालमें स्त्रीके मृत्युकारकग्रह ...	६७	बुधकी	"
पराक्रमी ग्रह	"	शनिकी	"
अपराक्रमी ग्रह	"	गुरुकी	"
जातिभ्रंशकारक	"	राहुकी	"

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
शुक्रकी	८६	विवाहसमये प्रश्न	९९
नित्यानित्यदशाकामत्य०	”	वर्षप्रमाण	१००
दूसरा मत	८७	मंगलविचार	१०१
गोचरप्रकरण	८८	भौमपरिहार	”
द्वादशभवनके	”	ज्येष्ठविचार	१०२
जन्मके चंद्रमामें पांच	”	कन्यालक्षण	”
गोचरचक्र	८९	वरलक्षण	”
वेधचक्र	”	वरदोष	१०३
जन्मचन्द्रमामें पांच वर्जनीय	९०	अस्तोदय	”
नेष्टस्थानके अनुसार चन्द्रफल	”	अस्त और उदयकाल	”
नेष्टस्थानके अनुसार दान	९१	अस्तमें वर्जनीयकर्म	”
वारोंके अनुसार दान	”	विवाहे वर्जनीय	१०४
ग्रहोंके दान और जप	”	मूलादि जन्मनक्षत्रका दोष	”
कोष्ठक	९२	जन्मनक्षत्रादिवर्ज्य	”
ग्रहपीडानिवारणार्थ	”	वर्षसारणी	१०५
जातकर्म	९३	वर्षप्रमाण	१०६
नामकर्म	”	गुरुचंद्रबल	”
नामका अवकहडा चक्र	”	गुरुका फल	”
कोष्ठक	९४	गुरु अनुकूल करनेका	”
मंचकारोहण	”	अष्टमैत्रीज्ञानम्	”
पालनेका मुहूर्त	९५	वर्गादिज्ञान	१०७
दुग्धपान	”	योनि	”
तांबूलभक्षण	”	वश्यावश्य	”
सूर्यावलोकन	९६	कोष्ठक	१०९
कर्णवेध	”	नाडी	११०
भूमिमें बैठना	९६	नवपंचक	”
अन्नप्राशनमुहूर्त	”	मृत्युषडष्टक	”
चौलकर्ममुहूर्त	९७	प्रीतिषडष्टक	”
विद्यारंभ	”	द्विर्द्वादश	”
यज्ञोपवीतका मुहूर्त	९८	चतुर्थसप्तमादि	”
मासादिमुहूर्त	”	वश्यावश्ययो०	१११
वर्षसंख्या	”	ग्रहोंका शत्रुत्वमित्रत्व	”
गुरुबल	”	ताराके कोष्ठक	११२
गलग्रह तिथि	९९	योनिका कोष्ठक	११३
शूद्रादिका संस्कार	”	ग्रहोंका कोष्ठक	११४
विवाहप्रकरण	”	गुणोंका कोष्ठक	”

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
नाडीका कोष्ठक	११४	उदयास्तलग्नकथन	१२५
सत्कूटअसत्कूटकोष्ठक	"	लग्नके उक्त अंशदेनेका क्रम. ...	"
कोष्ठक	११५	तात्काल स्पष्ट सूर्य लानेका साधन...	१२६
वर्णादिकका फल	"	उदाहरण	"
वैरियोनीका फल	"	सूर्यकी गति	"
गणोंका फल	"	स्पष्ट रविके उत्तर	"
कूटफल	११६	अभुक्तदिवसके उदाहरण	१२७
नाडीफल	"	अयनांशलानेका क्रम	"
पार्श्वनाडी	"	लग्नसे इष्टकाल लानेका क्रम... ...	१२८
असत्कूटविचार	"	भोग्यभुक्तसे इष्टकाल लानेका क्रम ...	"
दुष्टकूटोंका दान...	११७	उदाहरण	१२९
विवाहके उक्तनक्षत्र	"	रविके भोग्यकाल लानेका क्रम ...	"
एकविंशतिमहादोष	"	लग्नसे भुक्तकाल लानेका क्रम ...	"
कोष्ठकानि	११८	इष्टकालसमयका तत्काल सूर्य ...	१३०
दोषलक्षण....	१२०	इष्टकाल	"
कर्तरीदोष....	"	भुक्तभोग	"
वधूवरकी राशिमें अष्टमलग्नवर्ज्य ...	"	इष्टघटीसे लग्नलानेका	१३१
दुष्टमुहूर्तकथन	"	सूर्य और लग्न एकराशिमें हों तो इष्ट लानेका क्रम	"
यमार्द्धादिककथन	"	लग्नके शुभाशुभ ग्रह	१३४
कोष्ठक	१२१	षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम	१३५
लत्तादोष	"	त्रिंशांशादिकथन	"
ग्रहण तथा उत्पात	"	आदौ ग्रहज्ञानम्	१३५
पाप ग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र	"	होराकथन	"
एकार्गलदोष	१२२	द्रेष्काणकथन	"
चंडायुध	"	सप्तमांश	१३६
पंचशलाका यंत्र....	"	लग्नका नवांश	"
सप्तशलाका यंत्र	"	द्वादशांश	१३७
क्रांतिसाम्यचक्र	१२३	विषमत्रिंशांश	"
जामित्रदोष	"	समत्रिंशांश	१३८
त्र्यरत्रयदोष	"	षड्वर्ग जाननेका	"
तिथि अनुसार वर्जित लग्न	१२४	उक्तांश	१३९
दोषनिवारण	"	लग्नांशफल	"
लग्नमुहूर्त	"	लग्नवर्गोत्तमलक्षण	"
राश्युदय	"	गोधूललग्नकाकथन	१४०
लग्नकी घटिकाओंकी संख्या.... ...	"	वधूप्रवेश....	"
प्रतिदिवस भुक्तफल	"		

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
उक्त मासादि	१४१	शेषोंके मुख	१५०
नूतन पल्लवधारण	"	दुष्टयोग	"
गंधर्वविवाहमुहूर्त्त	"	कूर्मचक्र	"
दूसरेमत अनुसार	"	स्तंभचक्र	१५१
दत्तक पुत्रलेनेका मुहूर्त	"	देहलीका मुहूर्त्त	"
वास्तुप्रकरण	१४३	द्वारचक्र	"
ग्रामादि अनुकूल	"	शांतिका अग्निचक्र	१५२
ग्रहबल	"	गृहके मुखमें आहुति	"
द्वारशुद्धि	"	गृहप्रवेशका मुहूर्त्त	"
ग्राम अनुकूल	"	कलशचक्र	१५३
जातक जाननेका क्रम	"	वामार्कलक्षण	"
वर्गोंके स्वामी	"	शुभाशुभ ग्रह और लग्न	"
काकिणी	"	गृहारंभम लग्नशुद्धि	"
चंद्रमाके मुखजाननेकाविचार	१४४	अशुभयोगोंका लग्न	"
आयादिसाधन	"	आयुष्यप्रमाण	१५४
क्षेत्रफल	"	पृथ्वी शोधनेका प्रकार	"
आयोंके नाम	"	प्रश्नअक्षरफल	१५५
वर्ण अनुसार आय	"	यात्राप्रकरण	१५६
आयोंके फल	१४५	शुभाशुभ फल	"
नक्षत्र अनुसार व्ययसाधन	"	घातचंद्र	१५७
ग्रहोंकी राशि	"	घातप्रकरणम्	"
ग्रहोंके नाम	१४६	कालचंद्र	"
ग्रहोंके नामलानेका प्रकार	"	तिथिपररव वर्जितलग्न	१५८
अंशलानेका प्रकार	"	यात्राके नक्षत्र	"
ग्रहोंके भाग	"	मध्यनक्षत्र	"
ग्रहोंके द्वार	"	वर्ज्यनक्षत्र	"
ग्रहोंके स्थानोंकी योजनाका प्रकार	"	प्रयाणमें शुभाशुभ वार	१५९
अल्पदोष	१४८	होराकथन वारसहित	"
ग्रहारंभचक्र	"	उत्तम प्रश्न न होय तो	१६१
ग्रहप्रारंभके मास	"	वारानुसार वस्त्रधारण	"
ग्रहारंभके मासोंका फल	"	नक्षत्र तिथिवार अनुसार दिशाशूलवर्ज्य	"
मासप्रवेशसारणी	१४८	शूलदोषनिवारणार्थ पदार्थभक्षण	१६२
दिशानुसार ग्रहोंका मु०	१४९	शुभमार्गके चंद्रमें वर्जित	१६३
ग्रहारंभके नक्षत्र	"	सन्मुखचंद्रविचार	"
वृषचक्र	"	दिशानुसार सन्मुखचंद्र	"
शिलान्यास	"		

विषय.	पत्रांक.	विषय,	पत्रांक.
कालवेलाविचार	१६३	शिवद्विघटीमुहूर्त	१८४
योगिनीवास	"	शिवालिखित	१८६
वारानुसार कालराहुका वास... ...	१६४	गोरखनाथकृत यात्रामुहूर्तारंभ	१९१
क्षुधितराहु	"	गोरक्षमते तिथिचक्र	१९२
काल कहांहै तिसका ज्ञान	१६५	आनंदादि शुभाशुभयोग	१९३
पंथाराहुचक्र	"	उनोंका कोष्ठक	१९४
धर्मार्थकाममोक्ष मार्गके फल	१६६	चरयोग	१९५
पंथाराहु कर्म करनेयोग्य	१६८	दासदासीलेनेका मुहूर्त	१९६
गर्गादिकोंका मुहूर्त	"	गवादि पशुलेनेका मु०	१९७
शुभाशुभ वाहन	"	अश्व मोललेनेकामु०	"
अंकमुहूर्त	१६९	हाथीमोल लेनेका मु०	१९८
भ्रमणाडल मुहूर्त....	"	शिबिकारोहणचक्र मु०	"
हैवरमुहूर्त	१७०	छत्रचक्र	१९९
घबाडमुहूर्त	"	मंचकचक्र	"
वार अनुसार स्वरशाकुन	"	शरसहित धनुश्चक्र	"
वार अनुसार छायाशकुन	"	रथचक्र	२००
काकशब्दशकुन	१७१	तिलोंकी घानीकरनेका मु०	"
पिंगलशब्दशकुन	"	ऊखोंके रस काढनेका मु०	"
छिकानुसार पदच्छाया....	"	कृषिकर्मका मु०...	२०१
छिकाशकुन	"	हलचक्र	
पल्लीशब्दशकुन	१७२	नौका बनाने व जलमें उतारनेका मुहूर्त	२०२
पल्लीपतन और सरठावरोहण	"	नौकाचक्र....	"
अंगस्फुरण	१७३	लग्न और ग्रहबल	"
स्त्रियोंका अंगस्फुरण	१७५	नौका स्थापनेका गृह	२०३
नेत्रस्फुरण	"	दीपिकाचक्र	"
त्रिशूलयंत्र	"	कूपचक्र	"
गमनका लग्न	१७६	बागलगानेका मुहूर्त	"
द्वादशस्थानोंके अनुसार	१७७	सिक्काचलानेका मुहूर्त...	२०५
गमनलग्नमें ग्रहबल	१७९	प्रश्नप्रकार	"
प्रस्थान रखना	१८०	तिथ्यादिसंयुक्त प्रश्न	"
प्रस्थानकितनेदिवस	"	आत्मच्छायाप्रश्न	"
प्रस्थानके स्वामीके विचार	"	पंथाप्रश्न	"
प्रस्थानके दिवसमें वर्ज्यपदार्थ	"	कार्याकार्यप्रश्न	२०६
मात्स्योक्तशकुन,...	"	अंकप्रश्न	२०७
दुष्टशकुनदोषनिवारण	१८१	नवग्रहोंका यंत्र	"
गमनकालमें उत्तमशकुन	"		

विषय.	पत्रांक.	विषय.	पत्रांक.
वारनक्षत्रयुक्त पंथाप्रश्न...	... २०७	चन्द्रस्पष्टक्रमः	... २१७
नष्टवस्तुप्रश्न ...	"	लग्नसाधनम् ...	"
गर्भिणी प्रश्न ...	"	मुंथा...	... २१८
मुष्टिप्रश्न	"	पंचाधिकारी ...	"
लग्नसे मनचिंतित प्रश्न....	... २०८	दृष्टिक्रमः....	"
संज्ञानुसार लग्नोंवे० ...	.... २०९	स्पष्टार्थचक्रम् ...	... २१९
अंकप्रश्न ...	"	त्रिपताकीचक्र ...	... २२०
रोगीप्रश्न ...	"	वेधविचार ...	"
केवल लग्नसे प्रश्न ...	... २१०	मुद्दादशा...	.... २२१
मेघका प्रश्न...	"	मुद्दादशाचक्रम् ...	"
जललग्न ...	"	मासबनानेका क्रम ...	"
मेघनक्षत्र ...	... २११	ग्रहचक्रमकरण ...	.... २२२
स्त्रीनपुंसक पुरुषन० ...	"	सूर्यचंद्रभौमकोष्टक ...	.... २२३
सूर्य व चंद्रनक्षत्र सं० ...	"	बुध	"
धान्यप्रश्न	"	गुरु ...	"
पशुके विषयमें प्रश्न ...	... २१२	शुक्र....	"
राज्यभंगादि योग	.... २१३	कोष्ठक ...	.... २२४
सूर्य तथा चंद्र परिवेष अर्थात् मंडलका फल ...	"	शनि राहु ...	"
उत्पातोंका फल...	"	केतु...	... २२५
छायावल यात्रा ...	"	कोष्ठक	"
वायुपरीक्षाकथन...	... २१४	जन्मनक्षत्र कहां पडाहै तिसका ज्ञान	"
वर्षनिकालनेका मकार ...	... २१५	लग्नशुद्धि व पंचकज्ञान...	... २२६
तिथिबनानेका क्रम ...	... २१६	वारमें पंचक वर्जित ...	"
नक्षत्र लानेका क्रम	"	दिनमान रात्रिमान ...	... २२७
ग्रहचालनक्रम ...	"	दिवस कितना चढाहै ...	"
ग्रहस्पष्टीकरण ...	"	रात्रि कितनी गई....	"
भयातभभोगबनानेकी रीति ...	... २१७	अंतरंग बहिरंग नक्षत्र ...	... २२८
		सूतिकास्नान ...	"

इति ज्योतिषसारस्थ विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना—मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ज्योतिषसारः ।

भाषाटीकासमेतः ।

तत्रादौ मङ्गलाचरणश्लोकौ ।

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥
अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान्मुनीन् ॥ १ ॥
नानाग्रंथान्समालोक्य दैवज्ञानां च तुष्टये ॥
कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टीका—ग्रंथके निर्विघ्न परिसमाप्तिके लिये प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करके और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानको नाश करनेहारी ऐसी जो सरस्वतीजी ताको नमस्कार करके और गर्गाचार्य, लल्ल, वसिष्ठ, नारद इत्यादिक जो ज्योतिःशास्त्रके प्रवर्त्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके और सूर्य्यसिद्धांतादिक नानाप्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करके ज्योतिर्वित्के संतोषके लिये और बालकोंको थोडेमें मुहूर्त्तादिकका ज्ञान होय इस कारण अत्युत्तम ज्योतिषसारनामक ग्रंथको करते भये ॥ १ ॥ २ ॥

शकप्रकरणप्रारंभः ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम् ।

शकेंद्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हृते ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका—शालिवाहन शकमें जिस संवत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीतिहै कि, शककी संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और ६० का भाग देय, जो शेष बचे वही संवत्सरका नाम जानिये ॥ ३ ॥

संवत्परिज्ञान।

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥
रवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नाऽतिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका—जो शालिवाहनके शकमें १३५ मिलावे तो वही विक्रम संवत् होजाय. जो रेवानदीके उत्तर तटमें संवत् नामसे प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

संवत्सरोंके नाम।

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका—संवत्सरके अंकोंमें ९ युक्त करे और ६० के भाग देनेसे जो शेष रहे सो प्रभवादि संवत्सर जानना—उदाहरण जैसे १९३५ में ९ मिलायें तो १९४४ हुये—अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहे इस कारण इस संवत्सरका नाम विकृति नाम जानना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रभवो विभवः शुक्रः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ६ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ७ ॥
सर्वचित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ८ ॥
हेमलंबी विलंबी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ९ ॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादि च आनंदो राक्षसो नलः ॥ १० ॥
पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥
दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ११ ॥

सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम
१	प्रभवः	१३	प्रमाथी	२५	खरः	३७	शोभनः	४९	राक्षसः
२	विभवः	१४	विक्रमः	२६	नंदनः	३८	क्रोधी	५०	नलः
३	शुक्लः	१५	वृषः	२७	विजयः	३९	विश्वावसुः	५१	पिंगलः
४	प्रमोदः	१६	चित्रभानुः	२८	जयः	४०	पराभवः	५२	कालयुक्तः
५	प्रजापतिः	१७	सुभानुः	२९	मन्मथः	४१	प्लवंगः	५३	सिद्धार्थी
६	अंगिराः	१८	तारणः	३०	दुर्मुखः	४२	कीलकः	५४	रौद्रः
७	श्रीमुखः	१९	पार्थिवः	३१	हेमलंबी	४३	सौम्यः	५५	दुर्मतिः
८	भावः	२०	व्ययः	३२	विलंबी	४४	साधारणः	५६	दुंदुभिः
९	युवा	२१	सर्वजित्	३३	विकारी	४५	विरोधकृत्	५७	रुधिरोद्गारी
१०	धाता	२२	सर्वधारी	३४	शार्वरी	४६	परिधावी	५८	रक्ताक्षी
११	ईश्वरः	२३	विरोधी	३५	प्लवः	४७	प्रमादी	५९	क्रोधनः
१२	बहुधान्यः	२४	विकृतिः	३६	शुभकृत्	४८	आनंदः	६०	क्षयः

संवत्सरोंका फल.

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ १२ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरोंमेंसे चलते हुये संवत्सरको द्विगुणा करे,उसमेंसे तीन घटाके सातका भाग देनेसे जो शेष रहै तिससे शुभाशुभ फल जानिये ॥ १ अथवा ४ शेष रहैं तो दुर्भिक्ष और ५ वा २ बचें तो सुभिक्ष, ३ अथवा ६ शेष रहै तो साधारण और जो शून्य आवे तो पीडा जाननी १२

संवत्सरोंके स्वामी.

युगं भवेद्वत्सरपंचकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या ॥ भवंति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यःपितरः ॥ विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥ १३ ॥

टीका—पांच वर्षका एक युग होताहै,इसी प्रमाणसे६०वर्षके१२युग और क्रमसे उनके १२ स्वामी विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, पितर, विश्वेदेव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार, सूर्य्य ॥ १३ ॥

भेद.

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडानिद-
दिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥ एवंयुगेषु सकलेषु तदीय-
नाथा वह्न्यर्कशीतगुविरंचिशिवाः क्रमेण ॥ १४ ॥

टीका–इष्ट शकमें पांचका भाग दे शेष बचैं उनसे संवत्सरोंके नाम क्रमसे जानिये ॥ पहिले संवत्का स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २ तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा, ३ चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा, ४ पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ५ ॥ १४ ॥

दूसरामत ।

आनंदादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥
जयादेःशंकरः प्रोक्तःसृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका–आनंदादिक २० संवत्सरोंका स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्त्ता है और भावादिक२० संवत्सरोंका स्वामी विष्णुहै जो सबका पालन करतेहैं तीसरे जयादिक २० संवत्सरोंका स्वामी रुद्र संहारकरते हैं ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम् ।

अयन.

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ॥ भवति
दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १६ ॥

टीका–शिशिर, वसंत, ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तर दिशाको होतीहै तिसको उत्तरायण कहतेहैं, यही देवताओंका दिवसहै और वर्षा शरद् हेमंत इन तीनों ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणको होतीहै तिसको दक्षिणायन कहतेहैं यही देवताओंकी रात्रिहै ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभकर्म ।

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः ॥ सौम्या-
यने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ १७ ॥

टीका–गृहप्रवेश देवप्रतिष्ठा विवाह मुंडन व्रतधारण मंत्र लेना ये सब शुभ कर्म उत्तरायणमें करावे और सब निंद्य कर्म दक्षिणायनमें करने योग्यहैं १७॥

संक्रांति अनुसार ऋतु.

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ॥
ग्रीष्मश्चवर्षाश्च शरच्च तद्वद्धेमंतनामा कथितश्च षष्ठः ॥ १८ ॥

टीका—मकर आदि लेकर दो राशि सब सूर्य भोगतेहैं तब एक ऋतु होतीहै उसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगतेहैं उससे ६ ऋतु होतेहैं ॥ १८ ॥

तथा मतांतर राशि।

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसंताद्यृतवश्च षट् ॥
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णंति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ १९ ॥

टीका—चैत्रादिक दोमासमें १ ऋतु इस प्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतु होतेहैं सो दक्षिण देशमें देव पितृ कर्ममें प्रसिद्धहै ॥ १९ ॥

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१ मकर, २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क, ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन, ४ मेष	वसंतऋतु २	९ कन्या, १० तुला	शरदृऋतु ५
५ वृष, ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक, १२ धन	हेमंतऋतु ६

मतांतरराशिअनुसार

मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते हैं इस प्रमाणसे वसंत आदिक६ होती है.

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१ मेष, २ वृषभ	वसंत	७ तुला, ८ वृश्चि.	शरद्
३ मिथुन, ४ कर्क	ग्रीष्म	९ धन, १० मक.	हेमंत
५ सिंह, ६ कन्या	वर्षा	११ कुंभ, १२ मीन	शिशिर

मासअनुसार.

चैत्रसे लेकर दो२ मास वसंत आदिक छः६ ऋतु होती हैं.

मास	ऋतु	मास	ऋतु
१ चैत्र, २ वैशा.	वसंत	७ आश्वि, ८ कार्ति.	शरद्
३ ज्येष्ठ, ४ आषा	ग्रीष्म	९ मार्ग., १० पौष	हेमंत
५ श्राव., ६ भाद्र.	वर्षा	११ माघ, १२ फा.	शिशिर

१ दक्षिण देशवासी इस मतानिमे पितृकर्म करते हैं।

भेद.

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडान्वि-
दिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥ एवंयुगेषु सकलेषु तदीय-
नाथा वह्नयर्कशीतगुविरंचिशिवाः क्रमेण ॥ १४ ॥

टीका—इष्ट शकमें पांचका भाग दे शेष बचैं उनसे संवत्सरोंके नाम क्रमसे जानिये ॥ पहिले संवत्का स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २ तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा, ३ चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा, ४ पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ५ ॥ १४ ॥

दूसरामत ।

आनंदादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥
जयादेःशंकरः प्रोक्तःसृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका—आनंदादिक २० संवत्सरोंका स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्त्ता है और भावादिक २० संवत्सरोंका स्वामी विष्णुहै जो सबका पालन करतेहैं तीसरे जयादिक २० संवत्सरोंका स्वामी रुद्र संहारकरते हैं ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम् ।

अयन.

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ॥ भवति
दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १६ ॥

टीका—शिशिर, वसंत, ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तर दिशाको होतीहै तिसको उत्तरायण कहतेहैं, यही देवताओंका दिवसहै और वर्षा शरद् हेमंत इन तीनों ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणको होतीहै तिसको दक्षिणायन कहतेहैं यही देवताओंकी रात्रिहै ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभकर्म ।

ग्रहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः ॥ सौम्या-
यने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ १७ ॥

टीका—गृहप्रवेश देवप्रतिष्ठा.विवाह मुंडन व्रतधारण मंत्र लेना ये सब शुभ कर्म उत्तरायणमें करावे और सब निंद्य कर्म दक्षिणायनमें करने योग्यहैं १७॥

संक्रांति अनुसार ऋतु.

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ॥
ग्रीष्मश्ववर्षाश्च शरच्च तद्वद्धेमंतनामा कथितश्च षष्ठः ॥ १८ ॥

टीका—मकर आदि लेकर दो राशि सब सूर्य भोगतेहैं तब एक ऋतु होतीहै उसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगतेहैं उससे ६ ऋतु होतेहैं ॥ १८ ॥

तथा मतांतर राशि।

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसंताद्यृतवश्च षट् ॥
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णंति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ १९ ॥

टीका—चैत्रादिक दोमासमें १ ऋतु इस प्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतु होतेहैं सो दक्षिण देशमें देव पितृ कर्ममें प्रसिद्धहै ॥ १९ ॥

१ मकर २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंतऋतु २	९ कन्या १० तुला	शरदृऋतु ५
५ वृष ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमंतऋतु ६

मतांतरराशिअनुसार

मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते हैं इस प्रमाणसे वसंत आदिक६ होती है.

१ मेष २वृषभ	वसंत	७तुला ८वृश्चि.	शरद्
३मिथुन ४कर्क	ग्रीष्म	९धन १०मक	हेमंत
५सिंह ६कन्या	वर्षा	११कुंभ १२मीन	शिशिर

मासअनुसार.

चैत्रसे लेकर दो२ मास वसंत आदिक छः६ ऋतु होती हैं.

१चैत्र २वैशा.	वसंत	७आश्वि ८कार्ति.	शरद्
३ज्येष्ठ ४आषा	ग्रीष्म	९मार्ग. १०पौष	हेमंत
५श्राव. ६भाद्र.	वर्षा	११माघ १२फा.	शिशिर

१ दक्षिण देशवासी इस महीनेमें पितृकर्म करते हैं।

मासप्रकरण तत्र मासपरिज्ञान ।

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ॥
सा राशिः संक्रमाख्या स्यान्मसर्त्वयनहायने ॥ २० ॥

टीका—पूर्व राशिको छोड़के जिस आगेकी राशिमें सूर्य जाताहै उसी सूर्यकी राशिसे १२संक्रांति मास ऋतु अयन इन सबोंकी गणना होतीहै ॥ २० ॥

दर्शावधिं मासमुशंति चांद्रं सौरं तथा भास्कर राशिभोगात् ॥
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिंदोर्भगणाश्रयाश्च ॥ २१॥

टीका—मास कई प्रकारके होतेहैं एक चांद्रमास जो शुक्लप्रतिपदासे अमावास्या पर्यन्त होताहै, दूसरा सौर मास जो सूर्यके एकराशि भोगनेसे होताहै. तीसरा सावनमास जो तीस दिनका होताहै, चौथा नाक्षत्र मास जो चंद्रमाके गिरद नक्षत्रोंके फिरनेसे होताहै ॥ २१ ॥

मासोंके नाम तथा सूर्य्य देवता और देवी ।

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्चशुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः॥तथेष ऊर्जश्च सहाःसहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ॥ २२॥ अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ॥ चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वैशाख एव च ॥२३॥ ज्येष्ठमासे तपेदिंद्र.आषाढे तपते रविः ॥गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥२४॥ सुवर्णरेताश्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः॥ मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुःसनातनः ॥ इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ॥ २५ ॥ केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ माधवं माघमासे तु गोविंदमथ फाल्गुने ॥ २६ ॥ चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद्वैशाखे मधुसूदनं ॥ त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः॥२७॥श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ॥ आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥ २८ ॥ मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥ माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥ २९॥ चैत्रे मासि रमा देवी वैशाखे मोहिनी तथा॥पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च॥३०॥कांतीमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी तु कार्तिके ॥ ३१ ॥

संख्या	नामानि	नामानि	सूर्य	देवी	देवता
१	चैत्रमास	मधुः	वेदांगः	रमा	विष्णुः
२	वैशाखमास	माधवः	भानुः	मोहिनी	मधुसूदनः
३	ज्येष्ठमास	शुक्रः	इन्द्रः	पद्माक्षी	त्रिविक्रमः
४	आषाढमास	शुचिः	रविः	कमला	वामनः
५	श्रावणमास	नभः	गभस्तिः	कांतिमती	श्रीधरः
६	भाद्रपदमास	नभस्यः	यमः	अपराजिता	हृषीकेशः
७	आश्विनमास	इषः	सुवर्णरेताः	पद्मावती	पद्मनाभः
८	कार्तिकमास	ऊर्जः	दिवाकरः	राधा	दामोदरः
९	मार्गशीर्षमा	सहाः	मित्रः	विशालाक्षी	केशवः
१०	पौषमास	सहस्यः	विष्णुः	लक्ष्मी	नारायणः
११	माघमास	तपाः	अरुणः	रुक्मिणी	माधवः
१२	फाल्गुनमास	तपस्यः	सूर्यः	धात्री	गोविंदः

वार अनुसार मासफल।

पंचार्कवासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयम् ॥
पंचार्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥ ३२ ॥

टीका—एक महीनेमें पांच रविवार पडें तो रोग उत्पन्न होय और ५ भौमवार पडनेसे अधिक भय उपजे और ५ शनिवारसे दुर्भिक्ष होय और शेष वार ५ पडे तो वे शुभदायक होय ॥ ३२ ॥

पक्ष.

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु देवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपंचमीतः॥ आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णेपि मासके ॥ ३३ ॥

टीका—शुक्लप्रतिपदासे पौर्णमासीतक शुक्लपक्ष और वदीपडवासे अमावास्यातक कृष्णपक्ष होताहै. शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका

होताहै. ॥ ३३ ॥ दूसरा भेद—शुदी पंचमीसे लेकर वदी ५ तक शुक्लपक्ष जानिये. पहिले शुक्लपक्ष तदनंतर कृष्ण जो अमावास्याको मास पूरा होता हो तो प्रथम कृष्णपक्ष तिसके पीछे शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमाको मासांत हो तो ये दोनों पक्ष देश अनुसार प्रचलितहैं ॥ ३३ ॥

अधिक मास।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा।
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ३४ ॥

टीका—३२महीने १६ दिवस ४ घटी बीत जाने पर्यंत अधिकमासका संभव होताहै ॥ ३४ ॥

शाके बाणकरांकके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते
शेषा वह्निमधौ च माधवशिवे ज्येष्ठे वरे चाष्टके ॥
आषाढे नृपतौ नभश्च शरके भाद्रे च विश्वांशके
नेत्रे चाश्विनकेऽधिमाससुदिते शेषेऽन्यके स्यान्नहि ॥ ३५ ॥

टीका—वर्तमान शाकके अंकमें९२५हीनकरो और शेष अंकमें१९का भागदो, जो शेष ३ रहैं तो अधिक चैत्रमास जानना-और ११ शेष रहैं तो वैशाख और जो००।०९ बचैं तो ज्येष्ठमास अधिक होगा-और जो१६शेष रहैं तो आषाढ अधिक होगा—और जो ५ बचें तो श्रावण अधिक जानना और जो१३शेष रहैं तो दो भाद्रपद होंगे-और जो२ शेष रहैं तो आश्विनमास की वृद्धि होगी-और अंक शेष रहनेसे कोई मास अधिक नहीं जानना३५॥

क्षयमास।

असंक्रांतिमासोधिमासःस्फुटंस्याद्विसंक्रांतिमासःक्षयाख्यःकदाचित्।
क्षयः कार्तिकादित्रयेनान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ३६॥

टीका—जो दो अमावास्याके बीचमें संक्रांति न होय तो वह अधिकमास होताहै-और जो दो अमावास्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रांति होय तो क्षयमास जानना-और कार्तिक आदि३मासही क्षय होतेहैं-और जिस संवत्में क्षयमास होगा उसी संवत्में अधिकमास२होगा-इन सब श्लोकोंका आशय ग्रहणके सूर्य,चंद्रमाका स्पर्श मोक्ष सहित आगे चक्रोंमें देख लेना चाहिये॥

संवत्सर फल	नामसंख्या अंकोंके जो शेषफलवचे	अधिपति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१ शे ३ सम	१९३५ विकृति शा. १८००	विष्णुअधिपति त्वाष्ट	शेष १ नास्ति	श्रावण १५ चंद्र स्प. ५२। १७ मो २।३१	प्रकृतिर्विकृतियातिविकृतिप्रकृतिस्तथा॥ तथापिसुखिनो लोकाश्चास्मिन् विकृतिवत्सरे ॥
२ शे. ५ सुभि.	१९३६ खर शाके १८०१	विष्णुअधिपति त्वाष्ट	आश्विन शेष २	श्रा.कृ.३०म.सू.पौ.शु १५ च. स्पर्श३३।२२ मो. ३८।१८	खराब्देनिःस्वनालोका अन्योन्यंसमरोत्सुकाः॥ मध्यमावृष्टिरत्युग्रं रोगैर्भूयात्प्रकंपनं ॥
३ शे. ० पीडा	१९३७ श. १८०२ नंदन ६	विष्णुअधिपति अहिर्बुध्न्य.	चैत्रमभ न शेष३ अब्दशे	ज्ये.शु.१५च ग्र.स्प.३१ मो.३६मार्ग.शु १५च स्प. २८।३४ मो. ३७	नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ आनंदोप्यखलानां च जंतूनांसमहीभुजाम् ॥
४ शे. २ महर्घ.	स. १९३८ श. १८०३ विजय	विष्णुअधिपति अहिर्बु०	नास्ति शेष४	मार्ग शु १५ च. स्प.३८।८ मो. ४१। २२ उत्तरआशा	विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकांक्षिणः सुखिनोजतवः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
५ शे. ४ दुर्भि.	स. १९३९ श. १८०४ जय	वि. अ. अहिर्बु.	श्राव शेष ५	ज्येष्ठ कृ.३०ग्र. १५। ५८ मोक्ष .२३।५७ सभवदृष्टिनास्ति	जयमंगलघोषैर्धरणीभातिसर्वदा ॥ जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः ॥
६ शे. ६ सम	स. १९४० श. १८०५ मन्मथ	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ६		मन्मथाब्देजनाःसर्वे तस्करारतिलोलुपाः ॥ शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥
७ शे. १ दुर्भि.	स. १९४१ श १८०६ दुर्मुख	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ७	वै शु. १५च ग्र दृष्टिनास्तिआ शु १५ च स्प. ४५।२० मो. ४७।२४	दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा॥महावैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥
८ शे. ३ सम	स. १९४२ श. १८०७ हेमलंब	वि अ. पितर	ज्येष्ठ. शेष ८	चै शु. १५ च. स्प. ३४।५० मो. ४२।५८	हेमलंबेत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ भातिभूर्भूपतिक्षोभाखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥
९ शे. ५ दुर्भि.	स. १९४३ श. १८०८ विलंबी	वि. १२ पितर	नास्ति शेष ९	माघशुक्ल १५ चंद्रग्रहणसभव दृष्टिनास्ति	विलंबवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः॥ प्रजापीडात्वनर्घत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥
१० शे. ० पीडा	स. १९४४ श. १८०९ विकारी	वि. १३ पितर	नास्ति शेष१०	श्राव १५च स्प. ४३।६ भा. ३० ग्र. सू ९।४८मो. २२।४८	विकारीब्देखिलालोका.सरोगावृष्टिपीडिता.॥ पूर्वंसस्यफलस्वल्प बहुलंचापरंफलम् ॥
११ शे. २ सुभि.	स. १९४५ श. १८१० शर्वरी	वि. १४ पितर	वैशा शेष ११		
१२ शे० ४ दुर्भिक्ष	स. १९४६ श. १८११ प्लव	वि १५ पितर	नास्ति शेष १२	आषाढ शु १५च ग्र. स्प. ४९।१३ मोक्ष ५६।४०	प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्लवतांतिमा:॥रोगाकुलात्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥
१३ शे. ६ सम	स १९४७ शकः १८१२ शुभकृत्	विष्णु १६ विश्वेदेवा	भाद्रप. शेष १३	आ.३०सू स्प. २२।४८ मो.२९।५७का.च.स्प. २६।२५ मो. ३०।४७	शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ॥ आतंकचौराभयदाराजान.समरोत्सुकाः ॥
१४ शे. १ सुभि.	स. १९४८ शकः १८१२ शोभन	विष्णु १७ विश्वेदेवा	शेष १४ नास्ति	वैशा.१५ च. स्प ४१। १६ मो. ५० का.१५ च. स्प. ५२।५७	शोभनेवत्सरेधात्री प्रजानारोगशोकदा ॥ तथापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥

संवत्सर फल	शषफल्त्रचे अङ्कजो नामसंख्या	अधिपति	अधिकमास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१५ शेष ३ सम	स १९४९ शक १८१४ श्राधी	विष्णु १८ विश्वेदेवा	शेष १५ नास्ति	वै शु १५चं स्प५१।४६ का शु १५ चं स्प ३२ मो ४०।४४	क्रोध्यब्देखिलालोका क्रोधलाभपरायणा. इति दोषेणसततमध्यसस्यावृष्टय ॥
१६ शेष ५ दुर्भि	स १९५० शक १८१५ विश्वावसु	विष्णु १९ विश्वेदेवा	आषाढ शेष १६	फा शु १५घस्प२१।३१ मा ३५।०वै कृ ३० सू स्प१।२७मो ७।१९	अब्देविश्वावसौ शश्वद्घोररोगाधराश्च । सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतय ॥
१७ शेष ० पान्य	स १९५१ शक १८१६ पराभव	विष्णु २० विश्वेदेवा	श १७ नास्ति	नास्ति	पराभवाब्देराजास्यात् सपत्सहशत्रुभि ।आ मयक्षुद्रसस्यातिप्रभूता यल्पवृष्टय ॥
१८ शेष २ सम	स १९५२ शक १८१७ प्लवग	विष्णु शिव चंद्रमा	शेष १८ नास्ति	फा शु १५ भृ चं ग्र स्प ४१।४ मो ४५।५४	प्लवगाब्देमध्यवृष्टी रोगचौराकुलाधरा । अ न्योन्यसमरेभूपा शत्रुभिर्हतभूमय ॥
१९ शेष ४ दुर्भि	स १९५३ शक १८१८ कीलक	शिव अधि ति चंद्रमा	ज्येष्ठ ०	०	कीलकाब्देत्वीतिभीति प्रजाक्षोभनृपाह्वया । तथापिनिवृद्धतेलोक समधान्यार्घवृष्टिभि ॥
२० शेष ६ सम	स १९५४ शक १८१९ सौम्य	शिव ३ चंद्रमा	शेष १ नास्ति	पा शु १५चं स्प३६मो १६मा कृ ३०शु सू स्प १३।५१ मा २०।२६	सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्घवृष्टिभि । निर्वैरिणाधराधाशानिप्राश्चान्यपरस्परा ॥
२१ शेष १ दुर्भि	स १९५५ शक १८२० साधारण	शिव अधिप चंद्रमा	आश्विन २ ०	आ १५चं च स्प५०मो ८।२ भाग १५भौ च स्प८८।०८मा १२	साधारणाब्देवृष्टयर्द्धभयचमारणेमन । मध्य सपद्धराधीश प्रजा स्यु स्वस्थचेतस ॥
२२ शेष ३ सम	स १९५६ शक १८२१ विरोधक	शिव ५ चंद्रमा	चन ३ समर अतम	ज्य १५भृ च ग्र स्प३१ मो ३३माग १५श स्प ५३।४०मा ५७ २६	विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिन । सर्वे जनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टय ॥
२३ शेष ५ सम	स १९५७ शक १८२२ परिधावी	वि शि ६ अग्नि	शेष ० ४	०	भूप इवामहारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टय । दु- खिनोजतव सवत्सरेपरिधाविन. ॥
२४ शेष ० पीडा	स १९५८ शक १८२३ प्रमाथी	शिव ७ अग्नि	० श्रावण ५	१ग्रह स ३० चै स्प ७।३२ मा १२।२७	प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टय । प्रजा नाजीवराद्व सम स्यां क्षताश्वरा ॥
२५ शेष २ सुभिक्ष	स १९५९ शक १८२४ आनंद	शिव ८ अग्नि	० ६	१ ग्रह च चैत्र १५ भौम स्प ४०।२२ माक्ष ४२।४८	आनंदाब्देखिलालोका सर्वेदानंदचेतस ।रा जान सुखिन सर्वबहुसस्यार्घवृष्टिभि ॥
२६ शेष ४ मध्य	स १९६० शक १८२५ राक्षस	वि शि अग्नि	७ नास्ति	२ग्र चै शु१५च स्प३६ मा २।४५आ शु१५स्प ३१।२मो २९।१०	स्वस्वकार्येरता सर्वमध्यसस्यार्घवृष्टय । रा- क्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रिया ॥
२७ शेष ४ सम	सं १९६१ शक १८२६ नल	वि शि अग्नि	८ ज्येष्ठ	१ ग्र मा शु १५ र स्प ४०।३९मो ४८। ५९	नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभि प्रवराधरा । नृप क्षोभसजाताभूरितस्करभीतय. ॥
२८ शेष दुर्भि	स १९६२ शक १८२७ पिंगल	वि शि अग्नि कुमार	नास्ति	२ग्र ना श्रा १५स्प २७।० मा ३०।११	पिंगलाब्देत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टय ।रा- जानाविग्रमात्राताभुजनराभुमेदिनीम ॥

संव-त्सर फल	शेषफलचर्वे अर्ककेजो नामसंख्या	आधि पति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंकेफल ॥
२९ शेष१ सम	स. १९६३ शकः १८२८ काल	वि.शि. अश्वि. कुमार	१ नास्ति	का.३०सूर्य्य.९।३६मो १४।२४मा.१५म. स्प. २५।२४ मो.३०।२४	वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिन सर्वजंतवः। म- न्त्रयापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥
३० शेष३ सुभिक्ष	स. १९६४ शकः १८२९ सिद्धार्थ	वि.शि. अश्वि कुमार	११ वैशाख	ग्रहणंनास्ति	सिद्धार्थवत्सरेभूपा ज्ञानवैराग्ययाप्रजाः। स- कलावसुधामाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
३१ शेष० पीडा	स १९६५ शकः १८३० रौद्र	वि.शि. अ- श्वि कुमार १४	१२ नास्ति	ग्र.मार्ग शु.१५च. स्प. ४८।२०मो. ५१।३०	रौद्राब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसमागमे । सत- तंत्वखिलालोकामध्यमस्यार्घवृष्टयः ॥
३२ शेष२ सुभिक्ष	स. १९६६ शकः १८३१ दुर्मति	वि शि. अश्वि कुमार	१३ मार्ग.	१ ग्र. ज्ये. शु. १५च. स्प. ५१।२मो.७।४२	दुर्मत्यब्देऽखिलालोका भूपादुर्मतयःसदा । तथापिसुखिनःसर्वे संग्रामामतिचेद्वरि ॥
३३ शेष४ दुर्भिक्ष	स. १९६७ शकः १८३२ दुंदुभि	वि.शि. १६ भग	१४ नास्ति	१ ग्र. का शु. १५ बु. स्प. ५३।३७ मोक्ष ५६।३७	सर्वसस्ययुताधात्री पालिताधरणीधरै । प- र्वरेश्चैनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥
३४ शेष६ सम	स. १९६८ शकः १८३३ रुधिरोद्गारी	शि.वि. १७ भग २	१५ नास्ति	का कृ.३० स्प.५१। २६ मो. ४।५०	आद्वेनिहिता सर्वभूपारोगैस्तथाजनाः । यथा कथंचिज्जीवंतिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥
३५ शेष१ दुर्भिक्ष	स. १९६९ शकः १८३४ रक्ताक्षी	शि.वि. १८ भग	१६ आषा.	च.चै.१५सो स्प.५१मो ५६ चै.३०बु. स्प२९। ०मो. ३३।३१	रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा । प्रेक्षंते सर्वदान्योन्यंराजानोरक्तलोचन ॥
३६ शेष३ स.१९	स. १९७० शक. १८३५ क्रोधन	१७ ना. भग	१७ नास्ति	का. १५ स्प.२२।२० च.मा. १५ स्प. २४।९ मोक्ष २२।५९	क्रोधनाब्देमध्यवृष्टिः पूर्वदेशेचवृष्टयः।भयं भितरस्तवै भूपाःक्रोधपरायणा. ॥
३७ शेष३ स २०	स. १९७१ शकः १८३६ क्षय	शि. वि. २० भग ५	१८ नास्ति	सू.भा. ३० भृ स्प.३०। ३८मो३५।२८भा.१५ भृ स्प२५।१मो३३।१६	कार्पासंगधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशन । क्षय- मणाथापिनराजीवंतिक्षयवत्सरे ॥
३८ शेष५ पीडा	स. १९७२ शकः १८३७ प्रभव	वि १ ब्रह्मा १	०० ज्येष्ठ	नास्ति	कारण्याभीतयश्चाग्निकोपश्चव्याधयोभुवि । प्रभवाब्देमदवृष्टिस्तथापिसुखिनोजना. ॥
३९ शेष२ सुभिक्ष	स. १९७३ शकः १८३८ विभव	ब्रह्मा २ विष्णु २	१ नास्ति	नास्ति	दुष्टनीतिगताभूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः। विभवा- ब्देखिलालोकाः सुखिनःस्युर्निर्वैरिणः ॥
४० शेष४ दुर्भिक्ष	स. १९७४ शकः १८३९ शुक्ल	ब्रह्मा ३ विष्णु ३	२ आश्वि.	१ च. आषा. शु. १५ खग्रासस्पर्श ४९।५५ मो. ५१।२९	शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनःस्वजनैःसह । राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः ॥
४१ शेष४ सम६	स. १९७५ शकः १८४० प्रमोद	ब्रह्मा ४ विष्णु ४	३ चैत्र संभव	नास्ति	प्रमोदाब्देप्रमोदंतिराजानोनिखिलाजनाः।वी- तरोगावीतभयाईतिशत्रुविनाशकाः ॥
४२शेष६ १५ सुभिक्ष	स. १९७६ शकः १८४१ प्रजापति	ब्रह्मा ५ विष्णु ५	० ४	नास्ति	नचलंतिचलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन । अब्देप्रजापतौनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ।

संवत्सर फल	शेषफलवर्षे अर्काकेजो नामसंज्ञा	अधिपति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
४३ शेष ५ सम ७	स १९७७ शक १८४२ अंगिरा	ब्रह्मा ६ बृहस्पति	५ श्रावण	च.ग्र.वै. शु १५च स्प. ५८।३मो. ६।४७ आ. ११बु. स्प.३।१९	अन्नाद्यभुज्यतेशश्वज्जनैरतिथिभिःसह। अंगिरान्देखिलालोकाभूपाश्चकलहोत्सुकाः ॥
४४ शेष ५ सुभि ७	स. १९७८ शक. १८४३ श्रीमुख	ब्रह्मा बृहस्पति २	६ नास्ति	आश्वि. १५ र.स्प. ४९।३१मो १७।४९ चंद्रग्रहण	श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता।अध्वरेनिरताविप्रावीतरोगार्विवैरिणः ॥
४५ शेष ० पीडा०	स. १९७९ शकः १८४४ भाव	ब्रह्मा बृहस्पति ३	७ नास्ति	आश्वि.कृ ३० गु सू स्प.५।५मो. १०.११ ३० आपा.	भावाब्दे प्रचुरारोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः। राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजना. ॥
४६ शेष २ सुभि.९	स. १९८० शक. १८४५ युवा	ब्रह्मा गुरु ४	८ ज्येष्ठ	माघ. १५ बु. खग्रास ५।४७ स्प. २२।३८ मो. ४१।४८ च ग्र	प्रभूतपयसोगावः सुखिनस्सर्वजंतवः। सर्वकामक्रियायुक्तो युवाब्देयुवतीजनः ॥
४७ शेष४ १०	स. १९८१ शक १८४६ धाता	ब्रह्मा बृहस्पति ५	९ नास्ति	श्रा १५शु ५०स्प ६। मो.५५ख मा १५र.स्प ४६।१मो.५१।३६च ग्र	धातृवर्षेखिला क्ष्मेशा सदायुद्धपरायणाः।मपूर्णाधरणीभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
४८ शेष ६ सम ११	स. १९८२ शकः १८४७ ईश्वर	ब्रह्मा इंद्र १	१० नास्ति	श्रा. १५भौ दृष्टि ना माघ३०गु स्प.१२।१५ मो.१५।२३सू.ग्रहण	ईश्वराब्देखिलाजंतुधात्रीधात्रीवसंदा। पोषयत्यतुलेवान्नफलमार्धेस्तुर्वीहिभिः
४९ शेष ६ द १२	स. १९८३ शकः १८४८ बहुधान्य	ब्रह्मा इंद्र १२	११ वैशाख	० ० ०	अनीतिरतुलावृष्टिर्बहुधान्याख्यवत्सरे। विविधैर्धान्यनिचयः सुखपूर्णाखिलाधरा ॥
५० शेष ३ सम १३	स. १९८४ शक १८४९ प्रमाथी	ब्रह्मा इंद्र ०	१२ नास्ति	० ० ०	नमुंचतिपयोगावः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम्। मध्यमावृष्टिरर्धेश्चनूनमब्देप्रमाथिनि ॥
५१ शेष ५ सुभिक्ष	स. १९८५ शकः १८५० विक्रम	ब्रह्मा १४ इंद्र	१३ भाद्रपद	ज्य शु.१५ र.समवग्रह ३०गा.३० च स्प १६। ३७मो. २१।२१च. सू	विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयः। सर्वत्रसर्वदामेघामुंचति प्रचुरजलम् ॥
५२ शेष ० पी १५	स १९८६ शक १८५१ वृष	ब्रह्मा १५ इंद्र	१४ नास्ति	वै ३०गु समव ग्रहण नास्ति सू.	वृषाब्देनिखिलाःक्ष्मेशायुद्धयंतिवृषभाइव। विद्याप्रसक्ताविप्रेन्द्राः पश्यन्तेसततभुवाम्।
५३ शेष २ १६सम	स .१९८७ शक १८५२ चित्रभानु	ब्रह्मा १६ अग्नि	१५ नास्ति	० ०	चित्तार्घवृष्टिसस्यार्घैर्विचित्रानिखिलाधरा। निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे ॥
५४ शेष ४ १७ दु	स. १९८८ शकः १८५३ सुभानु	ब्रह्मा १७ अग्नि	१६ आषा	वै.१५स्प४४।३मा ५३ मा १५स्प४०मो. ४९ का १६स्प१५मो१३स	सुभानुवत्सरेभूमिर्भूमिपानांचविग्रहः। भातिभूमौरिसस्याढ्या भयंकरभुजगमाः ॥
५५ शेष ६ १७सम	स १९८९ शक १८५४ तारण	ब्रह्मा १८ अग्नि ३	१७ नास्ति	भा ५५ बु स्प.० ४४मो.५३।० ख चंद्रग्रहण	क्वस्यचिन्निखिलालोकास्तारतिप्रतिपन्नताम्। नृपाहवक्ष्यनाद्रोगा भिषज्यैस्तारणाब्दके॥
५६ शेष १ १९ दु	स १९९० शकः १८५५ पार्थिव	ब्रह्मा अग्नि ०	१८ ०	मा ३०सो स्प. ७ मा ५४।३४पा.३०समव दृष्टिनास्ति सू २	पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाभृशम्। बहुभिःफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥

सब संवत्सर-फल	नामसंख्या अंकेंकेजो शेषफलबचे	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल.
५७ शेष ३ ८ सम	सं १९९१ शक १८५६ व्यय	ब्रह्मा आग्न ५	०० ज्येष्ठ	आषा १५ स २७मो २५पो १५स्प २९मो ३७ खग्रा स ४।१८	व्ययाब्देनिखिलालोका बहुव्ययपराभृशम् । निरमतीहतुरगैरथैर्भूतानिसर्वदा ॥
५८ शेष ५ १दुर्भि	सं १९९२ शक १८५७ सर्वजित्	विष्णु त्वाष्ट	१ ०	पौ १५ बुधे स्प ३५ ४३ मा ४४।० चंद्रग्रहण	सर्वजिद्वत्सरेसर्वे जनास्त्रिदशसन्निभा । राजानानिल्ययाति भीमसंग्राममूमिपा ॥
५९ शेष ० पीडा२	सं १९९३ शक १८५८ सर्वधारी	विष्णु त्वाष्ट्र	२ आश्वि	आ ३०स ९।४८मो १४आ १५स्प४०।८ मोक्ष ८३।२	सर्वधार्यब्दकेभूपा प्रजापालनतत्परा । प्रशांतवैरा सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टय ॥
६० शेष २ ३ सम	सं १९९४ शक १८५९ विरोधी	विष्णु त्वाष्ट्र	३ सभर	ग्रहणनास्ति ०	विरोधीवत्सरेभूपा परस्परविरोधिन । भूरिभूरियुताभूमिर्भूरिकारिसनाकुला. ॥

सिद्धांतशिरोमणौ ।

क्षयमासविचारः ।

गतोऽब्ध्याद्रिनंदैर्मिते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः ॥
गजाद्र्यग्निभूमिस्तथा प्रायशोयं कुवेदेंदुवर्षैः क्वचिद्गोकुभिश्च ॥३७॥

टीका—पहिले जिस संवत्में क्षयमास पडे तो उसके १४१ वर्ष पीछे फिर होताहै इसमें आगे १९ वर्षमें या इससे बाहर इसके मध्यमें जो ९४७ के संवत्में क्षयमास हो तो फिर आगे १११५ । १२५६ । १३७८ में पडेगा और इसके पीछे १४१ और १९ वर्षके अंतरसे क्षय-मासका संभव जानना योग्य है ॥ ३७ ॥

तिथिप्रकरणम् ।

मासभाच्चांद्रभं यावद्गणयेत्तावदेव तु ॥
यावंतिगणनाद्भानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ ३८ ॥

टीका—चैत्रादि बारह मासोंके नाम और तिन नामोंके नक्षत्रसे मास नक्षत्र जानिये जैसा चैत्रका चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी इस प्रकार नक्षत्रोंके क्रमसे जानिये, परंतु पूर्णिमान्त महीनेसे गणित बराबर होताहै ॥ ३८ ॥

वारसंज्ञापरिज्ञानम् ।

प्रतिपत्सिद्धिदाप्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ ३९॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता॥सप्तमी तु शुभा ज्ञेया ह्यष्टमी व्याधिनाशिनी॥ ४०॥मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ ४१ ॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्या शुभा तिथिः ॥ ४२ ॥ वृद्धिश्चाथ सुमंगलाथ सबला प्रोक्ता खला श्रीमती कीर्तिर्मित्रपदातथा बलवतीस्वोग्राक्रमा द्धर्म्मिणी ॥ नंदाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या तिथिर्नाम्ना तुल्यफला क्रमात्प्रतिपदो दर्शस्त्वमासंज्ञकः ४३ नंदासिते सोमसुते च भद्रा कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ॥ पूर्णागुरौ ताश्चमृताः कुजार्के सितांबुजेज्ञेच गुरौशनिः स्युः४४

॥ इन श्लोकोंकी टीका चक्रमें लिखी है ॥

स्वामी ।

वह्निर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ॥ दुर्गांतकौ विष्णुहरी स्मरश्च शर्वःशशी चेति पुराणदृष्टः४५॥ अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥

संज्ञा ।

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः॥४६॥

वर्जित ।

कूष्माण्डं बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालांत्रकम् ॥ निष्पावांश्च मसूरिका फलमथो वृंताकसंज्ञं मधु द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमात्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ ४७ ॥

टीका

ति.	नामतिथि	तिथि०	फल	स्वामी	संज्ञा नाम	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपाल. न करनेसे
१	वृद्धि	प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२	सुमंगला	द्वितीया	कार्यभाव.	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कंटकीफ.
३	सबला	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	खला	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	श्रीमती	पंचमी	शुभा	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई
६	कीर्ति	षष्ठी	अशुभा	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तल
७	मित्रदा	सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आंवला
८	बलावती	अष्टमी	व्याधिना.	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफल
१०	धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	नंदा	एकादशी	शुभा	विश्वेदे.	नंदा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	यशोबला	द्वादशी	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	जयकरा	त्रयोदशी	सर्वसिद्धा	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चंद्र	पूर्णा	शुभ	अशुभ	द्यूत
१६	दर्श	अमा०	अशुभा	पितर	०	०	०	स्त्रीसंगम

नंदासु चित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥ विवा-
हभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपिपौष्टिकानि ॥ ४८ ॥
जयासु संग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ॥
रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यांति सिद्धिम् ॥
॥ ४९ ॥ पूर्णासु मांगल्यविवाहयात्रा सुपौष्टिकं शांतिककर्मका

र्य्यम्॥सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि५०॥

टीका–पडवा, छठि, एकादशीको नंदा तिथि कहतेहैं इसमें आनन्दादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य्य गृहस्थल बनाना-वस्तु मोल लेना नृत्य सम्बन्धी गीत वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये ॥ १ ॥ द्वितीया सप्तमी द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह, गाडी, संबन्धी काम मार्गसंबन्धी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये ॥ २ ॥ तीज आठें, त्रयोदशीको जया कहतेहैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र शस्त्र ध्वजा पताका आदि निर्माण करने योग्यहैं ॥ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी ये रिक्ता इनमें विद्वानोंका वध, घातकर्मकी सिद्धि विषप्रयोग शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने योग्यहैं ॥ पंचमी दशमी पौर्णमासी इन तिथियोंको पूर्णा कहते हैं इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्यहैं ॥ ५० ॥

अथ बारहमास।

आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः। शुक्रःशनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिताः॥५१॥शिवो दुर्गा गुहोविष्णुः कालत्र-ह्लेन्द्रसंज्ञकाः। सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः॥ ॥५२॥गुरुश्चंद्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः॥क्रूरास्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ५३ ॥ सूर्यश्चरः स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः। लघुर्जीवो मृदुः शुक्रः श-निस्तीक्ष्णः समीरितः ॥ ५४ ॥

अष्टदिशाओंके स्वामी।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ॥
बुधोबृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ ५५ ॥

टीका–पूर्वका स्वामी रवि १ आग्नेयका स्वामी शनि २ दक्षिणका स्वामी मंगल ३ नैर्ऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी

चन्द्र ६ उत्तरका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रहभी जानिये ॥ ५५ ॥

ग्रहोंका वर्ण और जाति।

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौच क्षत्रियौ भौम भास्करौ ॥
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदौ तथांत्यजौ ॥ ५६ ॥

टीका-गुरु शुक्र ये ब्राह्मण, मंगल रवि ये क्षत्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य, राहु केतु और शनि ये तीन शूद्रहैं ॥ ५६ ॥

ग्रहोंका वर्ण।

रक्तावंगारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥
गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराहू सितौ शुभौ ॥ ५७ ॥

टीका-मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि राहु केतु इनका वर्ण कृष्णहै ॥ ५७ ॥

वारोंके अनुसार कर्म।

रविवारके कर्म।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमंत्रौषधशस्त्रकर्म ॥
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ५८॥

टीका-राज्याभिषेक गीत वाद्य यानकर्म राजसेवा गाय बैलका लेना देना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेश लेना देना औषधिका लेना शस्त्रारम्भ सोना तांबा ऊनवस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग खरीदना बेचना ये कर्म रविवारके करै ॥ ५८ ॥

सोमवारके कर्म।

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकृष्यांबुविभूषणाद्याः ॥
गीतक्रतुक्षीरविकारशृंगीपुष्पांबरारंभणमिन्दुवारे ॥ ५९ ॥

टीका-शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्प वस्त्र इत्यादि भोगने सोमवारको योग्यहैं ॥ ५९ ॥

भौमवारके कर्म ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाठ्यदंभान् ॥
सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ॥ ६० ॥

टीका–भेद करना अनृत चोरी विष अग्नि शस्त्र वध नाश संग्राम कपट दंभ सेनाका पाडाव खानि धातु सुवर्ण मूंगा रक्तस्राव ये कर्म करावे ॥ ६० ॥

बुधवारके कर्म ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ॥
धातुक्रिया कांचनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥६१॥

टीका–चातुर्य पुण्य अध्ययन कला शिल्प शास्त्र सेवा लिखना चित्र काढना धातुक्रिया सुवर्ण युक्ति सख्यत्व व्यायाम और वाद करना ये कर्म बुधवारको करावे ॥ ६१ ॥

गुरुवारके कर्म ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामांगल्यहेमांबरवेश्मयात्राः ॥
रथाश्वभैषज्यविभूषणादि कार्य्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥६२॥

टीका–धर्म करना नवग्रहादि पूजा यज्ञ विद्याभ्यास सुभग वस्त्र गृहकर्म यात्रा रथ अश्व औषधि विभूषण आदि कृत्य गुरुवारको करावे ॥ ६२ ॥

शुक्रवारके कर्म ।

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म ॥ भूपण्य-
गोकोशकृपिक्रियाश्च सिध्यंति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥६३॥

टीका–स्त्री गायन शय्या मणि रत्न हीरा गंध वस्त्र उत्साह अलंकार वाणिज्य पृथ्वी दुकान गाय द्रव्य खेती ये कर्म शुक्रवारको करावे ॥ ६३ ॥

शनिवारके कर्म ।

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविपार्कविद्याम् ॥
ग्रहप्रवेशद्विपबंधदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेऽह्नि कुर्यात् ॥६४॥

टीका–लोहा पत्थर सीसा जस्त शस्त्र दास पाप अनृत भाषण चोरी विष अर्क काढना गृहप्रवेश हाथी बांधना मंत्र लेना और स्थिर कर्म इत्यादि शनिवारको करावे ॥ ६४ ॥

वारोंके देवता अधिदेवता और कृत्य।

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेंद्रकालाः क्रमेण पतयः
कथिता ग्रहाणाम् ॥वह्न्यंबुभूमिहरिशक्रशचीविरिंचिस्ते
षांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥ ६५ ॥

टीका–शिव पार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्य्यादिक वारोंके देवता जानना और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा–ये ७ सूर्यादिक वारोंके अधिदेवता जानना ॥ ६५ ॥

विचार करनेका कालपरिमाण।

पतंगसूनोर्दिवसाधिपत्यं निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः॥
रात्रिद्वयंचैकदिनंच सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥६६॥

टीका–शनैश्चरसे कालका प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्ट प्रहरका कहना चाहिये–और सूर्यसे दिन अर्थात् चार प्रहरका कहना–और चंद्रमासे दो रात्रि १ दिनका कहना–और शेष ग्रहोंसे उदयप्रवृत्ति अर्थात् उदयसे आठ प्रहरका काल प्रमाण कहना चाहिये ॥ ६६ ॥

दोषादोषमाह।

न वारदोषाः प्रभवंति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ॥
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निंद्यो बुधवारदोषः॥६७॥

टीका–गुरु शुक्र रवि इन तीन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और सोम शनि मंगल इन तीन वारोंका दिनको दोष नहीं मानना–और बुधवारको सर्वत्र निंदित जानना ॥ ६७ ॥

कृत्य।

सोमसौम्यशुक्रवासरास्सर्वकर्मसु भवंति सिद्धिदाः ॥
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ॥६८॥

टीका–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारोंमें सब कर्मसिद्धि जानना और रवि, भौम, शनि इनमें उक्त कार्यमात्रकी सिद्धि जानना ॥ ६८ ॥

तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ।

रविस्तापं कांतिं वितरति शशी भूमितनयो मृतिं लक्ष्मीं सौम्यः

सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगानुगमनं नृणां तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूर्य्यतनयः ॥ ६९॥

टीका—रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रद है--सोमवारको कांतिप्रद--मंगलको मृत्युप्रद-बुधवारको लक्ष्मीप्रद, गुरुवारको वित्तनाशक--शुक्रवारको तेल लगानेसे विपत्ति आतीहै-शनिवारको तेल लगाना संपत्तिका कर्ताहै ६९

वस्त्रपरिधानशुभाशुभ ।

जीर्णं रवौ सततमंबुभिरार्द्रमिंदौ भौमे शुचे बुधदिने च भवेद्धनाय ॥ ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय मंदे मलायच नवांवरधारणं स्यात् ॥ ७० ॥

टीका—रविवारको नूतन वस्त्र परिधान करनेसे शीघ्र जीर्ण होगा--सोमवारको आशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्रही रहैगा-मंगलके दिन पहरनेसे शोकप्रद होगा-बुधवारको धनप्राप्ति-गुरवारको ज्ञानप्राप्ति-शुक्रवारको मित्रप्राप्ति-शनिवारको पहरनेसे मलिन रहैगा ॥ ७० ॥

श्मश्रुकर्म ।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तंडसूनुर्भौमश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंच मासान् ॥ सप्तैवदुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥ ७१ ॥

टीका—रविवारको क्षौर करनेसे १ महीना आयुष्यनाश जानना-सोमवारको क्षौर करनेसे ७ महीना आयवृद्धि जानना-मंगलको ८ महीना-आयुष्यनाश जानन-बुधवारको ५ महीना आयुकी वृद्धि जानना-गुरुवारको १० महीना आयुकी वृद्धि जानना शुक्रवारको ११ महीन आयुकी वृद्धि जानना-शनिवारको ७ मास आयुका नाश जानना यह गर्ग लल्ल नारदप्रभृतिमुनियों ने क्षौरकार्यमें लिखाहे ॥ ७१ ॥

विद्यारम्भः ।

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्त्तुश्चायुश्चिरमपिकरोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ॥नीहारांशौ भवति जडता पंच

ता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्त्तयंत्यैवमाद्याः ॥७२॥

टीका—गुरु, शुक्र, बुध, इन तीन वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्या शीघ्रही प्राप्त होतीहै—और चिरंजीवी होताहै—और रविवार मध्यम है—सोमवारको बुद्धि जड़ होतीहै—मंगल और शनिवारको विद्यारंभ करनेसे मृत्यु होताहै—यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहा है ॥ ७२ ॥

टीका।

वारोंकेनाम	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारोंकेपति	शिव	पार्वती	स्कंध	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
विचारयोग्य समय	८ प्रहर	२रात्री ४प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	दिनदोष	रात्रिदो.	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उक्तकर्म सिद्ध	सर्वकाम सिद्ध	उक्तकर्म सिद्धि	कर्मसिद्ध	कर्मसि.	कर्मसि.	उक्तकर्म सिद्धि
तैलाभ्यंग	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युद	लक्ष्मीप्र.	वित्तना.	दुःखद	संपत्तिप्र.
वस्त्र परिधान	जीर्ण होय	सदा गीलारहे	शोक प्राप्ति	धन प्राप्ति	ज्ञान प्राप्ति	इष्ट सन्मान	मलिन रहे
श्मश्रुकर्म	१महीना आ.न्यून	७महीना आ.वृद्धि	८महीना आ.न्यून	५मास आ.वृद्धि	१०मास आ०वृ.	११मास आ०वृ.	७मास आ.न्यू.
विद्यारम्भः	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	आयु.वृ. अर्थसि.	तथा	तथा	मृत्यु

नक्षत्रपरिज्ञान।

द्विनिघ्नमासस्तिथियुग्विधूनो भशेषितः स्यादुडुशेषसंख्या ॥
मासस्तुशुक्लादितएवबोध्यः कृष्णेद्विहीने मुनयो वदंति॥७३॥

टीका—चैत्रसे लेकर गत मास चलते मास सहित दूने करे और उसमें गत तिथि चलते दिवस समेत मिलावे और एक घटावे शेषमें सत्ताईसका भाग

देनेसे शेष बचे वही नक्षत्रकी संख्या जानिये ॥ ३७ ॥

अश्विनीभरणीचैवकृत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः॥७४॥ पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ॥ हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनंतरम् ॥ ७५ ॥ अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढअभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ धनिष्ठा शततारारूयं पूर्वाभाद्रपदा ततः । उत्तराभाद्रकश्चैव रेवत्येतानि भानिच ॥ ७६ ॥

अथ गमनादौ शुभाशुभनक्षत्राणि ।

अश्विनीतुशुभाप्रोक्ता भरणी नाशकारिणी ॥ कार्येग्नीकृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः ॥७७ ॥ मृगः शुभस्ततश्चार्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ॥ पुष्यः शुभः सार्पमघापूर्वास्व नाशमृत्युदाः ॥ ७८ ॥ उत्तराहस्तचित्रास्तु विद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः ॥ स्वातीविशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ ॥ ७९ ॥ ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयक्षय नाशार्थहानिदम् ॥ विश्व ब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ॥८०॥ वासवं वरुणं शैवंशुभं भद्रं मृत्तिप्रदम् ॥ उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका॥८१॥

नक्षत्रोंके स्वामी ।

भेशादस्त्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता अदित्यंगिराः सर्पाः कव्यभुजो भगोर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात्॥इन्द्राग्नी त्वथ मित्र इंद्रनिर्ऋतिर्नीरं च विश्वे विधिर्वैकुंठो वसुपाश्यजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ ८२ ॥ ॥ अधोमुखनक्षत्रम् ॥ मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणि पूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ॥ तिर्यङ्मुखनक्षत्रम् ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरपूपानुराधानिलत्वष्ट्रारूयानि वदंति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येपुच ॥ ८३ ॥ ऊर्ध्वमुखनक्षत्रम् ॥ पुष्याद्रांश्रवणोत्तराशतभिषक्त्राह्मश्रांवष्ठाह्वयान्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथे-

तेषुतु ॥ ८४ ॥ ध्रुवस्थिर नक्षत्राणि ॥ रोहिणीसहितमुत्त-रात्रयंकीर्तयंति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ ८५ ॥ मृदुन० ॥ त्वाष्ट्र-मित्रशशिपूषदैवतान्यामनंति मुनयो मृदून्यथ ॥ ८६ ॥ लघु नक्षत्राणि ॥ अश्विनी गुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघु चतुष्टयं मतम् ॥ ८७ ॥ ॥ तीक्ष्णनक्षत्राणि ॥ ॥ मूलशुक्रशिवसार्प देवतान्युशंत्यथचतीक्ष्णसंज्ञया॥८८॥चरनक्षत्राणि॥ वैष्ण-वत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपंचकं त्विदम् ॥ ८९ ॥ उग्रनक्षत्राणि ॥ ॥ पूर्विकात्रितयमंतकं मघात्युग्रपंचकमिदं जगुर्बुधाः ॥ ९० ॥ मिश्रनक्षत्राणि ॥ हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मित्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥९१॥ चरादिनक्षत्राणि ॥ चरं चलं क्रूरमुशंति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ॥ क्षिप्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवंति ॥ ९२ ॥

अंधादिक नक्षत्रसंज्ञा।

अंधकं तदनु मंदलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥
रोहिणीप्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनःपुनः ॥ ९३ ॥

नक्षत्रोंके स्वरूप।

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्त-मांगेनतुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रंभाति शालोपमम्भं शयन-सदृशमन्यच्चात्र पर्यंकरूपम्॥९४॥हस्ताकारमतश्चमौक्तिक-समंचान्यत्प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवत्स्थितं बलिनिभं सत्कुंडलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्या-समानंपरंचान्यद्दंतिविलासवत्स्थितमतः शृंगाटिभंव्यक्तिमत् ॥ ९५ ॥ त्रिविक्रमाभंचमृदंगरूपंवृत्तं ततोन्यद्यमलद्वयाभम्। पर्यंकरूपं मुरजानुकारि इत्येवमश्वादिकचक्ररूपम्॥ ९६ ॥

नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या।

वह्नित्रित्रृत्विषुगुणेंदुकृताग्निभूतबाणाश्विनेत्रशर-

भूकूयुगाब्धिरामाः ॥ रुद्राब्धिरामगुणवेदशताद्वियुग्म
दंताबुधैर्निगदिताः क्रमशोभतारा: ॥ १७ ॥

संख्या	नक्षत्रोंके नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामिकों नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा नाम	नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृति	संख्या तारोंकी
१	अश्विनी	शुभ	अश्वि.कु.	तिर्यङ्मु.	लघु	क्रूर	मंदलोच.	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	साधा.	मध्यलो०	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	स्थिर	सुलोचन	क्षुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	मैत्र	अंधलो०	शकट	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	दारुण	मंदलोच.	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	चल	मध्यलो०	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यङ्मु.	चर	क्षिप्र	सुलोचन	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	दारुण	अंधलो०	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	क्रूर	मंदलोच.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	शालासम	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युद	भग	अधोमुख	उग्र	स्थिर	सुलोचन	शय्यासम	२
१२	उत्तराफा.	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	क्षिप्र	अंधलो०	पर्यंकसम	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु.	लघु	मैत्र	मंदलोच.	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	तिर्यङ्मु.	मृदु	चल	मध्यलो०	मौक्तिक	१
१५	स्वाति	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मु.	चर	साधा.	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	मैत्र	अंधलो०	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	क्षिप्र	मंदलोच.	बलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	तिर्यङ्मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	कुंडल	३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोचन	सिंहसम	११
२०	पूर्वाषाढा	हानि	उदक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	अंधलो०	शय्यासम	४
२१	उत्तराषा.	बुद्धिदा	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजित्	वृद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	अंधलो०	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अंधलो०	वामनसम	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मंदलोच.	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजैक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा.	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्र	अंधलो०	मृदंगसम	३२

कार्याकार्यविचार।

अधोमुख।

वापीकूपतडागगर्तपरिखा खाता निधेरुद्धृतिक्षेपौ
द्यूतबिलप्रवेशगणितारंभाः प्रसिध्यंति च ॥

टीका–अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्लेषा पूर्वाफा० पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा इनमें वापी कूप ताल गर्त्त और खाई खोदना द्रव्य काढना और रखना जुआ खेलना बिलांतप्रवेश गणितारंभ ये कर्म करने योग्य हैं ॥

तिर्यङ्मुख।

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदांत्यश्वनौ
गंत्रीयंत्रहलप्रवाहगमनारंभाः प्रसिध्यन्तिच ॥

टीका–तीर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोडा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेंढा सूकर श्वान लेना, नाव पानीमें डारना गंत्री यंत्र हल चलाना धारण गमनादिक करे

ऊर्ध्वमुख।

प्रसादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-
च्छ्राया रामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादिच ॥

टीका–पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा शतभिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको ऊर्ध्वमुख कहतेहैं इनमें देवस्थान ध्वजा मंडप घर कोट भींति तोरण बाग राज्याभिषेक आदिकर्म करने योग्य हैं ॥

ध्रुवनक्षत्र।

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशांतिषुहितं स्थिरेषुच ॥

टीका–रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्र हैं, इनमें बीज बोना, हर्म्य, तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, बाग लगाना, ये कर्म करने योग्य हैं ॥

मृदुनक्षत्र।

मित्रकार्यरतिभूषणांबरोद्गीतिमंगलविधानमेषु तु ॥

टीका—मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इनको मृदु कहते हैं इनमें मित्रकार्य स्त्रीप्रसंग भूषण और वस्त्रधारण गाना आदि नाना प्रकारके मंगल कर्म करने योग्य हैं ॥

लघुनक्षत्र।

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषुसिद्धिदम् ॥

टीका—अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनको लघु कहते हैं इनमें दुकान खोलना, भूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारखाना ज्ञानविद्या, शिल्पविद्या प्रस्थान गमनादिक शुभ हैं ॥

तीक्ष्णनक्षत्र।

भूतयक्षनिधिमंत्रसाधनं भेदवन्धवधकर्म चात्रतु ॥

टीका—आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा मूल ये तीक्ष्ण नक्षत्र हैं इनमें भूत और यक्षादिकोंकी पीड़ाका निवारण करना, द्रव्य काढना, मंत्रसाधन, भेद बंधन, वध ये कर्म उक्त हैं ॥

चरनक्षत्र।

दंतवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ॥

टीका—पुनर्वसु स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका ये चर नक्षत्र हैं इनमें हाथी, घोडा, नानाप्रकारके वाहन, बागमें जाना, पालकी रथ गाडी आदिकी सवारीमें बैठना योग्य है ॥

उग्रनक्षत्र।

शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्मृतम् ॥

टीका—भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बंधन, उत्साह, शस्त्र, जलाना आदिकर्म करना विहित है ॥

मिश्रनक्षत्र।

स्वाभिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ॥

टीका—कृत्तिका विशाखा भरणी ये मिश्रहैं इनमें नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य हैं ॥

नष्टवस्तुकेदेखनेकाप्रकार।

(नक्षत्रोंकीलोचनसंज्ञा)

अंधके लभतेशीघ्रं मंदके च दिनत्रयम् ॥
मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥

टीका—अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मंदलोचनमें जानेसे ३ दिन पीछे प्राप्त होतीहै, मध्यलोचन नक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो ६४ दिवस पर्यंत मिलजाय, सुलोचनमें गई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती ॥ १ ॥

नष्टवस्तुदिग्ज्ञान।

अंधकेपूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ॥
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥

टीका—अंधे नक्षत्रमें नष्टवस्तु पूर्व दिशामें जानिये और मंदलोचनमें नष्ट वस्तु दक्षिणमें और मध्यलोचनकी पश्चिम दिशामें और सुलोचनमें गत वस्तु उत्तर दिशामें जानिये ॥

अंधादिनक्षत्रोंमें नष्टवस्तुको प्राप्तिहोनी वा न होनी।

अंधे सद्यःप्राप्यते वस्तुनष्टं कष्टात्प्राप्यं मंदनेत्रे च तद्वत् ।
दूराच्छ्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥

टीका—अंध नक्षत्रमें नष्टवस्तु शीघ्र प्राप्ति होतीहै, मंदलोचनकी वस्तु परिश्रम और विलंबसे और मध्य लोचनकी गई वस्तु दूर जानिये और मिलनेवालीभी नहीं और सुलोचनमें नष्ट हुई वस्तु न सुननेमें आवे न मिले॥

नक्षत्रअनुसारप्रश्न।

मघादिआर्यमांतं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥ हस्तादिवसु-

पर्यंतमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ १ ॥ शततारावमांतंतु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥ अश्यादिसार्पपर्यंतमदृष्टं दूरगंतथा ॥

टीका–मघासे लेकर उत्तराफाल्गुनी पर्यंत जो वस्तु चोरी जाय तो वह समीप जानिये,हस्तसे धनिष्ठातक दूसरे हाथमें वस्तु जानिये,शतभिषासे भरणी तक अपने घरमें जानिये और कृत्तिकासे श्लेषातक गई वस्तु प्राप्त नहीं होती।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ॥ दिक्संख्ययाहतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः॥एकेनभूतले द्रव्यंद्वयंचेद्भांडसंस्थितम् ॥ तृतीये जलमध्यस्थमंतरीक्षेचतुर्थके ॥ तुषस्यं पंचमेतुस्या-त्षष्ठेगोमयमध्यगं ॥ सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

टीका–प्रश्नसमयकी तिथिवार और गत नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करै और इनमें प्रहर मिलाके आठगुणा करै और सातका भाग देनेसे जो शेष रहै उससे फल विचारै ॥ एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये. और २ शेष रहै तो बर्तनमें. ३ शेष रहें तो जलमें ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये. और ५ बचें तो तुसमें, ६ बचें तो गोबरमें और ७ बचेंतो भस्ममें वस्तु जानिये ॥

दिवारात्रिमुहूर्त्तान्याह।

शिवोहिर्मित्रपितरौ वस्वंभोविश्ववेधसः॥विधिरिंद्रोऽथशक्राग्नी रक्षोंऽधीशोर्यमाभगः ॥ मुहूर्त्तेशाइमेप्रोक्ता दिवापंचदशक्र-मात् ॥ मुहूर्त्ताराजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ॥ दस्रात्पंचा-दितेर्जीवो विश्वकौतक्षमारुतैः ॥ दिनमानस्य तिथ्यंशोरात्रे-रपि मुहूर्त्तकाः॥ नक्षत्रनाथतुल्येस्मिन् स्थितकार्यात् खभो-दितम् ॥ दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसंघेषु सत्स्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥

अथ रव्यादिवारत्याज्यमुहूर्त्ताः।

अर्यमाभानुमद्वारे चंद्रेहि विधिराक्षसौ ॥ पित्राग्नी कुजवारे तु चंद्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ पित्राब्राह्मौभृगोर्वारे राक्षसाम्बूगुरो दिने ॥ रौद्रासार्पौशनेरह्नि इमेत्याज्यामुहूर्त्तकाः ॥ २ ॥

दिवारात्रिचक्रम्।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	स
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अंबु	विश्वे	विधि	विधि	इंद्र	इंद्र।	राक्ष.	वरुण	अर्य.	भग	मुहू.
आ०	श्लेषा	अनु.	मघा	धनि	पूषा	उत्त	ऽभि.	रोहि	ज्ये.	वि.	मूल	शत	उ.	पू०	नक्ष.
रुद्र	अजै.	अहि	पूषा	दस्र	यम	आग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदि	गुरु	वि.	सूर्य	त्वा.	वायु	रात्रि
आ०	पू भा	उ.	रेवती	अश्वि	भर.	कृत्ति	रोहि	मृग	पुन.	पुष्य	श्रव	हस्त	चि.	स्वा.	नक्ष.

अथरव्यादिवारे त्याज्यचक्रम्।

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
							मुहूर्ताः
							नक्षत्र
	रा. ८	रा. ७	रा. ०	रा. ६	रा. ९	रा. १	दिनरात्रि

मद्यकाढनेकामुहूर्त।

रौद्रैंद्र्येवारुणे पौरुहूते याम्येसार्पेनैर्ऋते चैवधिष्ण्ये॥
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारंभः कालविद्भिःपुराणैः॥

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मद्य काढनेका प्रारंभ करे॥ १॥

नवीनवस्त्रधारण।

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभेत्र्युत्तरेपि च पुनर्वसुद्वये॥
रेवतीषु वसुदैवते च भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते॥

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और करावे॥

मोतीसुवर्णमणिरक्तवस्त्रधारण।

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चकेच मार्त्तंडभौमगुरुमंत्रिशशांकवारे॥
मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदंतशंखरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्ध्यै॥

टीका—अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक्र सोम इन वारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूँगा हस्तिदंतका चूडा,नूतन शंख पूजामें लाना,रक्त वस्त्र धारण करना शुभ जानिये॥

पुंसवनकेनक्षत्र।

श्रवणःसकरःपुनर्वसुर्निर्ऋतेर्भं च सपुष्यको मृगः॥
रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु॥

टीका—श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर और रवि भौम गुरु ये ३ वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं॥

कर्णवेधन।

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रैः॥
सेन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयोहिं शिशूनाम्॥

टीका—रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनमें बालकका कर्णवेध करावे॥

अन्नप्राशन।

रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मयतः पृथगपि द्वितयेच॥
प्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम्॥

टीका—रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंने आयमें और नया अन्न भक्षण करना कहाहै॥

क्षौरकर्म।

पुष्येपौष्णे चाश्विनीष्वैंदवेच शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेष्वादित्याः॥
क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वा भौमादित्यापातंगिवारान्॥

टीका—पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमें श्मश्रुकर्म कराईये और ये वार वर्जित है. भौम रवि शनि इनमें नकरे॥

दंतबंधन।

येषुयेषुप्रशंसंति क्षौरकर्ममहर्षयः॥
तेषुतेष्वेव शंसंति नखदंतादिलेखनम्॥

टीका–दंतबंधन और वेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्र ऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे हैं इन्हींमें करना॥

आज्ञयानरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च॥
बंधमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम्॥

टीका–राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतकके अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनसे छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देनेवाला होताहै॥

ताराशुद्धं क्षौर रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा॥
शुक्रविशुद्धायात्रा सर्वशुद्धं शशांकेन॥

टीका–क्षौरकर्ममें नक्षत्रकी शुद्धि और व्रतके प्रारंभमें दीक्षाके लेनेमें रवि गुरुकी शुद्धि और यात्रामें शुक्रशुद्धि और चंद्रमाकी शुद्धि सबकामोंमें चाहिये॥

श्मश्रुकर्ममें वर्जनीय।

भद्रापर्क्षांतरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीषुरात्रौ संध्यापातार भास्वच्छनिषुघटधनुःकर्ककन्यागतेर्के॥ जन्मर्क्षेजन्ममासे सुरदिनयजने भूषितो ग्रामयायी भुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः सम-दिनरजिगःश्मश्रुकार्यं न कुर्यात्॥

टीका–भद्रा पूर्णिमा अमावास्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिवस अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिवस छठेमें रात्रिमें संध्याकाल व्यतिपातादिक दुष्टयोग भौमवार रविवार शनिवारमें कुंभ धनु कर्क कन्या इन चार राशियोंके सूर्यमें जन्मनक्षत्र और जन्ममास देवताके पूजन वा हवनादिकर्मदिवस अलंकारादि धारण दिवस भोजनके पीछे तेल लगाने और स्नानके पीछे मंगल अभिषेक तथा स्त्रीके रजस्वला होने और सम दिवस आदिकमें क्षौरकर्म वर्जनीय है॥

मौंजीबंधन ।

सौम्येपौष्णे वैष्णवेवासवाख्ये हस्तेस्वातित्वष्ट्रपुष्याश्विभेषु ।
ऋक्षेदित्यांमेखलाबंधमोक्षौ संस्मर्येते नूनमाचार्यवर्यैः ॥

टीका—मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजीबंधन त्यागना ऐसा आचार्योंने श्रेष्ठ कहाहै ॥

विवाहनक्षत्राणि ।

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ॥
निर्विधाभिरुडुभिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥

टीका—मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा तीनों उत्तरा इन सब नक्षत्रोंमें विवाह शुभ जानिये ॥

अग्निहोत्रारंभः ।

प्राजापत्ये पूषभेसद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ॥
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥

टीका—रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका और तीनों उत्तरा इनमें प्रथम अग्निहोत्र प्रारंभ करे ॥

विद्यारंभमुहूर्त ।

मृगादिपंचस्वपि भेषु मूले हस्तादिकेच त्रितयेश्विनीषु ॥
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारंभमुशंतिसिद्ध्यै ॥

टीका—मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती आश्विनी पूर्वाषाढा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें बालकको प्रथम विद्याभ्यास आरंभ करावे ॥

औषधिग्रहण ।

पौष्णद्वयेचादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ॥
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदंति संतः ॥

टीका—रेवती आश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रोंमें औषध बनाना खाना शुभहै ॥

रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभनक्षत्र।

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वेन्द्रयेषु शाकेभौमे सूर्य्यजे सूर्यवारे ॥
नंदारिक्तास्वेवरोगस्य चार्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शंकरोरक्षितापि ॥

टीका–स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा और भौम शनि रवि ये वार, नंदा तिथी कहिये पडवा षष्ठी एकादशी और रिक्ता कहिये चौथ नौमी चतुर्दशी इनमें रोग उत्पन्न होते हैं.उनकी शिवभी रक्षा नहीं कर सकते ॥

रोगसे मुक्ति होनेका प्रमाण।

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात् ॥
वश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यास्याद्वासराणांमघासु ॥

टीका–रोग उत्पन्न होनेके दिवस जो रेवती अथवा अनुराधा होय तो रोगीके प्राण अति कठिनतासे बचैं, उत्तराषाढा अथवा मृगशिर होय तो एकमास पर्य्यंत और मघा होय तो वीस दिवसतक पीडा रहै ॥

पक्षाद्धस्तेवासवे सद्विदैवे मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येनवाहात् ॥
याम्येत्वाष्ट्रेवैष्णवे वारुणे च नैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात् ॥

टीका–हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न रोग १५ दिवस रहताहै और धनिष्ठा विशाखा मूल अश्विनी कृत्तिकामें उत्पन्न ९ दिन और भरणी चित्रा श्रवण शततारकामें उत्पन्न हुआ रोग ११ दिवस भोगना होता है ॥

आहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ॥
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥

टीका–उत्तराभाद्रपदा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुआ रोग सात दिवसतक निश्चय भोगना पडता है यह गर्गमुनिका वाक्य है ॥

रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र।

इंदोर्वारेभार्गवे च ध्रुवेपुसार्पादित्यस्वातियुक्तेपुभेषु ॥
पित्र्येचान्त्येचैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जंतोः ॥

टीका--सोम शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा और आश्लेषा पुनर्वसु स्वाती ये शुभ हैं. और मघा रेवती इनमें रोगीका स्नान अयोग्य और दुःखदायक है ॥

रोगमुक्तस्नानलग्न।

लग्नेचरे सूर्यकुजेज्यवारेरिक्तातिथौचन्द्रबले च हीने ॥
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानंहितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥

टीका--मेष कर्क तुला मकर ये चरलग्न, रवि भौम गुरु ये वार और रिक्तातिथि ४ । ८ । १४ और चन्द्र हीनबल होय, केंद्र तथा त्रिकोणमें पाप ग्रह होय ऐसी लग्नमें स्नान करावे तो आरोग्य होय ॥ ५ ॥

लता औषधीवावृक्षारोपण।

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानिमूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ॥
लतौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥

टीका--हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशाखा और मृदु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें लता औषधी और वृक्षोंका लगाना शुभहै ॥

कूपारंभकेनक्षत्र।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ॥
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारंभे श्रेष्ठमाद्या मुनींद्राः ॥

टीका--हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा तीनों उत्तरा और रोहिणी इन नक्षत्रोंमें अगले मुनीश्वरोंने कूपारंभ श्रेष्ठ कहाहै ॥

द्रव्यदेनावास्थापितकरना।

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ॥
हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥

टीका--साधारण उग्र ध्रुव और दारुणसंज्ञक नक्षत्रोंमें जो दूसरेको द्रव्य दे वा स्थापित करै तो वह वस्तु फिर प्राप्त नहीं होय ॥

हस्तीलेनावादेना।

हस्तेषुचित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुनर्वसौ च ॥

प्रोक्तानि सर्वाण्यपिकुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥

टीका–हस्त चित्रा अश्विनी स्वाती पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें हाथी लेना और देना और उसके अलंकार शृंगारादिक सकल कर्म करना गर्गादिमुनियोंने शुभ कहेहैं ॥

अश्वलेना वा देना।

पुष्यश्रविष्ठाश्विनसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ॥
सवारुणर्क्षेषु बुधैःस्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमाणाम् ॥

टीका–पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त शतभिषा इन नक्षत्रोंमें तुरंग ले और दे तथा उसके अलंकार और शृंगारआदि कर्म करे

गवादिपशुओंकेनगरमेंलाने और पहुँचानेमें वर्ज्य।

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान्पशूनां न कदाचिदेव ॥

टीका–चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी इनमें गवादिपशुओंको ग्राममें न लावें और न बाहिर पहुँचावे ॥

गवादिपशुओंकेक्रयविक्रयमेंवार्जित।

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥

टीका–ज्येष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रोंमें गायका बेचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय हैं ॥

तृणकाष्ठादिसंग्रहमेंवर्ज्य।

वासवोत्तरदलादिपंचके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ॥
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकावितरणं च वर्जयेत् ॥

टीका–धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे लेकर पांच नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं इनमें दक्षिण दिशाका गमन और घर बनाना प्रेतदाह तृण काष्ठ संग्रह शय्यादिक निर्माण करना वर्जितहै ॥

हलचलानेकानक्षत्र ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषुभेषु ॥
हलप्रवाहंप्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ॥

टीका–मृदु ध्रुव क्षिप्र चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें तथा मूल और मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें रोगरहित आंडू बैलोंसे प्रथम हल चलावै ॥

बीजबोना ।

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेंद्राण्याहुर्जघन्यानि तथा बृहंति ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनींद्रैः ॥
बृहत्सुधान्यंकुरुतेसमर्घं जघन्यधिष्ण्येभ्युदितो महर्घः ॥
समेषुधिष्ण्येषु समंहिमांशुर्वदंति संदिग्धमिदं महांतः ॥

टीका–आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शतभिषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंको जघन्य कहतेहैं इनमें मासकी आदिमें जो चंद्रमा उदय होय तो धान्य महँगा होय, ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु इनको बृहत् कहतेहैं इनमें चंद्रमा उदय होय तो अन्न सस्ता होय और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चंद्रोदय होनेसे अन्नका भाव साधारण रहताहै ॥

राशिपरत्वमें चंद्रोदयकाफल ।

मीनमेषोदितश्चंद्रः सततंदक्षिणोन्नतः ॥ शेषोन्नतश्चोत्तरायां
समतावृषकुंभयोः ॥ विद्वरंतुसमे चंद्रेदुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥
सुभिक्षंक्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचंद्रमाः ॥

टीका–मीन अथवा मेष राशिमें जो शुक्र द्वितीया चंद्रमाका उदय होय तो उससे दक्षिणको उन्नत जानिये और उससे दुर्भिक्षका संभव होताहै और मिथुनसे लेकर मकर पर्यंत जो चंद्रोदय होय तो उत्तरको उन्नत जानिये यह चंद्रमा सुभिक्ष क्षेम और आरोग्यताका कर्त्ता वृष और कुंभमें चंद्रमाका उदय होय तो सम रहताहै इसमें राजाओंके कलह और विद्वरता होतीहै ॥

पुष्यनक्षत्रकेगुणदोष ।

परकृतमखिलं निहन्तिपुष्यो न खलु निहंति परंतु पुष्यदोषम्॥
ध्रुवममृतकरोप्यगोपिपुष्ये विहितमपीति सदैव कर्मसिद्धिम् ॥

टीका-पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थान स्थित चंद्रके दोषको दूर करता है परंतु उसी नक्षत्रका दोष होय तो वह दूर नहीं होता. और इस नक्षत्रमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है॥

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषुचित्रानुराधामृगरेवतीषु ॥
स्वातीधनिष्ठासु मघासुमूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठा ॥

टीका-हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती स्वाती धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज बोनेसे खेत अधिक फलतेहैं॥

सर्पदंशविचार।

यःकृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पांतकार्द्रासु भुजंगदष्टः ॥
सवैनतेयेन सुरक्षितोपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥

टीका-कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रोंमें जो सर्प काटे तो गरुडकोभी रक्षक होनेपर मनुष्य मृत्युको प्राप्त होय ॥

गानारंभविचार।

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ॥
पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चंद्रवर्ती नृत्यारंभे शोभनो ऋक्षवर्गः ॥

टीका-हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनों उत्तरा और शुभ चन्द्रमा पाकर गाने और नृत्यकाप्रारंभ करना पूर्वाचार्योंने शुभ कहाहै ॥

राज्याभिषेकनक्षत्र।

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषु तिसृपूत्तरासुच ॥
रेवतीमृगशिराश्विनीषुच क्ष्माभृतां समभिषेकइष्यते ॥

टीका-अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक करना उचित है ॥

राजदर्शन।

सौम्याश्वितिष्यश्रवणश्रविष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभपूषभानि ॥
मैत्रेणयुक्तानिनरेश्वराणां विलोकनेभानि शुभप्रदानि ॥

टीका-मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव चित्रा रेवती अनुराधा इन नक्षत्रोंमें राजाका प्रथम दर्शन शुभदायक है ॥

पुष्यकाफल ।

सिंहोयथासर्वचतुष्पदानां तथैवपुष्योवलवानुडूनाम् ॥
चन्द्रेविरुद्धेप्यथ गोचरेपि सिद्ध्यंति कार्याणिकृतानिपुष्ये ॥

टीका-जैसे सब चतुष्पद जीवोंमें सिंह बलवान् है वैसेही नक्षत्रोंमें पुष्य है; पुष्यमें किया कार्य गोचर दोष और कनिष्ठ अर्थात् चौथा आठवां बारहवां चंद्र होने परभी सिद्ध होताहै ॥

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारोपि विलोमगोपि ॥
करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥

टीका-ग्रह करिके विद्ध वा अशुभ ग्रह करिके युक्त होय अथवा तारा इससे प्रतिकूल होय तथापि पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होताहै; परंतु विवाहमें पुष्यनक्षत्र वर्जितहै ॥

योगप्रकरण ।

प्रतिदिनके योगजाननेकी रीति ।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेवच ॥
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्याद्दक्षशेषतः ॥

टीका-पुष्यसे सूर्यनक्षत्रतक चलते नक्षत्रोंको गिनै और श्रवणसे दिवसनक्षत्रतक गिनै, दोनों संख्याओंको इकट्ठा करै और सत्ताईसका भाग देवै जो शेष रहै वही योग जानिये ॥

योगोंकेनाम ।

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगंडःसुकर्माचधृतिः शूलस्तथैवच ॥ गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातोहर्षणस्तथा ॥ वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेंद्रो वैधृतिःक्रमात् ॥ सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥

टीका–विष्कंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान् १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्र २४ ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये सत्ताईस योग निजनामके तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नामोंका अर्थ है वही फल जानों ॥

योगोंमें वर्जनीयघटिका।

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः॥ सवैधृतिस्तुव्यतिपातनामासर्वोप्यनिष्टः परिघस्यचार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपंचशूले ॥ गंडेतिगंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥

टीका–और इनमें अशुभ योगोंका आदिका चतुर्थांश वर्जनीयहै, व्यतीपात वैधृती ये सम्पूर्ण और विष्कंभकी ३ वज्रकी ४ व्याघातकी ५ गंडकी ६ अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घडी सकलशुभकार्यमें वर्जनीय हैं ॥

करणजाननेकी रीति।

गततिथ्योद्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ॥
एकोनाः सप्तहृच्छेषः करणं स्याद्बवादिकम् ॥

टीका–शुक्लप्रतिपदासे जिस तिथिका करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथिको द्विगुणी करै तिसमें एक मिलाकर सातका भाग दे जो शेष बचै वही उस तिथिका करण जानिये, और प्रत्येक तिथिको दो करण भोगते हैं ॥

नाम।

ववाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततोभवेत्तैतिलनामधेयम् ॥
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त॥
अंतेकृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः ॥ ज्ञेयंचतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नंप्रतिपद्दले ॥

स्वामी।

इन्द्रोब्रह्ममित्रनामार्यमाभूः श्रीःकीनाशश्चेति तिथ्यर्धनाथाः ॥
कश्युक्षाख्यौ सर्पवायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम्॥

कृत्य।

पौष्टिकस्थिरशुभानिववाख्येबालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवेप्रमदमित्रविधानं तैत्तिलेशुभगताश्रयकर्म ॥ गरेचबीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥ नसिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विपारिघातादिषु तंत्रसिद्धिः ॥ मंत्रौपधानिशकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्मचतुष्पदेति ॥सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे किंस्तुघ्ननाम्निनिखिलं शुभकर्मकार्यम् ॥

शुक्लतिथी६०				कृष्णतिथी६०				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरद		पूर्वदल		उत्तरद				
१	स्थिर			०	०	०	०	किंस्तु.	वायु	समस्त शुभकार्य करै
५	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रतउत्साह देवालय आदि शुभकर्म करै
२	९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणोंसे हितकरै
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रताकरै
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादिक मंगलकार्य करै
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गरज	भूमि	बीजबोना हल चलाना
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा घर दुकान और व्यापार करावै
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि.	यम	सकल कर्म वर्जित परंतु विप और घात ये क्रूरकर्म वर्जित नही
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कलि	मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावै
स्थिर		०	६	३०	०	०	०	चतुष्प	वृषभ	गौ ब्राह्मण राज्य पितृ इनसंबंधी कृत्य करावै
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्यकर्म गुद्दमेंजाना धीरज और विद्याभ्यास करना ये कर्म करावै

कल्याणीतिथिमानम्।

कृष्णेग्निदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ॥ शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्णयोः ॥ मनुवसुमुनितिथियुगदशशिवगुण

संख्यासुतिथिषुपूर्वांत्याः ॥ आयातिविष्टिरेषापृष्ठेषुभद्रा पुरस्त्वशुभा ॥ शास्त्रार्थः ॥ दिवासर्पमुखी भद्रारात्रौभद्रा च वृश्चिकी ॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छंपरित्यजेत् ॥ रात्रिभद्रायदाह्निस्याद्दिवाभद्रायदानिशि ॥ नतत्रभद्रादोषः स्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ शरीरभागः ॥ नाड्यस्तु पंचवदनेथगले तथैकावक्षोदशैकसहितंनियतं चतस्रः ॥ नाभ्यांकटौषडथ पुच्छलता च तिस्रोविष्टेर्बुधैरभिहितोंगविभाग एषः॥स्थानफलम्॥ मुखेकार्यध्वस्तिर्भवति मरणं चाथगलके धनाहानिर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौदेशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्वमुनयः॥ चंद्रः ॥ मीने मेषालिकर्कैशशिनि निवसति स्वर्गसंस्थापि विष्टिः कन्यायां तौलिसंस्थेधनमिथुनगते नागलोकेनिवासः ॥ कुंभेसिंहेवृषेवा मकरमुपगतेराजतेमृत्युलोके भद्राचंद्रप्रभावा हिमकरतनया नोशुभा लौकिके स्यात्॥स्थानफलम् ॥ स्वर्गेभद्राभवेत् सौख्यं पाताले च धनागमः ॥ मृत्युलोके यदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि ॥ वारानुसारनाम ॥ सोमेशुक्रे च कल्याणी शनौ चैवतुवृश्चिकी ॥ गुरौपुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषुभद्रिका ॥

तिथि		शास्त्रार्थ	स०	स्थान	फल	चंद्र स्थान		फल	वार	नाम
कृष्ण	३	इनतिथियाकी ३० घडी	३	पुच्छ	विजय	मीन	स्वर्ग	सौख्य	सो	कल्याणी
		उत्तरार्द्धकीभद्रातिस्काना				मेष			शु	
	१०	मवृश्चिकादिवसमहोताहै	६	कटि	बुद्धि	वृश्चि				
शुक्ल	४	उत्तरकी३०घटिका पुच्छ			नाश	कर्क			श	
		वर्जनीय मुख शुभहोय,	५	नाभि	कलह	कन्या	पाताल			वृश्चिक
	११	उत्तरार्द्ध कहिये रात्रि	११	कपाल	धन	तुला		धनप्राप्ति		
कृष्ण	७	३०घ पूर्वार्द्धकाभद्राकाना			नाश	धन			गुरु	पुण्यवती
		मसर्पिणारात्रिमआतीहैउ	१	गल	मरण	मिथु				
	१४	सका५घडामुखवर्जनीयहै				कुंभ	मृत्यु			
शुक्ल	८	विध्वंस करता पाछे पुच्छ	५	मुख	विध्वस	सिंह		अशुभ	रवि	भद्रका
		शुभहोय पूर्वार्द्धकहिये				वृषभ			बुध	
	१५	दिवसमे भद्राहोय	३०			मकर			भौ.	

दैत्यैः समरेऽमरेषु विजितेष्वीशःक्रुधादृष्टवान् स्वंकायात्किलनिर्गतारवरमुखीलांगूलिनीचक्रपात् ॥ विष्टिःसप्तभुजामृगेंद्र-

गलकाक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैःसुरैस्तुकरणप्रांतेनियुक्तातुसा

टीका--दैत्य और देवताओंमें बडा घोर युद्ध हुआ तब देवताओंका पराजय हुआ, तिस समय शिवजीके क्रोध करनेसे उनकी देहसे एक स्त्री गर्दभमुखी पुच्छवती पहियेके समान जिसके चरण विष्टिनाम सप्त भुजा मृगकीसी ग्रीवा कृश उदर प्रेतपर चढी दैत्योंके वध करनेवाली निकली और देवताओंने प्रसन्न होके करणोंके प्रांतभागमें स्थापितकी ॥

संक्रांतिः।

वारानुसारनाम ॥ ॥ घोरारवौध्वांक्ष्यमृतद्युतौचसंक्रांतिवारेच महोदरीस्यात् ॥ मंदाकिनीज्ञेचगुरौचनंदामिश्राभृगौराक्षसि चार्कपुत्रे॥ ॥नक्षत्रोंके अनुसारनाम ॥ ॥उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुव- मिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैःसंक्रांतिरर्कस्यघोराद्याःक्रमशोभवे- त् ॥ ॥ फल ॥ ॥ ध्वांक्षीवैश्यान्सुखयति महोदर्यलंचोरसा- र्थान्घोराशूद्रानथनरपतीनेवमंदाकिनीच ॥ नंदाख्याचद्विजव- रगणान्मिश्रकाख्यापशूंश्च चांडालांतांप्रकृतिमखिलांराक्षसी संज्ञिताच ॥ ॥ कालफल ॥ ॥ पूर्वाह्णकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्म- ध्यंदिनेचाथविशोपराह्णे ॥ शूद्रान्नवावस्तमितोप्रदोषेपिशाच- कान्रात्रिचरान्निशीथे॥ नटादिकांश्चापररात्रिकाले प्रत्यूषका- लेपशुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्कस्यसमस्तलिंगा प्रभातसंध्या- समयेनिहंति ॥ ॥ दिशाकोमुख ॥ ॥ अर्कशुक्रेमुखंपूर्वे सौ- म्येभौमेचदक्षिणे ॥ शनौचंद्रेमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी ॥

वार और नक्षत्रोंके अनुसार जाननेकाकोष्ठक।

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रोंकोसुख	पूर्वाण्ह	विप्रराजाओं.	पूर्वको
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंकोसु॰	मध्यान्ह	वैश्योंको	पश्चिमको
भौम	चर	महोदरी	चोरोंकोसु॰	अपराण्ह	शूद्रोंको	दक्षिणको
बुध	मैत्र	मंदाकि.	राजाओंकोसु.	प्रदोष	पिशाचोंको	दक्षिणको
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजगणको॰	अर्द्धरात्रि	राक्षसोंको	उत्तरको
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुको॰	अपररात्रि	नटादिकको	पूर्वको
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालोंको॰	प्रत्यूषका॰	पशुपालकोंको	पश्चिमको

करणअनुसारसंक्रांति।

॥ स्थितिः ॥ ॥ चतुष्पदेतैतिलनागयोश्च सुप्तोरविःसंक्रमणंकरोति ॥ विष्टाद्रवाख्येचगराह्वयेच सवालवाख्येस्थितएवविष्टौ ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ किंस्तुघ्ननाम्निशकुनेवणिकौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्यखलुसंक्रमणंरवेस्स्यात् ॥ धान्यार्घवृष्टिपुभवेत्क्रमशस्त्वनिष्टो मध्येष्टतेतिमुनयःप्रवदंतिपूर्वे ॥ वाहनम् ॥ ॥ सिंहोव्याघ्रोवराहश्चगर्दभःकुंजरस्तथा ॥ महिषीघोटकःश्वाचच्छागोवृषभकुक्कुटौ ॥ गजोवाजीवृषोमेष खरोष्ट्रौकेसरीक्रमात् ॥ शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चबवादितः ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ गजेलक्ष्मीर्वृषेस्थैर्यं घोटकेवाहनेतथा ॥ सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षंगर्दभेशुनौ ॥ वराहे महतीपीडाजायतेमेषवाहने ॥ महिष्यांच भवेत्क्लेशः कुक्कुटेमृत्युरेवच ॥ श्वेतपीतहरितंचपांडुरंरक्तश्याम मसितंवहुवर्णम् ॥ कंबलेविवसनंघनवर्णान्यंशुकानिचबवादितः क्रमात् ॥ ॥ आयुधम् ॥ भुशुंडीचगदाखड्गदंडकोदंडतोमरान् ॥ कुंतपाशांकुशास्त्रंच बाणश्चैवायुधंबवात् ॥ ॥ भोजनपात्रम् ॥ ॥ सौवर्णराजतंताम्रं कांस्यंलोहंचखर्परम् ॥ पत्रंवस्त्रंकरोभूमिः काष्ठपात्रंबवादितः ॥ ॥ भक्ष्यपदार्थ ॥ ॥ अन्नंचपायसंभक्ष्यं पक्वान्नंचपयोदधि ॥ चित्रान्नंगुडमध्वाज्यंशर्करातुबवादितः ॥ ॥ गन्धम् ॥ ॥ कस्तूरीकुंकुमंचैव चंदनंमृत्तिकातथा ॥ गोरोचनमलक्तंच हरिद्राचतथांजनम् ॥ सिंदूरमगुरुश्चैव कर्पूरश्चबवादितः ॥ ॥ जाति ॥ ॥ देवभूताहिविहगपशवोमृगएवच ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्छूद्रमिश्रजातिर्बवादितः ॥ ॥ पुष्पम् ॥ ॥ पुन्नागजातीबकुलाश्चकेतकी बिल्वस्तथार्कः कमलंचदूर्वा ॥ मल्लीतथापाटलिकाजपाचबवादिपुष्पाणिचयोजयेत्तु ॥ ॥ भूषणम् ॥ ॥ नूपुरंकंकणंमुक्ता विद्रुमंमुकुटंमणिम् ॥ गुंजावराटकंनीलंगरुत्मंरुक्मकंबवात् ॥ ॥ कंचुकी ॥

विचित्रपर्णाशुकभूर्जपत्रिका सीतातथापाटलनीलवर्णा ॥ कृष्णा-
जिनंचर्मचवल्कपांडुरा ववादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ॥ वय ॥
शिशुःकुमारीचगतालकायुवा प्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा ॥
वंध्यातिवंध्याचसुतार्थिनीच प्रव्राजिकाचैवफलंशुभंचवात् ॥

करण	वव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग	किंस्तु
स्थिति	बसली	बसली	खडी	निजली	बसली	खडी	बसली	निजली	खडी	निजली	सटी
५ ल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्य	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समघ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेंढा	बैल	कुक्कुट
उपवा	गज	अश्व	बैल	मेंढा	गर्दभ	ऊंट	सिंह	शार्दू	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कंबल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीमर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पयूं	दधि	चित्रा	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोच	अलक्त	दलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलक	पुन्ना	सुवर्ण
कंचु०	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सीत	पाढरी	नील	कृष्ण	अजन	वल्कल	पांडुर
वय	बाल	कुमारी	गताल	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वंध्या	अतिव	पुत्रव०	सन्या

फलश्रुति ।

वाहनादिबुधैर्ज्ञेयमथोत्क्रांतिविशेषतः ।
वाहनादिकवस्तूनांसंक्रमात्तुविनाशता ॥

टीका—संक्रांति जिस वाहनपर स्थित होय और जो वस्तु धारण करे उन सबका नाश होय ॥ २३ ॥

मुहूर्त्त ।

संक्रांतिकितनेमुहूर्त्तहोतीहै उसकेनक्षत्रऔरफल ।

संक्रांतौमुहूर्तभेदा हरपवनयमे वारुणेसार्परौद्रे एपापंचेंदुसंज्ञा

गुरुकरपितृभे चाग्निदस्रेचसौम्ये ॥ त्वाष्ट्रेमैत्रेचमूले श्रुतिवसुवपुषा त्रीणिपूर्वाखरामे ब्राह्मेदित्येद्विदैवे भवतिशरकृतादुत्तरात्रीणिऋक्षम् ॥ बाणवेदैःसमर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः ॥ मूर्तौपंचदशेयाते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥

टीका–आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा आश्लेषा ज्येष्ठा इनमें जो संक्राति अर्के वह १५ मुहूर्त होती है और दुर्भिक्ष करनेवाली और पुष्य हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंकी संक्रांति ३० मुहूर्त होती है यह साधारण फलदायक है और रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इनमें संक्रांति अर्के तो ४५ मुहूर्त होती है यह स्वस्थताका कारण है ॥

दूसराप्रकार ।

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम् ॥
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता ॥

टीका–गतमासदिन संक्रांति नक्षत्र और प्राप्त संक्रांति दिन नक्षत्र इनका अंतर २ अथवा तीन होयतो सस्ता और ४ वा ५ का नक्षत्रोंमें अंतर आवे तो महर्घ अर्थात् महँगा जानिये ॥

धान्यविचार ।

संक्रांतिनाड्यातिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निहरेत्तुभागम् ॥
संक्रांतिनाडीनवमिश्रिताच सप्ताहतापावकभाजिताच ॥
एकेसमर्घंद्वितयेचसौम्यं शून्येसमर्घमुनयोवदंति ॥

टीका–संक्रांतिकी घडी और गत तिथि वार नक्षत्र और धान्यके नामाक्षर एकत्र करके तीनका भाग दे वह एक मत और दूसरे मतके आज्ञानुसार संक्रांतिकी घडियोंमें ९ मिलाके ७ से गुणकर ३ का भाग दे शेषका फल विचारे १ शेष रहे तो धान्यकी स्वस्थता और दो बचें तो साधारणता और निःशेष हो तो महर्घता जानिये ॥

नक्षत्र अनुसार संक्रांतिपीडा ।

संक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ॥ त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकं षट्कंपुनः पुनः ॥ पंथाभोगोव्यथावस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥

टीका—संक्रांतिके अधर नक्षत्रसे अपने नक्षत्रतक गिने और इसरीतिमें उसका विचार करे प्रथम ३ पंथा चलावे फिर ६ भोग फिर ३ दुःख ६ वस्त्र फिर ३ हानि और ६ धनप्राप्ति कहते हैं ॥

जन्मनक्षत्रोंका फल ।

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौ संक्रमणं भवेत् ॥
तन्मासाभ्यंतरेतस्यवैरं क्लेशं धनक्षयः ॥

टीका—जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर होय और जिसके जन्ममासमें संक्रांतिका संभव हो उसे क्लेश और जिसके जन्मतिथिमें संक्रांति पडे उसका धनक्षय होता है ॥

संक्रांतिकास्वरूप ।

षष्टियोजनविस्तीर्णासंक्रांतिः पुरुषाकृतिः ॥ एकवक्त्रानव भुजालंबोष्ठीदीर्घनासिका ॥ पृष्ठेलोकाभ्रमंत्येव गृहीत्वाखर्परंकरे ॥ एवंसंक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

टीका—शरीर साठ योजन लम्बा और चौडा, पुरुषाकृति एक मुँह९ भुजा ओठ और नासिका लंबे और खर्पर हाथमें लिये पीछेसे लोकं भ्रमण करतेहैं।

चंद्रसे संक्रांतिकावर्ण और फल ।

मेषालिकर्कंच तथैवरक्तंचापेच मीनेच तुलेचपीतम् ॥ श्वेतं वृषेस्त्रीमिथुनेच चंद्रे कृष्णंचनक्रेथघटेच सिंहम् ॥ रक्तेफलं भवेद्दुःखंश्वेतंचैवसुखंशुभम् ॥ पीतेश्रीस्तुतथाप्रोक्ताश्यामेमृत्युर्न संशयः ॥

टीका—मेष वृश्चिक कर्क इन राशियोंके चंद्रमामें जो संक्रांतिका प्रवेश होय तो उसका रक्तवर्ण जानिये वह दुःखदायक है और धनु मीन तुलाके

चंद्रमाकी संक्रांतिका पीतवर्ण ये लक्ष्मीकी प्राप्ति करती है और वृष कन्या मिथुनकी संक्रांतिका श्वेतवर्ण सुख और शुभप्राप्ति करानेवाली है; मकर कुंभ और सिंहके चंद्रमाकी संक्रांति कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है ॥

राशिअनुसार चंद्रमा।

यादृशेनहिमरश्मिमालिना संक्रमोभवतितिग्मरोचिषा ॥
तादृशंफलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपिवशेनशीतगोः ॥

टीका—जैसे चंद्रमा नष्टस्थानी व उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फलको देताहै उसी भाँति नष्ट अथवा उत्तम चंद्रमाकी अर्की हुई संक्रांति चन्द्रमाके अनुसार फलदायक होती है ॥

पुण्यकाल।

पूर्वतोपिहिरवेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ॥
अर्धरात्रिसमयादनंतरंसंक्रमेपरदिनेहि पुण्यदम् ॥

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होताहै जो संक्रांति दिनमें पडे पूर्व रात्रि ताईं तो पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और जो वृद्धि रात्रिके पीछे पडे तो दूसरे दिवस पुण्यकाल होगा ॥

ग्रहणप्रकार।

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति।

भानोःपंचदशेऋक्षेचंद्रमायदितिष्ठति ॥
पौर्णमास्यानिशामेपेचंद्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्यसे पंद्रहवे नक्षत्रमें जो चंद्रमा स्थित होय तौ पूर्णमासीके निशा शेष अर्थात् प्रतिपदाकी संधिमें चंद्रग्रहण होता है ॥

सूर्यग्रहण।

मघोनंग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदिसूर्यभम् ॥
अमावास्यादिनाशेषेसूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—संपूर्ण महीनोंकी अमावास्याके दिन सूर्य और चंद्रमा एक

राशिके होते हैं परंतु अमावास्याके दिन सूर्यनक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक होय तो अमावास्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है; उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र देखिये उसमें से ११ दिन काटि शेष १६ वें सूर्य नक्षत्र होय तो वही सूर्यग्रहण होता है ॥ २ ॥

राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहणफल ।

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरवीन्द्वोः ॥
द्विसप्तनंदेषु च मध्यमंस्याच्छेषेष्वनिष्टंमुनयोवदंति ॥

टीका–सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर होय उसका शुभाशुभ फल विचारिये, तीसरी छठी दशवीं राशि पर होय तौ शुभ जानिये और दूसरा सातवाँ नवमां ये मध्यम और पहिला चौथा पाँचवाँ आठवाँ ग्यारहवाँ बारहवाँ ये नेष्ट हैं ॥

दूसरा पक्ष ।

ग्रासत्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगःस्वराशेः ॥
ग्रासाद्रविः पंचनवर्त्तुमध्यस्ततोधमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः ॥

टीका–जिस राशिपर सूर्यग्रहण होय उससे अपनी राशितक गिनें तौ ३।८।४।११ ये उत्तम और ५।८।६ये मध्यम और १।२।७।१०।१२ ये राशि अधम जैसी राशि होय तैसाही फल होता है ॥

ऋतुप्रकरण शुभाशुभ फल ।

तिथिरेकगुणाप्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम्॥वारःषष्ठगुणोज्ञेयो मा। सश्चाष्टगुणःस्मृतः॥वस्त्रं शतगुणं विद्यादर्शनं च ततोधिकम् ॥

टीका–तिथि एकगुणी नक्षत्र ४ गुणा वार ६ गुणा मास ८ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिक ज्ञान होय तिसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस होय तौ अच्छा गुण और दुष्ट होय तो बुरा जानिये ॥

मासफल ।

आर्तवेप्रथमेचैत्रेवैधव्यंजायते ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनवृद्धिः

स्याज्ज्येष्ठेरोगान्विता भवेत् ॥ आषाढेमृतवत्साच श्रावणेध-
नसंयुता ॥ भाद्रे च दुर्भगानारी आश्विनेधनधान्यभाक् ॥का-
र्तिकेनिर्द्धनानारी मार्गशीर्षेबहुप्रजा ॥ पौषेचपुंश्चली नारी
माघेपुत्रवती भवेत् ॥ फाल्गुनेपुत्रसंपन्नाज्ञेयंमासफलंबुधैः ॥

टीका—चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन होयतो विधवा होय, वैशाखमें धन-वृद्धि रोगयुक्त, आषाढमें मृत्यु, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्तिकमें निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें भी ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ॥

तिथिफलम् ।

शुचिर्नारीप्रतिपदि द्वितीयायांतुदुःखिनी ॥ तृतीयायांपुत्रव-
तीचतुर्थ्यांविधवा भवेत् ॥ पंचम्यांचैवसौभाग्यं षष्ठ्यांकार्य-
विनाशिनी ॥ सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यां राक्षसीतथा ॥
नवम्यां विधवानारी दशम्यांसौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यांशु-
चिर्नारी द्वादश्यांमरणंध्रुवम् ॥ त्रयोदश्यांशुभाप्रोक्ताचतुर्द-
श्यांपरान्विता ॥ पौर्णमास्याममावास्यां शुभंचाशुभमेवच ॥

टीका—प्रतिपदामें ऋतुदर्शन होय तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्य-भोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पूर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ॥

ग्रहण और संक्रांतिका फल।

संक्रांत्यांग्रहणेचैववैरिणी च गतालका ॥

टीका—संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो वैरिणी और ग्रहणमें होय तो विधवा जानिये ॥

वारफल ।

आदित्येविधवानारीसोमेचैवमृतप्रजा ॥ मंगलेआत्मया-

राशिके होते हैं परंतु अमावास्याके दिन सूर्यनक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक होय तो अमावास्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है; उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र देखिये उसमें से ११ दिन काटि शेष १६ वें सूर्य नक्षत्र होय तो वही सूर्यग्रहण होता है ॥ २ ॥

राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहणफल ।

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरवीन्द्वोः ॥
द्विसप्तनंदेषु च मध्यमंस्याच्छेषेष्वनिष्टंमुनयोवदंति ॥

टीका–सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर होय उसका शुभाशुभ फल विचारिये, तीसरी छठी दशवीं राशि पर होय तौ शुभ जानिये और दूसरा सातवाँ नवमां ये मध्यम और पहिला चौथा पाँचवाँ आठवाँ ग्यारहवाँ बारहवाँ ये नेष्ट हैं ॥

दूसरा पक्ष ।

ग्रासत्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगःस्वराशेः ॥
ग्रासाद्रविः पंचनवर्तुमध्यस्ततोधमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः ॥

टीका–जिस राशिपर सूर्यग्रहण होय उससे अपनी राशितक गिनें तौ ३।८।४।११ ये उत्तम और ५।८।६ये मध्यम और १।२।७।१०।१२ ये राशि अधम जैसी राशि होय तैसाही फल होता है ॥

ऋतुप्रकरण शुभाशुभ फल ।

तिथिरेकगुणाप्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम्॥वारःषष्ठगुणोज्ञेयो मा।
सश्चाष्टगुणःस्मृतः॥वस्त्रं शतगुणं विद्यादर्शनं च ततोधिकम् ॥

टीका–तिथि एकगुणी नक्षत्र ४ गुणा वार ६ गुणा मास ८ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिक ज्ञान होय तिसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस होय तौ अच्छा गुण और दुष्ट होय तो बुरा जानिये ॥

मासफल ।

आर्तवेप्रथमेचैत्रेवैधव्यंजायते ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनवृद्धिः

स्थाज्ज्येष्ठेरोगान्विता भवेत् ॥ आषाढेमृतवत्साच श्रावणेधनसंयुता ॥ भाद्रेच दुर्भगानारी आश्विनेधनधान्यभाक् ॥कार्तिकेनिर्द्धनानारी मार्गशीर्षेबहुप्रजा ॥ पौषेचपुंश्चली नारी माघेपुत्रवती भवेत् ॥ फाल्गुनेपुत्रसंपन्नाज्ञेयंमासफलंबुधैः ॥

टीका—चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन होयतो विधवा होय, वैशाखमें धनवृद्धि रोगयुक्त, आषाढमें मृत्यु, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्तिकमें निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें भी ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ॥

तिथिफलम्।

शुचिर्नारीप्रतिपदि द्वितीयायांतुदुःखिनी ॥ तृतीयायांपुत्रवतीचतुर्थ्यांविधवा भवेत् ॥पंचम्यांचैवसौभाग्यं षष्ठ्यांकार्यविनाशिनी ॥ सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यां राक्षसीतथा ॥ नवम्यां विधवानारी दशम्यांसौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यांशुचिर्नारी द्वादश्यांमरणंध्रुवम् ॥ त्रयोदश्यांशुभाप्रोक्ताचतुर्दश्यांपरान्विता ॥ पौर्णमास्याममावास्यां शुभंचाशुभमेव च ॥

टीका—प्रतिपदामें ऋतुदर्शन होय तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्यभोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पूर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ॥

ग्रहण और संक्रांतिका फल।

संक्रांत्यांग्रहणेचैववैरिणी च गतालका ॥

टीका—संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो वैरिणी और ग्रहणमें होय तो विधवा जानिये ॥

वारफल।

आदित्येविधवानारीसोमेचैवमृतप्रजा ॥ मंगलेआत्मघा-

तीस्याद्बुधेकन्याप्रसूःस्मृता ॥ गुरुवारेसुतप्राप्तिःकन्या-
पुत्रयुताभृगौ ॥ मंदे च पुंश्चलीनारीज्ञेयंवारफलंशुभम् ॥

टीका–रविवारको ऋतुदर्शन होय, तो विधवा होय, सोमवारको मृतप्रजा, भौमवारको आत्मघातिनी, बुधवारको कन्यासंतति होय, गुरुवारको पुत्रप्रसूति, भृगुवारको कन्या और पुत्रप्रसूति और शनिवारको होय तो स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥

नक्षत्रफल।

अश्विन्यांसुभगानारीभरण्यांविधवाभवेत् ॥ कृत्तिकायां च
वंध्यास्याद्रोहिण्यांचारुभाषिणी ॥ मृगेदारिद्र्ययुक्तोक्ताचा-
र्द्रायांक्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपुत्रधनेश्वरी ॥
आश्लेषायांभवेद्वंध्यामघायांचार्थसंयुता॥ पूर्वायांचार्थयुक्ताहि
चोत्तरायांसतीतथा ॥हस्तेपुत्रधनैर्युक्ताचित्रायामनुचारिणी॥
स्वात्यान्यगर्भावयवाविशाखायांतुनिष्ठुरा ॥मैत्रे च दुर्भगाना-
रीज्येष्ठायांविधवाभवेत् ॥ मूलेपतिव्रतासाध्वीपूर्वासौभाग्य-
भोगिनी ॥ उत्तरार्थवतीप्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदः ॥ धनिष्ठा-
यांशुभानारीशतभद्रान्विताबुधैः ॥ पुंभेचोक्ताकामिनीतु उभे
लक्ष्मीयुता शुभा ॥ रेवत्यांपतिरिक्तातुज्ञेयं भानांफलंबुधैः ॥

टीका–अश्विनीनक्षत्रमें जो स्त्रीके प्रथम ऋतुस्नात होय तो शुभ और भरणीमें विधवा और कृत्तिकामें वंध्या, रोहिणीमें प्रियभाषिणी, मृगशिरमें दरिद्रिणी,आर्द्रामें क्रोधिनी, पुनर्वसुमें पुत्रवती, पुष्यमें पुत्र और धनवती, आश्लेषामें बाँझ, मघामें धनवती, पूर्वामें अर्थवती, उत्तरामें पतिव्रता, हस्तमें पुत्रवती धनवती, चित्रामें दासी, स्वातीमें अन्यगर्भवती, विशाखामें निठुर, अनुराधामें दुर्भागिनी, ज्येष्ठामें विधवा, मूलमें पतिव्रता, पूर्वाषाढामें सौभाग्यवती, धनिष्ठामें शुभ, शतभिषामें शुभ, पूर्वाभाद्रपदामें उत्तम-भोगवती, उत्तराभाद्रपदामें लक्ष्मीवती, रेवतीमें पतिरहित जानिये ॥

योगफल।

आद्यतौविधवानारी विष्कंभेचरजस्वला ॥ स्नेहःप्रीत्यांतुदंपत्योरायुष्मांस्तुधनप्रदः ॥सौभाग्येपुत्रयुक्ता तु शोभनेमंगलान्विता ॥ अतिगंडेतुविधवासुकर्मणितुशोभना ॥ धृतौसंपत्तियुक्ताच शूलेरोगयुताभवेत् ॥ गंडेदुःखान्वितानारी वृद्धौपुत्रान्विताभवेत् ॥ ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभर्तृघातकी ॥ हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रेचैवानपत्यता ॥ सिद्धौपुत्रान्वितानारी व्यतीपाते विभर्तृका ॥ मृतवत्साचवर्यान्ने परिघेचाल्पजीविनी ॥ शिवेपुत्रवतीनारी सिद्धेशीघ्रफलान्विता॥साध्ये धर्मपरानारी शुभेशुभगुणान्विता ॥ शुक्लेशुभकरानारीब्रह्मणिस्वपतौरता ॥ ऐंद्रेदेवररक्ता च वैधव्यंवैधृतौस्मृतम् ॥

टीका—विष्कंभ योगमें जो प्रथम ऋतुदर्शन होय तो स्त्री विधवा होय. और प्रीतियोगमें पतिसे स्नेह, आयुष्मान् में धनप्राप्ति, सौभाग्यमें पुत्रवती, शोभनमें मंगलदायक, अतिगंडमें विधवा, सुकर्मामें शुभ, धृतिमें संपत्तियुक्त, शूलमें रोगिणी, गंडमें दुःखान्विता, वृद्धिमें पुत्रयुक्ता, ध्रुवमें शुभ, व्याघातमें पतिघातिनी. हर्षणमें हर्षयुक्ता, वज्रमें वंध्या, सिद्धियोगमें पुत्रयुक्ता, व्यतीपातमें पतिरहिता, वर्यानमें मृतपुत्रा, परिघमें अल्पजीविनी, शिवमें पुत्रवती, सिद्धिमें शीघ्रफलयुक्ता, साध्ययोगमें अधर्मपरा, शुभयोगमें शुभगुणयुक्ता, शुक्लयोगमें शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोगमें निजपतिरता, ऐंद्रमें देवररता, वैधृतियोगमें विधवा होय ॥

करणफलम्।

बवेप्रोक्तातुवंध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदः ॥ कौलवेपुंश्चलीनारीतैतिले चारुभाषिणी ॥ गरे च गुणसंपन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता ॥ विष्ट्यां चमृतवत्साच शकुनौकामपीडिता ॥ चतुष्पदे शुभानारीनागे पुत्रवतीभवेत् ॥ किंस्तुघ्नेव्यभिचारीतुकरणानांशुभंफलम् ॥

टीका—बव करणमें जो स्त्री प्रथम पुष्पवती होय, तो वह वंध्या होय, बालवमें पुत्रकी प्राप्ति, कौलवमें वेश्या, तैतिलमें प्रियभाषिणी, गरमें गुणसंपन्ना, वणिजमें पुत्रिणी, विष्टिमें मृतवत्सा, अर्थात् उसके बालक मर जांय शकुनिमें कामातुरा, चतुष्पदमें शुभ, नागमें पुत्रवती, किंस्तुघ्नमें व्यभिचारिणी जानिये ॥

राशिफलम् ।

व्यभिचारिणीतुमेषेवृषभेसुखभोगिनी ॥ मिथुनेधनयुक्ताकर्कटेदुःखिताबुधैः ॥ सिंहेपुत्रवतीनारी कन्यायांमानिनीशुभा ॥ तुलेविचक्षणानारी वृश्चिकेव्यभिचारिणी ॥ धनेपतिव्रताज्ञेयामांसहीनाचनक्रके ॥ कुंभेधनवतीज्ञेयामीने च चपलाबुधैः ॥

टीका—मेषराशिमें जो ऋतुवती होय तौ व्यभिचारिणी, वृषमें सुखभोगिनी, मिथुनमें धनयुक्ता, कर्कमें दुःखी, सिंहमें पुत्रवती, कन्यामें अभिमानी, तुलामें चतुरा, वृश्चिकमें जारिणी, धनमें पतिव्रता, मकरमें कृशा, कुंभमें धनवती, मीनमें चपला ऐसे जानिये ॥

होराफल ।

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चंद्रहोरे पतिव्रता ॥ कुजेहोरेतुदौर्भाग्यंबुधेहोरेतुपुत्रिणी ॥ जीवेसर्वसमृद्धिःस्याद्भृगौसौभाग्यमेवच ॥ शनौसर्वविनाशायहोरकस्यफलंबुधैः ॥

होरा	फल	होरा	फल
रविकाहोरा	योगिनी	गुरुकाहोरा	सर्वसिद्धि
सोमका होरा	पतिव्रता	शुक्रकाहोरा	सौभाग्य
भौमकाहोरा	दुर्भगा	शनिकाहोरा	सर्वविनाशिनी
बुधकाहोरा	पुत्रिणी		

लग्नफलम् ।

मेषलग्नेदरिद्राचवृषभेधनसंयुता ॥ कामिनीमिथुनेलग्नेकर्कटेपतिनाशिका ॥ सिंहेपुत्रप्रसूताचपतियुक्तास्त्रिलग्नके ॥ तुलेचैवांध-

तादायीवृश्चिकेदद्रुदुःखिनी ॥ धनलग्नधनैश्वर्यमकरेकर्कशाभवेत् ॥ कुंभेवंशद्वयघ्नीच मीनेसर्वगुणान्विता ॥

टीका—प्रथम संक्रांति चलती होय सोई प्रथम लग्न जानिये और मेष लग्नमें ऋतुवती होय तौ दरिद्रिणी २ धनयुक्ता ३ कामिनी ४ पतिनाशिनी ५ पुत्रप्रसूता ६ पतिव्रता ७ अंधत्वादायक ८ दद्रुदुःखिता ९ धनैश्वर्यवती १० कर्कशा ११ उभयवंशनाशिनी १२ गुणयुक्ता ॥

ग्रहोंके फल।

लग्नेराहुश्चसौरिश्चरविचंद्रौतथैवतु ॥
तदासाविधवानारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ॥

टीका—जिस लग्नमें प्रथम स्त्री रजस्वला होय उसमें राहु शनि रवि चंद्र ये चारि ग्रह स्थित होंय वह स्त्री विधवा होव ॥

रक्तफल।

शोणितबिंदुमात्रेण स्वैरिणीचाल्पशोणिता ॥ रक्तेरक्तेभवेत्पुत्रःकृष्णेचैवमृतप्रजा ॥ पिच्छिले च भवेद्वंध्याकाकवंध्याचपांडुरे ॥ पीतेदुश्चारिणीज्ञेयासुभगा गुंजसादृशे ॥ सिंदूरवर्णेरक्तेतुकन्यासंतति[illegible] ॥

टीका—प्रथम ऋतुदर्शनके समय रक्त बिंदुमात्र और अल्पवर्ण होय तिसका फल यह है कि, स्त्री व्यभिचारिणी होय और रक्तवर्ण रुधिर होय तौ पुत्रवती, काला होय तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढा होय तो बांझ, पांडुर वर्णसे वंध्या, पीत वर्णसे दुराचारिणी, गुंजा सदृशसे सुभागिनी; सिंदूर वर्णसे कन्याप्रसूता, इस प्रकार फल जानिये ॥

काल फल।

पूर्वाह्णेसुभगाप्रोक्ता मध्याह्नेचैवनिर्धना ॥ अपराह्णेशुभाचैव सायाह्नेसर्वभोगिनी ॥ संध्ययोरुभयोर्वेश्या निशीथेविधवाभवेत् ॥ पूर्वरात्रेतथावंध्या दुर्भगासर्वसंधिषु ॥

टीका–जो स्त्रीके प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये, मध्याह्नमें निर्धना, तीसरे पहर होय तो शुभ, संध्याको होय तो सर्वभोगिनी, और दोनों संधिमें होय तो वेश्या, आधी रातिमें होय तो विधवा, पूर्व रात्रिमें होय तो वांझ, सब संधिमें दुर्भगा ये फल जानिये ॥

पहिरे हुए वस्त्रोंका फल।

सुभगाश्वेतवस्त्राच रोगिणीरक्तवस्त्रका॥ नीलांबरधरानारीवि-
धवापुष्पवंतिका॥भोगिनीपीतवस्त्राच मिश्रवस्त्रावरप्रिया॥ सू
क्ष्मास्यात्सूक्ष्मवस्त्राचदृढवस्त्रापतिव्रता ॥ दुर्भगाजीर्णवस्त्राच
सुभगामध्यवाससा॥धौतवस्त्राशुभानारी मलिनीमलिनाभवेत्॥

टीका–प्रथम ऋतुसमय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तो शुभ, लाल वस्त्र पहिने स्त्री पुष्पवती होय तो रोगिणी, नीले वस्त्रसे विधवा, पीत वस्त्रसे भोगिनी, मिश्रवर्णवस्त्रयुता पतिप्रिया, सूक्ष्मवस्त्रयुता कृशा,मोटे वस्त्रयुत पतिव्रता,जीर्ण वस्त्र पहिरनेसे स्त्री दुर्भागिनी, मध्यम वस्त्रयुत सुभगा, धुले वस्त्रयुता सुभगा, और मलिन वस्त्रपहिने स्त्री प्रथम ऋतुधर्मको प्राप्तहोय सो मलिन जानिये ॥

रजस्वलाधर्म।

आर्तवाभिप्लुतानारी नैकवेश्मनिसंश्रयेत् ॥ नचान्यजातिसं-
स्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं नचक्वचित् ॥ त्रिरात्रंस्वमुखंनैव दर्शयेद्य-
स्यकस्यचित् ॥ स्ववाक्यंश्रावयेन्नैव नकुर्याद्दंतधावनम् ॥
नकुर्यादार्तवेनारी ग्रहणामीक्षणंतथा ॥ अंजनाभ्यंजनंस्नानं
प्रवासंवर्जयेत्तथा ॥ नखादिकृंतनंरज्जुतालपत्रादिबंधनम् ॥
नवेशरावेभुंजीत तोयंचांजलिनापिबेत् ॥

टीका–ऋतुमती स्त्रीको एक घरमें रखना,अन्य जातीसे स्पर्श न करना,अपनी जातिमें भी स्पर्श न करना,तीन रात्रि अपना मुख किसीको न दिखावना, अपनी वाणी किसीको न सुनाना, दँतून नहीं करना, नक्षत्रोंका अवलोकन न करना,काजल-तेल-स्नान-रस्ता-चलना-डोराकी स्पर्श-तालपत्रका बंधन, इतने कर्म न करै, नवीन मृत्तिका के पात्रमें भोजन करै और अंजलीसे जल पीवै

गर्भाधानका मुहूर्त।

ऋतौतुप्रथमेकार्यं पुन्नक्षत्रेशुभेदिने॥
मघामूलांत्यपक्षांतमुक्त्वाचंद्रबलेसति॥

टीका–प्रथम ऋतुदर्शन समय पुरुष नक्षत्र और शुभदिनमें मघा मूल रेवती अमावास्या पूर्णिमा इनको छोडकर बलवान् चंद्रमामें गर्भाधान करना योग्यहे

गर्भाधाने त्याज्यमाह।

गंडांतंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलांतकं दास्रंपौष्णमथोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिम्। पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघाद्यर्द्धंस्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभम्॥ भद्रापष्ठीपर्वरिक्ताच संध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्र्यश्चतस्रः।

टीका–गंडांत-३प्रकारके अर्थात् तिथिगंडांत-लग्नगंडांत-नक्षत्रगंडांत-नधतारा–जन्मतारा–मूल–भरणी–अश्विनी–रेवती–ग्रहणदिन–व्यतीपात–वैधृति–श्राद्धदिन–परिघार्द्ध–उत्पातनक्षत्र–पापयुक्तनक्षत्र–जन्मलग्नसे अष्टमलग्न-भद्रा-षष्ठीतिथि–पर्वतिथि अर्थात् चतुर्दशी–अष्टमी–अमावास्या–पूर्णिमा–संक्रांति-रिक्तातिथि अर्थात् चतुर्थी–नवमी-चतुर्दशी संध्याकाल, भौम,रवि-शनि-ये वार और प्रथम रात्रिसे चाररात्रि ये गर्भाधानमें त्याज्यहैं॥

ऋतुकीषोडशरात्रियोंकाशुभाशुभनिर्णय।

ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणां रात्रयःषोडशस्मृताः॥ तासामाद्याश्चतस्रस्तुनिंदितैकादशीचया॥ त्रयोदशीचशेषाःस्युःप्रशस्तादशवासराः॥तस्मात्रिरात्रंचांडालीं पुष्पितांपरिवर्जयेत्॥

टीका–स्त्रियोंके ऋतुधर्मसंबंधी स्वाभाविक १६ रात्रि होतीहैं, उनमेंसे प्रथम तीन रात्रिमें पुष्पवती चांडाली होती है और चौथी ग्यारवी तेरहवी ये निंदित अर्थात् वर्जनीय और शेष दशरात्रि प्रशस्त हैं॥

रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः॥ पंचम्यांपुत्रिणीनारीषष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः॥ सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामी-

श्वरःपुमान् ॥ नवम्यांसुभगानारी दशम्यांप्रवरःसुतः ॥ एका-
दश्यामधर्म्योस्त्री द्वादश्यांपुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यांसुतापा-
पावर्णसंकरकारिणी ॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः ॥
प्रजायतेचतुर्दश्यां पंचदश्यांपतिव्रता ॥ आश्रयः सर्वभूता-
नांषोडश्यांजायतेपुमान् ॥

टीका—चौथी रात्रिमें स्त्रीसंग करे तो पुत्र अल्पायु और धनवर्जित उत्पन्न होय, पांचवी रात्रिमें पुत्रवती, छठी रात्रिमें मध्यम पुत्र, सातमीमें पुत्र उत्पन्न नहीं होगा, अष्टमी राशिमें ईश्वरभक्त, नवमी रात्रिमें सौभाग्यवृद्धि, दशमीमें गुणवान् पुत्र, ग्यारहवीमें अधर्मी पुत्र; बारहवी रात्रिमें उत्तम पुरुष, तेरहवीमें पापकर्मिणी कन्या, चौदहवीमें धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करनेहारा पुत्र, पंद्रहवी रात्रिको पतिव्रता, सोलहवी रात्रिको सबजीवोंका आश्रय देनेवाला पुत्र उत्पन्न होताहै ॥

निषेक के तिथि और वार ।

षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा ॥
शेषाःशुभाःस्युस्तिथयो निषेके वाराःशशांकार्यसितेन्दुजाश्च ॥

टीका—षष्ठी अष्टमी पूर्णिमा अमावास्या चतुर्थी चतुर्दशी इन तिथियोंको छोडकर शेष तिथि और सोम गुरु शुक्र बुध ये वार शुभ जानिये ॥

नक्षत्र ।

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानिनिषेक-
कार्ये ॥ पूज्यानिपुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्चमध्यम-
फलाविफला स्युरन्ये ॥

टीका—श्रवण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाती रेवती मूल तीनों उत्तरा शतभिषा ये नक्षत्र कहेहैं और पुष्य धनिष्ठा मृगशिर अश्विनी चित्रा पुनर्वसु ये मध्यम हैं और शेष नक्षत्र अधम जानिये ॥ मुहूर्त्तमार्त्तंडमते ॥

वैधृति संक्रांति महापात आदि दुष्ट योग और श्राद्धांत पूर्व दिन जन्म नक्षत्र संधि दिवस रात्रि नक्षत्र इत्यादि वर्जनीय करते हैं और जिस लग्नमें विषमस्थानी नवांशकमें उच्च बृहस्पति अथवा सूर्य चंद्रमा होय तो पुत्रप्राप्ति होय और येही ग्रह समराशिके होंय तो कन्याप्राप्ति होय ॥

गर्भाधाने लग्नशुद्धिः।

केन्द्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ॥ ओजांशकेऽब्जेपिचयुग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषुमध्यमंस्यात् ॥

टीका-प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम ये केन्द्र इसमें शुभग्रह होंय त्रिकोण नवम पंचम इसमें शुभग्रह होय ३।११।१०।६ इसमें पापग्रह होंय लग्नको पुरुष ग्रह देखते होंय और विषम नवांशमें चंद्रमा होय तो इसमें गर्भाधान शुभ है और समरात्रि पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी ये नक्षत्र मध्यम होते हैं ॥

प्रथम गर्भिणीके पुंसवनादिकसंस्कार।

मूलादित्रितयेकरेश्रवणके भाद्रद्वयाद्रीत्रये रेवत्यां मृगपंचकेदिनकरेभौमेनरिक्तातिथौ ॥ नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषिस्त्रीमीनयोश्चस्थिरे लग्नेपुंसवनंतथैवशुभदंसीमंतकर्माष्टमे ॥

टीका-मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिर और रवि भौमवार लेने और रिक्ता तिथी वर्जनीय है और गर्भाधानसे दूसरा महीना व तीसरा मास और धन कन्या मीन और स्थिर लग्नोंमें पुंसवनकर्मको करे और इनही नक्षत्र वा लग्नोंमें ये अष्टमासमें सीमंतकर्म करना शुभ कहाहै ॥

वारफलम्।

मृत्युश्चसौरेस्तनुहानिरिंदोः प्रजामृतिः पुंसवने बुधस्य ॥
काकी च वंध्याभवतीहशुक्रे स्त्रीपुत्रलाभोरविभौमजीवैः ॥

टीका-शनिवारको पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु होय, चंद्रवारको शरीरका नाश, बुधवारको संताननाश, शुक्रवारको काकवंध्या (एकवार

प्रसूति) और रवि भौम गुरु इन वारोंमें पुत्र प्राप्ति होय, परंतु स्त्रीके चंद्रमा शुभ होय दुष्ट योगादिक वर्जितहैं ॥ उक्त नक्षत्र आदिमें और शुभ दिवसमें पुंसवन कहिये गर्भकी पुरुषाकृति होना यह कर्म करावै और जिस मुहूर्तमें गर्भकी स्थिरता कहीहै उसीमें अनवलोभनभी कर्म उक्तहैं ॥

अन्यमते ।

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजिसौरेणगर्भेप्रथमंविधेयम् ॥
सीमंतकर्मद्विजभामिनीनां मासेष्टमेविष्णुबलिं च कुर्यात् ॥

टीका–प्रथम गर्भधारण होनेसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम ऐसे समसौर मासोंमें आठ मासपर्य्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी स्त्रियोंका सीमंतकर्म और विष्णुबलि करना उचितहै ॥

सीमंतेतिष्यहस्तादितिहरिशशभृत्पौष्णविद्ध्युत्तराख्या ॥
पक्षच्छिद्राचरिक्तापितृतिथिमपहायापराःस्युःप्रशस्ताः ॥

टीका–सीमंतकर्ममें पुष्य हस्त पुनर्वसु श्रवण मृगशिर रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभहैं और पक्ष रंध्रतिथि रिक्तातिथी और अमावास्याको छोड शेष तिथि शुभ जानिये ॥

पक्षच्छिद्रातिथि ।

चतुर्दशीचतुर्थी च अष्टमीनवमीतथा ॥ षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षछिद्राह्वयाःस्मृताः ॥ कर्मादितासुतिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः ॥ भूताष्टमनुतत्वांकदशशेषास्तुशोभनाः ॥

टीका–चतुर्दशीकी प्रथमकी ५ घटिका, और चौथकी ८ घटिका, अष्टमीकी १४ घटिका, षष्ठीकी ८ घटिका, द्वादशीकी १० घटिका वर्जनीयहैं और शेष घटी शुभहैं ॥

मासेश्वरज्ञानमाह ।

मासेश्वराःसितकुजेज्यरवींदुसौरचन्द्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराःस्युः

मासेश्वरज्ञानार्थंमासेशचक्रम्।

१	२	३	४	५
स्वामी-शुक्र	स्वामी-भौम	स्वामी-गुरु	स्वामी-रवि-	स्वामी-चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी-शनि	स्वामी-बुध	स्वा.गर्भाधा.ल	स्वामी-चंद्र	स्वामी-सूर्य

गर्भिणीधर्म।

भूम्यांचैवोच्चनीचायामारोहणेवरोहणे ॥ नदीप्रतरणंचैवशक टारोहणं तथा ॥ उग्रौषधंतथाक्षारं मैथुनंभारवाहनम् ॥ कृते-पुंसवनेचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत् ॥

टीका–पुंसवनकर्म होने उपरांत गर्भिणीको ऊंचे नीचे स्थानपर चढना उतरना, भागकर चलना, नदी तरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध नीरस क्षार आदि खाना, मैथुन, भार उठाना सर्व कर्म वर्जितहैं ॥

गर्भिणीप्रश्नः।

नामाक्षराणित्रिगुणीकृतानि तुरंगदेशे तिथिमिश्रितानि ॥
अष्टौ च भागं लभते च शेषं समे च कन्या विषमेचपुत्रः॥

टीका–गर्भिणीके नामअक्षर तिगुनें करे तिनमें घोडाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावे और आठका भागदे शेष अंक सम बचें तो कन्या और विषम बचें तो पुत्र होय ॥

प्रसूतिस्थान प्रवेश नक्षत्र।

रोहिण्यैन्दवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि॥ पुनर्वसौपुष्यहस्त-धनिष्ठात्र्युत्तरासुच ॥ मैत्रेत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यां सूतिकागारवे-शनम् ॥ प्रसूतिसम्भवेकाले सद्यएवप्रवेशयेत् ॥

टीका–रोहिणी मृगशिर रेवती स्वाती शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनों उत्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी ये नक्षत्र प्रसूतिका भवनके प्रवेशमें कहेहैं, प्रसूति समयमें ये नक्षत्रोंमें तत्काल प्रवेश करावे ॥

गर्भके लक्षण।

कललं च घनंशाखास्थित्वग्रोमोद्गमःस्मृतिः ॥
भुक्तिरुद्वेगसंसूतिर्मासेष्वाधानतःक्रमात् ॥

टीका—गर्भाधानसे १० मास तक गर्भका रूप कहतेहैं; प्रथम १ मासमें कलल कहिये शुक्र रुधिर इसके संयोगसे पिंडित होताहै- २ मासमें घन कहिये वह पिंड दृढ होताहै- ३ मासमें वह पिंडमें शाखा कहिये हस्त और पाद उत्पन्न होतेहैं-४मासमें उसमें अस्थि-हाड होतेहैं-५मासमें उसपर त्वचा कहिये चमडा, ६ मासमें रोम कहिये केश होतेहैं, ७ मासमें स्मृति अर्थात् ज्ञान होताहै- ८ मासमें क्षुधा ९ नवमें मासमें उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदरसे निकलनेकी इच्छा करताहै, १० मासमें प्रसव जानना चाहिये ॥

प्रसूतिसमयका प्रश्न।

मीनेमेषेस्त्रियौद्वे च चतस्रो वृषकुंभयोः ॥ तुलाकन्यकयोः सप्तबाणाख्या धनकर्कयोः ॥ अन्यलग्नेभवेत्तिस्र एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ यथाराहुस्तथाशय्या भौमेखट्वांगभंगता ॥ रवि-स्थानेभवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ॥

टीका--मीन अथवा मेष इन लग्नोंमें जो स्त्रीके प्रसव होय तो उससमय उसके निकट दो स्त्रियाँ और वृष कुंभ होयतो ४, तुला कन्या होयतो ७, धन ओर कर्कमें ५ अन्य लग्नोंमें तीन स्त्रियां जाननी चाहिये ॥ जन्मकुंडलीके मध्य जिस दिशामें राहु स्थित होय उसी दिशामें शय्या जाननी, जो लग्नमें मंगल बैठा होय तो खाटका अंगभंग जानिये; जिस स्थानमें रवि होय उसी दिशामें दीपक और जिस दिशामें शनि होय उसमें नालसमझना॥

तिथिगंडांत।

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडीद्वयंतथा ॥
गंडांतंमृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥

टीका-पूर्णातिथि कहिये १५।५।१० और पडवा छठि एकादशी कहिये नंदा इनकी संधिकी दो २ घटी अर्थात् पूर्णिमा पंचमी दशमीके अंतकी एक २ और पडवा छठि एकादशीके आदिकी एक २ घटी गंडांतहै, यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें वर्जितहैं; करे तो मृत्यु होय ॥

लग्नगंडांत।

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥
गंडांतमंतरालेस्याद्धटिकार्द्धमृतिप्रदम् ॥

टीका-कर्क सिंह इन दोनों लग्नोंकी घटिका आधी और इस क्रमसे वृश्चिक और धन मीन मेष इनकी आदिकी घटी गंडांतमें शुभकर्म न करे ये मृत्यु देतीहैं

नक्षत्रगंडांत।

पौष्णाश्विन्योः सर्पपित्र्यर्क्षयोश्चयच्चज्येष्ठामूलयोरंतरालम् ॥
तद्गंडांतंस्याच्चतुर्नाडिकं हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥

टीका-रेवती अश्विनी इनकी संधिकी २ घटिका इसी क्रमसे श्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इनकी संधिके ४ घटिका वर्जनीय और ऐसेही तिथि लग्न और नक्षत्र ये त्रिविध गंडांत जानिये,यह यात्रा जन्मकाल और विवाहमें वर्जितहैं॥

जातक।

जन्मकालमें गंडांतका शुभाशुभफल।

अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धेबाध्यतेपिता ॥ पूषादिशाक्रप-
श्चार्द्धेजननी बाध्यतेशिशुः ॥ सर्वेषांगंडजातानांपरित्या-
गोविधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनंशावं तच्चपाण्मासिकंभवेत् ॥

टीका-अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमें जन्म होयतो पिताको अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें जन्म होय तो माताको अशुभ और गंडांतमें जन्म होय तो शिशुका त्याग करना योग्यहै अथवा छःमासतक पुत्रको नदेखे ॥

कृष्णचतुर्दशीकाजन्मफल ।

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेः षड्विधंफलम् ॥चतुर्दश्याश्चषड्भागान् कुर्यादादौ शुभंस्मृतम् ॥ द्वितीये पितरं हंति तृतीयेमातरंतथा॥चतुर्थेमातुलंहंति पंचमेवंशनाशनम् ॥ षष्ठे च धनहानिःस्यादात्मनोवंशनाशनम् ॥

टीका—जो कृष्णचतुर्दशीको जन्म होयतो तिथिके छःखंड दश २ घटिकाके करे जो प्रथम खंडमें जन्म होयतो शुभ, द्वितीयमें पिताको अशुभ, तृतीयमें माताको अशुभ, चतुर्थमें मामाको अशुभ, पंचममें वंशनाश, छःमें धनहानिकारक और अपने वंशका नाश क जानिये ॥

अमावास्याकेजन्मकाफल ।

सिनीवाल्यां प्रसूताश्चदासीभार्यापशुस्तथा ॥ गजोश्वोमहिषीचैव शक्रस्यापिश्रियंहरेत् ॥ कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरीस्मृता ॥ यस्यप्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ॥ सर्वगंडसमस्तत्रदोषस्तुप्रबलोभवेत् ॥

टीका—चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी अथवा भार्या गाय हस्तिनी घोडी भैंस जो प्रसूता होय तो इंद्रकी भी सम्पत्ति हरलेतेहैं और ठीक अमावास्याको प्रसूता हो तो बहुतसे दोष लगें और जिसकी इनमें प्रसूति होय उसकी आयुधनका नाश होय और गंडांतमें प्रसूति होयतो बहुतसे दोष जानिये ॥

दिनक्षयादिकफलम् ।

दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ ॥ शूलेगंडेतिगंडेच परिघे यमघंटके ॥ कालगंडेमृत्युयोगेदग्धयोगेसदारुणे ॥ तस्मिन्गंडदिनेप्राप्ते प्रसूतिर्यदिजायते॥अतिदोषकरी प्रोक्तातत्रपापयुतासती ॥

टीका--दिनक्षय व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गंड अतिगंड परिघार्द्ध यमघंट कालगंड मृत्युयोग दग्धयोग दारुणयोग इनमें जन्म होय तो भारी पाप लगे ऐसी प्रसूति स्त्रीको पापयुक्त जानिये ॥

ज्येष्ठानक्षत्रफल।

ज्येष्ठादौजननेमाताद्वितीयेजननेपिता॥तृतीयेजननेभ्रातास्वयं
माताचतुर्थके॥आत्मानं पंचमेहंतिषष्ठे गोत्रक्षयोभवेत्॥सप्त
मेचोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे॥नवमेश्वशुरंचैवसर्वंहंतिदशांशके॥

टीका—ज्येष्ठा नक्षत्रमें जो जन्म होयतो उस नक्षत्रकी छःघटियोंके दशभाग समान करे तिसका फल, प्रथमभाग माताको अशुभ, दूसरा पिताको, तीसरा मामाको, चौथा माताको, पांचवा शिशुको, छठा भाग गोत्रजोंको, सातवाँ पिता, नानाके परिवारको, आठवाँ बडे भ्राताको, नवम श्वशुरको, दशवां सर्व जनोंको बुराहै॥

मूलनक्षत्रफल।

मूलस्तंभंत्वक् च शाखापत्रंपुष्पंफलंशिखा॥वेदाश्चमुनयश्चैव
दिशश्चवसवस्तथा॥ नंदावाणरसारुद्रामूलभेदाः प्रकीर्तिताः॥
मूलेमूलविनाशायस्तंभे हानिर्धनक्षयः॥त्वचिभ्रातृविनाशाय
शाखामातुर्विनाशकृत्॥पत्रेसपरिवारःस्यात्पुष्पेपुनृपवल्लभः॥
फलेपुलभतेराज्यं शाखायामल्पजीवितम्॥

टीका—मूल नक्षत्रको मूल वृक्ष कल्पना करते हैं तिस्की ६० घटीके स्थान इस भाँति हैं, प्रथम ४घटिका वृक्षका मूल, तिनमें जन्म होय तो नाश, दूसरा भाग७ घटिका स्तंभ तिनमें हानि और धनका नाश, तीसरा भाग१० घटिका वृक्षको त्वचा तिनमें भ्राताको अशुभ होय, चौथा भाग ८ घटिका शाखा तिनमें माताको अशुभ, पांचवाँ भाग ९ घटी वृक्षके पत्र तिनमें परिवारनाश, छठा भाग ५ घटी पुष्प तिनमें राजमंत्री, सातवाँ भाग ६ घटी फल तिनमें राज्यप्राप्ति, आठवां भाग ११ घटिका वृक्षकी शाखा तिनमें जन्म होयतो शिशु अल्पायु होय, ऐसे आठ स्थानका फल जानिये॥

जन्मकालमेंमूलनक्षत्रकिसलोकमेंहैइसकेजाननेकोलग्न।

वृपालिसिंहेघुघटे च मूलं दिविस्थितंयुग्मतुलाङ्गनांत्ये॥

पातालगंमेषधनुःकुलीरनक्रेषुमर्त्येष्वितिसंस्मरंति ॥

टीका—वृष सिंह कुंभ वृश्चिक लग्नोंमें जन्महोय तो उस दिन मूल नक्षत्र स्वर्गमें होताहै तिसका फल राज्यप्राप्ति और मिथुन तुला मीनमें मूल पातालमें जानिये तिसका फल धनप्राप्ति और मेष धन कर्क मकर इनलग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें होताहै इस्का फल कुटुंबनाश यह १२ लग्नोंका फलहै ॥

आश्लेषानक्षत्रस्यनराकारचक्रम्।

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहुहृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेहभागः ॥ बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्रषण्नंदपंचशिरसः क्रमशस्तुनाड्यः ॥ राज्यंपितृक्षयोमातृनाशः कामक्रियारतिः पितृभक्तोबली स्वघ्नस्त्यागीभोगीधनीक्रमात् ॥

टीका—आश्लेषा नक्षत्रकी घटिकायोंको नराकार चक्रमें स्थापन करनेमें प्रथम ५ घटिका मस्तक तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घटी मुख तिनका फल पिताका नाश, तीसरा विभाग दो घडी तिनका फल माताका नाश, चौथे ३ घटिका ग्रीवा तिनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग ४ घटी दोनों कांधे तिनका फल पितृभक्त, छठा भाग ८ घटी दोनों बाहु तिनका फल बली ७ भाग ११ घटी हृदय तिनका फल आत्मघाती आठवाँ भाग ६ घटी दोनों जानु तिनका फल त्यागी, नौवाँ विभाग ९ घटिका गुह्य तिसका फल भोगी, दशवां भाग ५ घटी दोनों पांव तिनका फल धनवान्, जिस विभागमें जन्म होय जिसका फल स्थानानुसार कहना योग्य है ॥

जन्मसमयमेंसूर्यादिग्रहोंकाफल।

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितोदिनकरःकुरुतेंगपीडांपृथ्वीसुतोवितनुतेरुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतः प्रकुरुतेबहुदुःखभाजंजीवेंदुभार्गवबुधाःसुखकांतिदाःस्युः ॥ धनस्थान ॥ दुःखावहाधनविनाशकराः प्रदिष्टावित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥ चंद्रोबुधःसुरगुरुर्भृगुनंदनोवा नानाविधं धनचयंकुरुतेधन-

स्थः ॥ सहजस्थान ॥ भानुः करोतिविरुजंरजनीकरोपि कीर्त्यायुतंक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिंबुधःसुधिषणंसुविनीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये ॥ सुहृत्स्थान ॥ आदित्यभौमशनयः सुखवर्जितांगंकुर्वंति जन्मनिनरंसुचिरंचतुर्थे ॥ सोमोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवासौख्यान्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ॥ सुतस्थान ॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतंबुधश्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेंदुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वंति पुत्रबहुलंसुखिनं सुरूपम् ॥ रिपुस्थान ॥ मार्तंडभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपंगुर्नरंरिपुगृहेष्वतिपूजनियम् ॥ काव्येंदुजौमतिविहीनमनल्पलोगंजीवः करोतिविकलंमरणं शशांकः ॥ जायास्थान ॥ तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तमस्थाजायांकुकर्मनिरतां तनुसंततिं च ॥ जीवेंदुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम्॥मृत्युस्थान॥ सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितांतंमृत्युस्थितावितनुतेकिलदुष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिसौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ॥ धर्मस्थान ॥ धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वंतिधर्मरहितं विमतिंकुशीलम् ॥ चंद्रोबुधोभृगुसुतः सुरराजमंत्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुतेमनुष्यम्॥कर्मस्थान॥आदित्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाःकुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्रम्॥ चंद्रःसुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तंरूपान्वितं बुधगुरूशुभकर्मभाजम् ॥ लाभस्थान॥लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तंतारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेकसुभगं च धनायुपीज्यः शुक्रःकरोतिसगुणंरविजःसुकीर्तिम्।व्ययस्थान। सूर्यःकरोतिपुरुषंव्ययगोविशीलं काणंशशीक्षितिसुतो बहुपापभाजम् ॥ चंद्रांगजो गतधनंधिषणःकृशांगंशुक्रोबहुव्ययकरं रविजःसुतीव्रम् ॥ राहुकेतुफलंसर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥

सं०	स्था	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि राहु के.
१	तनु	अगपीडा	काति और सुख	रक्तकोप	काति और सुख	कांतिऔरसुख	कातिऔरसुख	अतिदुःखदायक
२	धन	अतिदुःखबाधनकानाश	सपत्तिकोबहुत प्राप्ति	दुःखप्राप्तिधन. कानाश	नानाप्रकारके स० प्राप्ति	नानाप्रकारकी सपत्ति प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्तिप्राप्ति	अतिदुःखप्राप्ति धनकानाश
३	सह.	निरोगीरहै	कीर्तिलाभ	क्रोधयुक्तरहै	समृद्धि	सुबुद्धि	नानाविषधारण०	स्त्रियोंकोप्रियहो
४	सुहृत्	शरीरकापीडा बहुतहोय	सुखभोगी	शरीरकोबहुत पीडा	सुखभोगी	सुखभोगी	सुखभोग	शरीरकोपीडाबहुतहोय
५	सुत	रोगबहुतहोय	बहुतपुत्रहोय	सतानरहित	अल्पपुत्रसंतानि	बहुपुत्रप्राप्ति	बहुतपुत्र	संतानि नहो
६	रिपु	शत्रुकानाशकरे	मरणपावे	शत्रुनाश	बुद्धिहीनबहुरोग	शरीरविकलरहै	बुद्धिहीनबहरो.	शत्रुग्रहपूज्य
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी सतानीअल्प	स्त्रीरूपवतीगुणवतीगुणयुक्तपुत्र	स्त्रीदुष्टकर्मी व संततिअल्प	स्त्रीरूपवान् बहु पुत्रप्राप्ति	औरमनहारण होयसुखभोगी	मनहरनेवाळी पुत्रवतीचतुर	स्त्रीदुष्टकर्मी संतानथोडीउत्पन्न
८	मृत्यु	इसमें सब ग्रहोंकाफल एक समानहोताहै दुष्टबुद्धि शस्त्रघात शरीरपीडा सुखरहित और रोगीहोय जो ग्रह इस स्थानमें होय ताका ऐसा फल जानिये						
९	धर्म	अधर्मीदुःष्टमति दुष्टशील	धार्मिकहोय	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धर्मनिरतरकरे	धर्मनिरतरकरे	धर्मनिरंतरकरे	अधर्मी दुष्टबुद्धि
१०	कर्म	अत्यतदुष्टकर्मी कुपुत्र	अत्यतकीर्तिवान् होय	दुष्टकर्मीकुपुत्र	कीर्तिवान्	शुभकर्मकरे	सपत्तिवान्	अत्यंतदुष्टकर्मी व कुपुत्र
११	आय	राजसीसभागमकरे	धनबहुतमिले	पृथ्वीलाभराजासे	विवेकयुक्तऔर सुदर	धन और आयु की वृद्धि	गुणवान्	अच्छीकीर्तिपावे
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	काणाहोय	पापकर्म	धनहीन	कृशगात्र	व्याधियुत	तीव्रहोय

पुरुषकेजन्मकालमेंजैसेग्रहपडेहोंयतिनकाफल ।

टीका—जन्मलग्नके तनु आदि द्वादशस्थानोंमें जो जो ग्रह पडे होंय तिनके पृथक्२फल जाननेके लिये कोष्ठक और राहुकेतुके फल शनिके समानजानिये.

जन्मलग्नमेंबालककेमृत्युकारकग्रह ।

चंद्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च श-
निजन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तुपंचभृगुषष्ठ बु-
धश्चतुर्थे जातो नजीवतिनरः प्रवदंति संतः ॥

टीका—जन्मलग्नसे चंद्रमा अष्टमस्थानी भौम ७ स्थानमें राहु ९स्थानमें शनि जन्मलग्नमें गुरु तृतीयस्थानमें शुक्र ६ स्थानमें बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रह पडें तो शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

जन्मलग्नमेंस्त्रीकेमृत्युकारकग्रह ।

षष्ठे च भवनेभौमोराहुः सप्तमसंभवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्यभार्या नजीवति ॥

टीका—जन्मलग्नसे छठे स्थानमें भौम राहु ७ स्थानमें शनि ८ स्थानमें ऐसे ऐसे ग्रह जिसके कुंडलीमें पडें होंय उस पुरुषकी स्त्री नजीवे ॥

अच्छेपराक्रमीग्रह ।

मूर्तौशुक्रबुधौयस्य केंद्रे चैव बृहस्पतिः ॥
दशमोंगारकोयस्यसज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका—जिसके जन्मलग्नमें शुक्र बुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें बृहस्पति तथा दशमस्थानमें मंगल होय तो उस बालकको कुलदीपक जानिये ॥

पराक्रमीग्रह ।

नैवशुक्रोबुधोनैवनाऽस्तिकेन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोऽगारकोनैवसजातः किंकरिष्यति ॥

टीका—जिस बालकके लग्नमें बुध शुक्र अथवा केन्द्रमें बृहस्पति किंवा दशमस्थानी मंगल ऐसे ग्रह न पडें होंय तो उसका जन्म होना वृथा जानिये॥

जातिभ्रंशकारक ।

धनस्थानेयदासौरिः सैंहिकेयोधरात्मजः ॥ शुक्रोगुरुः सप्तमे च

त्वष्टमौरविचन्द्रकौ ॥ ब्रह्मपुत्रेपदेवापि वेश्यासु च सदारतिः ॥
प्राप्तेविंशतिमेवर्षेम्लेच्छोभवतिनान्यथा ॥

टीका–जिसके धनस्थानमें शनि राहु मंगल और सप्तमस्थानमें शुक्र गुरु तथा अष्टमस्थानमें रवि चंद्र ऐसे ग्रह होंय सो बालक कदाचित् ब्राह्मण-जातिमेंभी जन्म पावे तथापि वेश्याप्रसंगी होय और वीसवीं वर्षकी अवस्थामें अवश्य म्लेच्छ होय ॥

मातापिताकेनाशक ।

पष्ठे च द्वादशेराशौ यदापापग्रहोभवेत् ॥
तदामातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमेपितुः ॥

टीका–जो छठे अथवा बारहवें स्थानमें पाप ग्रह होय तो माताको अशुभ किंवा चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रह होय तो पिताको अशुभ जानिये.

मृत्युकारकग्रह ।

अर्कोराहुः कुजः सौरिर्लग्नेतिष्ठतिपंचमे ॥
पितरंमातरंहंति भ्रातरंस्वशिशून्क्रमात् ॥

टीका–जो सूर्य राहु मंगल शनि ये ग्रह जन्मलग्नसे पांचवे स्थानमें पडे हो तो क्रमसे रवि पिताको, राहु माताको, भौम भ्राताको और शनि अपने बालकोंके लिये अशुभ जानिये ॥

लग्नस्थानेयदासौरिः षष्ठोभवतिचंद्रमाः ॥
कुजस्तुसप्तमस्थाने पितातस्यनजीवति ॥

टीका–जिसके जन्मलग्नमें शनि और छठे स्थानमें चन्द्रमा सप्तममें मंगल ऐसे ग्रह उसका पिता नजीवे ॥

पातालस्थोयदाहुश्चेंदुःषष्ठाष्टमेपिच ॥
पापदृष्टोपिशेषेणसद्यःप्राणहरःशिशोः ॥

टीका–जन्मलग्नके सप्तमस्थानमें राहू छठे अथवा आठवें स्थानमें चंद्रमा और शेष ग्रहोंकी पापदृष्टि जो ऐसे ग्रह होंय तो जन्म होतेही बालककी मृत्यु होय ॥

जन्मलग्नेयदाराहुः षष्ठोभवतिचंद्रमाः ॥
जातोमृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यांत्वपमृत्युना ॥

टीका-जन्मलग्नमें राहु षष्ठस्थानमें चंद्रमा ऐसे समय जन्मे तो बालकको मृत्यु और जन्म लग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि होय तो अपमृत्यु जानिये.

जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशंकरः ॥

टीका-जो जन्मलग्नमें मंगल और अष्टमस्थानी बृहस्पति ऐसे ग्रह होय तो बारहवें वर्ष शंकर रक्षक हो तो भी मृत्यु जानिये ॥

शनिक्षेत्रेयदासूर्यो भानुक्षेत्रेयदाशनिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्देवो वैरक्षितायदि ॥

टीका-जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य होय और सूर्यके ग्रहमें शनि होय तो बारहवें वर्ष देवरक्षितभी शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

षष्ठोष्टमस्तथामूर्तौ जन्मकालेयदाबुधः ॥
चतुर्थवर्षेमृत्युश्चयदि रक्षतिशंकरः ॥

टीका-षष्ठ अष्टम अथवा जन्म लग्नमें बुध होय तो चौथे वर्ष शंकरभी रक्षा करै तोभी बालक न बचे ॥

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टसु च चंद्रमाः ॥
वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरोरक्षितायदि ॥

टीका-मंगलके घरमें बृहस्पति और षष्ठ अथवा अष्टमस्थानी चन्द्रमा ऐसे ग्रह होय तो ईश्वररक्षितभी बालक आठवें वर्ष मृत्युको प्राप्त होय ॥

दशमोपियदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभवेत् ॥
वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥

टीका-जन्मलग्नसे दशमस्थानी अथवा जन्मलग्नमें राहु होय तो सोलहवें वर्षमें मृत्यु होय ॥

ग्रहोंकीदृष्टि।

पादेकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमेवा ॥ त्रिपाददृष्टिश्च-

तुरष्टके च संपूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥ शनेस्त्वेकादशेपूर्णादृष्टिर्जीवस्यकोणके ॥ बुधैर्ज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके ॥

टीका—जन्म लग्नसे दशवें और तीसरे स्थानमें जौनसे ग्रह होय वे एक पाद दृष्टिसे जन्म लग्नको देखतेहैं. इसी क्रमसे नवम पंचम स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टिसे देखते हैं चौथे और आठवें स्थान जो ग्रह पडें होय वे त्रिपाद दृष्टिसे सप्तम स्थानी होय तिसकी पूर्ण सम दृष्टि जानिये. जन्म लग्नसे शनैश्चर एकादश अथवा तीसरे स्थानमें होय तो पूर्णदृष्टिसे लग्नको देखताहै, पांचवें नवमें गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थानमें भौम होय तो लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता है ॥

ग्रहोंकाउच्चत्व व नीचत्व ।

रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचंद्रस्तुवृश्चिके ॥ भौमश्चनक्रेकर्के च स्त्रियां सौम्यो झषे तथा॥गुरुःकर्केच नक्रेच मीनकन्ये सितस्यच ॥ मंदस्तुलायां मेषे च कन्याराहुग्रहस्यच॥ राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ॥ प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥

ग्रह	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुल	कन्या मिथुन	तुल
नीच	तुल	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

जन्मलग्नकाफल ।

मेषेदैन्यमुपैति गर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथेशूरः कर्कटकेधृतीच वनपे कन्याच मायान्विता॥सत्यंचैवतुलेत्वलौ मलिनता पापान्वितंवैधनुर्मूर्खोयंमकरेघटे चतुरतामीनेत्वधीरामतिः ॥

टीका—मेष लग्नमें जन्म होय तो दीनता,वृषमें गर्वित, मिथुनमें नाना प्रकारकी बुद्धियुत, कर्कमें बडाशूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंत मानी तुलामें सत्यवादी,वृश्चिकमें मलीन,धनमें पापबुद्धि,मकरमेंमूर्ख,कुंभमें चतुर,मीन लग्नमें जो जन्म पावै सो बडा धीर वीर नहोय ऐसे जन्मलग्नका फल जानिये

स्त्रीजातकमाह।

लग्नेच च सप्तमेपापेसप्तमेवत्सरेपतिः ॥
म्रियतेचाष्टमेवर्षेचंद्रः षष्ठाष्टमेयदि ॥

टीका–स्त्रीके जन्मकालमें लग्नमें पापग्रह होय तो ७ वर्षमें पतिनाश जानना और चंद्र षष्ठ वा अष्टम स्थानमें होय तो अष्टमवर्षमें पतिका नाश जानना ॥

अन्यमते ॥ द्वादशेचाष्टमे भौमेक्रूरेतत्रैवसंस्थिते ॥
लग्ने च सिंहिकापुत्रेरंडाभवतिकन्यका ॥

टीका–जन्म समयमें १२।८स्थानमें जो मंगल होय और क्रूरग्रहभी १२।८ स्थानमें होय और जो लग्नमें राहु होय, तौ स्त्री विधवा होय ऐसा जानना ॥

अन्यमते ॥ लग्नात्सप्तमगः पापश्चंद्रात्सप्तमगोऽपिवा ॥
सद्योनिहंतिदंपत्योरेकंनात्स्यत्रसंशयः ॥

टीका–जो लग्नसे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय और चंद्रमासे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय तो विवाहसे अल्पकालमें स्त्री विधवा होय ॥

रविसुतोयदिकर्कमुपागतो हिमकरोमकरोपगतोभवेत् ॥
किलजलोदरसंजनिता तदानिधनतावनितासुतकीर्तिता ॥

टीका–जो शनैश्चर कर्कराशिमें होय और चंद्रमा मकरराशिमें होय तो जलोदररोगसे स्त्रीका नाश जानिये ॥

निशाकरःपापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोति ॥
पापाःस्मरस्थेन्यखगे च धर्मेकिलांगना प्रव्रजितत्वमेति ॥

टीका–जो चंद्रमा पापग्रहके मध्यमें बैठा होय तौ शस्त्रसे मृत्यु कहना और जो चंद्रमा मंगलकी राशिमें बैठा होय तौ अग्निसे जलकर नाश कहना और जो पापग्रह सप्तमस्थानमें अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह होय तो स्त्री काषायवस्त्रधारी वेदांती होतीहै ॥

सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजे च विधवाखलुबाल्ये ॥
पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरतीस्यात् ॥

टीका–जो स्त्रीके जन्मलग्नमें सप्तमस्थानमें सूर्य होय तो पति त्यागी कहना और जो मंगल सप्तम होय तो बालअवस्थामें वैधव्य प्राप्ति होय और जो सप्तम पापग्रह देखता होय तो यौवनअवस्थामें विधवा होय और जो सप्तमस्थानमें शनैश्चर होय तो वृद्ध अवस्थामें वैधव्यप्राप्ति ऐसा जानिये ॥

लग्नेसितेंदुचतथाकुजमंदभस्थौक्रूरेक्षितौसान्यरता च बाला ॥
स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्शुभाशुभांशे ॥

टीका–जो लग्नमें शुक्र,चंद्रमा होय और मंगल शनि ये दशम स्थानमेंपडे होंय और उसको पापग्रह देखते होंय तो वह स्त्री परपुरुषसे संग करै-और जो सप्तम स्थानमें मंगलका अंश होय और शनैश्चर सप्तम स्थानको देखता होय तो नष्टयोनी जानना-जो सप्तमस्थानमें शुभग्रहका अंश होय तो शुभ कहना॥

सूर्यारौखजलाश्रितौहिमवतः शैलाग्रपातान्मृति-
र्भौमेंद्वर्कसुताःस्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥
सूर्याचंद्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यायुतौ बंधुना
तौचेद्द्वचंगविलग्नसंस्थितकरौ तोयेनिमग्नत्वतः ॥

टीका–जो सूर्य मंगल ये दशमे वा चौथे स्थानमें होय तो पाषाणसे मृत्यु कहना और जो मंगल चंद्र शनि ये अपने स्थानमें सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें बैठे होंय तो कूवा-बावडी-तालाव आदिसे मृत्यु कहना-और जो सूर्य-चंद्रमाको पापग्रह देखते होय वा युक्त होय तो वह स्त्री बंधुयुक्त कहना-और जो सूर्य, चंद्र ये द्विस्वभावमें होय तो जलसे मृत्यु कहना चाहिये ॥

समेविलग्नेयदिसंस्थितः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥
स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥

टीका–जो समराशिकी लग्नहोय और उसमें शुक्र बुध चंद्र गुरु ये बल युक्त होंय तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करै और उत्तम प्रकारकी ज्ञानी होय ॥

सप्तमेभार्गवेजाताकुलदोषकराभवेत् ॥
कर्कराशिस्थितेभौमेस्वैराभ्रमतिवेश्मसु ॥

टीका-जिस स्त्रीके लग्नसे सप्तमस्थानमें जो शुक्र होय तो कुलको दूषित करे और जो कर्कराशिमें मंगल होय तो वंध्या और दूसरेके घरमें वास करे ऐसा जानना ॥

पापयोरंतरेलग्ने चंद्रेवायदिकन्यका ॥
जायते च तदा हंति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥

टीका-जो लग्नके पापग्रहकी कर्तरी होय अथवा चंद्रमाके पापग्रहकी कर्तरी होय तो वह स्त्री दोनों वंशकी घात करनेवाली होतीहै ॥

॥ तनुस्थान ॥ मूर्तौकरोतिविधवां दिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्टतनयांरविजोदरिद्राम् ॥ शुक्रः शशांकतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ धनस्थान ॥ कुर्वंतिभास्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्रचदुःखमतुलं नियतंद्वितीये॥वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यानारीं प्रभूततनयांकुरुतेशशांकः ॥ सहजस्थान ॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युः स्त्रियंबहुसुतांधनभागिनीं च ॥ सत्यंदिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मीं ददातिनियतं किलसैंहिकेयः ॥ सुहृत्स्थान ॥ स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुते चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणःकुरुते शशी च ॥ राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पबीजां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ॥ सुतस्थान ॥ नष्टात्मजांरविकुजौखलुपंचमस्थौचंद्रात्मजो बहुसुतांगुरुभार्गवौ च ॥ राहुर्ददातिमरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनिरतां कुरुतेशशांकः ॥ रिपुस्थान ॥ षष्ठस्थिताःशनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहुसुतां धनभागिनीं च॥चंद्रःकरोति विधवामुशनादरिद्रां वेश्यां शशांकतनयः कलहप्रियां च ॥ जायास्थान॥सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रादद्युःप्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाः॥ वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशंव्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण॥मृत्युस्थान स्थानेष्टमेगुरुबुधौ नियतंवियोगं मृत्युंशशी भृगुसुतश्च तथैव राहु ॥ सूर्यःकरोतिविधवां धनिनींकुजश्चसूर्यात्मजोबहुसुतां

पतिवल्लभां च ॥ धर्मस्थान ॥ धर्मे स्थिताभृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगाम्॥राहुश्चसूर्यतनयश्च करोतिवंध्यांनारींप्रसूतितनयांकुरुतेशशांकः ॥ कर्मस्थान ॥ राहुर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चरश्च ॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चंद्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च ॥ आयस्थान॥आयेरविर्बहुसुतां धनिनींशशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतो रविजोधनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजःसुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ व्ययस्थान ॥ अंत्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रांवंध्यांकुजःपररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वींसितेज्यशशिजावहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुतेन्ययगोदिनांधान् ॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुकानाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाशक
२	धन	दरिद्रदुःख	बहुपुत्रवती	दरिद्रदुःख	सौभाग्यसंपत्ति	सौभाग्यसंपत्ति	सौभाग्यसंपत्ति	दरिद्रदुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवतीधनाढ्या	पुत्रवती-धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवती
४	सुहृत्	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्पसतान	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	दुग्धअल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्याअधिक	शिशुनाशवती	बहुफलप्राप्ति	बहुफलप्राप्ति	बहुफलप्राप्ति	रोगिणी	मरणप्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	कलहरूप	धनवती	दरिद्रगीवेश्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासिना	विधवा	क्षय	भयबंध	मृत्यु	वैधव्यमरण	वित्तनाश
८	मृत्यु	विधवा	मरणांतवियोगी	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	मरणांतवियोग	आत्मपुत्रसंतान	मरणांतवियोग
९	धर्म	धर्मपुण्यफल करे	पुत्रवती	धर्मकार्यकर्त्री	उत्तमभोगवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१०	कर्म	पापकारिणी	दरिद्रव्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	धनवतीराज्यकीर्तिप्राप्ति	धनादरप्राप्ति	पापकर्मिणी	विधवा
११	आय	अतिपुत्रप्राप्ति	लक्ष्मीवती	बहुपुत्रवती	सुखिनी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२	व्यय	खर्चकरती	दिनांध	वांझव्यभिचारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चकरनेहारी	व्यभिचारिणीपापिनी

अष्टोत्तरीदशाक्रम।

आर्द्रापुनर्वसुःपुष्य आश्लेषातुरवेर्दशा॥मघापूर्वोत्तराचैव चंद्रस्य च दशातथा॥हस्तोविशाखाचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता॥ ज्येष्ठानुराधामूले च सौम्यस्य च दशाबुधैः॥अभिजिच्छ्रवणःपूषा ऊषाचैवशनेर्दशा॥ धनिष्ठाशतताराचपूर्वाभाद्रपदागुरोः॥ उभा पूषाश्विनी कालेराहोश्चैव दशास्मृता॥कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाःसूर्यादिकादशाः॥ क्रूरजाअशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटजा॥

संख्याकाक्रममहादशाकी।

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दोःपंचदशैवच॥ भौमस्यवसुवर्षाणिऋषिचंद्रबुधस्यच॥ ६॥ मंदस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः॥

टीका-आर्द्रासेमृगशिरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्य चंद्रभौम बुधशनिगुरुराहु शुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंकेपृथक् दोकोष्ठक लिखेहैं तिनमेंसे महादशाकीवर्ष संख्या इसप्रकारहै-पापग्रहके नक्षत्र४और शुभ ग्रहके ३नक्षत्र जानिये. आर्द्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभागके अंतमें होय तो इस क्रमसे भोग्यदशा जाननी और जन्मकालमें जो दशा होय वही प्रथम जाननी॥सूर्यकी दशा६वर्ष,चंद्रकी१५,मंगलकी ८, बुधकी १७,शनिकी१०,गुरुकी१९,राहुकी१२,शुक्रकी१९वर्ष भोग्यदशा जानिये.

अंतर्दशा लानेका क्रम।

महादशास्वस्वदशाब्दनिघ्नाभक्ताःस्वबाहूशशिभिःसमाद्याः॥ अंतर्दशाःस्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशास्यात्॥ ८॥

टीका—जो ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी होय तो जन्मदशाकी वर्षसंख्याको दूसरी दशाकी वर्षसंख्यासे गुणा करे और १०८ का भागदे जो लब्धि आवे वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२से गुणा करके १०८ का भागदेनेसे जो लब्धि आवे सो मास जानिये, फिर ३० से गुणाकरके दिन और ६० से गुणा करके दिन और६० से गुणा करके घटि इत्यादि निकाल

लीजिये, और इसी क्रमसे १२० का भाग विंशोत्तरी दशामें दिया जाताहै॥

सूर्यकी महादशाके वर्ष ६ आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा					
अंतर्दशाक्रम					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ
भौम	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	

चंद्रकी महादशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफा० उत्तराफा०					
अंतर्दशाक्रम					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
चंद्र	२	१	०	०	शुभ
भौम	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	

भौमकी महादशाके वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाती विशाखा					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकी महादशाके वर्ष १७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

शनिकी महादशाके वर्ष १०					
पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभिजित् श्र०					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
भौम	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	

गुरुकी महादशाके वर्ष १९					
धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
भौम	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	

राहुकीमहादशाके वर्ष १२					
उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
भौम	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	

शुक्रकी महादशाके वर्ष २२					
कृत्तिका रोहिणी मृगशिर					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
भौम	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	२१	०	०	०	

विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा ।

जन्मनोनजनुर्भमंकहृत्क्रमशोर्केंदुकुजागुसूरयः ॥
शनिचंद्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषात्तुदशाधिपास्तथा ॥

टीका—जन्मनक्षत्रमें २ घटाकर ९ का भागदे शेष १ रहे तो सूर्यकी दशा, २शेप रहे तो चंद्रकी दश ,३शेष बचें तो भौमकी,४शेष बचें तो राहु की,५शषे रहें तो गुरुकी,६ बचें तो शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, ८शेष बचें तो केतुकी, ९ का पूरा भाग लगजाय तो शुक्रकी दशा जानिये ॥

दशाओंके वर्ष भोग्याभोग्य निकालनेकीरीति ।

ऋतुदिग्गिरयो धृतिर्नृपातिधृतिर्मेघहयो नखाः समाः॥क्रमतो हिमता अथादिमाजनिभस्था घटिकाः समाहताः॥ भभोगेन भक्ताःफलंभुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ॥

टीका—ऋतु कहिये ६, दिक् कहिये १०, गिरि कहिये७, धृति कहिये १८ नृप १६ अतिधृति १९ मेघ १७ हय ७ नख २० यह वर्षसंख्या सूर्यसे शुक्रपर्यन्त लिखी है ॥ जन्म समय जिस ग्रहके जितने वर्ष होंय तिन वर्षोंसे जन्मके गतनक्षत्रको गुणाकरे फिर भभोगसे भागले जो लब्धि मिले सो वर्ष फिर १२ के भागसे दिवस और शेष घटी पल फिर इनमें भुक्त वर्षमासादि घटावे तो शेप भोग्य वर्षादिक निकल आते हैं ॥

विंशोत्तरीक्रम कोष्ठक ।

कृत्तिकादिक्रमेणैवज्ञेया विंशोत्तरीदशा ॥
अंतर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिता ॥

टीका—कृत्तिकासे लेकर भरणीपर्यंत २७ नक्षत्र और दशा वा अंतर्दशा और उनके पतियोंके नाम और तिनके वर्षादि संख्याका कोष्ठक ॥

अन्यमते ।

स्वंदंशारामगुणितातद्दशागुणितापुनः ॥
खगुणेनहरेल्लब्धंवर्षमासदिनंभवेत् ॥

टीका—अपनी भातदशाको तीनसे गुणा देना जिसकी अंतर्दशा लानी होय उस को वर्षसे गुणा देना अनंतर ३०से भाग लेनेसे अंतर्दशावर्षमासदिन प्राप्तहोताहै

सूर्यकेमन्दवर्ष ६
कृत्तिका उत्तराफा० उत्तराषा०
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
रवि	०	३	१८	
चन्द्र	०	६	०	
भौम	०	४	६	
राहु	०	१०	२४	
गुरु	०	९	१८	
शनि	०	११	१२	
बुध	०	१०	६	
केतु	०	४	६	
शुक्र	१	०	०	

चन्द्रकमन्दवर्ष १०
रोहिणी हस्त श्रवण
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
चन्द्र	०	१०	०	
भौम	०	७	०	
राहु	१	६	०	
गुरु	१	४	०	
शनि	१	७	०	
बुध	१	५	०	
केतु	०	७	०	
शुक्र	१	८	०	
रवि	०	६	०	

भौमक मन्दवर्ष ७
मृगशिर चित्रा धनिष्ठा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
रवि	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	

राहुकेमन्दवर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शततारका
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दि०	घ०
राहु	२	८	१२	
गुरु	२	४	२४	
शनि	२	१०	६	
बुध	२	६	१८	
केतु	१	०	१८	
शुक्र	३	०	०	
रवि	०	१०	२४	
चन्द्र	१	६	०	
भौम	१	०	१८	

गुरुकेमन्दवर्ष १६
पुनर्वसु विशाखा पूर्वाभाद्रपदा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
गुरु	२	१	१८	
शनि	२	६	१२	
बुध	२	३	६	
केतु	०	११	६	
शुक्र	२	८	०	
रवि	०	९	१८	
चन्द्र	१	४	०	
भौम	०	११	६	
राहु	२	४	२४	

शनिके मन्दवर्ष १९
उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
शनि	३	०	३	०
बुध	२	८	९	०
केतु	१	१	९	०
शुक्र	३	२	०	०
रवि	०	११	१२	०
चन्द्र	१	७	०	०
भौम	१	१	९	०
राहु	२	१०	६	०
गुरु	२	६	१२	११

बुधकीमन्दवर्ष १७
आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
बुध	२	४	२७	
केतु	०	११	२७	
शुक्र	२	१०	०	
सूर्य	०	१०	६	
चन्द्र	१	५	०	
भौम	०	११	२७	
राहु	२	६	१८	
गुरु	२	३	१६	१७
शनि	२	८	९	

केतुकमन्दवर्ष ७
मघा मूल अश्विनी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
सूर्य	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	

शुक्रका महादशा वर्ष २०
पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव	घ०
शुक्र	३	४	०	
सूर्य	१	०	०	
चन्द्र	१	८	०	
भौम	१	२	०	
राहु	३	०	०	
गुरु	२	८	०	
शनि	३	२	०	
बुध	२	१०	०	
केतु	१	२	०	

महादशा और अंतर्दशाओंके फल ।

रविकीदशा ।

देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचौरभयाचपीडा ॥ पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्यनाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति

टीका—देशांतरवास भ्राताका वियोगदुःख मनको उद्वेग रोगभय चौरपीडा और संचित धनका नाश करै यह रविदशाका फलहै ॥

चन्द्रान्तर्दशा ।

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरंपराच ॥
इष्टान्नदानशयनासनभोजनानिनूनंसदाशशिदशागमनेभवंति ॥

टीका—सुवर्ण आदिक ऐश्वर्यका और अश्व गज पालकी इत्यादि वाहनोंका लाभ शत्रुका पराजय बलकी वृद्धि और नाना प्रकारके सुरस अन्नदान शयन स्थान उत्तम आसन भोजन ये सब चंद्रमाकी दशामें प्राप्त होतेहैं ॥

भौमकी अंतर्दशा ।

भूपालचौरभयवह्निकृताचपीडासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच ॥
चिंताज्वरश्चबहुकष्टदरिद्रयुक्तःस्यात्सर्वदाकुजदशाजननेभवंति ॥

टीका—राजा और चोरोंसे भय और अग्निसे पीडा सर्व अंगरोग सदा दुःखी और नानाप्रकारकी चिंता ज्वर अत्यंतकष्ट ये सब भौमकी दशामें मनुष्य भोगते हैं ॥

राहुकीअंतर्दशा ।

दीनोनरोभवतिबुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिताच ॥
पापानिबंधबहुकष्टदरिद्रयुक्तंराहोर्दशाजननकालदशाभवंति ॥

टीका—मनुष्य बुद्धिहीन और दीन होय चिंतायुक्त और सर्व शरीरको अत्यंत रोगभय रहै और दुःख बंधन कष्ट बहुत दरिद्रता यह राहुकी अंतर्दशाका फल जानिये ॥

गुरुकी अंतर्दशा।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिर्धर्माधिकार-
परिपालनसिद्धिबुद्धिः॥ सद्भिग्रहोपिधनधान्य-
समृद्धिताचस्यादेवतागुरुदशागमने भवंति॥

टीका—राज्याधिकार और चित्तकी वृत्ति धर्ममें निष्ठा शरीरकी आरोग्यता निश्चय करके धन धान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशाका फल जानिये॥

शनिकी अंतर्दशा।

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचनेषुचयुद्धबुद्धिः॥
सिद्धंचकार्यमपियत्रसदाविनष्टंस्यात्सर्वदाशनिदशागमनेभवन्ति॥

टीका—मिथ्यापवाद दूसरेका हनन बंधन द्रव्यका नाश मित्र तथा बांधवोंसे कलहकी बुद्धि और कार्यभी नष्ट होजाय यह शनिकी अंतर्दशाका फल जानिये॥

बुधकी अंतर्दशा।

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविला-
समभिरागमनोभिरामम्॥ हेमादिरत्नविभवागम-
केशध्यानं स्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवन्ति॥

टीका—सुंदर स्त्री सुख और सर्व प्रकारके भोग विलास सुवर्ण और रत्न आदिकी प्राप्ति धनसंग्रह ईश्वरस्मरण १ इत्यादि बुधकी अंतर्दशामें फल जानिये.

केतुकी अंतर्दशा।

भार्यावियोजगनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानि-
रतिकष्टपरम्पराच॥ रोगाश्चबंधुकलहश्च
विदेशता च केतोर्दशाजननकालदशाभवन्ति॥

टीका—स्त्रीवियोगसे शरीरको दुःख द्रव्यकी हानि कष्ट रोग और बंधु कलह देशांतरगमन यह केतुकी दशाका अशुभफल है॥

शुक्रदशाका फल ।

आरामवृद्धिपरिसवेशशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रध-
नधान्यसमाकुलंच ॥ आयुःशरीरसुतपौत्रसु-
खंनराणांद्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवंति ॥

टीका—बाग आदिक स्थानप्राप्ति और शरीर पुष्ट श्वेत छत्रिकी प्राप्ति धन धान्यकी वृद्धि आयुकी और पुत्र पौत्रकी वृद्धि द्रव्यकी प्राप्ति यह शुक्रद- शाका फल जानिये ऐसेही सर्व ग्रहोंकी महादशाओंके फल जानिये ॥

योगिनीदशाके स्वामी ।

अथासामधीशाःक्रमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः
बुधःसूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाःसुतःसंकटायास्तथांतेचकेतुः ॥

टीका—मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनि, शुक्र राहु केतु संकटा दशाके स्वामी ये मंगलादिक दशाके स्वामी क्रमसे जानना ॥

योगिनीदशाक्रम ।

स्वर्क्षेपिनाकिनयनैःसंयोज्यं वसुभिर्भजेत् ॥
योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातेनसंकटा ॥

टीका—जन्म नक्षत्रमें तीन अंक मिलावे और आठका भागदे शेष अंक रहें सो मंगलादिकदशा क्रमसे जानिये इनका क्रम कोष्ठकमें लिखाहै ॥

योगिनीदशाके नाम ।

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिकापि च ॥
उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशाःस्मृताः ॥

टीका—मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका उल्का सिद्धा संकटा ये आठों योगिनीदशाओंको क्रमसे जानिये ॥

वर्षसंख्या ।

एकद्वित्रीणि वेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ॥
अष्टवर्षाणिहि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥

टीका—मंगलादिदशाओंके नाम- पृथक्- २ और वर्ष संख्याके दिवस करि तिनमें अन्तर्दशा लानेका क्रम प्रथम दशा वर्ष एक तिसके दिवस ३६० दिन तिनमें ३६ का भागदे लब्धिको अन्तर्दशा स्पष्ट जानिये और इसी रीति अनुसार दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये ॥

अन्तर्दशा।

अथान्तर्दशायाःप्रकारंप्रवच्मिदशावार्षिकंस्वस्ववर्षेणगुण्यम्।
ततःपट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदाखेटविद्भिर्विधेयाफलार्थम् ॥

टीका—प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उसके वर्षसंख्यासे प्राप्त दशाको गुण देना उसमें ३६ का भाग देनेसे अंतर्दशा होतीहै-आगे चक्रमें स्पष्ट प्रतीत होगा ॥

मंगलाकेवर्ष १ तिसके दिन३६०		पिंगलाके वर्ष २ दि०७२०		धान्याके वर्ष ३ दि १०८०		भ्रामरी वर्ष ४ दि १४४०		भद्रिका वर्ष ५ दि १८००		उल्का वर्ष ६ दि २१६०		सिद्धा वर्ष ७ दि २५२०		संकटा वर्ष ८ दि २८८०	
मंगला	१०	पि	४०	धा	९०	भ्रा	१६०	भ	२५०	उ	३६०	सि	४९०	म	६४०
पिंगला	२०	धा	६०	भ्रा	१२०	भ	२००	उ	३००	सि	४२०	स	५६०	म	८०
धान्या	३०	भ्रा	८०	भ	१५०	उ	२४०	सि	३५०	स	४८०	म	७०	पिं	१६०
भ्रामरी	४०	भ	१००	उ	१८०	सि	२८०	स	४००	म	६०	पि	१४०	धा	२४०
भद्रिका	५०	उ	१२०	सि	२१०	स	३२०	म	५०	पिं	१२०	धा	२१०	भ्रा	३२०
उल्का	६०	सि	१४०	स	२४०	म	४०	पि	१००	धा	१८०	भ्रा	२८०	भ	४००
सिद्धा	७०	स	१६०	म	३०	पिं	८०	धा	१५०	भ्रा	२४०	म	३५०	उ	४८०
संकटा	८०	म	२०	पिं	६०	धा	१२०	भ्रा	२००	भ	३००	उ	४२०	सि	५६०
जोड	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

३६ वर्षमें ८ योगिनीकी दशा बीत जातीहै और बारंबार इसी क्रमानुसार जानिये ॥

दशाकाफल।

वैरिणान्तुविपदाविनाशिका वाहनादिवसुरत्नलाभदा ॥
कामिनीसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥

टीका—शत्रुके उपद्रवका नाश-और घोडा हाथी सुवर्ण रत्न आदिका लाभ और स्त्री पुत्र ग्रहादिकका लाभ-और मंगलादि कार्यका उदय होना यह मंगला दशामें फल जानना ॥

दुःखशोककुलरोगवर्धिता व्यग्रताचकलहः स्वजनैश्च ॥
अंशभागकथिता फलदासौ पिंगलाचविदुषांसुखदादौ ॥

टीका–दुःख शोक कुलमें रोग वृद्धि-चित्तमें व्याकुलता-बंधुनमें वैरपिंगला आदिमें सुख देतीहै तिसके अनंतर लिखा फल पिंगलाका जानना ॥

धनंधान्यवृद्धिंधरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतः ॥
कलत्रांगनानांसुखंचित्रवस्त्रैर्युतंधान्यकाधान्यवृद्धिंकरोति ॥

टीका–धनवृद्धि धान्यवृद्धि राजपूजनीय सर्वकाल युद्ध भूमिमें जय धैर्ययुक्त स्त्री पुत्रका सुख और चित्रवस्त्रयुक्त धान्या दशाका यह फल जानना.

विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगताश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वम् ॥
ऋणंव्याधिवृद्धिर्जनानां प्रकोपं दशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशम् ॥

टीका–विदेशमें भ्रमण, युद्धमें हानि, स्त्रीको पीडा–सुखहीन ऋणयुक्त रोगवृद्धि-जनका प्रकोप-सर्व देशमें भ्रमण यह भ्रामरीदशामें फल जानना.

धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमंराजमान्यम् ।
अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यं सदाभद्रिकाभद्रकार्यंकरोति॥

टीका–धनकी वृद्धि, आनंदकी वृद्धि, गुणका प्रकाश, उत्तम वस्त्रप्राप्ति, राजमान्य भूषणकी प्राप्ति–स्त्रीभोगादिका सौख्य और कल्याण यह भद्रिका दशामें फल जानना ॥

भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपं धनादेशदारादिकानांवियोगम्॥
स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्बंधुवैरं दशाचोल्ककानर्थकारी सदैव ॥

टीका–भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देशवियोग स्त्रीवियोग गोत्रमें कलह–मित्र बंधु इनसे वैर और नानाप्रकारके अनर्थ यह उल्कादशामें फल जानना ॥

राज्याभिमानंस्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभंगुणकीर्तिसिद्धिम्॥
राज्यादिलाभंसुतवृद्धिसौख्यं सिद्धंचासिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥

टीका–राज्यप्राप्ति अभिमान-अपने गोत्रमें सुख देखना-धान्य आदिका लाभ गुणसिद्धि–कीर्तिसिद्धि–राज्य आदिका लाभ–पुत्रवृद्धि–सुख और सर्वकार्यकी सिद्धि यह सिद्धादशामें फल जानना ॥

जनानांविवादंज्वराणांप्रकोपं कलत्रादिकष्टंपशूनांहिनाशम् ॥ गृहेस्वल्पवासंप्रवासाभिलापं दशासंकटा संकटं राजपक्षात ॥

टीका-जनोंमें कलह-ज्वरकी पीडा-स्त्रीआदिकका कष्ट और पशुओं-का नाश घरमें थोडा वास प्रवास अभिलाप राजपक्षसे संकट यह संकटा दशाका फल जानना चाहिये ॥

मंगलामंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ॥ पिंगलातनुतेव्याधिम्मनसोदुःखसंभ्रमौ ॥ ४ धान्याधनसुहृद्बंधुरूपसीमन्तिनीकरी ॥ भ्रामरीजन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतोदिशम् ॥ भद्रिकासुखसंपत्तिविलासयशदायिनी ॥ उल्काराज्यधनारोग्यहारिणीदुःखकारिणी ॥ सिद्धा साधयते कार्यं नृणांवैसुखदा भवेत् ॥ संकटा संकटव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥

टीका-मंगला दशाका फल शुभ कार्य आनंद यश और द्रव्यप्राप्ति और पिंगलाका शरीरको व्याधि और मनको दुःख तथा भ्रम, धान्याको फल धनमित्र बंधुमिलाप आरोग्यता और सुंदरता, भ्रामरीका फल स्थान-नाश दिशाभ्रमण, भद्रिकाका सुख संपत्ति विलास यश इत्यादि, उल्काका राजभय धननाश रोगग्रस्तता और पीडा, सिद्धाका कार्यसिद्धि और सुख प्राप्ति,संकटाका फल व्याधि मरण क्लेश इति ॥

रविदिनखसंख्याचंद्रमाव्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वीचंद्रजःपट्शराश्च ॥ शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्ततिःशुक्रसंख्या ॥ जन्मना विंशतिःसूर्ये तृतीये दशचंद्रमाः ॥चतुर्थे भौमचाष्टौच षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ सप्तमे दशसौरिःस्यान्नवमेचाष्टमेगुरोः ॥ दशमेराहुर्विंशत्या तदूर्ध्वंतु भृगोर्दश ॥ ॥ फलम् ॥ पंथाभोगोनुतापश्च सौख्यंपीडाधनं क्रमात ॥ नाशःशोकश्चसौख्यंच जन्मसूर्यदशाफलम् ॥

टीका-वर्षदशाका आरंभ ताको क्रम-जा मासमें जाके जन्मराशिके सूर्य होय सो द्वादशस्थान भोगतेहैं और सब दशाका क्रम इस रीतिपरहै॥

२० दिवस सूर्यकी दशा जन्मस्थानसे जानिये तिसका फल मार्ग चलना, ५० दिवस चंद्रमाकी दशा, तीसरे स्थानके १० दिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल नाना प्रकारके उत्तम भोग ॥

२८ दिवस मंगलकी दशा चौथे स्थान आठदिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल रोग और तृषता होय ॥

५६ दिवस बुधकी दशा छठे स्थान ४ दिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल सुखकारक होय ॥

३६ दिवस शनिकी दशा सप्तम स्थान १० दिवस रवि भोगतेहैं ताको फल पीडाकारक जानिये ॥

५८ दिवस गुरुकी दशा नवमस्थान ८ दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल धन प्राप्ति ॥

४२ दिवस राहुकी दशा दशमस्थान २७दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल नानाँ प्रकारका शोच ॥

७० दिवस शुक्रकी दशा द्वादश स्थानमें रवि संपूर्ण भोगते हैं तिसका फल सर्व सुखकारक जानिये ॥

ग्रहोंकी नित्यानित्यदशाओंका प्रकार।

तिथिवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्॥नवभिश्चहरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमंदज्ञकोसिताः ॥ क्रमेणैकादशाज्ञेया फलंपूर्वोक्तमेवाहि ॥

टीका—गततिथि और वार नक्षत्र और अपने नामके अक्षर सबको इकट्ठे करके ९ का भागदे शेष १ रहे तो रविकी दशा,२ बचे तो चंद्रमाकी, ३ शेष बचें तो भौमकी दशा, ४ शेष रहैं तो राहुकी, ५ बचे तो गुरुकी, ६ शेष रहैं तो शनिकी, ७ शेष बचे तो बुधकी,८ शेष रहैं तो केतुकी, और पूरा भाग लगिजाय तो शुक्रकी दशा जानिये; इसी प्रकार नित्यदशा क्रमसे जानिये और फल वर्षदशाके तुल्य जानिये ॥

दूसरा मत ।

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं शेषंदिनदशोच्यते ॥ रविणाशोकसंतापौ शशांकेक्षेमलाभकौ ॥ भूमिपुत्रेतु मृत्युःस्याद्बुधेप्रज्ञाविवर्द्धनम् ॥ गुरौवित्तं भृगौसौख्यं शनौपीडा न संशयः ॥ राहुणाघातपातौच केतौ मृत्युर्दशाफलम् ॥

टीका—जन्मनक्षत्रको चतुर्गुण करै उसमें गततिथि और वार मिलाके नव ९ का भागदे १ शेष रहें तो एक दिनकी रविकी दशा जानिये--फल शोक संतापकारक, २ शेष रहैं तो चंद्रमाकी दशाफल कल्याण व लाभकारक, और३शेष रहें तो मंगलकी दशाफल मृत्युकारक, ४ शेष रहें तो बुधकी दशाफल बुद्धिवृद्धि,५शेष रहें तो गुरुकी दशा, फल वित्तप्राप्ति, ६ बचें तो शुक्रकी दशाफल सुखकारक ७ शेष रहे तो शनिकी दशा, फल पीडाकारक, ८ शेष रहैं तो राहुकी दशा, फल घातक और जो भाग पूरा लगजाय तो केतुकी दशा, फल मृत्यु इस प्रकारसे फल जानिये ॥

गोचरप्रकरण ।

ग्रह कितने मास एक२ राशिको भोगताहै ।

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्वेदिनेशशी ॥ राहुरष्टादशान्मासान् त्रिशन्मासान्शनैश्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाःप्रकीर्त्तिताः ॥ फल॥ सूर्य:पंचदिनंशशीत्रिघटिका भौमोष्टवैवासरं सप्ताहंह्युशना बुधस्त्र्यदिनं मासद्वयंवैगुरुः ॥ षण्मासं रविजस्तथैवसततं स्वर्भानुमासद्वये केतोश्चैवतथाफलं परिमितं ज्ञेयंग्रहाणां फलम् ॥ राशिप्रवेशेसूर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती ॥ राहुश्चंद्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभः ॥

टीका—उनके दिनोंकी संख्याका क्रम अनुक्रमसे लिखतेहैं ॥

सूर्य—एकमास एक राशि भोगतेहैं उसमें प्रथम पांच दिन फल देतेहैं ॥
चंद्रमा—सवादोदिन एकराशिभोगतेहैं और अंतकी २ घटिकाफलदेते हैं॥
मंगल—डेढमास एकराशि भोगतेहैं और प्रथम ८ दिवस फल देतेहैं ॥
बुध—एकमास एक राशिको भोगतेहैं और सर्व दिवस फल देतेहैं ॥
गुरु—त्रयोदश १३ मास एक राशि भोगतेहैं तिसका फल मध्यम भागके दोमास जानिये ॥
शुक्र—एक मास एक राशि भोगतेहैं और मध्यम भागमें सात दिवस फलदेतेहैं
शनि—तीस ३० मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके६ महीने फल देतेहैं॥
राहु और केतु--अठारह मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके दोमास फलदेते हैं ॥

द्वादशभवनके स्थानोंके शुभाशुभफल

द्वादश स्थानोंके नाम ।

तत्रादौतनुधनसहजसुहृत्सुतपरिपवश्च ॥
जायामृत्युधर्मकर्मायव्ययाख्यानि द्वादशभवनानि ॥

स्थानानुसार फल ।

सूर्यःस्थानविनाशं भयंश्रियंमानहानिमथदैन्यम् ॥विजयंमार्गपीडांसुकृतंहंति सिद्धिमायुरथहानिम् ॥ चंद्रोन्नंचधनंसौख्यं रोगं कार्यक्षतिंश्रियम् ॥ स्त्रियंमृत्युंनृपभयं सुखमायव्ययंक्रमात् ॥ भौमोरिभीतिं धननाशमर्थं भयंतथार्थक्षतिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययं शत्रुभयंचपीडां शोकंधनंहानिमनुक्रमेण ॥ बुधस्तु बंधं धनमन्यभीतिं धनंरुजं स्थानमथोचपीडाम् ॥ अर्थरुजं सौख्यमथात्मसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ गुरुर्भयं धनंक्लेशं धननाशं सुखंशुचम् ॥ मानंरोगं सुखंदैन्यं लाभंपीडांच जन्मभात् ॥ कविःशत्रुनाशं धनंसौख्यमर्थं सुताप्तिं रिपोः साध्वसंशोकमर्थम् ॥ बृहद्वस्त्रलाभं विपत्तिंधनाप्तिं धनाप्तिंतनो-

त्यात्मनोजन्मराशेः॥शनिःसर्वनाशं तथावित्तनाशं धनंशत्रुवृद्धिं सुतादेःप्रवृद्धिम् ॥ श्रियंदोषसंधिं रिपुंद्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्यं दिशद्रह्वनर्थम् ॥ राहुर्हानिं तथानैःस्वं धनंवैरं शुचं श्रियम् ॥ कलिंवसुंचदुरितं वैरंसौख्यं शुचंक्रमात् ॥ केतुः क्रमाद्रुजंवैरं सुखं भीतिं शुचंधनम् ॥ गर्तिगदं दुष्कृतंच शोकं कीर्तिचशत्रुताम् ॥

टीका—इसका अर्थ आगे चक्रमें स्पष्ट देख लेना ॥

गोचरचक्रम्।

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु ५८	नाश	अनप्रा०	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुनाश	सर्वनाश	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	धनप्रा०	धनप्रा०	वित्तना०	धनलाभ	वैर
सहज	धन	सुख	धनप्रा०	भीति	क्लेश	सौख्य	धनला०	धनप्रा०	सुख
सुहृत्	मानहा	रोग	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	शत्रुवृ०	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यक्षय	अर्थप्रा०	रोग	सुख	पुत्रप्रा०	सुतप्रा०	शोच	शोच
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला	शोक	रिपुभय	धनप्रा०	लक्ष्मी	धनप्रा०
जाया	मार्गक्लेश	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	शोक	दोष	कलह	मार्गक्रम
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अर्थप्रा०	रोग	धनप्रा०	रिपु	धनला०	रोग
धर्म	पुण्यना०	राजभय	पीडा	रोग	सुख	वस्त्रला०	धनना०	पापकर्म	दुष्टकर्म
कर्म	सिद्धी	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अस्वा०	वैर	शोक
आय	लाभ	आय	धनप्रा०	सौख्य	लाभ	धनप्रा०	धनप्रा०	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानी	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा०	धनना०	शुचि	शत्रुनाश

वेधचक्रमाह।

सूर्योरसांत्ये खयुगानिनंदे शिवाक्षयोर्भौमशनीनभश्च ॥ रसांकयोर्लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्रोवराब्दौ गुणनंदयोश्च ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञोद्विशरेब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागविधौखनागे लाभव्यये देवगुरुःशराब्धौ ॥ द्व्यंत्येनवांशेद्रिगुणेशिवाहौ शुक्रःकुनागे द्विनगेग्निरूपे ॥ वेदांबरंपंचनिधौगजेशौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ क्रमाच्छुभोविद्धइति ग्रहःस्यात् पितुःसुतःस्यान्ननवेधमाहुः ॥ दुष्टोपिखेटो विपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणे शुभदः सितेब्जे ॥ स्वजन्मराशेरिनवे

धमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः ॥ हिमाद्रिविंध्यांतरएववेधो नसर्वदेशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥

टीका—जन्म राशिसे और ग्रहके गतिसे गोचरका शुभाशुभ फल लिखे और ध्रुवांकसे ज्ञात करे जैसा सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभ जो द्वादश स्थानमें शुभग्रह होय तो शुभ अशुभ और जो अशुभ होय ऐसा सर्व ग्रहवेध जानना—परंतु पिता पुत्र सूर्य शनि चंद्र बुध इनका परस्पर वेध नहीं होय तो जन्मस्थानसे द्वादशस्थानमें सूर्य होय और शनि षष्ठ स्थानमें होय अथवा अन्यग्रह होय तो विपरीत वेध शुभ जानना. हिमाद्रि और विंध्य इनके अंतरमें यह वेध है अन्य देशमें नहीं जानना ऐसा कश्यपऋषि कहते हैं ॥

वेधचक्रम् ।

रवेः				मं.	श.	रा.	चंद्रस्य					बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः					शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	३

जन्मके चंद्रमामें पांचकर्म वर्जनीय ।

जन्मस्थर्क्षे शशांकेतु पंचकर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥

टीका—यात्रा और युद्धका जाना विवाह और क्षौरकर्म करना तथा गृहप्रवेश ये पांच कर्म जन्मके चंद्रमामें वर्जितहैं ॥

नेष्टस्थानके अनुसार चंद्रमाका उक्तबल ।

द्विपंचनवमेशुक्ले श्रेष्ठश्चंद्रोहिउच्यते ॥ अष्टमेद्वादशेकृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥ शुक्लपक्षे बलीचंद्रः कृष्णेतारा बलीयसी ॥

टीका—दूसरे पांचवें अथवा नवमें स्थानमें चंद्रमा होय तो शुक्लपक्षमें

श्रेष्ठ जानिये, तैसेही कृष्णपक्षमें आठवें बारहवें चौथे स्थानका श्रेष्ठ परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रमाबल और कृष्णपक्षमें ताराबल ऐसे श्रेष्ठ जानिये ॥

ग्रहोंके नेष्टस्थान।

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवंति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥

टीका-गोचरका अथवा अष्टवर्गका किंवा दशाक्रमका जो ग्रह नेष्ट स्थानी होय उसके प्रसन्न करनेके लिये दान करावै इस कारण अब दानकी विधि कहतेहैं ॥

वारोंकेअनुसारदान।

भानुस्तांबूलदानादपहरतिनृणां वैकृतं वासरोत्थंसोमःश्रीखं-
डदानादवनिवरसुतो भोजनात्पुष्पदानात् ॥ सौम्यःशास्त्र-
स्य मंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दि-
नकरतनयोब्रह्मनत्यापरेच ॥

टीका-सूर्य तांबूलदानसे. चंद्रमा चंदनके दानसे, मंगल भोजन और पुष्प दानसे, बुध शास्त्रोक्त मंत्रके जपसे, गुरु शिवके आराधन और भोजनसे, शुक्र श्वेतवस्त्रसे और शनि प्रातःकाल तैलस्नान और विप्र सन्मानसे अपने अपने अशुभ फलोंको दूर कर शुभ फलदायक होते हैं ॥

ग्रहोंकेदान और जप।

रवि ॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुंभवासोगुडहेमताम्र
म् ॥ आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानंहि विरोचनाय ॥ चंद्र
मा ॥ सद्वंशपात्रास्थिततंदुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥
युगोपयुक्तं वृषभंचरौप्यं चंद्राय दद्यात् घृतपूर्णकुंभम् ॥ भौ-
म ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापिगुडःसुवर्णम् ॥
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रंचभौमायवदंतिदानम् ॥ बुध ॥
वृषंचनीलंकलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम्॥ दासी

चदंतोद्विरदश्चनूनंवदंतिदानंविधुनंदनाय ॥ गुरु ॥ शर्कराच रजनीतुरंगमः पीतधान्यमपिपीतमंबरम् ॥ पुष्परागलवणंस-कांचनंप्रीतयेसुरगुरोः प्रदीयते ॥ शुक्र ॥ चित्रांबरं शुभ्रतुरं-गमंचधनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् ॥ सतंदुलानुत्तमगंधयुक्तंवदंति दानंभृगुनंदनाय ॥ शनि ॥ माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिला कुलत्थामहिषीचलोहम् ॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदंतिनूनं तुष्ट्यैच दानंरविनंदनाय ॥ राहु ॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैला मलकंबलंच ॥ तिलाश्चतैलंखलु लोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमि दंवदंति ॥ केतु ॥ वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकंबलाश्चापि मदो मृगस्य ॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनी न्द्रैः ॥ ग्रहोंकाजप ॥ रवेःसप्तसहस्राणि चंद्रस्यैकादशैवतु ॥ भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ॥ एकोनविंशतिर्जीवेशु क्रएकादशैवतु ॥ त्रयोविंशतिमंदेचराहोरष्टादशैवतु ॥ केतो सप्तसहस्राणि जपसंख्याप्रकीर्तिता ॥

नाम	रवि.	चन्द्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	माणिक	वेणुपात्र युक्ततदुल	मूगा	कालवे,	शर्करा	चित्रवस्त्र	उडद	गोमेद	वैदूर्य
	गेहू	कर्पूर	गेहू	मोना	हलद	श्वेतअ०	तेल	घे.टा	रत्न
	गोवत्स	मोति	मसूर	काम्यपा	घोडा	गाय	नील	नीलव०	तिल
	रक्तवस्त्र	श्वेतवस्त्र	ताम्रबेल	मूगा	पीतअन्न	वज्र	निल	कबल	तेल
दान	गूलर	श्वेतबेल	गुड	घृत	पीतव०	रूपा	कुलथी	तिल	कबल
	सोना	रौप्य	सोना	गारुत्मत.	पुष्परा.	सोना	भैंस	तेल	कस्तूरी
	ताबा	रूपा	लालवस्त्र	सर्वपुष्प	नोन	ताबूल	लोहा	लोहा	शस्त्र
	रक्तचंद	घृतकुंभ	कनेरपु.	दासी	सोना	चदन	कृष्णगौ	का॰पू॰	मेंढा
	कमल	०	ताबा	हस्तिदत	०	०	०	०	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ ।

देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामपिभाषणा च्छ्रुतिरवश्रेयःकथाकारणात् ॥ होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनो-भावाज्जपाद्दानतोनोकुर्वंतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवं ग्रहाःपीडनम् ॥

टीका—देव और ब्राह्मणको सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु और साधुओंसे भाषण तथा उत्तम २ कथा श्रवण करे. होम तथा यज्ञके दर्शन करे और शुद्ध मनके भावसे जपदान करे, जो ग्रहोंके निमित्त ऐसे उपाय करें तो पीडा निवृत्त होजाय और शुभफल मिले ॥

जातकर्म ।

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नांदीश्राद्धंविधानतः ॥
जातकर्मततःकुर्यादन्यैरालंभनात्पुरा ॥

टीका—पुत्र उत्पन्न होनेपर पिता तत्काल नांदिश्राद्ध विधिपूर्वककरे तिसपछि जबतक कोई अन्यजाति बालकको स्पर्श न करें उससे प्रथम जातकर्म करें॥

नामकरणम् ।

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरादित्याख्येपुचनामक
र्मशुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ ॥ अह्निद्वादशकेतथान्यदिवसे शस्ते
तथैकादशे गोसिंहालिघटेषुह्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच ॥

टीका—पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरात्रय पुनर्वसु ये नक्षत्र शुभ कहिये जन्मसे ११ अथवा १२ दिवस उक्त हैं. और दूसरे मतके अनुसार १६।२०।२२।१००। ये दिवस उक्त हैं. और वृष सिंह कुंभ वृश्चिक ये लग्न शुभहैं और रवि बुध गुरु शुक्र शशांक अर्थात् चंद्रवार शुभहै रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरणमें वर्जितहैं ॥

नामकाअवकहडाचक्र ।

चूचेचोलाऽश्विनीप्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ ॥ आईऊएकृत्ति
कास्यादोवाविवूतु रोहिणी ॥ वेवो काकीमृगशिरः कूघङछा-
स्तथार्द्रका॥केकोहाहीपुनर्वसुर्हूहेहोडातुपुष्यभम्॥ डीडूडेडो।
तुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ॥ मोटाटीटूपूर्वफल्गुटेटोपा-
प्युत्तरातथा ॥ पूषणाठाहस्तततारापेपोरारीतुचित्रिका ॥ रूरे-
रोतास्मृतास्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ नानीनूनेनुराध-

क्षेज्येष्ठानोयायियूस्मृता ॥ येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढा तु धाफढा ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ॥ खी खूखेखोश्रवणभं गागीगूगेधनिष्ठिका ॥ गोसासीसूशतभिष-क्सेसोदादीतुपूर्वभाक्॥दुथाझभयथाज्ञेयो देदोचाचीतुरेवती ॥

चू चे चो ला	अश्विनी	हू हे हो डा	पुष्य	रू रे रो ता	स्वाती	जू जे जो खा	अभिजित्
ली लू ले लो	भरणी	डी डू डे डो	आश्लेषा	ती तू ते तो	विशाखा	खी खू खे खो	श्रवण
आ ई उ ए	कृत्तिका	मा मी मू मे	मघा	ना नी नू ने	अनुराधा	गा गी गू गे	धनिष्ठा
ओ वा वी वू	रोहिणी	मो टा टी टू	पूर्वाफा०	नो या यी यू	ज्येष्ठा	गो सा सी सू	शततारका
वे वो का की	मृग	टे टो पा पी	उत्तराफा०	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा
कू घ ङ छ	आर्द्रा	पू षा णा ठा	हस्त	भू ध फ ढा	पूर्वाषाढा	दु थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा
के को हा ही	पुनवसु	पे पो रा री	चित्रा	भे भो जा जी	उत्तराषाढा	दे दो चा ची	रेवती

मंचकारोहण।

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरा

स्वातिहस्ताः ॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य निगदित मिहपूर्वैर्मंचकारोहणंतु ॥

टीका—मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा तीनों उत्तरा स्वाती हस्त इन नक्षत्रोंमें और बुध शुक्र गुरु ये वार और तुल वृश्चिक कुंभ इन लग्नोंमें शिशूको पूर्वदिशाको शिर करके प्रथम मंच-कारोहरण करावे तो शुभ होय ॥

पालनेकामुहूर्त्त।

आंदोलशयनंपुंसोद्वादशेदिवसेशुभम् ॥
त्रयोदशेतु कन्यायाननक्षत्रविचारणा ॥

टीका-जन्म होने उपरांत पुत्रको बारहवें और कन्याको तेरहवें दिवस पाल-नेमें शयन करावे और नक्षत्र आदिके विचारकी कुछ आवश्यकता नहीं है.

अथ बृहस्पतीकेमतानुसारदुग्धपानमुहूर्त्त।

एकत्रिंशद्दिनेचैव पयःशंखेनपाययेत् ॥
अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥

टीका—जन्म होनेके पश्चात् ३१ दिन अब अन्नप्राशन नक्षत्र जो आगे कहे जायंगे उनमें शंखमें दूध भरके बालकको पिलावे ॥

ताम्बूलभक्षणम्।

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्ताम्बूलं प्रथमंशिशोः ॥ कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासायहितायच ॥ मूलेचस्वाष्ट्रकरतिष्यहरींद्रभेषु पौष्णे तथामृगशिरेदितिवासरेषु ॥ अर्केंदुजीवभृगुबोधनवासरेषु तांबूलभक्षणविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः ॥

टीका—जन्मके उपरांत ढाई मासमें कपूर आदि पदार्थ मिश्रित करि तांबूल खवावे और मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशिर पुनर्वसु धनिष्ठा और रवि सोम गुरु शुक्र बुध इन वारोंमें मुनीश्वरोंने तांबूल-भक्षण शुभ कहा है ॥

सूर्य्यविलोकन ।

हस्तःपुष्यपुनर्वसूहरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनीमृग-
युताषाढोत्तरास्वातिभे ॥ मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वाच
रिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनंशस्यते ॥

टीका—हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढा स्वाती और चौथा व तीसरा मास शुभ शनि भौम रिक्ता तिथि बर्जनीय है और सिंह कन्या तुल कुंभ ये लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभदिन विचारके प्रथम बालकको बाहर निकालकर सूर्यावलोकन करावना उत्तम है ॥

कर्णवेध ।

रोहिंण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेर्कत्रयेरेवत्यांचपुनर्वसुद्वययु
गेकर्णस्यवेधःशुभः ॥ मीनस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटेवर्षेचयुग्मेतिथौ
सौम्येचेन्दुगुरौरवौचशयनं त्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः ॥

टीका—रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृगशिर श्रवण धनिष्ठा शततारका हस्त चित्रा शुभ और युग्मतिथि और युग्मवर्ष ये शुभ और चंद्र गुरु रवि ये वार विष्णुशयनको छोडकर पंडितोंने कर्णवेध शुभ कहा है ॥

शिशुको पृथ्वीमें बैठाना ।

पंचमेचतथामासिभूमौतमुपवेशयेत् ॥ तत्रसर्वेग्रहाशस्ता
भौमोप्यत्रविशेषतः ॥ उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्यर्क्षशक्रदैवतम्॥
प्राजापत्यंचहस्तश्च शतमाश्विनामित्रभम् ॥

टीका-पांचवें मासमें रविवार आदि समस्तवार शुभ दिनमें भौमवार विशेष करके और तीनों उत्तरा मृगशिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा ये नक्षत्र शुभ ऐसे दिवसमें शिशुको भूमिपर बैठावना शुभ कहा है ॥

अन्नप्राशन ।

पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणं त्यक्त्वाकुजार्कौतथानन्दापर्वचसप्तमी

मपितथा रिक्तामपिद्वादशीम् ॥ षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिःस्त्री- णामयुक्पंचमे गोकन्याझषमन्मथे बुधवले पक्षे च योगेशुभे ॥

टीका—तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी आश्लेषा और भौम शनि ये अशुभ वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको त्यागकर छठे अथवा आठवें महीनेमें लडकेको और कन्याको पांचवे माससे कहाहै और वृष मिथुन मकर कन्या इन लग्नोंका बल पाके शुक्लपक्ष तथा शुभयोगमें बालकको अन्नप्राशन करावे ॥

चौलकर्म।

रेवत्याद्यकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्येचोत्तरगेर- वौगुरुकवीन्दुज्ञेषुपक्षेसिते ॥ गोस्त्रीमन्मथचापकुंभमकरे हि- त्वाच रिक्तातिथिं षष्ठींपर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालींचचूडाशु- भा ॥ जन्मतस्तु तृतीयेऽब्दे श्रेष्ठमिच्छंति पंडिताः ॥ पंचमे सप्तमेवापि जन्मतो मध्यमं भवेत् ॥

टीका—रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और उत्तरायण शुक्र गुरु सोम बुधवार और शुक्लपक्ष मुंडनमें शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन मकर कुंभ इन लग्नोंको त्यागके शेष शुभ जानिये और रिक्ता छठ आठें अमा- वास्यादिक दुष्ट तिथि वर्जित हैं और जन्म होनेसे तीसरे वर्षमें पंडितोंने श्रेष्ठ और पांचवें सातवें वर्षमें मध्यम कहा है ॥

विद्यारंभका मुहूर्त्त।

रेवत्यांमृगपंचकेहरियुगे पूर्वासुहस्तत्रये मूलेश्वेअभिजिच्चभानुभृ- गुजे सौम्येधनुर्जीवयोः ॥ अब्देपंचमकेविहाय निखिलानध्यायप- ष्ठीयुतान् रिक्तां सौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तोमुहूर्तःशुभः ॥

टीका—रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित् और रवि गुरु शुक्र बुध सोम ये वार और जन्मसे पांचवां वर्ष शुभ कहाहै और अनध्याय षष्ठी

रिक्ता पर्व आदि दुष्ट योगादिक तिथि वर्जनीय हैं उत्तरायण शक्लपक्ष और शुभ लग्नोंमें प्रथम विद्याभ्यास करावे ॥

यज्ञोपवीतका मुहूर्त ।

पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभे हस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषु चो-
त्तरगते भानौचपक्षेसिते॥गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रेर्कजी-
वेतिथौ पंचम्यांदशमीत्रयेव्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥

टीका--पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण शुक्लपक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्न और शुक्र रविवार सोम ये वार और पंचमी दशमी आदि तीन दिन अर्थात् १०।११।१२ में यज्ञोपवीत करना शुभहै॥

मासादिमुहूर्त्त ।

विप्रं वसंते क्षितिपं निदाघे वैश्यं घनांते व्रतिनं विदध्यात् ॥
माघादिशुक्रांतिकपंचमासाः साधारणा वा सकलाद्विजानाम् ॥

टीका--ब्राह्मणोंका वसंतमें, क्षत्रियोंका ग्रीष्ममें, वैश्योंका शिशिरऋतुमें यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णोंके अनुसार व्रतबंधमें ऋतु कहाहै, माघसे ज्येष्ठ पर्य्यंत ५ मास समस्त द्विजोंको साधारण कहेहैं ॥

वर्षसंख्या ।

गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पंचमेसप्तमेपिवा ॥
द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशेनृपः ॥

टीका—गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें अथवा ५ । ७ वर्ष ब्राह्मणका और ग्यारहमें क्षत्रियोंका यज्ञोपवीत करना उचितहै ॥

गुरुबलम् ।

वर्णाधिपेबलोपेते उपनीतिक्रियाहिता ॥
सर्वेषांचगुरोसूर्ये चन्द्रेचबलशालिनि ॥

टीका—वर्णके अधिपतिअनुसार बल देखिये और सबोंको गुरु सूर्य चंद्रमाका बल चाहिये ॥

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम् ॥
चतुर्थ्येकाकिनीप्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहाः ॥

टीका—त्रयोदशीसे प्रतिपदातक चारि तिथि सप्तमी अष्टमी नवमी चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रह वर्जनीय हैं ॥

अथ शूद्रादिकोंकेसंस्कारकामुहूर्त्त।

मूलार्द्राश्रवणाद्विदैववसुभे पुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यांमृगरोहिणी दितिकरे मैत्रेतथावारुणे ॥ चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुसुते भौमे तथा चांद्रजे शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकाथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥

टीका—मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाती तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और शुक्र भौम बुध ये वार शूद्रादिक संकरअंत्यजातिके संस्कारमें शुभ जानिये ॥

विवाहप्रकरणम्।

तत्रादौदैवज्ञपूजनम् ॥ दैवज्ञंपूजयेदादौ फलतांबूलपूर्वकम्।
निवेदयेत्सुमनसास्वकन्योद्वाहनादिकम् ॥

टीका—प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फल तांबूलपूर्वक पूजा करना तिसके पीछे कन्याका पिता कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करे ॥

विवाहसमयेप्रश्नमाह।

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहे बलिनौ यदिपश्यतः ॥
रचयतोवरलाभमिमौयदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥

टीका—जो प्रश्नकालमें चंद्र शुक्र यह विषम राशिमें होय वा अंशमें होय और दोनोंबली होयके लग्नको देखते होंय तो कन्याको पतिप्राप्ति जानना और समराशिमें वा अंशमें चंद्र शुक्र होंय तो वरको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभहै॥

प्रष्टुर्विलग्नात्प्रबलःशशांकः शत्रुस्थितो मृत्युग्रहस्थितोवा।
यद्यष्टमाब्दात्परतोविवाहात्करोतिमृत्युंवरकन्ययोश्च ॥

टीका—जो प्रश्न लग्नसे बलवान् चंद्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें बैठा होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें स्त्री पुरुष दोनोंको अरिष्ट जानना ॥

यद्युदयस्थश्चंद्रस्तस्माद्यदिसप्तमोभवेद्भौमः ।
समाष्टकेंसजीवातिविवाहकालात्परंपुरुषः ॥

टीका—जो प्रश्नलग्नमें चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल होय तो विवाहसे अष्टम वर्षमें पतिको अरिष्ट जानना ॥

स्वनीचगःशत्रुदृष्टः पापः पंचमगोयदा ॥
मृतपुत्रांकरोत्येव कुलटांवानसंशयः ॥

टीका—जो प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें होय अथवा शत्रु- ग्रह देखते होंय अथवा पापग्रह पंचमस्थानमें बैठा होय तो संतानका नाश और स्त्री वेश्या होय ऐसा जानना ॥

भिद्यतियद्युदकुंभः शयनासनपादुकाशुभंगोवा ।
प्रश्नसमयेपियस्यास्तस्यावधव्यमादेश्यम् ॥

टीका—जो विवाहप्रश्नकालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रानाश; आसनभंग; पादुकाभंग, ऐसा जिस कन्याके विवाहप्रश्नसमयमें होय तो उसको विधवायोग जानना ॥

अज्येष्ठाकन्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥
व्यत्ययेवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥

टीका—जो कन्या ज्येष्ठ न होय और पुरुष ज्येष्ठ होय ऐसा दोनोंका भेद होय तो ज्येष्ठमासमें विवाह करना शुभ है ॥

वर्षप्रमाणमाह ।

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः ॥
सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चतथानलः ॥

टीका—प्रथम ६ वर्षतक कन्याका विवाह नहीं करना कारण यहहै कि, प्रथम २ वर्ष चंद्रमा भोग करताहै, अनंतर दोवर्ष गंधर्व भोग करतेहैं, अनंतर २ वर्ष अग्निदेव भोग करता है, तदनंतर विवाहको शुद्ध जानना ॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी ॥ दशवर्षाभवेत्कन्या द्वा-
दशेवृषलीमता ॥ गौरीदानान्नागलोकं वैकुंठंरोहिणींददत् ॥
कन्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतुरजस्वलाम् ॥

टीका–आठ वर्षकी कन्या होय तब उसका नाम गौरी, नव वर्षकी कन्या रोहिणीसंज्ञा, दश वर्षकी होय तो उसका नाम कन्या, जो बारह वर्षकी होय तो उसे शूद्री नाम जानना, इसका फल गौरीदानसे नागलोक-प्राप्ति, रोहिणीदानसे वैकुंठप्राप्ति, कन्यादानसे ब्रह्मलोकप्राप्ति, शूद्रीदानसे घोर नरकप्राप्ति होय ॥

विवाहोजन्मतःस्त्रीणां युग्मेऽब्देपुत्रपौत्रदः ॥
अयुग्म श्रीप्रदंपुंसां विपरीते तु मृत्युदः ॥

टीका–स्त्रीका विवाहकाल जन्मसे सम वर्षमें करना तो पुत्रपौत्रप्राप्ति और पुरुषका जन्मसे विषम वर्षमें विवाह होय तो लक्ष्मीप्राप्ति, इससे विपरीत होय तो मृत्युप्राप्ति जानना ॥

कन्याद्वादशवर्षाणि याऽप्रदत्तावसेद्गृहे ॥
ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयम् ॥

टीका–कन्या १२ वर्षकी होय और पिताके घरमें रहै तो पिताको ब्रह्मह-त्या प्राप्त, होय नंतर कन्या अपनी इच्छासे पति करे ऐसा आचार्य कहतेहैं.

मंगलविचार।

लग्नेव्ययेचपाताले यामित्रेचाष्टमेकुजे ॥
पत्नीहंतिस्वभर्तारं भर्ताभार्याविनाशयेत् ॥

टीका–स्त्रीको और पुरुषको मंगल रहताहै तिसका प्रकार १।१२।४।७।८इतने स्थानोंमें मंगल होय तो स्त्री मंगली कहना और मंगलीसे मंगलीको विवाह करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् होंय तोभी करना ॥

भौमपरिहार।

यामित्रेचयदासौरिर्लग्नेवाहिबुकेथवा ॥
नवमेद्वादशेचैव भौमदोषोनविद्यते ॥

BHARATIYA VIDYA BHAVAN
20586
S. N.........

टीका–स्त्रीको अथवा पुरुषको ७।१।४।९।१२। जो इतने स्थानोंमें शनि होय तो मंगलका दोष नहीं जानना ॥

ज्येष्ठविचार।

द्विज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठःशुभावहः ॥
ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीत विवाहे सर्वसम्मतः ॥

टीका–पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा दो ज्येष्ठमें करना मध्यम समझतेहैं और एक ज्येष्ठमें करना शुभहै, और पुरुष ज्येष्ठ स्त्री ज्येष्ठ मासमें ज्येष्ठ जो तीनों होय तो विवाह नहीं चाहिये।

ज्येष्ठायाःकन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यवैमिथः ॥
विवाहोनैवकर्त्तव्यो यदिस्यान्निधनंतयोः ॥

टीका–प्रथम गर्भमें ज्येष्ठ जो स्त्री होय उसको कहना, जो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्याभी ज्येष्ठ होय तो विवाह नहीं करना यह दुःखदायक होताहै ॥

दशवर्षव्यतिक्रांता कन्याशुद्धिविवर्जिता ॥
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौपाणिग्रहोमतः ॥

टीका–दशवर्षके अनंतर कन्या शुद्धिसे रहित होतीहै तो ताराशुद्धि चंद्रशुद्धि लग्नशुद्धि देखके विवाह करना शुभ है ॥

कन्यालक्षणमाह।

हंसस्वरां मेघवर्णां मधुपिंगललोचनाम् ॥
तादृशींवरयेत्कन्यां गृहस्थःसुखमेधते ॥

टीका–स्त्रीका लक्षण स्त्रीका मीठा हँसके बोलना ऐसा होय और मेघकासा वर्ण होय नेत्रका वर्ण शहतके तुल्य हो अथवा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसी कन्यासे विवाह करे तो गृहस्थ सुख पाताहै ॥

वरलक्षणमाह।

जातिविद्यावयःशीलमारोग्यंबहुपक्षता ॥
अर्थित्वंवित्तसंपत्तिरष्टावेतेवरेगुणाः ॥

टीका–पुरुषका लक्षण–जातिमें उत्तम होय और विद्यायुक्त वयमें वृद्धित्व होय और स्वभाव अच्छा होय और निरोगी-परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय, धन संपत्ति होय, ऐसे आठ लक्षणसे युक्त वर होय तो कन्या देना चाहिये ॥

वरदोषमाह।

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ॥
शूराणांनिर्धनानांच न देया कन्यकाबुधैः ॥

टीका–पुरुषके दूर रहनेवालेको कन्या देना नहीं, मूर्खको देना नहीं, मोक्षधर्मयोगाभ्यासादिक करे उसको देना नहीं, दरिद्री असमर्थको देना नहीं, ऐसा पंडितजनोंने कहाहै ॥

अस्तोदय।

प्राग्युद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितःस्यात्पश्चाद्दशाहमिहपंचदि-
नानिवृद्धः ॥ प्राक्पक्षमेवगदितोत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुप-
क्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥

टीका–पूर्वमें शुक्रका उदय होय तो तीन दिन शिशुत्व और अस्त होय तो वृद्धत्व पंद्रह दिन वर्जित और पश्चिमको उदय होय तो पांच दिन शिशुपन और १० दिन वर्जितहैं और गुरुके उदय अस्तमें १५ दिन वर्जनीयहैं.

अस्त और उदयका लक्षण।

यमशरभुजवासरवज्रिणोदिशिद्विसप्तसितास्तमनंतथा ॥
गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमेनवदिनास्तमनंतु भृगोर्बुधैः ॥

टीका–२५२ दिन शुक्रका अस्त पूर्वदिशामें होताहै, और उसका उदय ७२ वें दिवस पश्चिममें होताहै, और २५० दिवस पश्चिममें अस्त होताहै तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्वमें होताहै यह पंडितोंने कहाहै ॥

अस्तमेंवर्जनीयकर्म।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिरकर्णवेधन-

महादानं गुरोस्सेवनम् ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मंत्रोपदेशं शुभं दूरेणैववजिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावडी कूप तडाग अर्थात् तालाव यज्ञ और यात्रा करना चौल अर्थात् मुण्डन देवप्रतिष्ठा यज्ञोपवीत विद्यारंभ नूतन गृहप्रवेश बालकका कर्णवेध महादान गुरुसेवा तीर्थस्नान विवाह उत्तम कर्म मंत्रोपदेश ये कर्म जीवनेकी इच्छा रखनेवाला पुरुष गुरु शुक्रके अस्तमें दूरही वर्जित करै ॥

विवाहेवर्जनीयम् ।

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहो नोपौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः ॥ नैवास्तंगतवति भार्गवेचजीवेवृद्धत्वेनखलुतयोर्नबालभावे ॥ गीर्वाणमंत्रिणिमृगेंद्रमधिष्ठितेनमासेधिके त्रिदिनसंस्पृशिनामभेच ॥

टीका—आषाढ आदिलेके ४ मास और पौष चैत्र मास और गुरु शुक्रका अस्त और इन दोनोंका वृद्धत्व और बालत्व और सिंहका बृहस्पति, अधिक मास तथा क्षयमास ये सब विवाहमें वर्जितहैं ॥

मूलादिजन्मनक्षत्रकादोष ।

मूलजाचशुरं हंति व्यालजाकुलटांगना ॥
विशाखजादेवरघ्नीज्येष्ठाजाज्येष्ठनाशिका ॥

टीका—मूल नक्षत्रमें कन्याका जन्म होय तो शुरोंका नाश करे, आश्लेषामें व्यभिचारिणी, विशाखामें देवरका मृत्युकारक, और ज्येष्ठामें ज्येष्ठ बंधुको मृत्युदायक होतीहे ॥

जन्मनक्षत्रादिवर्ज्यम् ।

जन्मर्क्षेजन्मादिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत् ॥ ज्येष्ठेमासाद्यगर्भस्यशुभ्रवस्त्रंस्त्रियायथा ॥ अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥ व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासःशुभप्रदः ॥

टीका—जन्मके नक्षत्र दिवस और मासमें बालकोंका शुभ कर्म वर्जित हे जैसे स्त्रियोंको श्वेतवस्त्र धारण करना और जो कन्या कनिष्ठ होय तथा वर ज्येष्ठ होय अथवा इससे विपरीत होय तो ज्येष्ठ मासमें विवाह शुभहे ॥

अथ वर्षसारणीयम् ॥

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	३	६
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	८	२१	३७	५२	८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१३	४६	१८	४९	२१	५२	२४
ऽक्ष	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१	३०	०	३०	०	३०	०
तिथि	११	२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२७	१	१२	२३	३	१५	२७
नक्षत्र	८	१८	१	११	२१	४	१४	२४	७	२०	३	१०	२०	४	१३	२३
वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वार	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घटी	२३	२९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४६	५९	१४	३०	४५	१६	१६
पल	५५	२७	५८	३०	[illegible]	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
ऽक्ष	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०
तिथि	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१३	२४
नक्षत्र	६	१६	२३	१	१९	२	२२	२२	५	१५	२५	८	१८	११	१०	३
वर्ष	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४
घटी	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५
पल	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३७	३	३४	६	३७	९	४०	१२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	३	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१५	२५	६	१७	२९	१०	२१
लग्न	४	१४	२४	७	१७	३०	१०	२०	३	१३	२३	०	१६	२६	९	९
अंश	६	९	३	१३	६	२	०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४
वर्ष	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वार	५	६	१	२	४	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घटी	२४	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	५१	४७	२	१८	३३
पल	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	१	११	२२	४	१५	२६	७	१८
लग्न	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	०	११	२१	४	४	१४	७	१७
अंश	७	११	३	५	-	११	१०	५	८	११	२	६	९	०	०	६
वर्ष	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	१७	३२	१०	४८	५०	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	३९	१०	३१	२	१३	२४	५	१६	२७	९	२०	१	१२	२३	४	१५
लग्न	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	११	२	१२	२२	५	२५
अंश	९	२	३	६	१०	१	४	५	१०	०	४	७	१०	१	५	८

वर्षप्रमाण।

जन्मतोगर्भाधानाद्वा पंचमाब्दात्परंशुभम् ॥
कुमारीवरणंदानं मेखलाबंधनंतथा ॥

टीका—जन्म होनेसे अथवा गर्भधारणसे पंचम वर्ष उपरांत कन्या का वरना अथवा दान और व्रतबंध उत्तम जानिये ॥

गुरुचंद्रबल।

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम् ॥
तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेणभाषितम् ॥

टीका—स्त्रियोंको गुरुका बल और पुरुषोंको रविका और दोनोंको चंद्रमाका बल गर्गमुनिने श्रेष्ठ कहाहै ॥ १ ॥

गुरुकाबल।

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विता हतधवा सुभगा विपुत्रा ॥ स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्या वंध्याभवेत् सुरगुरौक्रमशोभिजन्म ॥

टीका—जो कन्याके जन्मस्थानमें बृहस्पति होय तो विवाहके अनंतर बालकोंकी मृत्यु होय, द्वितीयमें धनवती, तृतीयमें विधवा, चतुर्थमें व्यभिचारिणी; पंचममें पुत्रवती; षष्ठमें पतिनाश, सप्तममें सौभाग्यवती, अष्टममें पुत्रहीन, नवममें पतिप्रिया, दशममें बालकनाश और एकादशमें पति धनाढ्य, द्वादशमें बांझ, ऐसे क्रमसे फल जानिये ॥

गुरुअनुकूलकरनेकाविचार।

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजयाशुभदोगुरुः ॥
विवाहेच चतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रदः ॥

टीका—जन्मस्थ तृतीय षष्ठ और दशमस्थानी गुरु नेष्टहै परंतु पूजा करनेसे शुभ फलदायक होताहै और चौथा अष्टम द्वादशस्थ मृत्यु करताहै ये विचार विवाहमें देखना उचित है ॥

अष्टमैत्रीज्ञानम्।

वर्णोवश्यंतथातारा योनिर्ग्रहगणोतथा ॥

भकूटंनाडिमैत्रीचइत्येताश्चात्रमैत्रिकाः ॥

टीका—वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह गण भकूट नाडी और मैत्री आदि आठनको शुद्ध विवाहमें विचार लेना योग्य है ॥

वर्णादिकोंका ज्ञान।

मीनालिकर्कटाविप्रानृपाः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्यानकवृषा वैश्याशूद्रायुग्मतुलाघटाः ॥ वश्योंका ॥ द्वंद्वचापघटकन्यकातुलामानवाअजवृषौचतुष्पदौ ॥ कर्कमीनमकराजलोद्भवाः केसरीवनचरालिकीटका ॥

वश्यावश्यज्ञानमाह।

हित्वामृगेंद्रनरराशिगते च वश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्चभक्ष्याः॥ सर्वेपिसिंहस्यवशोविनालिं ज्ञेयं नराणांव्यवहारतोऽन्यत् ॥

इन तीनों श्लोकोंकी टीका चक्रसे यथाक्रमसे समझ लेना।

ताराबलम्।

कन्यर्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषेत्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

टीका—वधूनक्षत्रसे वरनक्षत्रतक जो नक्षत्र संख्यामें होंय तामें नवके अंकका भाग देय जो शेष तीन आवें तो अथवा पांच—सात रहें तो अशुभ और सब शुभ होतेहैं-ऐसेही वरनक्षत्रसे वधूनक्षत्रतक गिनके पूर्ववत् प्रमाण लिखे अनुसार जानना ॥

योनि।

अश्वोगजश्छागसर्पौसर्पश्वानबिडालकाः ॥ मेषोबिडालकश्चैवमूषकोमूषकश्चगौः ॥ महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकं क्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथाश्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ नकुलोवानरोसिंहस्तुरगोमृगराट्पशुः ॥ अघोरेणक्रमेणैव अश्विन्यादिभयोनयः ॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषं श्वेणंच बभ्रूरगं वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरु ॥ लोकानां

व्यवहारतोन्यदपितज्ज्ञात्वाप्रयत्नादिदंदंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥ राश्यधिप ॥ मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयोः सौम्योगुरुस्तुधनमीनयोः ॥ शनिर्नक्रस्यकुंभस्यकर्कस्यैवतुचंद्रमाः ॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यःकथितोगणकैःक्रमात् ॥ गण ॥ अनुराधामृगोश्विस्तुश्रवणोदितिपुष्यके ॥ स्वातीहस्तोरेवती च नवदेवगणाःस्मृताः ॥ पूर्वात्रयंरोहिणी च उत्तरात्रयमेवच ॥ आर्द्रा तुभरणीचैवनवैते मानुषागणाः॥आश्लेषाशतभिष्मूलविशाखाः कृत्तिकामघा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः ॥

अंत्यनाडी ।

कृत्तिकारोहिणी स्वाती मघाश्लेषाचरेवती ॥
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वंत्यनाडिका ॥

मध्यनाडी ।

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठाभरणीमृगाः ॥
पूर्वाषाढानुराधाच पुष्योहिर्बुध्न्यमेवच ॥

आद्यनाडी ।

पूर्वाभाद्रपदामूलं ज्येष्ठाहस्तःपुनर्वसुः ॥ अश्विन्यार्द्राशतभिक्चोत्तरात्वेकनाडिका ॥ अश्विनीभरणी कृत्तिकापादंमेषः ॥ कृत्तिकात्रयंरोहिणी मृगशिरार्द्धंवृषभः ॥ मृगशिरार्द्धं मार्द्रापुनर्वसुत्रयं मिथुनः ॥ पुनर्वसोःपादंपुष्य आश्लेषांतंकर्कटकः ॥ मघापूर्वा उत्तरापादं सिंहः ॥ उत्तरात्रयं हस्तचित्रार्द्धं कन्या ॥ चित्रार्द्धंस्वातीविशाखात्रयस्तुला ॥ विशाखा पादअनुराधा ज्येष्ठांतं वृश्चिकः॥मूलपूर्वाषाढा उत्तराषाढापादं धनुः ॥ उत्तराषाढात्रयं श्रवण धनिष्ठार्धं मकरः ॥ धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदत्रयः कुंभः ॥ पूर्वाभाद्रपदापाद उत्तराभाद्रपदा रेवत्यंतंमीनः ॥

टीका—सवा दो नक्षत्र एक राशि भोगतेहैं इस प्रमाणसे द्वादश राशिके भोगका क्रम और अंत्य—मध्य—आदिनाडीका क्रम चक्रसे प्रतीत होगा ॥

राशिअनुसार घटितमान

राशि	वर्ण	वश्य	स्वामी
मेष	क्षत्रिय	चतुष्पाद	भौम
वृषभ	वैश्य	चतुष्पाद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जलचर	चंद्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	रवि
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तूल	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीटक	भौम
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	ब्राह्मण	जलचर	गुरु

नक्षत्रअनुसार घटितमान

नक्षत्र	योनि	वैरयोनि	गणः	नाडी
अश्विनी	अश्व	भैंस	देव	आद्य
भरणी	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	मेंढा	वानर	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प	नोला	मनुष्य	अंत्य
मृग	सर्प	नोला	देव	मध्य
आर्द्रा	श्वान	हरिण	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	मूसा	देव	आद्य
पुष्य	मेंढा	वानर	देव	मध्य
आश्लेषा	मार्जार	मूसा	राक्षस	अंत्य
मघा	मूसा	मार्जार	राक्षस	अंत्य
पूर्वा	मूसा	मार्जार	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	गौ	व्याघ्र	मनुष्य	आद्य
हस्त	भैंस	अश्व	देव	आद्य
चित्रा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
स्वाती	भैंस	अश्व	देव	अंत्य
विशाखा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
अनुराधा	हरण	श्वान	देव	मध्य
ज्येष्ठा	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य
मूल	श्वान	हरिण	राक्षस	आद्य
पूर्वाषाढा	वानर	मेंढा	मनुष्य	मध्य
उत्तराषा	मुगस	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभिजित्	नकुल	सर्प	मनुष्य	अंत्य
श्रवण	वानर	मेंढा	देव	अंत्य
धनिष्ठा	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
शततारका	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
पूर्वाभाद्रप	सिंह	सिंह	मनुष्य	[illegible]
उत्त.भाद्र	पशु	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
रेवती	गज	सिंह	देव	अंत्य

नवपंचक।

मीनालिभ्यांयुतेकीटे कुंभेमिथुनसंयुते ॥
मकरेकन्यकायुक्ते नकुर्य्यान्नवपंचके ॥

टीका--मीनसे नवके अंतरपर वृश्चिक राशि है और वृश्चिकसे मीन पाँचमी, इसी प्रकार कर्क मीनका और वृश्चिकका कुंभ मिथुन मकर कन्या इन दो २ राशियोंके नवपंचक होतेहैं वे वर्जितहैं ॥

मृत्युषडष्टक।

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ॥ युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयो मृत्युर्वैनक्रसिंहयोः ॥ कुंभकर्कटयोश्चैव वृषकोदंडयोस्तथा ॥

टीका—मेष और कन्या ये परस्पर छठे और आठमें होंय इसी रीतिसे तुला और मीन मिथुन वृश्चिक मकर, सिंह कुंभ, कर्क वृषभ, इन दो दो राशियोंको मृत्युषडष्टक कहाता है सो वर्जित है ॥

प्रीतिषडष्टक।

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतातथा ॥ धनुःकर्कयुतंचैव कुंभ कन्यकयोस्तथा ॥ नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योःप्रीतिरुत्तमा

टीका—सिंह मीन, तुला वष, कुंभ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धनु कर्क, इन दोदो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होताहै सो शुभहै ॥

द्विर्द्वादश।

मेषझषौवृषमिथुनौ कर्कहरीतुलकन्यके ॥
अलिधनुषीमकरकुंभावेतौ द्विर्द्वादशेराशी ॥

टीका—मेष, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुल, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर कुंभ, ये दो २ राशि द्विर्द्वादशहैं ॥

चतुर्थदशमतृतीयएकादशउभयसप्तम।

चतुर्थदशमश्चैव तृतीयैकादशःशुभः॥
उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षंशुभमुच्यते ॥

टीका-वधू और वरकी परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश होयतो शुभ और दोनों सप्तम सम होय अथवा एकनक्षत्र होयतो शुभ जानिये

वश्यावश्ययोजना।

सिंहंविनानृणांसर्वेवश्या भक्ष्याश्चतोयजाः ॥
सिंहस्यवश्यास्त्यक्त्वालिं सर्वेणव्यवहारिकः ॥

टीका-सिंहके विना समस्त चतुष्पद मनुष्योंके वशमें हैं और जलजंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिकको छोडके सिंहके सब वश होते हैं, शेष राशियोंमें भक्ष्याभक्ष्यको वर्जित करि वश्यावश्य व्यवहारसे जानिये ॥

ग्रहोंकाशत्रुत्वसमत्वमित्रत्व।

शत्रूमंदसितौ समश्चशशिजो मित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्चसुहृदौशेषाः समाःशीतगोः ॥ जीवेंदूष्णकराःकुजस्यसुहृदोज्ञोरिः सितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौ बुधस्यहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ गुरोःसौम्यसितावरी रविसुतोमध्योपरेत्वन्यथासौम्यार्कौसुहृदौ समौकुजगुरूशुक्रस्यशेषावरी ॥ शुक्रज्ञौसुहृदौसमः सुरगुरुः सौरस्यत्वन्येरवेयं प्रोक्ताः सुहृद्त्रिकोणभवनात्तेमीमयाकीर्तिताः ॥

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चंद्र भौम
सम	बुध	शुक्र गुरु भौम श.	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगल	गुरु
मित्र	चंद्र गुरु मंगल	रवि बुध	चंद्र गुरु सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र

मार्तंडमतसेगुणोंकामिलाना।

वर्णकेगुण

दोनोंका एक वर्ण अथवा वरका उच्च होय तौ शुभ।

वधूकावर्ण	वरोंकावर्ण			
	ब्रा०	क्ष०	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यकागुण

वैरभक्ष्येगुणाभावाद्वयोः सौम्येगुण द्वयं॥ वश्यवैरेगुणश्चैको वशभक्ष्ये गुणार्द्धकम्॥ १॥

टी० शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य० एकजातिमें गुण २ वश्य और वैरमेंगुण १ वश्य और भक्ष्यमें गुणअर्द्ध॥ १॥

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

ताराकेगुण।

एकतोलभ्यते ताराशुभा चैवाशुभान्यतः॥
तदासार्द्धोगुणश्चैकस्ताराशुद्धौमिथस्त्रयः॥
उभयोर्नशुभातारातदा शून्यंसमादिशेत्॥

टीका--एककी शुभ और एककी अशुभ तारा होय तो गुणडेढ १॥ और दोनोंकी एकतारा अथवा शुभतारा होय तो गुण ३ और जो दोनोंकी अशुभ होय तो गुण शून्य जानिये॥

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योगिनीके गुण–महावैरेच वैरेच स्वस्वभावेयथाक्रमात् ॥
मैत्र्ये चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

टीका–महावैरका गुण शून्य० दोनोंकी शत्रुताका गुण १ स्वभावके गुण २ दोनोंकी मित्रताका गुण ३ अतिमित्रताके गुण ४ जानिये ॥

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ.	म.	व्या	ह.	वा.	नं.	सिं
अश्वि	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गाय	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिषी	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहोंके गुण।

दोनोंका स्वामी १ और मैत्रीके गुण ५ समशत्रुत्व गुण ०॥० सम शत्रुत्व मित्रत्व गुण४ शत्रुत्व मित्रत्व गुण १ समत्व गुण २ शत्रुत्व गुण ०॥० इस प्रकार जानिये ॥

गणोंके गुण।

दोनोंका गण१होय तिसके गुण ६ वर देवगण और वधू मनुष्यगण तिसके गुण ६ इससे विपरीत होय तो ५ वर राक्षस गण और वधू देवगण तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये॥

वधूकेगुण / वरके गुण

	र	च	मं	बु	गु	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
बृ	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

वधूकेगुण / वरके गुण

	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

नाडीकेगुण ८

भिन्ननाडीकेगुण८एकनाडीकेगुण.

वधूकेगुण / वरके गुण

	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

सत्कूटकेगुण।

टीका—राशि एक भिन्नचरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण७तृतीय एकादश इनके भिन्नराशि नक्षत्र एक इनके गुण५ प्रीतिषडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नव पंचम इनमें वर दूरत्व योनि शत्रुता होनेपरभी भकूटके गुण६होतेहैं॥

असत्कूटकेलक्षण।

वर योनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व होय तो षडष्टक द्विर्द्वादशक नवपंचमादि दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानिये ॥

योनि मैत्र व स्त्री दूरत्व इनमेंसे एक होय तो दुष्टकूटका एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एक चरण ॥

	मेष	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	९	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

इस प्रकार गुणोंका मिलना १८ गुण अधिक शुभ, शून्य अशुभ ॥

वर्णके फल।

यास्याद्वर्णाधिकाकन्या भर्त्तातस्या नजीवति ॥
यदिजीवतिभर्त्ता तु ज्येष्ठपुत्रोविनश्यति ॥

टीका–कन्याका वर्ण वरसे श्रेष्ठ होय तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्र का नाशहोय ॥

वैरयोनिकाफल।

जैसे अश्व और भैंसकी वैरयोनिहै इसी प्रकार वधू और वरकी वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादिभी विचारिये इसमें शुभकी इच्छा वर्जितहै ॥

गणोंकेफल।

स्वगणेचोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः॥
कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम्॥

टीका—दोनोंका एक गण होय तो उत्तम प्रीति मनुष्य और देवमें मध्यम, देव दैत्यमें कलह, मनुष्य राक्षस गण मृत्यु देताहै॥

कूटफल।

षष्ठष्टकेऽपमृत्युःपंचमनवमेऽनपत्यताज्ञेया॥
द्विर्द्वादशे निधनताशेषेषु मध्यमताज्ञेया॥

टीका—दोनोंका षडष्टक मृत्युकारक और नवपंचम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्द्धनताकारक शेष मध्यम जानिये॥

नाडीफल।

अग्रनाडीव्यधेभर्त्तामध्यनाडीव्यधेद्वयम्॥
पृष्ठनाडीव्यधेकन्याम्रियते नात्रसंशयः॥

टीका—दोनोंकी अग्रनाडी होय तो भर्त्ताको बुरा मध्यनाडी दोनोंको अशुभ और अंत्यनाडी कन्याको मृत्युदायक होतीहै॥

मध्यनाडी।

जठरेनिर्द्धनत्वं च गर्भेमरणमेवच॥
पृष्ठेदौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तांपरिवर्जयेत्॥

टीका—दोनोंकी मध्यनाडी निर्धनताका कारण और गर्भनाश और अंत्यनाडी दुर्भागकारक जाननी चाहिये॥

ज्योतिःप्रकाशेपार्श्वनाडी।

निधनंमध्यनाड्यां तु दंपत्योर्नैव पार्श्वयोः॥
करग्रहेपृष्ठनाड्यो न निंद्येइतितद्वचः॥

टीका—दोनोंकी मध्यनाडी मृत्युप्रद तैसेही पार्श्वनाडी, परंतु विवाहमें पार्श्वनाडी निंदित नहीं, अन्य मतमें क्षत्रियादिकोंको कहीहै॥

असत्कूटविचार।

स्त्री नक्षत्रसे वरनक्षत्र निकट होय तो अशुभ और वरनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र

दूर होय तो शुभ जो नक्षत्र एक अथवा स्वामी एक होय तो शुभ जानिये.

राजमार्तंडमतसेदुष्टकूटोंकादान।

षडष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यंनवपंचमे च ॥
नाड्यांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणं च ॥

टीका–अति आवश्यक विवाहमें वधू और वरके दुष्ट कूटादिकोंके दान षडष्टकमें दो गौ, नवपंचममें रूपा सहित कांसेका पात्र, एकनाडीमें गौ, और द्विर्द्वादशमें अन्न सुवर्ण वस्त्र तथा ब्राह्मणोंका तर्पण इत्यादि कर,नेसे दुष्ट कूटादिक दोष दूर होतेहैं ॥

फक्किका–यस्यवर्णस्ययोनिज्ञानं नोक्तंतस्यजातकाऽवलोकनप्रकारो वास्तुप्रकरणेउक्तः॥

टीका–जिस वर्णकी योनिका जानना उक्त नहींहै तिसके जातक देखनेका प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहाहै ॥

विवाहकेउक्तनक्षत्र।

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेंदवैः ॥
एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणांविवाहः शुभदःस्मृतः ॥

टीका–मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा मृगशिर ये नक्षत्र स्त्रियोंके विवाहमें निर्दोष और शुभहैं ॥

एकविंशतिमहादोषः।

पंचांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्त्तितः ॥ उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ तृतीयः पापषड्गोभृगुः षष्ठः कुजोष्टमः ॥ गंडांतकर्त्तरीरिःफषडष्टेंदुश्चसंग्रहः ॥ दंपत्योरष्टमं लग्नंराशौविषघटीतथा ॥ दुर्मुहूर्तोवारदोषः खार्जूरीकसमांघ्रिगम् ॥ ग्रहणोत्पातभंक्रूरविद्धर्क्षंक्रूरसंयुतम् ॥कुनवांशोमहापातोवैधृतिश्चैकविंशतिः ॥

टीका–प्रथम पंचांग शुद्धि रहित दोष१ उदयास्तशुद्धिरहित २संक्रांति दिवस ३ पापग्रहका वर्ग ४ लग्नसे छठा शुक्र ५लग्नसे अष्टम मंगल ६ लग्नसे

		रा	मे	म	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सि	सि	सि	क	क
		मा	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	॥	।।।	१
राशि	भा	नक्ष	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पुष्य	आ	म	पू	उ	उ	ह
मेष	१	अ	३६	३३	३२	२४	२१	३२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२	११	१२
मेष	१	भ	२४	३६	३४	२१	२३॥	१४॥	१९	३६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	२३॥	२४॥	२३॥	२१॥	२०
मेष	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२३॥	२३॥	२३	२५॥	२६॥	१५॥	१५॥
वृषभ	।।।	कृ	१८॥	१८॥	२६	२६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२०॥	२३	२४	२०	१८	२१॥	२१॥	२८	२८
वृषभ	१	रो	२३॥	२४॥	१३	१४	३६	२७॥	२५॥	३२	२९	२५॥	२८	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृषभ	॥	मृ	२४	११	११॥	२१॥	३६	३६	३५	३३	२९	२६	२०	२२	१८	२५	२५	२१	३४
मिथुन	॥	मृ	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३५	३४	३१	१०॥	१३॥	१७॥	२३॥	१८	२९॥	३१॥	३३॥
मिथुन	१	आ	२०	१८	२३	२३॥	२२॥	३४	३३	३४	३४	२३	३३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४
मिथुन	।।।	पुन	३०	२७	२३	२७॥	२०॥	३१॥	२०॥	३४	३४	३४	३३	१५॥	२१॥	१०॥	२०॥	२३	२४॥
कर्क	।	पुन	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२१	२६	३०॥	१५	३३	३४	३४	३२॥	२२	२५	२२	१८॥	१८॥
कर्क	१	पुष्य	२०॥	२४	२७	२४	२०	१९	१३॥	२४	२३	३४	२६	३४	२५	२१	२०	१५॥	२६॥
कर्क	१	आ	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	३०॥	१५॥	१३॥	२२	२४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	२०॥
सिंह	१	म	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२७॥	२२॥	२०॥	२२	२५	२२॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिंह	१	पू	२५	२७॥	२३॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२१	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिंह	।	उ	१७	३२	२२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	२१	२१	३२	३६	३५	३३	१५
कन्या	।।।	उ	१३	२२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३	३१	३४	३५	३५
कन्या	१	ह	१३	२०	२७॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२२॥	२०॥	२८॥	२३॥	२७॥	२८॥	२०	३५	३६
कन्या	॥	चि	१८	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	३७॥	२१॥	३३॥	२७॥	२९॥	२५॥	१७॥	३०॥	३३
तुला	॥	चि	२३॥	१६	१९॥	२१॥	२१	१२	२०	२७	२५॥	२२	१२	२१	२५	११॥	१७॥	१०॥	३४
तुला	१	स्वा	२०॥	१९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२७	२४	३३	३७॥	२१॥	२८	१५	१२॥	२७॥	२५॥	२६॥	३४
तुला	।।।	वि	२२॥	२७॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	३०॥	२१	२३॥	२२॥	२९॥	१७॥	१९॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृश्चिक	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१२	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३	११॥	१८॥	१९
वृश्चिक	१	अ	२७॥	१९॥	११॥	२७॥	२८॥	२१॥	१८	१६	२०॥	१७	११	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृश्चिक	१	ज्ये	१२	१९॥	२७॥	२१॥	२३॥	१२॥	१३	२	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥	१२	१२
धन	१	मू	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१२	१०॥	१९॥	२६॥	२३॥	२८॥	१७	१६॥	१२
धन	१	पू	३४	२६	३७॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२७॥	१६॥	२८॥	२३॥	३७॥	३२	३३॥	२०
धन	।	उ	२२	३३	३४	१६	११॥	१८	२४	२७	२७	२७॥	२७॥	२७॥	१०॥	२३	३३॥	१२	१८
मकर	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	१३	२९॥	२१॥	१३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०	२०	२७	२७
मकर	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥	२६	२७
मकर	॥	ध	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१०॥	२०
कुंभ	॥	ध	३१	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९॥	१३॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	१७॥	२९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कु	कु	कु	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	०
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२२॥	२२	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	२२	३१	३६	२७	२३	२१	१८	१०	२२	३१	३४	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	॥	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७
२४	२२	२६	२०॥	२७	११	१५	२६	१२	२२	१८॥	१९	१८	१९	२॥	१७	२८	१२	१२	१८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	८	२२	१८	२२	२८	२४	२४	२७॥	२०॥	२६	२१	२५	११	२१	०७॥	१	२५	२४	२३
२६	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	२६	२६	२१	२५	२५	२१॥	२५॥	१५॥	२७॥	२५	१०॥	१८॥	२८	२८	२४
२०	२०	२६	२७	२१॥	१६॥	२४	२४	२५	२१॥	२१॥	२२॥	२०॥	२७	२०॥	१२॥	१५	२६	२८	२५
१७	१८	१९	२६	२१॥	१७॥	२७॥	२४	२५	२४	२४	२४	१६॥	१२	२२॥	२७	३०	१७	२१॥	२६
२१	१७	१९	१९	२३॥	३२	२१॥	२१॥	२४	२६	२५	२५	२२	३३	२७॥	२९॥	२०॥	२१॥	२४	२७
१२	२१॥	२१॥	२३॥	१९॥	२०	२२	२८	२५	२२	२६	२४	२२	२१	१८॥	२१॥	२०	२०	१२	२८
२०	२०	२२॥	१७॥	१४	२०	२१	१५॥	२८	२०	२४	२६	२४	२६	१९	२१॥	२०	२९	२४॥	२९
१७	२४	२९	२०॥	२७	१२	२०	२४॥	५॥	१८	२२	२०	२४	२०	०५	२५	३४	१४	२३॥	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६।८।१२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पापग्रह १० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मुहूर्त्त १३ यामार्द्ध आदि १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहोंकरि विद्धनक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त १९ पापांश २० संक्रांतिसाम्य.

कर्त्तरीदोषलक्षण ।

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौपापखेटौ यदातदा ॥ कर्त्तरीवर्जनीया-
साविवाहोपनयादिषु ॥ नहिकर्त्तरिजोदोषः सौम्ययोर्यदिजा
यते ॥ शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरी ॥

टीका–लग्न अथवा चंद्रसे बारहवें और दूसरे स्थानोंमें पापग्रह पडे तो कर्तरी दोष होताहै इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है, कर्त्तरीदोषभंग जो इन्हीं उक्त स्थानोंमें सौम्य ग्रह होय तो अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न होय तो शुभ और क्रूर ग्रह होय तो कर्त्तरीदोष नहीं होता ॥

वधूवरकीराशिसेअष्टमलग्न ।

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्चलग्नतः ॥
त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ॥

टीका–वर वधू और बटु इनकी सबकी जन्मराशि और लग्नसे आठमी लग्न विवाह और यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं ॥

दुष्टमुहूर्त्त ।

तिथ्यंशोदिनमानस्य रात्रिमानस्यचैवहि ॥
मुहूर्त्तः कथितस्तेषुदुर्मुहूर्त्तंशुभेत्यजेत् ॥

टीका–दिनमान और रात्रिमान इनका पंद्रहवाँ अंश दुर्मुहूर्त्त होताहै सो शुभकार्य में वर्जित है ॥

यामार्द्धादिकथन ।

सूर्याद्यामदलं दिवैवनिगमाद्यश्चीपुनामात्रिपट्संख्याकंकुलिकंदिवे-
न्द्रविदिङ्नागर्तुवेदद्विकम्॥द्व्येकंतंनिशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमु
ज्झंतितेः कालंकंटकमेनिपंटममरेज्यज्ञास्फुजिद्भ्यः क्रमात् ॥

टीका–रविवारसे अर्द्धयामार्द्ध कोष्ठकके अंतक प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक होते हैं क्रमकरिके जानिये और शुभ कर्ममें वर्जित हैं दिनमें दिनमानक

सोलहवां भाग रविवारसे कुलिक कोष्ठकके अंततक अंक होते हैं उनकी कुलिकसंज्ञा है, और शुभकर्ममें वर्जित हैं रात्रिमें एक २ घटाइये किसीके मतमें दिनमानका पंचदशांश वर्जित करके गुरुवारसे कालदोष बुधवारसे कंटक और शुक्रवारसे निघंट ये सब यथाक्रम कुलिकाके समान वर्जितहैं॥

वार	* यामार्द्धघटिका ४ संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घ० २	काल घ० २	कंटक घ० २	ऐनिघंट घ० २
रवि	४ था	१२	१६	१४ वा	८ वा	६ वा	१० वा
चंद्र	७ वा	२४	२८	१२ वा	६ वा	४ था	८ वा
मंगल	२ रा	४	८	१० वा	४ था	२ रा	६ वा
बुध	५ वा	१६	२०	८ वा	२ रा	१४ वा	४ था
गुरु	८ वा	२८	३२	६ वा	१४ वा	१२ वा	२ रा
शुक्र	३ रा	८	१२	४ था	१२ वा	१० वा	१४ व
शनि	६ वा	२०	२४	२ रा	१० वा	८ वा	१२ वा

लत्तादोष--भौमाङ्ग्याकृतिषड्जिनाष्टनखभंहंत्यग्रतोलत्तया। खेटोऽर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितं पूर्णोनसन्मालवे ॥

टीका—भौम जिस नक्षत्रका होय तिससे तीसरे नक्षत्रमें, लत्ता दोष और बुध जिस नक्षत्रका होय तिससे बाईसवें नक्षत्रमें, गुरुसे छठे नक्षत्रमें, शुक्रसे २४ वें नक्षत्र में. और शनिके नक्षत्रसे८वें नक्षत्रमें, राहुके नक्षत्रसे२०नक्षत्रमें रविके नक्षत्र से१२वें नक्षत्रमें, और चंद्रमा पूर्ण होय तो सातवें नक्षत्रमें लत्ता-दोष होता है; यह दोष मालवदेशमें अशुभ और अन्य देशोंमें शुभ होता है॥

ग्रहणतथाउत्पातनक्षत्र—यस्मिन्धिष्ण्येमहोत्पातोग्रहणंवाभवेद्यदि ॥ तस्मिन्धिष्ण्येशुभंकर्मषण्मासंवर्जयेद्बुधः ॥

टी०जिसनक्षत्रमेंउत्पातअथवाग्रहणहोयतिसनक्षत्रमेंषट्मासतकशुभकर्मवर्जहै.

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र ।

श्रुत्यग्निभेभिजिद्ब्राह्मये वैश्वेंद्रर्क्षेतुरुद्रभे ॥ मूलादित्ये च पुष्ये-

*एक दिनका यामार्द्ध८कुलिक१६वारानुसार जानै परन्तु उनमेंसे जिस वारको जो वर्जितहैं वह कोठकमें लिखाहै

द्रैमैत्राश्लेषेमघांतके ॥ दस्रभागार्यमांत्ये च हस्तादिबुध्न्यंभेतथा॥ चित्राजचरणेस्वातीवारुणे च परस्परम् ॥ वासवेंद्राग्निभेतद्वद्वेधः सप्तशलाकजः ॥ त्याज्यःपापोद्भवोयत्नाद्व्रतबंधादिकर्मसु ॥

टीका–पंच सप्त शलाकाचक्रमें जिस रेखापर जो नक्षत्र होय और उसीमें पापग्रह होय तो वह शुभनक्षत्र विद्धजानिये ॥

नक्षत्रचरणवेध।

सप्तपंचशलाकाभ्भां विद्धमेकार्गलेनयत् ॥ लत्तोपग्रहगं धिष्ण्यंपादमात्रंशुभेत्यजेत् ॥ वेधमाद्यंतयोरंघ्र्योरन्योन्यं द्वितृतीययोः ॥ क्रूरैरपित्यजेत्पादंकेचिदूचुर्महर्षयः ॥

टीका–विद्धनक्षत्र एकार्गल औग लत्ता उत्पात नक्षत्र इनके चरणमें शुभ ग्रह होय तो वह चरण शुभ कर्ममें वर्जित है प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्रके चरण परस्पर विद्धहोते हैं किसीके मतमें पापग्रह विद्ध नक्षत्रोंके चरण वर्जित हैं-एकार्गल दोपो मार्तंडमते-विष्कंभादि दुष्ट योग रहित दिननक्षत्रसे अभिजित् सहित गणनासे विषमनक्षत्रमें सूर्य होय तो एकार्गलदोष होताहै।

चंडायुध--शूलगंडांतपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ॥
अंत्यंयचंद्रभंतास्मिन्नेतच्चंडायुधंनसत् ॥

टीका–शूल गंड व्यतीपात साध्य वैधृति हर्षण योगोंके अंतमें जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

पंचशलाकाचक्र

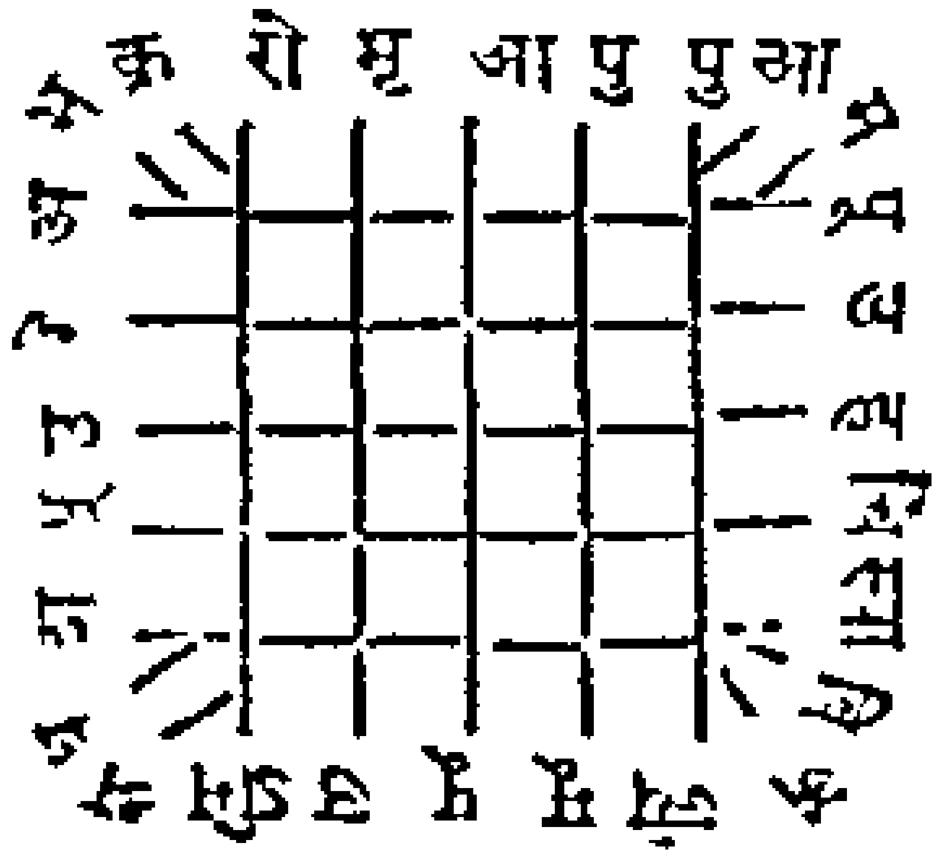

सप्तशलाकाचक्र।

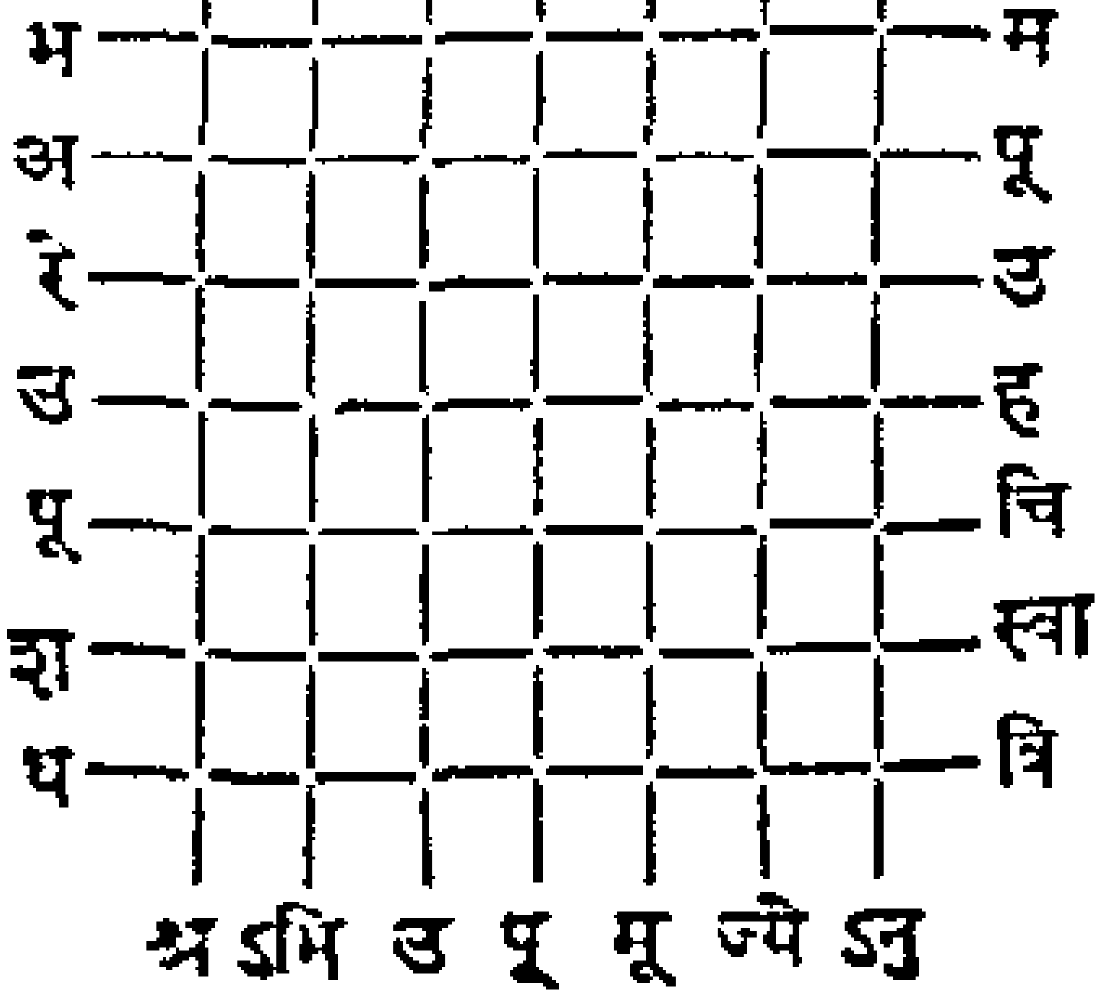

क्रांतिसाम्य ।

युग्मेधनुःकर्किरलौ च युक्तेकन्या च मीनेवृषनक्रयुक्ते ॥
मेषे च सिंहे च घटेतुलायांक्रांते च साम्यंशशिसूर्ययोगे ॥

टीका–धन मिथुन इन लग्नोंके सूर्य और चंद्रमा होय तो क्रांतिसाम्य होय इसी प्रकारसे कर्क वृश्चिक आदि दो २ राशियोंके क्रांतिसाम्यदोष जानिये ॥

चक्रकाक्रम-ऊर्ध्वरेखात्रयं चैवतिर्यग्रेखात्रयंतथा॥
क्रांतिसाम्यंबुधैर्ज्ञेयंमध्ये मीनंतुयोजयेत् ॥

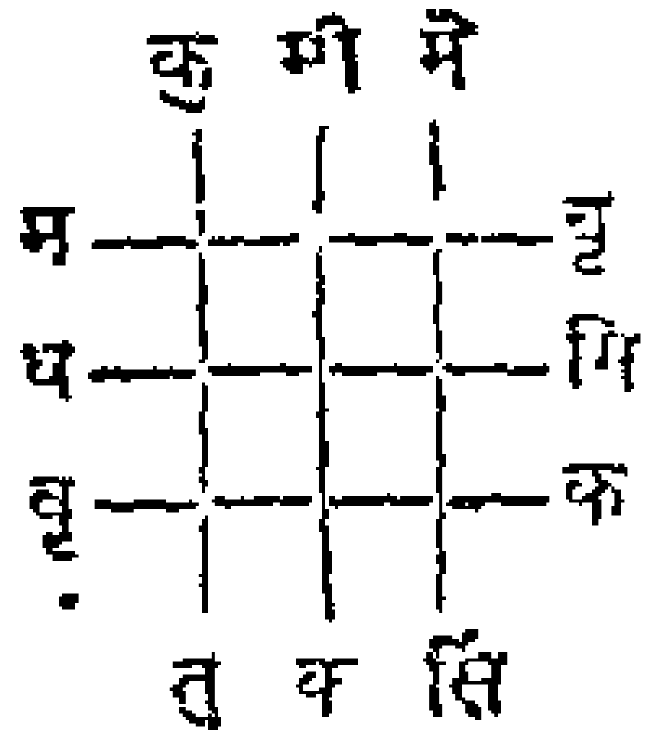

टीका–तीन ऊर्ध्व और तीन आडी रेखा खींचे मध्य भागकी रेखाओंमें तीन २ लग्न क्रमसे लिखे द्वादशलग्नोंमेंसे दो २ का क्रांतिसाम्य होता है ॥

यामित्रदोष ।

लग्नेंद्वोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदायामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ क्रूरोवायदिवासौम्यो लग्नाच्चंद्राच्चखेचरः ॥ एकोपियदियामित्रे समांशेचतदाभवेत् ॥ यामित्रंनप्रशंसंति गर्गकश्यपदेवलाः ॥ आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः॥

टीका–लग्न चंद्र मध्य सप्तम स्थानका पापग्रहशून्य करनेसे उसके तुल्यांश आवें तो यामित्रदोष होय, अधिक वा न्यून हो तो दोष नहीं है ॥ दूसरा पक्ष ॥ लग्नचंद्रसे सप्तमस्थानी शुभग्रह अथवा पापग्रह सम अंश होय तो यामित्र दोष होय, गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियोंके मतानुसार यामित्र दोष विवाहमें वर्जित है जो लग्नसे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें सूर्य हो तो यामित्र दोष शुभ और सुखदायक जानिये ॥

चरत्रयदोष–कर्कलग्नेथवामेषे घटांशोयदिदीयते ॥
तुलायांमकरेचंद्रे वैधव्यंजायतेध्रुवम् ॥

टीका–कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्रमा ऐसे योगोंका दोष वैधव्य करता है ॥

तिथिअनुसारवर्जितलग्न ।

प्रतिपदितुलामकरौ सिंहमकरौतृतीयायाम् ॥ कन्यामिथुनेपंचम्यांसप्तम्यांचैवधनुःकर्कौ ॥ नवम्यांकर्कसिंहौ एकादश्यांतुधनुर्मीनौ ॥ त्रयोदश्यांवृषभमीनौ शून्यलग्नानितिथियोगात् ॥

टीका--प्रतिपदाको तुला और मकर तृतीयाको सिंह मकर पंचमीको कन्या मिथुन सप्तमीको धन कर्क नवमीको कर्क सिंह, एकादशीको धन मीन, त्रयोदशीको वृष मीन इन तिथियोंमें ये लग्न शून्य वर्जनीय है ॥

दोषनिवारण--द्यूनंविनाकेंद्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ॥निहंतिदोषत्रिशतंभृगुश्च शतं बुधोवापिहिदृश्यमूर्त्तिः ॥

टीका—गुरु शुक्र अथवा बुध ये १ । ४।९।१० ५ इन स्थानोंमें होय तो एक लक्ष गुरु तीनसो शुक्र १ सौ बुध दोषोंको नाश करे हैं ॥

लग्नप्रमाण वा राश्युदय- गजाग्निदस्रा गिरिषट्कदस्राव्योमेन्दुरामा रसरामरामाः॥कुरामरामा गजचंद्ररामा नागेंदुलोकाः कुगुणानलाश्च ॥ षड्रामरामाःखशशांकरामःसप्तांगपक्षाश्च गजाग्निदस्रा ॥

टीका—राशिउदय कहिये मेषादि बारह राशि तिनकी १२ लग्न होती हैं जिस राशिके सूर्य होय वही उदयकालकी प्रथम लग्न जानिये तिसकी पलसंख्याका क्रम कोष्टकमें है ॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पल	२२८	२६७	२१०	३३६	३२१	३१८	३१८	३२१	३३६	२१०	२६७	२३८

लग्नकीघटिकाओंकीसंख्या—मीनेमेषेन्यष्टपंच क्रमान्नाड्यःपलानिच॥वृषेकुंभेऽब्धिसप्तद्विपंचादिङ्मिथुनेमृगे॥धनुःकर्कशरेषट्त्रिसिंहाल्योःशरभूत्रयम्॥बाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाड्यःपलानिच ॥

टीका—मेषादि लग्नोंकी घटी और पलोंका क्रम ॥

लग्न	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क	तुला	वृश्चि	धन	मक	कुभ	मीन
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

प्रतिदिवसभुक्तपलजाननेकाक्रम ।

मीनाजेसप्तषट्पंच पलानिविपलानितु॥गोकुंभेष्टौयुगशरादि-

विंशतिर्नृयुङ्मृगे ॥ कर्कचापेभवाःसूर्याःसिंहाल्योरुद्रहङ्-
मिताः ॥ तुलांगेदिक्चषट्त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥

टीका-जो लग्न उदय कालमें हो तिसकी प्रतिदिन भोग्य पल विपल संख्या.

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुंभ	मी
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नकथन-यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तल्लग्नमुदयोभवेत् ॥
तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते ॥

टीका-जिस राशिके सूर्य होय वही लग्न सूर्योदयमें होतीहै और उससे सप्तम लग्न सूर्यास्तमें होताहै उसीको अस्तलग्न जानिये ॥

लग्न	वृ ष			मि			क			क			तु			धन			मीन		
मेष	०	३	२०	०	६	४०	०	१०	०	०	२६	४७	०	२०	०	०	२४	४०	०	०	०
वृष	१	११	२०	१	१६	४०	१	२०	०	१	२६	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मिथुन	२	३२	२०	२	२६	४०	०	०	०	०	०	०	२	०	०	२	६	४०	२	१६	४०
कर्क	०	०	०	०	०	०	३	०	०	३	६	४०	३	१०	०	३	१६	४०	३	२६	४०
सिंह	४	३	२०	४	६	४०	४	१०	०	४	१६	४०	४	२०	०	२	२६	४०	०	०	०
कन्या	५	१३	२०	५	६	४०	५	२०	०	५	२६	४०	४०	०	०	०	०	०	०	०	०
तुला	६	२३	२०	६	२६	४०	६	२	०	६	०	०	६	०	०	६	६	०	१	१६	४०
वृश्चिक	०	०	०	०	०	०	७	२	०	७	६	४०	७	१०	०	७	१६	४०	७	२६	४०
धन	४	३	२०	८	६	४०	८	१०	०	६	१६	४०	८	२०	०	८	२६	४०	०	०	०
मकर	१	१३	२०	१	२६	४०	१	२७	०	१	२६	४०	४०	०	०	०	०	०	०	०	०
कुंभ	१०	२३	२०	१०	२६	४०	०	०	०	०	०	०	२०	०	०	१६	६	४०	१०	६	४०
मीन	०	०	०	०	०	०	११	१	०	११	६	४०	११	१०	१	११	१६	४०	११	२६	४०

लग्नकेउक्तअंशदेनैकाक्रम-वृषश्चमिथुनंकन्यातुलाधन्वीझषस्तथा ॥
एतेशुभनवांशास्तु ततोन्येकुनवांशकाः ॥

टीका-वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये अंश द्वादश लग्नोंके शुभ होते हैं शेष अशुभ, मेषादि १२ लग्न वा अंश ७ कोष्ठकमें हैं तिनमेंसे जिसके अंशकी वर्गशुद्धि होय उनकी कोष्ठकमें लग्न लिखे और उस अंशघडीको अयनांश देकर शुक्र काल लाइये ॥

प्रत्येक कोष्ठकमें ४ अंकहैं उनके नाम राशि अंश कला विकला जानिये राशिकी संज्ञा शून्यकानाम मेष और वृषके नाम १ इसप्रकार १ २ राशिहोतीहैं

तात्कालस्पष्टसूर्यलानेकासाधन ।

गतगम्यदिनाहनद्युभुक्तः खरसप्तांशवियुग्युतोग्रहःस्यात् ॥

टीका—पंचांगस्थ ग्रहोंके कोष्ठकमें पूर्णिमासे अमावास्यापर्यंत और अमावास्यासे पूर्णिमा पर्यंत सूर्य स्पष्टहै, परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिनका सूर्य स्पष्ट करनाहो उसदिनको लेकर और दिनोंके अंतरको वर्तमान दिनकी सूर्य गतिसे कोष्ठांतमें गुणै औरद६०का भाग देनेसे जो अंक आवैं वे अंक घडीपल जानिये, परंतु पूर्णिमाके सूर्य्यसे जो पीछेका स्पष्ट करना हो तो पंचांग सूर्यके अंश घटी पल जो कोष्ठकमें हैं उनमेंसे उन अंकोंको हीन करै जो आगे काल न होय तो उनमें जोडदे इसप्रकारसे तात्कालिक सूर्य स्पष्ट होजाताहै यह जानिये.

भुक्त दिवसोंका उदाहरण ।

शकः १७६९ कार्तिक शुक्ल ९ भौमका स्पष्ट सूर्य्य कहो ॥

सूर्यकी गति.

प.	वि.
६०	४७ गति
	६ दिन ९ से १५ तक

अंतरकोगुणै

३६०	२८२ गुणा

भाग ६०) २८२ (४ अंश
२४०
४२ शेषफल.

३६०	
४	४२ मिलावे
३६४	४२
६४	४२ भाग ६०) ३६४ (६।४।४२

स्पष्ट रविका उत्तर

	रा.	अं.	क.	वि.
पंचांगस्थरवि	७	७	२१	५७
गति		६	४	४२
शेष संख्या	७	१	१७	१५

यह स्पष्ट सूर्य जानिये.

अं. प. वि.

अमुक दिवसोंका उदाहरण।

शकः १७६५ कार्तिक कृष्ण६को सूर्य स्पष्ट लानेका क्रम पूर्णिमाका स्पष्ट रवि राशि ७ अंश ७ घटी २१ पल ५७ अमुक दिवस ६ सूर्यकी गति ६०।४७ इन अंकोंको ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इनमें ६० का भाग देनेसे शेष रहे वे अंश ६ घटी ४ प. ४ इन अंकोंको सूर्यके अंश घटिका और पलों मिलावे तो ७ राशि १३ अंश २६ घटी ३९ पल इस प्रकार होतेहैं.

अयनांशलानेकाक्रम।

शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥
देयास्तेतुरवौस्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥

टीका—वर्तमान शकमें ४४४ घटानेसे जो शेष बचै उसमें ६० का भागदे ॥ चरस्थिर द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंको स्पष्ट सूर्यके अंश और घटिकाओंमें मिलानेसे सायन सूर्य होजाताहै ॥

उदाहरण।

शके १७६९	भा.६०)१३२५(२२अंश	७ १ १७ १५ स्पष्टरवि
उनसे ४४४	१२०	२२ ५ अयनांशमिलावे.
घटाना	१२५	७ २३ २२ १५
१३२५	१२०	यह सायनसूर्यजानिये.
	५	
	६०गुणक	
	भाग ६०) ३०० (५कला	
	३००	
	०००	

लग्नसेइष्टकाललानेकाक्रम।

स्फुटसायनभागर्क्षभोग्यांशफलसंमितः ॥ सायनांशतनोश्चापि भुक्तांशफलसंयुता ॥मध्यलग्नोदयैर्युक्तापष्ट्यात्ताना।डिकास्तनोः॥

टीका–सायन सूर्यसे भोग्य और सायन लग्नसे भुक्त बनानेकी रीति ॥ दोनोंका योग करके सूर्य लग्नके मध्यका उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्न परसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट होजाताहै ॥ उदाहरणः–शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारको स्पष्ट सूर्यकी राशि आदि ७।१। १७। १५ और अयनांश २२।५ को सूर्यके अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि७।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशिका सूर्य २३ अंश २२ घटिका १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक राशिका है तो वृश्चिकका उदय कहिये ३३१ से भोग्यांश गुणनेसे हुए अंक २१९४ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ७३।८ यह सूर्यका भोग्यकाल जानिये ॥

लग्नसे भुक्त लानेका प्रकार ॥ मकर लग्न वृषकी तिसको कोष्ठकमें देखकर वह स्पष्ट लग्न लेते वे राश्यादि ९। १३।२० कहिये मकर राशिकी लग्न १३ अंश २० घटिका होतीहै, इस लग्नके अंश घडीमें अयनांश २।५।५ मिलानेसे सायन लग्न १०।५।२५ हुई कुंभराशिके लग्न अंश ५ घडी २५ सायन लग्न होतीहै, लग्नके भुक्तांश ५।२।५ कुंभराशिका उदय २६७ इनको गुणनेसे अंक हुए १४४६ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ४८।१२ यही अंक लग्नका भुक्त होताहै ॥

भोग्य भुक्तसे इष्टकाल लानेका प्रकार ।

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न जिसराशिके मध्यांतरका उदय २ धन ३१६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१ इसमें मिलाये तो अंक हुए ७६७ इस युक्त अंकमें ६० का भाग दिया तो वह इष्ट कालकी घटी १२ पल ४७ हुए इन पलोंमें वृत्तिके ५ पल जोडनेसे स्पष्ट इष्टकाल १२।५२ आय जाताहै ॥

उदाहरण

सायन सूर्यसे भोग्यलानेका क्रम

अंश	घटी	पल
३०	०	०
२३	२२	२५
६	३७	४५
		३३१ गुणक
१९८६	२३१७	१६५५
२०८	९९३	१३२४
२१९४	१२२४७	भाग ६०) १४८९५ (घटिका २४८
	२४८	१२०

भाग ६०) १२४९५ (अं. २०८ | २८९
१२० | २४०
४९५ | ४९५
४८० | ४८०
१५ शेष | १५ शेषपल

रविके भोग्य काल लानेका प्रकार

अंश — घटी

भाग ३०) २१९४ — १५ (७३।८
२१०
९४
९०
४
६० गुणक
२४०
१५ शेषघटि
भाग ३०) २५५ (८ शेष
२४०
१५ शेष

लग्नसे भुक्तकाल लानेकाक्रम।

रा अं क.
९ १३ २० मकरलग्न
२३ ५ अयनांशमिलावे
१० ५ २५ सायनलग्नभुक्त
२६७ लग्नकाउदय
१३३५ १७५
१३३५ १७५
१११ १५०
१४४६ ५० अंश
६०) ६६७५ (१११
६०
६७
६०
७५
६०
१५

अभुक्तांश.
भाग ३०) १४४६ (१४१.१२
१२०
२४६
२४०
६
६० गुणक
भाग ३०) ३६० (१२
३६०

इष्टकाल.
धन ३३६
मकर ३१० मिलावे
६४६
१२१ यह भुक्त मिलावे
भाग ६०) ७६७ (१२ घ्न
६०
१६७
१२०
४७
६० गुणक
भाग ६०) २८२० (४७ पल
२४०
४२०
४२०

भुक्तभोगयोग.
४८ १२ भुक्त
७३ ८ भोग्या
१२१ २० सूर्य व लग्न इनराशिको मध्यन्तरका उदय.
उत्तर इष्टघटिका
घ. प.
१२ ४७
५ प्रवृत्तिकाफल.
१२ ५२ उत्तर इष्ट घटी.

इष्टकाल समयका तत्कालसूर्यसाधन।

तत्कालभवस्तथाघटिकाभिःस्वरसैर्लब्धकलोनसंयुतःस्यात् ॥

टीका—इष्ट घडीमें सूर्य लाना होय तो उसको और उससे सूर्यकी घडियाँ गुणाकर६०का भागदे जो लब्धि होय उसमें जो सूर्य गत होय तो हीन करै और भोग होय तो उसमें युक्त करनेसे तत्काल सूर्य आजाताहै ॥

उदाहरण।

शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारके दिन प्रातःकालका सूर्य ७।१।१७।१५ है तो कहो कि, सायनसूर्य कितना होगा ॥

इष्ट घडीकी गतिका गुणाकार

		१२	५२	इष्टघटी
ग.	६०	७२०	३१२०	
	४७	५६४	२४४४	
		७२०	३६८४	२४४४

इनका भाग ६०) ७८२ (१३।२
६०
१८२
१८०
२
६० गुणक
भाग २०) १२०
१२०

घटीपलोंका भागाकार

७२०	३६८४	६०) २४४४		
६२	४०	२४		
७८२	३७२४	८६२		

३६०
१२४
१२०
४

७	१	१७	१५	प्रातःकालका रवि
		१३	२	गम्यघटि
७	१	३०	३६	
		३२	९	अयनांश
७	२३	३५	१७	सायनतत्कालसूर्य

इष्टघटीसे लग्न लानेका क्रम।

तत्कालार्कःसायनोस्योदयघ्ना भोग्यांशा खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ॥ एवंयातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योभीष्टनाडीपलेभ्यः॥तदनुजहीहिनगृहोदयांश्चशेषंगगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम्॥ सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवतिविलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥

टीका—पीछे सायन सूर्य जिस राशिमें होय उसका उदय लेना चाहिये और सायन सूर्यके अंशादिकोंको ३० अंशोंमें हीन करे वे भोग्यांश जा-

निये और उदयको भोग्यांशसे गुणिके ३० का भाग दे तो सूर्यका भोग्यकाल निकल आवै । सूर्यका गतकाल लानेका क्रम ॥ सायन सूर्यके उदयमें उसीके अंशादिकोंको गुणिके ३० का भाग दे तौ भुक्तकाल आजायगा इष्ट घटियोंके पल करके उसमें भोग्यकाल हीन करे शेष जिस राशिमें सूर्य उदय होगा वह राशि आगे जितनी राशि उदयराशिमें कम होगी उनको घटादे जो उदय न घटे तो अशुद्ध जानिये और शेष अंकोंको ३० से गुणाकर अशुद्ध उदयसे भाग दे तो अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशिसे अशुद्ध राशि॰ को पूर्व राशितक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट होजाताहै॥ उदाहरण ॥ पीछे जो सायनसूर्य आयाहै वो ७।२३।३५। १७ उसका उदय ३३१ सूर्यके अं. २३।३५।१७ ये ३० अंश में हीन करै शेष बचै वह भोग्यांश ६।२४।४३ इनको उदयसे गुणे वे अंक २१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्यकाल निकल आवै ॥ उसके हिसाबका क्रम-

३० ३५ १७ सायन सूर्यके अंश घटावै
२३
६ २४ ४३ शेष भोग्य
३३१ उदय

अंश	कला	विकला
१९८६	१२२४	४३
१३६	६६२	१२९
३०) २१२२ (७०	७९४४	१२९
२१०	२३७	भाग ३०) १४२३३ (२३७ कला
२२	६०) ८१८१ (१३६ अं	१२०
६० गुणक॰	१६०	२२३
३०) १३२० (४४	२१८	१८०
१२०	१८०	४३३
१२०	३८१	४२०
१२०	३६०	१३
०	२१	

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये.

इष्ट घटीमें १२।५२ इनके पल ७७२ इस अंकमें भोग्यकाल घटाया तो

शेष अंक ७०१।१६ धन राशिका उदय ३३६ वा मकर राशिका उदय ३१० इन दोनोंका योग ६६४ शेष अंक में न्यून किया तो रहे ५५।३६ इन अंकोंमें कुंभराशिका उदय २६७ घटा नहीं सकते इसलिये अशुद्ध उदय जानिये॥

इष्ट घटी १२
गुणक ६० ५२
७२०
५२
७७२
भोग्यकाल ७० ४४
३३६ धनराशिकाउदय ७०१ १६
३१० मकरराशिकाउदय ६४६ इन अंकोंमे कुंभका उदय नहीं घट
६४६ ५५ १६ सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं

अंशादि ५५।१६ इनको ३० से गुणे वे अंक १६। ५८ हुए इनका अशुद्ध उदयमें भाग दे जितने भाग आवें वे अंश और शेष अंश ५६ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर इनके उदयमें भाग दिया तो घटी १२ और शेष १५६ को ६० से गुणा तो हुये ९३६० फिर उनके उदयमें भाग दिया तो पल ३५ मेष राशिसे अशुद्धकी पूर्वराशितक राशि १० और पहलीके अंशादिक ६।१२।१५ तिनके और राशिके अंशोंके लिखनेसे स्पष्ट सायनलग्न १०। ३६।१२।३५ अयनांश १२।५ सायनलग्नके अंश घटियोंमें घटानेसे स्पष्ट लग्न ९।१४।७।३५ मकर लग्न १४ अंश ७ घटिका ३५ फल जानिये॥

शेषांक १८ १६ ५६ १५६
१६५० ३० गुणक ६० गुणक ६० गुणक
८ ६०) ४८० (८ २६७) ३३६० (१२ घ २६७) ९३६० (३५ प.
२६७) १६५८ (६ अं. ४८० २६७ ८०१
१६०२ ६९० १३५०
५६ ५३४ १३३५
१५६ १५

राशि	अंश	घटी	पल
१०	६	१२	३५
	१२	५	
	१४	७	३५

अयनांश घटावे

इस प्रकार मकर लग्नका प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये॥

सूर्य और लग्न एक राशिके हो तौ इष्टलानेका क्रम।

यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशांतरहतउदयःस्यात्खाग्नि-
ह्रत्त्विष्टकालः ॥

टीका—सूर्य और लग्न एक राशिके होंतो दोनोंका अंतर निकाले और तिसको राशिके उदयसे गुणे ३०का भागदे जो लब्धि होय सोई इष्टकाल जाने और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकालना होय तो सूर्यकी राशि६ उसमें मिलावे.

लग्नके शुभाशुभ ग्रहोंका विचार।

लग्ने चन्द्रखलारिपौशशिसितौसर्वेद्युनेखेबुधोऽन्जोऽत्येगुःसुख-
गोष्टमाःकुजशुभाःशुक्रस्तृतीयःशुचे· ॥ लाभेसर्वखगाःशुभा
अखिलगारुयष्टारिगाःस्युःखलाश्चंद्ररुयंबुधने श्रियेंशभट्टके-
ट्टस्यान्मृत्यवेऽष्टारिगः ॥

टीका—लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्नसे षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्र और सप्तमस्थानमें कोईग्रह होय, दशमस्थानमें बुध, द्वादशमें चंद्र, चतुर्थ-स्थानीराहु, अष्टमस्थानी मंगल व शुभग्रह, और तृतीयस्थानमें शुक्र, ऐसे लग्नके ग्रह होंय तो अनिष्ट शोककारक अशुभस्थानी ग्रह जानिये ॥

लग्नसे एकादशस्थानमें संपूर्ण ग्रह और निंद्यस्थान वर्जितके और शेष स्थानमें शुभग्रह होय और तृतीय अष्टम तथा षष्ठस्थानमें सूर्य और २ । ३ चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा होय तो शुभलक्ष्मीकारक जानै, लग्नका स्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ वा अष्टमस्थानमें होय तो मृत्युदायक जानिये ॥

पंचभिरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥
स्थानादिफलमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥

टीका—लग्नोंके पांचग्रह शुभस्थानी होय तो पुष्टिकारक होतेहैं और अशुभ हो तौ अनिष्टकारक होतेहैं और यवनादिमतसे चारग्रहभी इष्टकारकजानिये.

षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम।

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ॥
त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥

टीका–प्रथम जाननेमें लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ये ६ छः वर्ग इनमें शुभग्रहोंके वर्ग शुभ होतेहैं ॥

त्रिंशांशादिकथनम्।

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नंहोरातस्यार्द्धमुच्यते ॥ लग्नात्रिभागोद्रेष्काणोनवांशोनवमांशकः॥द्वादशांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः॥

टीका–लग्नके अंश ३०होतेहैं तिनका अर्ध१५अंश होरा कहताहै और लग्नही का तीसराभाग १० ऐसे३ तीन द्रेष्काण होतेहैं और नवम भाग नवांश और तिनका बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवाँ भाग त्रिंशांश इसरीतिसे एकलग्नके ३० अंश होतेहैं और उन्हीं तीस अंशोंके छः वर्ग होतेहैं.

आदौ गृहज्ञानम्।

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टीका–जिस ग्रहकी जो राशि होय सो गृह उसीका कहा जाताहै ॥

ग्रह	भौ	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क	तुल	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन

होराकथनं–सूर्येंद्वोर्विषमे लग्नेहोराचन्द्रार्कयोःसमे ॥

टीका–विषमलग्नमें १५ अंशतक सूर्यका होरा तदनंतर चन्द्रमाका होरा जानिये, सम लग्नमें १५ अंशके अन्तलग्न होय सो चंद्रमाका होरा तिसपीछे सूर्यका जानिये. होरा चंद्रमाका शुभ और सूर्यका अशुभ ॥

लग्न	मे ०	वृ १	मि २	क ३	सि ४	क ५	तु ६	वृ ७	ध ८	म ९	कु १०	मी ११
अंश १५	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
अंश ३०	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

द्रेष्काणकथनम्।

द्रेष्काणआद्योलग्नस्य द्वितीयःपंचमस्यच ॥

द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥

टीका–प्रथम द्रेष्काण कहिये लग्नके ३० अंश तिनमेंसे १० अंशका एक द्रेष्काण ऐसे २० अंश ३० अंश तीन द्रेष्काण होतेहैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका स्वामी होताहै द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी होताहै और तृतीयद्रेष्काणका नवम स्थानका स्वामी होताहै शनि मंगल सूर्यका द्रेष्काण अशुभ जानिये ॥

लग्न	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	क०	तुला	वृश्च	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अ १०	म०	शु०	बु०	च०	र०	बु०	शु०	म०	गु०	श०	श०	गु०
२ अ १०	र०	बु०	शु०	म०	गु०	श०	श०	गु०	म०	शु०	बु०	चं०
३ अ १०	गु०	श०	श०	गु०	मं	शु०	बु०	च०	र०	बु०	शु०	म०

सप्तांश ।

	मेष ०	वृषभ १	मि० २	कर्क ३	सिंह ४	क० ५	तूळ ६	वृ० ७	धन ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
४।१७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२।५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७।८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२१।२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५।४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्नकानवांश ।

मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशामेषतःस्मृताः । वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकः ॥ कर्कालिमीनलग्नेषुनवांशाःकर्कतःस्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥

टीका–मेष सिंह धन इन लग्नोंका नवांशका क्रम मेषसे जानिये और वृष कन्या मकर इनका मकरसे क्रम और मिथुन तुल कुंभका तुलसे क्रम कर्क वृश्चिक मीन इनलग्नोंका नवांश कर्कराशि जानना चाहिये. नवांश सूर्य मंगल शनिका अशुभ होताहै ॥

[illegible]		मे	वृ	मि	कर्क	सि	क	तू	वृ	ध	म	कु	मी
३	२०	म	श	शु	चं	म	श	शु	च	मं	शु	शु	च
६	४०	शु	श	म	र	शु	श	म	रं	शु	श	म	रं
१०	०	बु	गु	ग	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु
१३	२०	च	म	श	शु	च	म	श	शु	च	म	श	शु
१६	४०	र	शु	श	म	र	शु	श	म	र	शु	श	मं
२०	०	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गुं	गु
२३	२०	शु	च	म	श	शु	च	म	शं	शु	च	म	शं
२६	४०	मं	र	शु	श	म	र	शु	श	म	र	शु	श
३०	०	गु	बु	बु	गु	बु	बु	गु	गु	गु	बु	बु	गु

द्वादशांशकथन ।

लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेव कीर्त्तिताः ॥

टीका—लग्नके अंश ३० तिनके भाग १२ द्वादश कहातेहैं तिनका क्रम चलते लग्नसे जो पर्यंत लग्नके अंश हों ताके स्थानसे जो द्वादशांश पति जानिये. तिनमें मंगल शनि रवि इनके अंश अशुभ होतेहैं ॥

(	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
२ ३०	म	शु	बु	च	र	बु	शु	म	गु	श	श	गु
५ ०	शु	बु	च	र	बु	शु	म	गु	श	श	गु	म
७ ३०	बु	च	र	बु	शु	म	गु	श	श	गु	म	शु
१० ०	च	र	बु	शु	म	गु	श	श	गु	म	शु	बु
१२ ३०	र	बु	शु	म	गु	श	श	गु	म	शु	बु	च
१५ ०	बु	श	म	गु	श	श	गु	म	शु	बु	च	र
१७ ३०	शु	म	गु	श	श	गु	म	शु	बु	च	र	बु
२० ०	म	गु	श	श	म	शु	बु	च	र	बु	बु	गु
२२ ३०	गु	श	शु	गु	म	शु	बु	च	र	बु	शु	म
२५ ०	श	श	गु	म	शु	बु	च	र	बु	शु	म	गु
२७ ३०	श	गु	म	शु	बु	च	र	बु	शु	म		श
३० ०	गु	म	शु	बु	च	र	बु	शु	म	गु	श	श

विषमत्रिंशांश ।

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ॥
पंचपंचाष्टशैलेषु भागानां विषमेगृहे ॥

टीका—विषमलग्नमें पंचमांश लग्नपर्यंत होय तो भौमके आगे ५ अंश शनिके ५ गुरु ८ अंश तिसके आगे ७ अंश बुधके और ५ अंश शुक्रके इसक्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानो इनमें मंगल शनि अशुभ जानिये॥

अं.	मे	मि	सिं	तु	ध	कुं
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं
५	श	श	श	श	श	श
८	गु	गु	गु.	गु	गु	गु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांश ।

शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ॥
पंचांगेष्वेषु पंचानां भागानां कथिता बुधैः ॥

टीका—सम लग्नमें प्रथम ५ अंश पर्यंत शुक्र तिसके आगे ७ अंश बुध तिसके आगे ८ अंश गुरु तिसके आगे ५ अंश शनि तिसके आगे ५ अंश मंगल ये सम लग्नमें त्रिंशांशपति जानिये. तिसमें मंगल शनि अशुभहैं ॥

अं.	वृ	क	क	वृ	म	मी
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
५	श	श	श	श	श	श
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं

षड्वर्गजाननेकाक्रम ।

टी०-कार्तिक शुक्ल१ मंगलवार लग्न मकर अंश १४ घटिका ११ पल५१ स्वामी शनि सो गृहेश ॥ ये षड्वर्ग तिनमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये॥

गृहेश	होरा	द्रेष्का.	नवमां	द्वादशां	त्रिंशां
शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु

उक्तांश ।

मेषेषट्धटौवृषेत्रिद्विगेनाद्वंद्वेद्विगोकाँत्रयः कीटेऽध्यं गनवाद्रयोर्केभवनेगाश्वाःस्त्रियांत्र्यर्कषट् ॥ जूकेर्का-द्रिखगा अलौगवगषट् चापेत्रिषड्गोद्रयोनक्रेशाऽरुष्यरु-णाधटेङ्गपवृषौमीनेद्रिगोषट्शुभाः ॥

रा. उ	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
अंश	६	३	७	४	६	६	१२	१	३	३	१२	७
	७	३	१	६	७	१२	७	७	६	१२	२	१
		१२	१७	१		६	१	६	१			६
			३	७					७			

षड्वर्गं पंचवर्गं वा चतुर्वर्गमथापिवा ॥
कैश्चित्त्रिवर्गसत्प्रोक्तंद्व्येकवर्गं तनुंत्यजेत् ॥

टीका—६ अथवा ५ किंवा४वर्ग लग्नके होंय तो लग्न बलिष्ठ होय और किसी२के मतसे३वर्ग शुभ होतेहैं और दो एक होंय तो लग्न वर्जनीयहै ॥

लग्नांशफल ।

लग्नेचतुर्दशोभागो वृषस्यमकरस्यच ॥
कन्याकर्कटमीनानामष्टमे द्वादशोलिनः ॥

टीका—वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीनके ८ अंश और वृश्चिकके १२ अंश ये शुभ फल देतेहैं ॥

कुंभस्यांशेचषड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके ॥

टीका—कुंभके २६ अंश तुलके २४ मिथुनके ७ और धनुके१० अंश शुभहैं इस प्रकारसे जानिये ॥

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशेहरेः ॥
संपूर्णफलदंचादौ मध्येमध्यफलप्रदम् ॥

टीका—मेषके २१ अंश सिंहके १८ ऐसे लग्नों आदिमें संपूर्ण और मध्यम फल अंश अनुसार जानिये ॥

लग्नवर्गोत्तमलक्षण ॥ अंतेतुच्छफलंलग्नंयदिवर्गोत्तमंनचेत् ॥
लग्नस्यस्वनवांशोयः सवर्गोत्तमउच्यते ॥

टीका—लग्नके अंत भागमें वर्गोत्तम न होय तो लग्न अनिष्ट फल देताहै और लग्न अपने नवांशमें होय तो वर्गोत्तम कहिये ॥

गोधूललग्नकाकथन।

गोधूलंवदजादिके शुभकरंपंचांगशुद्धौरवेरर्धास्तात्परपूर्वतो-
र्धघटिकंतत्रेंदुमष्टारिगम् ॥ सोग्रांगंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपात-
मर्कक्रमजह्याद्विप्रमुखेतिसंकटइदंसद्यौवनाद्येक्वचित् ॥

टीका—शूद्रादिकोंको पंचांग शुद्ध देख करिके सूर्यके अर्द्धास्तसमय प्रथम और पश्चात् १५ पल गोधूलीकाल शुभ और गोधूललग्नसे ६ठ और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पापग्रह भौम अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जिके शुभ और किसीके मतमें वि- प्रादिकके अति संकटमें वर और कन्या होय तो गोरज शुभ होय ॥

वधूप्रवेश॥विवाहमारभ्यवधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरांतात्॥
तदूर्ध्वमध्येयुजिपंचमांतादतः परस्तान्नियमोनचास्ति ॥

टीका—विवाहसे सम १६ दिवस पर्यंत वधूप्रवेश कहाहै आगे पांच वर्ष पर्यंत विषममासादिक कहेहैं आगे स्वेच्छा ॥

उक्तमासादि ॥ माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने ॥
गुर्वाद्यस्तविशुद्धौस्यान्नित्यंपत्नीद्विरागमः ॥

टीका—माघ फाल्गुन और वैशाख शुक्लपक्षमें शुभदिवसमें गुरु आदि अस्त वर्जिके द्विरागमन उक्तहै ॥

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनीशाक्रोभास्कर-
वायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ ॥ कुंभाजालिगतेरवौशुभ-
करेप्राप्तोदयेभार्गवेजीवज्ञास्फुजितांदिने नववधूवेश्मप्रवेशःशुभः ॥

टीका—मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा ये नक्षत्र और कुंभ मेष वृश्चिक इनराशियोंके सूर्य शुक्रादिका उदय और गुरु बुध चंद्रये वार ऐसे शुभदिवसमें प्रवेशकरावे

नूतनपल्लवधारणका मुहूर्त।

हस्तादिपंचमृगपूषभदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारे ॥
स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमये खलुपीतवस्त्रैः ॥

टीका-हस्तसे पांच और मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुध गुरु शुक्र ये वार और वे ग्रह होंय जो विवाह कालमें कथित हैं ऐसे दिवसमें नूतन पीतवस्त्र करिके स्त्रियोंको प्रथम पल्लवधारण करावे ॥

गंधर्वविवाहमुहूर्त।

शूद्रांत्येपुपुनर्भवापरिणयः प्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नालोक्यं तिथिमासवेधभृगुजेज्यास्तादि तत्राकंभात्॥ त्रिन्यक्षेंषुमृतिर्धनं मृतिमृती पुत्रोमृतिर्दुर्भगं श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशकृततत्त्वक्षैंत्ययःसाभिजित्॥

टीका-शूद्र आदि और रजक आदि और अन्यजाति जिनकी स्त्रियोंका पुनर्विवाह होजाता है उनके धरेजेका मुहूर्त विवाहनक्षत्र अवश्य देखे. मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्तका कुछ दोष नहीं और सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत नक्षत्र गिने, क्रमसे प्रथम ३ मरण द्वितीय ३ धन तृतीय ३ मरण चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ पुत्रलाभ षष्ठ ३ मरण सप्तम ३ दुर्भगा अष्टम ३ लक्ष्मी नवम ३ औन्नत्य और सूर्यनक्षत्रसे चौथे ग्यारहवें पचीसवें इन चारस्थानोंके नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र सब अशुभ होते हैं.

दूसरेमतअनुसार।

इंद्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयंवारुणंतथा ॥
आश्विनीवसुदेवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम् ॥

टीका-ज्येष्ठा पुनर्वसु, आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी धनिष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करनेमें शुभ जानिये ॥

दत्तक पुत्र लेनेका मुहूर्त।

हस्तादिपंचकभिषग्वसुपुष्यभेपुसूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु ॥
रिक्ताविवर्जिततिथौ अलिकुंभलग्नेसिंहे वृषेभवतिदत्तपरिग्रहोयम्

टीका-हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य

और रविवार मंगलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्तहैं और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी वृश्चिक कुंभ ये लग्न वर्जित और सिंह वृष ये लग्न शुभहैं ॥

वास्तुप्रकरण ।

ग्रामादिअनुकूल ।

ग्रामादेरनुकूलत्वंदिशोभूतग्रहस्यच ॥
मासधिष्ण्यादिशुद्धिंच वीक्ष्यायव्ययभांशकाम् ॥

टीका—ग्राम दिशा और भूतग्रह इनके अनुकूल देखिके माम व नक्षत्रशुद्धि और आय व्यय व लग्न अंशशुद्धि शुभ देखिलीजिये ॥

ग्रहबल ।

गुरुशुक्रार्कचंद्रेषु स्वोच्चालिबलशालिषु ॥
गुर्वर्केंदुबलंलब्ध्वा गृहारंभःप्रशस्यते ॥

टीका—गुरु शुक्र सूर्य चंद्र इनको अपने उच्चादिक स्थानोंमें बलयुक्त देखिके और सूर्य चंद्र गुरु इनका बल पाके गृहका आरंभकरना शुभहै ॥

॥ वर्ज्य ॥ विवाहोक्तान्महादोषानृतेजामित्रशुद्धितः ॥
रिक्ताकुजार्कवारौच चरलग्नंचरांशकम् ॥

टीका—जामित्रशुद्धि बचाके विवाहके जो दोष कहेहैं वे सब वर्जितहैं और रिक्तातिथि भौमवार रविवार वा चरलग्न और लग्नोंके अंश वर्जितहैं ॥

त्यक्त्वाकुजार्कयोश्चांशंपृष्ठेचाग्रेस्थितंविधुम् ॥
बुधेज्यराशिगं चार्कंकुर्याद्गृहंशुभाप्तये ॥

टीका—रवि भौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्र वर्जितहैं ॥ मिथुन कन्या धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभहै ॥

द्वारशुद्धि ।

द्वारशुद्धिंनिरीक्ष्यादौभशुद्धिंवृषचक्रतः ॥
निष्पंचकेस्थिरेलग्नेद्व्यंगेवाऽऽलयमारभेत् ॥

टीका—प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्रशुद्धि देखि करी पंचक रहित स्थित वा द्विस्वभाव लग्नमें प्रारंभ कीजिये ॥

ग्रामअनुकूल।

स्वनामराशेर्यद्ग्रामराशिर्द्विशरांकेशदिङ्मितः ॥
सग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोन्यथा ॥

टीका-अपनी राशिसे २।५।९।११।१० जिस ग्रामकी राशि होय वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये ॥

एकभेसप्तमेव्योम गृहहानिस्त्रिषष्ठगे ॥
तुर्याष्टद्वादशेरोगाःशेषस्थानेभवेत्सुखम् ॥

टीका-एक राशि अथवा सप्तम होय तो शून्य तीसरी अथवा सप्तम होय तो गृहकी हानि, चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी होय तो रोगकारक जानिये और शेष स्थान शुभहै ॥

जातकजाननेकाक्रम।

अकचटतपयशवर्गाअष्टौक्रमतः स्मृताः ॥ एकोनखेषुवर्णानां स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ अवर्गेषोडशज्ञेयाःस्वराःकादिषुपंचसु ॥ पंचपंचैववर्णाःस्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ॥

टीका-अवर्गादि शवर्गपर्यंत ४९ अक्षरहैं तिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गके पवर्ग पर्यंत ५ तिनके अक्षर २५ और यश इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार २ होतेहैं यह स्वरशास्त्रके ज्ञाता कहतेहैं ॥

वर्गोंकेस्वामी।

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजमेषकाः ॥
वर्गेशाःक्रमतोज्ञेयाःस्ववर्गात्पंचमोरिपुः ॥

टीका-अवर्गका स्वामी गरुड १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका श्वान ४ तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्गका मेष ८ इस क्रमसे वर्गोंके स्वामी जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपने नामका होय उससे पांचवे वर्गका स्वामी उसका रिपु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥

काकिणी।

स्ववर्गंद्विगुणंकृत्वापरवर्गेणयोजयेत् ॥

अष्टभिश्चहरेद्भागंयोधिकःसऋणीभवेत् ॥

टीका—अपने नामके वर्गको द्विगुणाकरे उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलावे और आठका भागदे पुनि ग्रामादिकका वर्ग द्विगुण करके अपने नामका वर्ग मिलावे पूर्ववत् आठका भागदे इन दोनोंमेंसे जिसके शेष अधिक बचे सो उसका अर्थात् न्यूनवालेका ऋणी जानिये ॥

चंद्रमाकेमुखजाननेकाविचार ।

वाह्नान्मैत्रान्नगर्क्षस्थेचंद्रेयाम्योत्तराननम् ॥
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत्प्राक्परास्याद्गृहंशुभम् ॥

टीका—कृत्तिकासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख दक्षिणको और अनुराधासे ७ नक्षत्रोंका चंद्र होय तो गृहोंका मुख उत्तरको और मघासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पूर्वको और धनिष्ठासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पश्चिमको शुभ जानिये ॥

आयादिसाधन ॥ गृहेशकरमानेनगृहस्यायादिसाधयेत् ॥
करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥

टी० गृहस्वामीकेहस्तमानसे अथवाअंगुलीमानकरकेइष्टआयादिसाधनकरे

क्षेत्रफल ।

विस्तारगुणितंदैर्घ्यंगृहक्षेत्रफलंलभेत् ॥
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तंशेषमायोध्वजादिकः ॥

टीका—ध्वज आदि साधनका प्रकार ॥ चौडाई लंबाई अथवा लंबाई चौडाईको आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफल जानिये ॥ और उसीमें आठका भागदेनेसे जो शेष बचे सो ध्वजआदि आय जानिये ॥

आयोंकेनाम ॥ ॥ ध्वजोधूम्रोथसिंहःश्वासौरभेयःखरोगजः ॥
ध्वांक्षश्चैवक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥

टीका—ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ श्वान ४ बल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ या क्रम करिके आयाष्टक जानिये ॥

वर्णानुसारउक्तआय—ब्राह्मणस्यध्वजोज्ञेयःसिंहोवैक्षत्रियस्यच ॥
वृषभश्चैववैश्यस्यसर्वेषांतु गजःस्मृतः ॥

टीका-ब्राह्मणको ध्वजा आय, क्षत्रीका सिंह, वैश्यका वृषभ और सर्व वर्णोंके गज आय उक्तहैं ॥

मतांतरसेआयोंकाफल।

ध्वजेकृतार्थो मरणंचधूम्रे सिंहेजयश्चाथशुनिप्रकोपः ॥
वृषे च राज्यं च खरेचदुःखंध्वांक्षेमृतिश्चैवगजेसुखंस्यात् ॥

टीका--ध्वजआयका फल कृतार्थ, धूम्रायका मरण, सिंहायका जय, श्वान आयका कोप, वृषआयका राज्य, खरआयका दुःख, ध्वांक्ष आयका मृत्यु और गजआयका फल सुखप्राप्ति होती है ॥

नक्षत्रअनुसारव्ययसाधन ॥ पूर्वद्वारेवृषःश्रेयान्गजः प्राग्यमादिङ्मुखः ॥ क्षेत्रमष्टाहतंधिष्ण्यैर्विभक्तंस्याद्गृहस्यभम् ॥ भेष्टभक्तेव्ययः शेषमायादल्पोव्ययःशुभः ॥

टीका-पूर्वाभिमुख गृहोंका वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होताहै और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहोंका गजाय कहाहै पूर्वमंके क्षेत्रफलको आठ से गुणाकरै और २७ का भागदे शेष बचैं सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ८ का भागदे शेषरहै सो उस गृहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ ॥

ग्रहोंकीराशि।

अश्विन्यादित्रयेमेषो मघादित्रितयेहरिः ॥
मूलादित्रितयेधन्वी भद्वयंशेषराशिषु ॥

टीका-गृहोंके अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनर्वसुकी मिथुन ३ पुष्य आश्लेषाकी कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाती विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी वृश्चिक ८ मूल पूर्वाषाढाकी धन ९ श्रवण धनिष्ठाकी मकर १० शतभिषा पूर्वाभाद्रपदाकी कुंभ ११ उत्तराभाद्रपदा रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये ॥

गृहोंकेनामलानेकाप्रकार ।

गृहस्यपूर्वतोदिक्षुक्रमात्कक्ष्याङ्घिदंतिनः ॥
संस्थाप्यालिंदजानंकास्तन्मित्याषोडशगृहाः ॥

टीका–गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करे वे ऐसे--पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाके अंकमें सालाकी संख्या अधिक एक करके मिलावै जो अंक होय सोई नाम गृहका जानिये

गृहोंकेनाम ॥ ध्रुवं धान्यंजयंनंदंखरं कांतंमनोरमम् ॥
सुमुखंदुर्मुखंक्रूरं रिपुदं धनदंक्षयम् ॥ आक्रंदंविपुलंज्ञेयं
विज यंचेतिषोडश ॥ गृहंध्रुवादिकंज्ञेयंनामतुल्यफलप्रदम् ॥

टीका–और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादिक सोलह नामहैं इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये ॥

अंशलानेकाप्रकार ॥ व्ययेन संयुतेक्षेत्रेगृहनामाक्षरान्विते ॥
त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषांद्वितीयांशोनशोभनः ॥

टीका–पीछेका जो व्यय होय उसे क्षेत्रफलमें मिलावे और गृहोंको नामके अक्षर संयुक्त करिके तीनका भागदे शेष दो बचें तो अशुभ और एक अथवा पूर्ण भाग लगजानेसे शुभ फल होताहै ॥

गृहोंके भाग ॥ नवभागंगृहंकुर्यात्पंचभागंतुदक्षिणे ॥
त्रिभागंवामतःकुर्याच्छेषंद्वारंप्रकल्पयेत् ॥

टीका–गृह क्षेत्रके नव भाग कर तिसमेंसे पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करै ॥

गृहोंकेद्वार॥ द्वारस्योपरिपद्वारंद्वारस्यान्यच्चसंमुखम् ॥
व्ययदं तु यदातच्च न कर्त्तव्यंशुभेप्सुभिः ॥

टीका--द्वारके ऊपर द्वार और आमने सामनेके द्वार व्ययदायक होते हैं शुभाभिलाषी पुरुषोंको ऐसे वरजने चाहिये ॥

गृहोंके स्थानोंके योजनाका प्रकार ।

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ॥ याम्यायांशय

नागारं नैर्ऋत्यांशस्त्रमंदिरम्॥ प्रतीच्यांभोजनागारं वायव्यां पशुमंदिरम्॥ भांडकोशंचोत्तरस्यामीशान्यांदेवमंदिरम्॥

टीका-पूर्वमें स्नानका घर १ अग्निकोणमें रसोईका स्थान २ दक्षिणमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शस्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५ वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भण्डारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस प्रकारसे स्थानोंकी योजना करावे॥

अल्पदोष॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषायनभवेद्गृहम्॥
आयव्ययौप्रयत्नेनविरुद्धं भं च वर्जयेत्॥

टीका-जिस गृहमें दोष तो अल्प होय परंतु वह बहुत गुणों करके श्रेष्ठ होय तो दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तो यत्न करके वर्जित करे॥

गृहारंभचक्र॥ आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयंतुकूर्मकम्॥
प्रवेशे काऽशं चक्रंवास्तुचक्रंतुधेःशुभम्॥

टीका-गृहारंभमें वृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें कलश यह वास्तुचक्रमें देखिलीजिये॥

गृहारंभकेमास॥ सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्त्तिकाः॥
मासाःस्युर्गृहनिर्माणेपुत्रारोग्यधनप्रदाः॥

टीका-पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभ प्रतिष्ठा शुभ जानिये पुत्र लाभ आरोग्यता और आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय॥

गृहारंभकेमासोंकाफल।

शोकोधान्यं पंचतानिःपशुत्वंस्वाप्तिर्नःस्वंसंगरंभृत्यनाशम्॥
सञ्छ्रीप्राप्तिवह्निभीतिचलक्ष्मींकुर्युश्चैत्राद्याःगृहारंभकाले॥

टीका-चैत्रमासमें शोक प्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्टमें मृत्यु ३ और आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ और आश्विनमें कलह ७ और कार्त्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशी-

षमें धन प्राप्ति ९ पौषमें लक्ष्मी १० माघमें अग्निभय ११ फाल्गुनमें लक्ष्मी १२ इस प्रकार शुभाशुभ फल जानिये ॥ अथमासप्रवेशसारणीयम् ॥

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अं०
मे. १	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५६	घटी
	३४	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२६	३६	४७	[illegible]	९	१८	२६	३५	४२	४३	२	पल
वृ. २	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२६	२४	घटी
	११	१९	२४	२९	२४	२८	४१	४५	५८	५१	५१	५४	४३	४२	४१	४८	४५	४२	३७	३९	२४	१७	९	०	४०	३९	२७	१३	५९	४२	पल
मि. ३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	२५	२६	२८	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	घटी
	३८	५	४५	२६	६	४५	२३	४९	३२	५	३५	५	३३	२	२८	४३	१७	३९	०	१०	१७	४२	८	१८	३०	४१	४२	२	८	१३	पल
क. ४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३६	३६	३६	३६	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	घटी
	१७	१८	२०	२१	१७	१२	८	३	४७	४८	३७	२५	११	५६	४०	२३	४	४४	२९	५८	३५	११	४४	१६	४८	१६	४३	९	३५	०	पल
सि. ५	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	२८	२७	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	घटी
	२३	४८	६	२७	४६	३	१७	३०	४४	५७	९	२०	३०	३९	४७	५४	०	३	८	१२	१८	१४	१६	१६	१५	१३	१२	१०	८	४	पल
क. ६	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५१	५०	४९	४८	४७	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३७	३६	३५	३३	३२	३१	३०	२९	२७	घटी
	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५०	३८	२७	१८	६	५५	४४	३३	२२	१०	५९	४७	३५	२२	९	५६	४३	३०	१६	४	५३	पल
तु ७	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	वार
	२६	२५	२४	२३	२१	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५६	५५	५४	५३	घटी
	४२	२९	१६	३	५१	४०	२९	१७	४	५३	४३	३०	२२	१२	१	५२	४२	३२	२८	२५	२२	१७	१२	८	४	०	५७	१४	४२	५०	पल
वृ. ८	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	५२	५२	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३३	३२	३१	३१	३०	२९	२९	घटी
	४९	५०	५१	५३	५६	०	२	४	१०	१६	२३	३१	४०	४९	२	१३	२४	३५	४९	३	१७	३१	४८	७	२०	[illegible]	९	३९	४४	१८	पल
ध ९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	घटी
	४३	९	३६	५	३५	५	३६	८	३९	१३	५०	२८	६	४४	२३	३	४५	२९	१४	५९	४४	३१	२१	१९	१७	११	५२	४४	४०	३८	पल
म १०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२६	घटी
	३३	३२	३२	३२	३४	३७	४२	४८	५४	१	१०	२०	३१	४४	५७	११	२६	४१	५८	१८	३८	५८	१९	४०	१	२३	४२	२२	४९	२२	पल
कुं ११	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	२६	२७	२७	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	घटी
	६०	४१	५३	२७	१	३६	११	४७	२४	४	४८	२७	९	५१	३८	२०	३	४७	३२	२०	११	२	५४	४६	३८	३०	२१	१३	७	३	पल
मीं १२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	४९	५०	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	घटी
	२	०	५८	५६	५५	५५	५७	५९	०	२	५	८	१२	१६	२१	२७	३४	४०	४८	५६	४	१२	१९	२७	३६	४६	५८	११	२०	२९	पल

दिशानुसारगृहोंकामुख करना।

कर्कनक्रहरिकुंभगतेर्कैपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि ॥
तौलिमेषवृश्चिकयानेदक्षिणोत्तरमुखानिवदंति ॥

टीका--कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य होय तो घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करे, तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य होय तो गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करै, इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहाहै.

गृहारंभकेनक्षत्र।

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ॥ धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारंभःप्रशस्यते ॥ आदित्यभौमवर्ज्यंतुसर्वेवाराःशुभावहाः ॥ चंद्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्नेशुभनिरीक्षिते ॥ स्तंभोच्छ्रायस्तुकर्त्तव्यो ह्यन्यस्तुपरिवर्जयेत् ॥ प्रासादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि ॥

टीका--तीनों उत्तरा मृग रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ रवि भौमवार वर्जिके शेषवार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि देखे और स्तंभारोपण करावे अन्य कर्मोंको उक्त नहीं है देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्योंको शुभ जानिये॥

वृषचक्र।

त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रिभेष्वर्कतःशशी ॥ कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्रासंस्थैर्यंलक्ष्मीं दरिद्रतां॥धनं हानिं क्रमान्मृत्युमारंभे वृषचक्रकम् ॥

टीका--सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मीदायक दूसरा भाग ४ उद्वास तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थ भाग ३ लक्ष्मी पंचम भाग४दारिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभफलदायक हो उसीमें गृहारंभ करावे ॥

शिलान्यास ॥ दक्षिणपूर्वकोणेकृत्वा पूजांशिलांन्यसेत्प्रथमाम् ॥
शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंप्रतिष्ठाप्याः ॥

टीका–पूजन करिके आग्नेय कोणमें प्रथम शिलास्थापनकरे शेष शिला प्रदक्षिण स्थापित करावे इसी प्रकार स्तंभस्थापनभी करे ॥

शिलान्यासनक्षत्र ॥ शिलान्यासःप्रकर्त्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे ॥ पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥

टीका–श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा इनमें शिलान्यास कर्त्तव्यहै ॥

शेषकेमुख ।

कन्यासिंहेतुलायांभुजगपतिमुखं शंभुकोणेग्निखातं वायव्ये स्यात्तदास्यंत्वलिधनमकरे ईशखातंवदंति ॥ कुंभे मीने च मेषेनिर्ऋतिदिशि मुखंखातवायव्यकोणे चाग्ने कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥

टीका–कन्या तुल सिंह इन लग्नोंमें शेषके मुख ईशान्यकोणको जानो तो अग्निकोणमें खात करावे ॥ वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमें शेषके मुख वायव्यको तिनमें ईशानको खात करावे ॥ कुंभ मीन मेष इन लग्नोंमें शेषके मुख नैर्ऋतको तामें वायव्यकोणमें खात करावे ॥ वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके मुख आग्नेयको तामें नैर्ऋत्यको खात करावे ॥

दुष्टयोग ॥ वज्रव्याघातशूलश्चव्यतीपातश्चगंडकः ॥ विष्कंभपरिघौवर्ज्यौवारौमंगलभास्करौ ॥

टीका–वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जितहैं ॥

कूर्मचक्रम् ।

तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ॥ तथाद्वादश-मिश्राचनवभागेनभाजिता ॥ ॥ फल ॥ ॥ जले वेदामुनि-श्चंद्रःस्थलेपंचद्वयंवसुः ॥ त्रिषट्नवचाकाशं त्रिविधं कूर्मल-क्षणम् ॥ जलेलाभस्तथाप्रोक्तःस्थले हानिस्तथैवच ॥ आ काशेमरणंप्रोक्तमिदं कूर्मस्यचक्रकम् ॥

टीका—गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणाकरे और कृत्तिका नक्षत्रसे लेकर दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्याको उस गुणनफलमें मिलावे फिर १२ और उसीमें मिलावे नवका भाग दे जो ४।७।१ शेष रहैं तो कूर्म जलस्थानमें जानिये ताको फल लाभ और ५।२।८। बचें तो कूर्म स्थलमें जानिये तिसका फल हानि और ३।६।९। शेष बचें तो कूर्म आकाशमें जानिये तिसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहाहै ॥

स्तंभचक्र ॥ सूर्याधिष्ठितभद्वयंप्रथमतो मध्येतथा
विंशतिःस्तंभाग्रे रससंख्ययामुनिवरैरुक्तंमुहूर्त्तंशु-
भम् ॥ फल ॥ स्तंभाग्रेमरणंभवेद्गृहपतेर्मूले धना-
र्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोतिकर्त्तासदा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम दो२ नक्षत्र स्तंभमूल तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तंभके मध्य तिसका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति और तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभ के अग्रभागमें मृत्यु जानिये ऐसे शुभ फल देखके स्तंभारोपण करावे

देहलीकामुहूर्त्त ॥ मूले मोभेत्रिऋक्षंगृहपतिमरणं पंचगर्भे
सुखंस्यान्मध्येदेयाष्टऋक्षंधनसुतसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः ॥
पश्चाद्देयंत्रिऋक्षंगृहपतिसुखदंभाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यक्षाच्चंद्र-
ऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रंविलोक्य ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क्रमसे जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें तिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे ८ नक्षत्र मध्यमें फल धनसुत सुख चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छ भाग फल मित्रहानि पंचम ३ नक्षत्र अग्र भागमें सुख भोग पुत्रलाभ ऐसे शुभफल हैं ॥

द्वारचक्र ॥ अर्कांच्चत्वारिऋक्षाणिऊर्ध्वेचैवप्रदापयेत् ॥
द्वौद्वौकोणेषु दद्याद्वैशाखायां च चतुश्चतुः ॥ अधश्च-
त्वारिदेयानिमध्येत्रीणि प्रदापयेत ॥ ऊर्ध्वेतुलभते रा-
ज्यमुद्वासंकोणकेषुच ॥ शाखायांलभतेलक्ष्मीमध्येरा-
ज्यप्रदंतथा ॥ अधःस्थेमरणं प्रोक्तंद्वारशक्रप्रकीर्तितम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण चार तिनमें प्रतिकोणमें २ नक्षत्र तिनका फल उद्वसन, बाजू दो तिनमें नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य, मध्यमें नक्षत्र ३ तिनका फल मरण यह जानिये ॥

शांतिका अग्निचक्र ।

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषे गुणेभ्रेभुविवह्निवासः ॥
सौख्यायहोमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौदिविभूतलेच ॥

टीका–जिस तिथिको शांति करनी होय तिसमें एक मिलावे और जो वार होय सो अंक मिलावे ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल तीन अथवा शून्य बचें तो अग्नि मृत्युलोकमें जानिये तिनका फल सुख प्राप्ति और उसमें शांति करनी भी शुभहे और एक शेष रहे तो स्वर्गमें अग्नि १ प्राणनाश और दो बचें तो पातालमें तिसका फल धन नाश होय ॥

ग्रहके मुखमें आहुतिका विचार ।

तरणिविद्भृगुभास्करिचंद्रमःकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ॥
रविभतोदिनभंगणयेत्क्रमात्प्रतिखगंत्रितयंत्रितयंन्यसेत् ॥

टीका–पूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका इस क्रमसे फल जानिये ये प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य फल अशुभ; द्वितीय भाग ३ न. बुध शु० तृतीय भाग ३ न. शनि फल अशुभ, फिर ३ न. चंद्रके फिर ३ न. भौमके फिर ३ न. गुरुके तिस पीछे ३ न. राहुके फिर ३ न. केतुके इसमें शुभ ग्रहके शुभ पाप ग्रहके अशुभ जानिये ॥

गृहप्रवेशका मुहूर्त ।

अथप्रवेशेनवमंदिरस्ययात्रानिवृत्तावथभूपतीनाम् ॥
सौम्यायने पूर्वदिनेविधेयं वास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक् ॥

टीका–यात्रा और राजदर्शन मुहूर्तमें उत्तरायण सूर्य होय, और प्रवेशके प्रथम दिवसमें वास्तुपूजा और भूतबली करके गृहप्रवेश योग्यहे ॥

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातीधनिष्ठाश्रवणंचमूलम् ॥

वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः ॥

टीका–चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागिके गृहप्रवेश कीजिये ॥

कलशचक्र॥ प्रवेशः कलशेर्कर्क्षात्पंचनागाष्टषट्क्रमात् ॥
अशुभंचशुभंज्ञेयमशुभंचशुभंतथा ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जो नक्षत्र होय उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसे कलशचक्र जानिये ॥

वामार्कलक्षण ॥ रंध्रात्पुत्राद्धनाद्रायात्पंचस्वर्केस्थितेक्रमात् ॥
पूर्वाशादिमुखं गेहंविशेद्वामोभवेदतः ॥

टीका–घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वामार्क होय तिसका जाननेका क्रम प्रवेश लग्नोंमें अष्टमस्थानमें पंचमस्थानी सूर्यहोय और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको होय२ तिसका स्थान०या०पंचमस्थान पर्यंत और घरका मुख पश्चिमको होय स्थान०या०पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा ग्रहोंका मुख उत्तरको होय तो सूर्य११ स्थान ५ स्थानोंतक आवे प्रवेशमें वामार्क युक्त है ॥

शुभाशुभग्रहऔरलग्न॥ त्रिकोणकेंद्रगैःशुभैस्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः ॥
असद्ग्रहैः स्थिरोदयेगृहंविशेद्बलेविधौ ॥

टीका–त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह होय ऐसे स्थिर लग्न देखके और तीसरे छठे तथा लाभस्थानमें पापग्रह होय तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभजानिये ॥

गृहारंभकीलग्नशुद्धि ॥ त्रिषडायगतैः पापैरष्टांत्येन्तरगैःशुभैः ॥
चंद्रेलग्नेऽरिरंध्रांत्यवर्जितेस्याच्छुभंगृहम् ॥

टीका–३ । ६ । ११ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८ । १२ । स्थानमें इतरस्थानोंमें शुभग्रह होंय तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठ द्वादश अष्टमस्थानमें न होय ॥

अशुभयोगोंकेलग्न ॥ धनकेंद्रत्रिकोणस्थःक्षीणश्चंद्रोनशोभनः ॥
शत्रोर्नवांशगःखेटःखास्तसंस्थोपिनोशुभः ॥

टीका—लग्नविषे २ । १ । ४ । ७ । १० । ५ । ९ । स्थानोंमें क्षीणचंद्र स्थित होय तो अशुभ है और स्वराशिका शत्रु नवांशकमें होय तो भी अशुभ क्षीणचंद्र कृष्णपक्षकी पंचमीसे जानो ॥

आयुष्यप्रमाण ॥ लग्नेजीवःसुखेशुक्रोबुधःकर्मण्यरौरविः ॥
रविजःसहजेनूनंशतायुःस्यात्तदागृहम् ॥

टीका—लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ४ बुध १० सूर्य ३ शनि ऐसी लग्नमें गृहारंभ करनेसे उसगृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जाननी ॥

दूसराप्रकार ॥ भृगुर्लग्नेबुधोव्योम्निलाभेऽर्कःकेंद्रगोगुरुः ॥
यस्यारंभचतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ॥

टीका—शुक्र और बुध १० दशमस्थानीं ११ रवि और १ । ४।७।१० गुरु ऐसे लग्नमें गृह आरंभ करावे तो २०० वर्षकी आयु कहिये ॥

अन्यच्च ॥ जीवोबुधोभृगुर्व्योम्नि लाभगौभानुभूमिजौ ॥
प्रारंभेयस्यतस्यायुःसमाशीतिःसहश्रिया ॥

टीका—गुरु बुध शुक्र ये १० स्थानमें ११ रवि भौम होंय तो लक्ष्मी युत घरकी ८० वर्षकी आयु जाननी ॥

स्वोच्चर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमंत्रिणिरसातलेऽथवा ॥
स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽऽयगेस्यात्स्थितिश्चसुचिरंसहश्रिया ॥

टीका—लग्नमें उच्चका शुक्र होके बैठा होय गुरु४होय उच्चका वा स्वक्षेत्री शनि होके ११ स्थानीं हो तो लक्ष्मीयुक्त चिरकाल घरकी आयु कहना ॥

स्वर्क्षेगेहिमगौलाभेसुरेज्येकेन्द्रसंस्थिते ॥
धनधान्यसुतारोग्ययुक्तंधामाचिरंभवेत् ॥

टीका—कर्कका चंद्रमा ११ वें स्थानमें और गुरु केंद्रमें १ । ४ । ७ । १० होंय तो वह धनयुक्त और सुत आरोग्य सहित चिरकाल रहे ॥

दूसरे मतसे पृथ्वी शोधनेका प्रकार।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुसाद्यःप्रथमंस्फुटीभवेत् ॥

वर्गादिवर्णैःकिलतद्दिशिस्मृतंशल्यंमुनीन्द्रैर्हपयास्तुमध्यतः ॥ स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ॥ गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यंसम्यग्विचार्यते ॥

टीका-कुंडके निमित्त अर्थात् नूतन गृहके बनानेको प्रथम भूमि शोधनेका प्रकार पृच्छक इष्टदेवताका स्मरण करके ब्राह्मणसे प्रश्न करे ताके मुखसे आदि अक्षर जिस वर्गका निकले तिसके उत्तर अ क च ट त प यह वर्ग पूर्वादि अष्टदिशाओंमें मध्यभागी ह प य वर्गोंके आदि अक्षर जहां होंय इस स्थानमें अमुक शल्यहै तिसका प्रकार नीचे लिखाहै जिसमेंसे उन २ स्थानोंका फल जानिये ॥

प्रश्नअक्षरफल।

पूर्व ॥पृच्छायांयदिअःप्राच्यांनरशल्यंतदाभवेत् ॥ सार्धहस्त प्रमाणेनतच्चमानुष्यमृत्युकृत् ॥ आग्नेय ॥ आग्नेय्यांदिशिकः प्रश्नेखरशल्यंकरद्वयम् ॥ राजदंडोभवेत्तत्रभयंनैवनिवर्त्तते ॥ दक्षि० ॥ याम्यायांदिशिचःप्रश्नेतदास्यात्कटिसंस्थितम् ॥ नरशल्यंगृहेतस्यमरणंचिररोगतः॥ नै० ॥ नैर्ऋत्यांदिशिटःप्रश्नेसार्धहस्तादधःस्थले ॥ शुनोस्थिजायतेतत्रबालानांजायते मृतिः॥ प० ॥ तः प्रश्नेपश्चिमायांतुशिशोःशल्यंप्रजायते ॥ सार्द्धहस्तेगृहस्वामीनतिष्ठतिसदागृहे ॥ वाय० ॥ वायव्यांदिशिपःप्रश्नेतुषांगाराश्चतुष्करे ॥ कुर्वंतिमित्रनाशंचदुःस्वप्नदर्शनंसदा ॥ उत्तर॥उदीच्यांदिशियःप्रश्नेविप्रशल्यंकरादधः ॥ तच्छीघ्रंनिर्धनत्वायकुबेरसदृशस्यहि ॥ ई०॥ ईशान्यांयदिशः प्रश्नेगोशल्यंसार्द्धहस्ततः ॥ तद्गोधनस्यनाशायजायतेगृहमेधिनः ॥ मध्यभाग ॥ हपयामध्यकोष्ठेचवक्षोमात्रंभवेदधः ॥ नृकपालमथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकृत् ॥

टीका-पृच्छकके मुखमे आदि अक्षर अवर्गका निकले तो पूर्वको हद

हाथ गहरा खोदे तो मनुष्यकी हड्डी निकले वह मृत्युकारक जानिये १ (क) निकले तो २ हाथके गहरावमें गदहेकी निकले उससे राजदंडका भय कभी निवृत्ति न होय ३ (च) अक्षरका उच्चारण होय तो दक्षिणकी ओर कटि बराबर खोदनेसे नरके अस्थि निकले तिसका फल चिरकालके रोगसे मरण ४ (ट) का उच्चार होय तो नैर्ऋत्य दिशामें डेढहाथ ओंडा खोदनेसे कुत्तेके अस्थि निकलें तिसके फल बालक न जीवे ५ (त) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ हाथके गहरायमें बालकके अस्थि निकलें तिसका फल गृहका स्वामी सदा घरमें न रहे ६ (प) होय तो वायव्य दिशामें ४ हाथपर जली हुई धातुकी भूसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्रनाश दुस्वमदर्शन ७ (य) वर्ग होय तो एक हाथपर उत्तर कोणमें ब्राह्मणके हाड निकलें तिसका फल कुबेर समान भी धनाढ्य दरिद्री होय ७ (श) होय तो ईशान दिशामें डेढ हाथपर गौकी अस्थि निकलें तिसका फल गोधनका नाश ८ (ह प य) होय तो मध्य भागमें छाती बराबर ओंडेमें मनुष्यका कपाल वा भस्म वा लोह निकले तिसका फल कुलका नाश ९ जिस वर्गका नाम प्रश्नकर्ताके मुखसे उच्चारण होय उसी दिशाको देखे ॥

यात्राप्रकरणम् ।

शुक्र संमुख ॥ एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे ॥
विवाहेतीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रोनाविद्यते ॥

टीका—गांवके गांवमें अथवा शहरके शहरमें दुर्भिक्षकालमें तथा देशोपद्रवमें विवाह समयमें और तीर्थयात्रामें सम्मुख शुक्र होय तो दोष नहींहै॥

पौष्णदावाग्निपादांतं यावत्तिष्ठतिचंद्रमाः ॥
तावच्छुक्रोभवेदंधःसन्मुखंगमनंशुभम् ॥

टीका—रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके प्रथम चरण चंद्रमा होनेसे शुक्र अंध होताहै उसके सन्मुख गमनमें दोष नहींहै ॥

शुभाशुभफलम् ॥ दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसंमुखोहंतिमंगलम् ॥
वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोधयेदस्तगःशुभः ॥

टीका–गमन अर्थात् यात्रामें दाहिना शुक्र होय तो दुःखदायक संमुख कार्य नाशक और वामभागमें पीछेकाशुक्र मंगलदायक और पूर्वमें अस्त होय तो पश्चिमको गमन शुभ और पश्चिममें अस्त होय तो पूर्वमें शुभगमन जानिये॥

घातचन्द्रनिर्णय–प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे ॥
वादेचैवगृहारंभेवर्जितोघातचंद्रमाः ॥

टीका–यात्रा युद्ध खेतकर्ममें व्यापार अन्न आदि भरनेमें विवाद गृहके आरंभमें घात चंद्रमा वर्जितहै ॥

घातप्रकरणम्– घाततिथिंघातवारंघातनक्षत्रमेवच ॥
यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञोह्यन्यकर्मसुशोभनम् ॥

टीका–घाततिथि घातवार घातनक्षत्र यात्रामें वर्जितहैं और कार्योंमें शुभजानिये ॥

मेषेरविर्मघाप्रोक्तापष्ठीप्रथमचंद्रमाः ॥ वृषभेपंचमोहस्तश्च-तुर्थीशनिरेवच ॥ मिथुनेनवमःस्वातीअष्टमीचन्द्रवासरः॥क-र्केद्विरनुराधाचबुधःपष्ठीप्रकीर्तिता ॥ सिंहेपष्ठश्चंद्रमाश्चदश-मीशनिमूलके ॥ कन्यायांदशमश्चंद्रःश्रवणःशनिरष्टमी ॥ तु-लेगुरुद्वादशीस्याच्छतंतृतीयचंद्रमाः ॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तदश-मीभार्गवस्तथा ॥ धनेचतुर्थीभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥ मकरेष्टमीरोहिणीद्वादशीभौमवासरः ॥ कुंभेएकादशश्चार्द्रा चतुर्थीगुरुवासरः ॥ मीनेचद्वादशःसार्पद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि.	धन	मक.	कुंभ	मीन
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	च.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	म.	गु.	शु.
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु.	मू.	श्र	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि १२ राशि घातचंद्रादिचतुष्टय बचाकर यात्रामें शुभनक्षत्रआदि देखले

कालचंद्र–मेषेवेदावृषेऽष्टौचमिथुनेचतृतीयकः॥दशकर्केरविः सिंहेकन्याअंकःप्रकीर्तितः ॥ षट्तुलेवृश्चिकेखेदुधनेरुद्राःप्र-कीर्तिताः ॥ मकरेऽक्षपयःप्रोक्ताःकुंभेबाणउदाहृताः॥मीने त्वंभिःकालचंद्राःशौनकश्चेदमब्रवीत् ॥

टीका—मेषराशिको४वृषको८मिथुनको३कर्कको१०सिंहको१२कन्या९ तुलाको६वृश्चिकको ११ धनको ११ मकरको७कुंभको५मीनको ४ चौथा चंद्रमा कालचंद्र जानिये ये कालचंद्र शौनकऋषिप्रोक्त सर्व कर्मोंमें वर्जितहैं ॥

तिथिपरत्वसेवर्जितलग्न।

नंदायामलिहर्योस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायांमीनधनुषोः कालस्तिष्ठतिसर्वदा ॥ जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायांमेषकर्कयोः ॥ पूर्णायांकुंभवृषयोर्मनुष्यमरणंध्रुवम् ॥

टीका—नंदातिथिको वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रातिथिको मीन धन और जया तिथिको कन्या मिथुन और रिक्ता तिथिको मेष कर्क पूर्णातिथिको कुंभ वृष इन तिथियोंमें लग्न वर्जितहै ॥

यात्राकेनक्षत्र।

हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥
प्रोक्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपंचादिमसप्ततारा: ॥

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र प्रयाणमें उक्तहैं परंतु ३।५।१।७ ये तारा गमनमें वर्जितहैं ॥

मध्यनक्षत्र—रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥
षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणेमध्यमाःस्मृताः ॥

टीका—रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यमहैं ॥

वर्ज्यनक्षत्र ।

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका ॥ सार्पस्वातीविशाखाचनित्यंगमनवर्जिताः ॥ कृत्तिकाएकविंशत्या भरण्याःसप्तनाडिकाः ॥ एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश ॥ विशाखासार्पचित्रासुस्वातीरौद्रेचतुर्दश ॥ आद्यास्तुघटिकास्त्याज्याःशेषांशेगमनंशुभम् ॥

टीका-इन नक्षत्रोंको प्रयाण कालमें वर्जित करै परंतु जो कुछ आवश्यक काम व संकट आन पडे तो तीनोंपूर्वाकी १६ घटिका मघाकी ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घटिका कृत्तिकाकी २१ जन्मनक्षत्र संपूर्ण आश्लेषा विशाखा चित्रा स्वाती आर्द्रा इन नक्षत्रोंकी आद्य १४ घटिका वर्जिके प्रयाण करै ॥

प्रयाणमेंशुभाशुभविचार॥अर्केक्लेशमनर्थकंचगमने सोमेचबं-धुप्रियंचांगारेऽनलतस्करज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे ॥ क्षेमारो-ग्यसुखं करोतिचगुरौलाभश्चशुक्रेशुभोमंदेबंधनहानिरोगमर-णान्युक्तानिगर्गादिभिः ॥

टीका-रविवारको गमनकरे तो मार्गमें क्लेश और अर्थकी हानि होय सोमवारको गमनकरै तो बंधु और प्रियदर्शन मंगलमें अग्नि चोर भय और ज्वर प्राप्ति बुधवारमें द्रव्य और सुखप्राप्ति गुरुवारमें आरोग्य और सुख शुक्रवारमें लाभ और शुभ फलप्राप्ति शनिवारमें गमनकरै तो बंधन रोग और मरण प्राप्तिहोय ॥

होराकथन व शकुन ।

वारात्षष्ठस्यषष्ठस्य होरासार्द्धद्विनाडिका ॥ अर्कशुक्रौबुधश्चं-द्रोमंदोजीवोधरासुतः ॥ गुरुर्विवाहेगमनेचशुक्रोबोधेसौम्यः सर्वकार्येषुचंद्रः ॥कुजेचयुद्धंरविराजसेवामंदेचवित्तंत्वितिहोर योगाः॥ यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम् ॥ तस्य ग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ॥

टीका-जिस वारका होरा होय उसीमें प्रथम २घटिका होरा तिसके छठे वारको दूसरा होरा इस क्रमसे दिवसके वार होरा जानिये २रविवारका होरा राजसेवाको शुभ द्वितीय२शुक्रका गमनको तृतीय बुधका ज्ञानप्राप्ति चतुर्थ चंद्रका सर्वकार्यको,पंचम शनिका द्रव्यका संग्रह योग्य,छठा गुरुका विवाह को,सातवा मंगलका युद्धको जानिये इस प्रमाण होराका क्रम जानिये और जिस २ ग्रहका जो२वार तिसमें कथित कृत्य उसके होरामें करावे ॥

सूर्यकाहोरा ॥सूर्यस्यहोरेरजकीसुपक्षंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच ॥
काकत्रयंद्वौनकुलौ तथैव चापस्तथैको वृषभश्चगोश्च ॥

टीका–रविके होरामें गमन करे तो आगे जो शकुन होय तिनको कहतेहैं रजकी, वस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, दो न्योला, दो चाष एक बैल, और गायके शकुन मिलैं ॥

चंद्रकाहोरा ।

चंद्रस्यहोरेद्विजयुग्मकाकभेरीमृदंगानकुलाःखरोष्ट्रौ ॥
हयश्वगोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे ॥

टीका–चंद्रमाके होरामें गमनकरे तो मार्गमें दो ब्राह्मण और काक नगारे मृदंग और न्योला गर्दभ ऊंट घोडा गाय मेंढा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियां ये शकुन मिलै ॥

मंगलकाहोरा ।

मार्जारयुद्धंकलहःकुटुंबेरजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ॥
नपुंसकःश्वत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तोधरणीसुतस्य ॥

टीका–मंगलके होरामें गमन करे तो मार्जारयुद्ध अथवा स्त्री पुरुषोंका कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलताहुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण भेटे ॥

बुधकाहोरा ।

बुधस्यहोरेशकुनस्यसर्वःस्त्रीपुत्रयुक्ताकलशस्तुपूर्णः ॥
सुचातकश्चापगजौकुमारःपुष्पाणिनारीखलुदर्पणश्च ॥

टीका–बुधके होरामें सर्व शकुन स्त्री पुत्रयुत, पानी भराहुआ कलश, चातक पक्षी वा चाषपक्षी, गज किंवा बाल, पुष्प, स्त्री, दर्पण, ये मार्गमें मिलै॥

गुरुकाहोरा ।

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुःस्त्रीबाल्युक्तासजलोघटस्तु ॥
ऊर्णाचकाकोनकुलोबकश्चहंसस्यराजाबहवस्तुवैश्याः ॥

टीका-गुरुकेहोरामें ब्राह्मण गणिका अथवा गाय पुत्रसहित स्त्री जलपूर्णघट शाल अर्थात् ऊन वस्त्र काक न्योला बगला हंसकाराजाकिंवा बहुत वैश्यामिलैं

शुक्रकाहोरा।

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेंद्रःकाकत्रिपंचाथनपुंसकोवा ॥
मद्यंहिमांसंगणिकाचधेनुर्धान्यंचशूद्रात्रितयंचवैश्यः ॥

टीका–शुक्रके होरामें ब्राह्मण गणिका ३ अथवा ५ काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीनशूद्र वैश्य ये मिलें ॥

शनिका होरा।

पतंगसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकस्तथैव ॥
पिशाचगृध्रौविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः ॥

टीका–शनिके होरामें नग्न मुसलमान, रजस्वला स्त्री, प्रेत, पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक, तथा प्रचंड तरुणपुरुष, ये शकुन मिलें ॥

उत्तमप्रश्न न होयतो।

मनुकावाक्य॥गमनंप्रतिराजंस्तु सन्मुखादर्शनेनच ॥
प्रशस्तांश्चैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्तयेत् ॥

टीका–राजा प्रति कहतेहैं-गमनकालमें पूर्वोक्त शकुनोंका कीर्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तो मनमें स्मरण करिके गमन करे तो शुभ होय ॥

वारानुसारवस्त्रधारण।

रवौनीलंबुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ॥
श्वेतं गुरौभृगौभौमेरक्तंसोमेतुचित्रकम् ॥

टीका–रविवारको नीलेवस्त्र धारणकरे, बुधवारको पीत, शनिवारको काले, गुरु व शुक्रको श्वेत, मंगलको रक्त, सोमवारमें चित्र, इस प्रकार वस्त्र धारण करिके गमन करे ॥

नक्षत्रतिथिवार अनुसार दिक्शूल वर्ज्य ॥

पूर्वदिशा ॥ मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नवमीषुच ॥
शनौसोमेबुधे चैव पूर्वस्यांगमनं त्यजेत् ॥

टीका–मूल श्रवण ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी तिथि और शनि सोम बुधवार इनमें पूर्व दिशाको गमन न कीजिये ॥

दक्षिणदिशा ॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्योपंचमीचत्रयोदशी ॥
गुरुर्धनिष्ठाद्रांचैवयाम्येसप्तविवर्जयेत् ॥

टीका–पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी नक्षत्र और पंचमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा इनमें दक्षिण दिशाको गमन न कीजिये ॥

पश्चिम ॥ रोहिण्यांचतथापुष्येषष्ठीचैव चतुर्दशी ॥
भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमांदिशम् ॥

टीका–रोहिणी पुष्यनक्षत्र षष्टी चतुर्दशी तिथि रवि गुरुवार इनमें पश्चिम दिशाको गमन न कीजिये ॥

उत्तर ॥ करेचोत्तरफाल्गुन्यांद्वितीयांदशमींतथा ॥
बुधरवौ भौमवारे नगच्छेदुत्तरांदिशम् ॥

टीका–हस्त उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र २।१० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तर दिशाको गमन न कीजिये ॥

विदिक्शूल ॥ ऐशान्यांज्ञेशनौशूलआग्नेय्यांगुरुसोमयोः ॥
वायव्यांभूमिपुत्रेतुनैर्ऋत्यांशुक्रसूर्ययोः ॥

टीका–वारानुसार विदिशाओंका शूलहोताहै तिसमें गमन न कीजिये बुध और शनिवारमें ईशान्य दिशाको वर्जितहै गुरु और सोमवारमें आग्नेयको और मंगलमें वायव्यको शुक्र और रविवारमें नैर्ऋत्यको गमन वर्जितहै॥

शूलदोषनिवारणार्थ भक्षण ।

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमेपयस्तथा ॥ गुडमंगारवारे
तुवुधवारेतिलानपि ॥ गुरुवारेदधिज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि ॥
मापान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोपोपशांतये ॥

टीका–रविवारको घी और सोमवारको दूध पीवे मंगलको गुड बुधको तिल गुरुको दधि शुक्रको यव शनिवारको उडदकी वस्तु खाय, ऐसे भक्षण करके गमन करे ॥

कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जितकर्म।

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणाजिनम् ॥
याम्यदिग्गमनंकुर्यान्नचंद्रेकुंभमीनगे ॥

टीका--पलंग बुनवाना और प्रेताग्निक्रिया और तृणकाष्ठादिसंग्रह और दक्षिणको गमन ये सकल कर्म कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जितहैं ॥

संमुखचंद्रविचार ॥ करणभगणदोषंवारसंक्रांतिदोषंकुतिथिकुलिकदोषंवामयामार्द्धदोषम् ॥ कुजशनिरविदोषंराहुकेत्वादिदोषंहरतिसकलदोषंचंद्रमाःसंमुखस्थः ॥

टीका--करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्ध मंगल शनि रवि राहु केतु इत्यादि दोषोंको संमुखस्थ चंद्रमा गमन करनेसे समय दूर करताहै.

दिशानुसारसंमुखचंद्रमाविचार।

मेषेचसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्ये ॥ तुलेचकुंभेमिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीनेदिशिचोत्तरस्याम् ॥ फल ॥ संमुखश्चार्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदः ॥ पृष्ठतःप्राणनाशायवामेचंद्रेधनक्षयः ॥

टीका--मेष सिंह धन इन राशियोंका चंद्रमा पूर्वमेंहै और वृष कन्या मकरका दक्षिणमें तुला कुंभ मिथुनका पश्चिममें कर्क वृश्चिक मीनका उत्तरमेंवास करताहै ॥ फल ॥ दिशानुसार संमुख चंद्रमा होते गमन करे तो अर्थलाभ होय और दाहिना होय तो धनसंपत्तिकी प्राप्ति होय और पृष्ठभागमें चंद्रमा होय तो प्राणनाश और वामभागी होय तो धनक्षय जानिये ॥

कालवेलाविचार ॥ पूर्वाह्णेचोत्तरांगच्छेत्प्राच्यांमध्याह्नकेतथा ॥ दक्षिणेअपराह्णेतुपश्चिमेह्यर्धरात्रके ॥

टीका--दिवसके प्रथम प्रहरमें उत्तरको दूसरे प्रहरमें तथा मध्याह्नमें पूर्वको और तीसरेमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रिमें पश्चिमको गमन करे ॥

योगिनीवास ॥ प्रतिपन्नवमीपूर्वेद्वितीयादिशिचोत्तरे ॥ तृतीयेकादशीवह्नौचतुर्द्वादशिनैर्ऋते ॥ पंचत्रयोदशीयाम्येपष्ठभूतं

चपश्चिमे॥ सप्तमीपूर्वेवायव्येह्यमावास्याष्टमीशिवे ॥ फल ॥ पृष्टेचशिवदाप्रोक्तावामेचैवविशेषतः ॥ योगिनींसाभवेन्नित्यं प्रयाणेशुभदानृणाम् ॥

टीका--प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें द्वितीया और दशमीको उत्तरमें तीज और एकादशीको आग्नेयमें चौथ और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें सप्तमी और पूर्णिमाको वायव्यमें अमावास्या और अष्टमीको ईशान्यमें इस प्रमाणसे योगिनीका वास जानिये ॥ तिसका फल ॥ पृष्ठभागी अथवा वामभागी होय तो शुभ जानिये ॥

वारानुसार कालराहुका वास॥अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमेभौमे प्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच ॥ याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रेमंदेचपूर्वे प्रवदंतिकालम् ॥

टीका—रविवारको उत्तरमें सोमवारको वायव्यमें मंगलको पश्चिममें बुधवारको नैर्ऋत्यमें गुरुवारको दक्षिणमें शुक्रवारको आग्नेयमें शनिवारको पूर्वमें इसप्रमाणसे कालराहु वार अनुसार जानिये ॥

फलकाश्लोक ॥ रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्येवरुणदिशितु भौमेचोत्तरेसौरिसंस्थे ॥ प्रतिदिनमितिमत्वाकालराहुर्दिशानांसकलगमनकार्येवामपृष्टेचासिद्धिः ॥

टीका—रवि अथवा गुरु इन वारोंमें पूर्वको गमनकरे तो कालराहु वाम पृष्ठभागी जानिये तिसमें गमन करे तो सर्व कार्यकी सिद्धि होय सोम शुक्रमें दक्षिणको गमनकरे भौमवारमें पश्चिमको शनिवारमें उत्तरको गमनकरे तो कार्यसिद्धि होय ॥

क्षुधितराहु ॥ इन्द्रेवायौयमेरुद्रेतोयेग्नौशशिरक्षसोः ॥ यामार्द्धे क्षुधितोराहुर्भ्रमत्येवदिगष्टके ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगोनच चंद्रमाः ॥ सिद्ध्यंतिसर्वकार्याणियात्रायां दक्षिणे रवौ ॥

टीका—प्रथम यामार्द्धमें क्षुधितराहु पूर्वको जानिये द्वितीयमें वायव्यको

तृतीयमें दक्षिणको चतुर्थमें ईशान्यको पंचममें पश्चिमको षष्ठमें आग्नेयको सप्तममें उत्तरको अष्टम यामार्द्धमें नैर्ऋत्यको इसप्रमाणसे आठदिशाओंमें भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भागमें स्थित रवि विचारके गमन करे तो तिथि नक्षत्रादिकका दोष जाता रहे और समस्त कार्य सिद्धि होय ॥

काल कहाहै तिसकाज्ञान॥ कालःपलंपातकलोहपातवडवानलाः खड्गकचोलिकांतिकाः ॥ नखाश्चतुर्विंशतिषट्तथादिग्रुद्राधृति-वेंदगुणाःक्रमेण ॥ तिथ्यायुतंवैवसुभाजितंचशेषश्चकालोमुनयो वदंति ॥ फल ॥ कालंचपृष्ठेफलसंमुखेनपातंचलोहंवडवांचपृष्ठे ॥ खड्गंचचाग्रेकवचंचवामेकांतिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम् ॥

टीका—कालोंकेनाम १ काल २ पलं ३ पातक ६ लोहंपात ६ वडवानलं खड्ग७कवचं८कांति ऐसे आठ नाम तिनके ऊपर अंक लिखेहैं उनमें गमन कालकी जो तिथिहै उनको एक २ अंकमें मिलावे आठका भागदे शेष जो अंकरहे तिस दिशाको काल जानिये; इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा क्रमसे जानिये पृष्ठभागी काल शुभ सन्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमें पातक लोह और वडवानल ये तीनों शुभ अग्रभागमें खड्ग शुभ वामभागमें कवच शुभ दक्षिणभागमें कांति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचारिके उस दिशाको युद्धमें किंवा यात्रामें गमन करे तो शुभहो ॥

पंथाराहुचक्र॥ स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्धीशमैत्राण्यथा-र्थेयाम्याज्यांग्नींद्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥ वह्न्याद्रांबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षोऽथरोहिण्य र्यम्णाब्जेंदुविश्वांतिमभादिनकरर्क्षाणिपंथादिराहौ ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित्	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषा.	रेवती

टीका—नक्षत्र२८तिनके भाग ४ तिनके नाम प्रथम धर्ममार्गके नक्षत्र ७ दूसरे अर्थ मार्गके नक्षत्र७तृतीय काम मार्गके नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्गके

नक्षत्र ७ इसप्रकार चार मार्गोंके नक्षत्र जानिये तिनमें मार्गके नक्षत्रमें सूर्य होय तो चंद्रमा चार वर्गोंके नक्षत्रमें फिरताहे तिनके फल कहतेहैं ॥

धर्ममार्गोंकेफल ॥ धर्ममार्गेगतेसूर्यै अर्थांशेचंद्रमायदि ॥
तदाशत्रुभयंतस्यज्ञेयंतुविबुधैःशुभम् ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्रमें सूर्य और अर्थमार्गी नक्षत्रमें चंद्रमा होय तो गमन करनेसे मार्गमें शत्रुभय होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्यैचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
संहारश्चभवेत्तत्र भंगोहानिःप्रजायते ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्रोंके सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो संहार भंगहानि प्राप्ति होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्यैकामांशेचंद्रमायदि ॥
विग्रहोदारुणंचैवचौराकुलसमुद्भवम् ॥

टीका—धर्ममार्गीमें सूर्य और काममार्गी नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो विग्रह दारुण और चोरभय ॥

धर्ममार्गे गतेसूर्यैचंद्रेमोक्षगतेयदि ॥
गृहलाभोभवेत्तस्य विज्ञेयो नात्रसंशयः ॥

टीका—धर्ममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल गृहलाभ व मार्गसुख होय ॥

अर्थमार्गकेफल।

अर्थमार्गेगतेसूर्यैचन्द्रे धर्मस्थितेयदि ॥
गजलाभोभवेत्तस्य तत्रश्रीः सर्वतोमुखी ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल लाभ और लक्ष्मीप्राप्ति और सर्वदा सुखी होय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्यैचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभंगो भविष्यति ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो प्रथम कार्यसिद्धि होय और पीछे भंग होजाय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्ये चंद्रेकामांशसंस्थिते ॥
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो ऐसे योगका फल सर्व कार्यसिद्धि होय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्येचंद्रेमोक्षस्थितेयदि ॥
भूमिलाभोभवेत्तस्य हर्षयुक्तःसुखी भवेत् ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगोंका फल भूमिलाभ व हर्षयुक्त सुख मार्गमें स्थिरपावे ॥

काममार्गीके फल॥ काममार्गेगतेसूर्येचंद्रे धर्मेचसंस्थिते ॥
गजाश्वाश्चविलभ्यंतेराजसन्मानसंभवात् ॥

टीका-काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोडा भूमी इनका लाभ और राजसन्मान पावे ॥

काममार्गेगतेसूर्येचंद्रेचैवार्थसंस्थिते ॥
सकलं जायतेतस्यविघ्नभंगोविनिर्दिशेत् ॥

टीका-काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा ऐसा योग होय तो सब विघ्नोंका नाशहोय ॥

काममार्गेगतेसूर्येचंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवकार्यनाशंविनिर्दिशेत् ॥

टीका-काममार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्यनाश होय ॥

काममार्गेगते सूर्येचंद्रेमोक्षगतेपिवा ॥
राज्ञोलाभोभवेत्तस्य स्वर्णलाभंविनिर्दिशेत् ॥

टीका-काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा होय तो राजासे लाभ व सुवर्णलाभहो ॥

मोक्षमार्गीकेफल ॥ मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चंद्रेधर्मस्थितेयदि ॥
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यप्रसिद्ध्यति ॥

टीका-मोक्षमार्गी सूर्य व धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हेमलाभ और सर्वसिद्धि होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये अर्थांशेचंद्रमायदि ॥
विफलंतस्यकार्यंचचोरराजरिपोर्भयम् ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा होय तो राजा ओर चोरसे रिपुसे भय होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्येचंद्रेकामस्थितेयादि ॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोतिकार्येचजयमेवच ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो सर्वकार्य-सिद्धि और जयप्राप्ति होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चंद्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवविघ्नस्तस्यभविष्यति ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो दारुण विग्रह और विघ्न-प्राप्ति होय ॥

पंथाराहुचक्रकर्मकरनेयोग्य ॥ यात्रायुद्धेविवाहेचप्रवेशेनगरादिषु ॥
व्यापारेषुचसर्वेषुपंथाराहुःप्रशस्यते ॥

टीका—यात्रामें युद्धमें और विवाहमें और नगरादिप्रवेशमें और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तुके लेनदेनमें राहु मार्गमें शुभदायक होताहै ॥

गर्गादिकोंकामुहूर्त ॥ उषःप्रशस्यतेगर्गःशकुनंचबृहस्पतिः ॥
अंगिरामनउत्साहोविप्रवाक्यंजनार्दनः ॥

टीका—गर्गजीके मतसे रात्रिकी पिछली ५ घटी उषःकालमें गमन शुभ और बृहस्पतिके मतसे शकुन और अंगिराके मतसे मनका उत्साह शुभ और जनार्दनके मतसे ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेवच ॥ ए-कीकृत्याहरेद्भागंनंदशेषेचवाहनम् ॥ रासभोऽश्वोगजोमेषोजं-बुकःसिंहसंज्ञकः॥काकश्चैवमयूरश्चहंसइत्येववाहनम् ॥ फल॥ रासभेअर्थनाशश्चधनलाभश्चघोटके ॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजा-ख्येहिमेषेचमरणंध्रुवम् ॥ जंबुकेस्वल्पलाभश्चसर्वसिद्धिश्चसिं-हके ॥ काकेचनिष्फलंकार्यंमयूरेचसुखावहम् ॥ हंसेतुसर्वसि-द्धिःस्याद्वाहनानांफलंस्मृतम् ॥

टीका—अपने जन्मनक्षत्रसे दिवसके नक्षत्रतक गिने नवका भाग दे शेष-बचै सो वाहन जानिये, १ रहे तो गर्दभ तिसका फल अर्थनाश २ बचैं तो घोडा धनलाभ होय ३ बचैं तो हस्ती लक्ष्मी ४ बचैं तो मैंढा मरण ५ बचैं तो जंबुक स्वल्पलाभ ६ बचैं तो सिंह सर्व कार्यसिद्धि ७ बचैं तो काक निष्फल ८ बचैं तो मोर सुखप्राप्ति ९ बचैं तो हंस सर्वसिद्धि जानिये ॥

अंकमुहूर्त।

तिथयःपक्षगुणितासप्तभिर्भाजिताश्चताः ॥ वाराःस्यु-र्वह्निगुणिता मसुभिश्चैवभाजिताः ॥ चतुर्गुण्यानिभा-न्यंगभाजितानियथाक्रमम् ॥

टीका—जिस तिथिमें गमन करना चाहे उसे १५से गुणाकरके सातका भाग दे और जो वार होय तिसे तीन गुणाकरे आठका भागदे और जो नक्षत्र होय तिस चार गुणाकरके ६ का भाग दे जो शेष बचैं उसका फल कहेंगे.

फल--पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्यशून्येमहद्भयम् ॥
अंत्यशून्येतुमरणंत्र्यंकेचविजयीभवेत् ॥

टीका—प्रथमतिथिके भागका शून्य बचैं तो पीडा और वारके भागमें शून्य बचैं तो बहुत भय होय और नक्षत्रके भागमें शून्य हो तो मरण और तीनों जगह अंक बचैं तो विजय होय ॥

भ्रमणाडलमुहूर्त।

सूर्यभाद्गणयेचांद्रंसप्तभिर्भागमाहरेत् ॥ त्रिपट्कभ्रमणंचैवद्भिः सप्तमहदाडलम् ॥ प्रथमंपंचचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम्॥ आडलेताडनंप्रोक्तं भ्रमणेकार्यनाशनम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताई गिने सातका भागदे ३ । ६ बचैं तो भ्रमण और २ । ७ बचैं तो महदाडल ये ताडनामें जानिये और १ । ४ । ५ बचैं तो आडल नहीं होता ये गमनमें उक्तहै ॥

हैवरमुहूर्त ।

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रंपक्षादितिथिवारयुक् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताईं गिनके पक्ष तिथिवार मिलाके नौका भाग देनेसे ७ शेष बचैं तो हैवर योग होताहै सो यात्रामें शुभहै ॥

वबाडमुहूर्त—सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रंत्रिगुणंतिथिमिश्रितम् ॥
नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंवबाडकम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुनाकर तिथि मिलाय नवका भागदे तीन शेष बचैं तो वबाड मुहूर्त जानिये ॥

वारअनुसारस्वरशकुन ।

गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणःस्वरः ॥ अन्यवारेषुवाम-
स्तुस्वरश्चैवशुभःस्मृतः ॥ निर्गमेवामतःश्रेष्ठःप्रवेशेदक्षिणः
शुभः ॥ यःस्वरःसचनासाग्रेयोगिनांमतमीदृशम् ॥

टीका—गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें शुभ होय और सोम बुध शुक्रवारोंमें वामस्वर चले तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियोंके मतसे कहाहै ॥

वारानुसार छायाशकुन ।

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुतेसप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादश।
र्कैशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमथैंचतुष्कम् ॥ तस्मिन्कालेमुहूर्तेस
कलगुणयुतेकार्यसिद्धिःशुभोक्ता नास्मिन्पंचांगशुद्धिर्नखलु
शशिबलं भाषितंगर्गमुख्यैः ॥

टीका—आठ पद अपनी छाया होय तो बुधवारमें गमन करे नवपाद होय तो भौमवारको गमनकीजै ७गुरुको ११सूर्यवारको गमनकरे शनि सोम शुक्रमें चार२१द हो तो सर्वगुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त इसमें चंद्रमा आदि न देखे शुभहै॥

काकशब्दशकुन ॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायांतुकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वापङ्क्तिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथा सौख्यंभोजनंचतथागमः ॥ अशुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—काकका शब्द सुनके अपने पैरोंकी छाया नापके १३और मिला के ६ का भागदे शेष बचें उसका फल १बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन ५ धनप्राप्ति पूराभाग लगजाय तो अशुभ ये गर्गमुनिका वचन है ॥

पिंगलशब्दशकुन ॥ उल्लासःकिल्बिलेचैवचिलिपल्यांभोजनंतथा ॥ बंधनंखिट्टिखिट्टिस्यात्कुर्कुशब्देर्महद्भयम् ॥

टीका—जो किल्बिल शब्द होयतो उल्लासहोय और चिल्बिल शब्दहोय तो भोजनप्राप्ति खिटखिट शब्द होयतो बंधन कुर्कुशब्द होय तो महाभय होय॥

छिक्कानुसारपादच्छायाशकुन।

क्षुधाईछिक्कारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःसिद्धिर्हानिशोकौभयंश्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टीका—छींकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया मापे १३ मिलावे ८ का भागदे शेष रहे तिसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक ५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ० निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहतेहैं ॥

छींकशकुन।

छिक्काप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखंस्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणम्॥ वायव्येधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मछिक्कामहद्भयम्॥ऊर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम्॥आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने ॥ वामांगेपृष्ठतश्चैवपट्छिक्काश्वशुभावहाः॥

टीका—दिशानुसार छींक फल ॥ पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक दुःख करे दक्षिणकी अरिष्टकरे नैर्ऋत्यकी पश्चिम शुभकी मिष्टभक्षण वाय-

हैवरमुहूर्त ।

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रंपक्षादितिथिवारयुक् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरम् ॥

टीका–सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताईं गिनके पक्ष तिथिवार मिलाके नौका भाग देनेसे ७ शेष बचैं तो हैवर योग होताहै सो यात्रामें शुभहै ॥

घबाडमुहूर्त–सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रंत्रिगुणंतिथिमिश्रितम् ॥
नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघबाडकम् ॥

टीका–सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुनाकर तिथि मिलाय नवका भागदे तीन शेष बचैं तो घबाड मुहूर्त जानिये ॥

वारअनुसारस्वरशकुन ।

गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणःस्वरः ॥ अन्यवारेषुवाम-
स्तुस्वरश्चैवशुभःस्मृतः ॥ निर्गमेवामतःश्रेष्ठःप्रवेशेदक्षिणः
शुभः ॥ यःस्वरःसचनासाग्रेयोगिनांमतमीदृशम् ॥

टीका–गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें शुभ होय और सोम बुध शुक्रवारोंमें वामस्वर चले तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियोंके मतसे कहाहै ॥

वारानुसार छायाशकुन ।

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुतेसप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादशा
र्कैशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थंचतुष्कम् ॥ तास्मिन्कालेमुहूर्तेस
कलगुणयुतेकार्यसिद्धिःशुभोक्ता नास्मिन्पंचांगशुद्धिर्नखलु
शशिबलं भाषितंगर्गमुख्यैः ॥

टीका–आठ पद अपनी छाया होय तो बुधवारमें गमन करे नवपाद होय तो भौमवारको गमनकीजै ७गुरुको ११सूर्यवारको गमनकरे शनि सोम शुक्रमें चार४पद हो तो सर्वगुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त इसमें चंद्रमा आदि न देखे शुभहै॥

काकशब्दशकुन ॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायांतुकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वापड्भिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथा सौख्यंभोजनंचतथागमः ॥ अशुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—काकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया नापके १३ और मिला के ६ का भागदे शेष बचें उसका फल १ बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन ५ धनप्राप्ति पूराभाग लगजाय तो अशुभ ये गर्गमुनिका वचन है ॥

पिंगलशब्दशकुन ॥ उल्लासःकिलिबिलेचैवचिलिपल्यांभोजनंतथा ॥ बंधनंखिट्टिखिट्टिस्यात्कुर्कुरशब्देमहद्भयम् ॥

टीका—जो किलिबिल शब्द होयतो उल्लासहोय और चिलिबिल शब्दहोय तो भोजनप्राप्ति खिटखिट शब्द होयतो बंधन कुर्कुरशब्द होय तो महाभय होय॥

छिक्कानुसारपादच्छायाशकुन।

क्षुधाच्छिक्कारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःसिद्धिर्हानिशोकौभयंश्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टीका—छींकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया मापे १३ मिलावे ८ का भागदे शेष रहे तिसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक ५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ० निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहतेहैं ॥

छींकशकुन।

छिकाप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखंस्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणम् ॥ वायव्येधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मछिक्कामहद्भयम् ॥ ऊर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम् ॥ आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने ॥ वामांगेपृष्ठतश्चैवपट्छिक्कास्त्वशुभावहाः ॥

टीका—दिशानुसार छींक फल ॥ पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक दुःख करे दक्षिणकी अरिष्टकरे नैर्ऋत्यकी पश्चिम शुभकी मिष्टभक्षण वाय-

व्यकी धनदायक उत्तरकी कलहकृत ईशान्यकी शुभदायक और अपनी छींक बहुत भयदे ऊपरकी छींक शुभ मध्यकीमें भी बड़ा भय आसनमें सोनेमें दानमें भोजनमें बांई ओर वा पीछे होय तो ये ६ शुभ जानिये ॥

पल्लीशब्दशकुन ।

वित्तंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रेहुताशेभयंयाम्येमित्रवधः क्षयश्चनिर्ऋतेलाभःसमुद्रालये ॥ वायव्यांवरमिष्टमन्नमशनंसौम्येऽर्थलाभस्तथाईशान्यांगृहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभूमौभयम् ॥

टीका–पूर्वमें शब्द पल्ली करे तो शकुन वित्त ब्रह्मसंबंधी कार्यविशेष धनप्राप्ति आग्नेयमें अग्निका भय होय दक्षिण मित्रवध होय नैर्ऋत्यमें क्षय पश्चिममें शब्द होय तो लाभ वायव्यमें सुंदर मीठा भोजन उत्तरमें धनप्राप्ति ईशानमें कार्यसिद्धि और जो भूमिमें होय तो भयकरे ॥

पल्लीपतन और सरठकाअवरोहण ।

राज्यंतुशिरसिज्ञेयं ललाटेबंधुदर्शनम्॥ भ्रूमध्येराजसन्मानमुत्तरोष्ठेधनक्षयम्॥अधरोष्ठेधनैश्वर्यंनासांतेव्याधिपीडनम् ॥ आयुष्यंदक्षिणेकर्णेबहुलाभस्तुवामके ॥ अक्ष्णोस्तुबंधनंज्ञेयंभुजेभूपातितुल्यता ॥ राजक्षोभंतथावामेकंठेशत्रुविनाशनम्॥ स्तनद्वयेचदुर्भाग्यमुदरेमंडनंशुभम्॥प्रजानाशःपृष्ठदेशेजानुजंघेशुभावहम् ॥ करद्वयेवस्त्रलाभःस्कंधयोर्विजयीभवेत् ॥ नाभौबहुधनंप्रोक्तमूर्वोश्चैवभयादिकम्॥दक्षिणेमणिबंधेचमनस्तापोधनक्षयः ॥ मणिबंधेतथावामेकीर्तिवृद्धिधनप्रदम्॥नखेषुधान्यलाभंचवक्रेमिष्टान्नभोजनम्॥ गुल्फयोर्बंधनंज्ञेयंकेशांतेमरणंध्रुवं ॥अध्वातुदक्षिणेपादेवामेबंधुविनाशनम्॥स्त्रीनाशःस्यात्पादमध्येपादांतेमरणंभवेत् ॥ पल्ल्याःप्रपतनेज्ञेयंसरठस्याधिरोहणे ॥ यात्रोद्युक्तमनुष्यस्यैतच्छुभाशुभसूचकम् ॥ तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने ॥ पिनाकिनं नमस्कृत्यजपेन्मंत्रंषडक्षरम्॥शतंसहस्रमथवासर्वदोषनिवर्हणम्॥ शिवालयेप्रदद्याद्वैदीपंदोषोपशांतये ॥

टीका–मनुष्योंके गमनसमयमें अंगपर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरे अथवा गिरगिट चढे तो शुभाशुभसूचक फल स्थानानुसार कहाहै ॥

१ शिर राज्यप्राप्ति	११ वामबाहु राज्यभय	२१ ऊरूपर घोडावाहन
२ कपाल बंधुदर्शन	१२ कंठपर शत्रुनाश	२२ दायापहुँचा धनक्षय
३ भ्रुकुटी राजसन्मान	१३ स्तनोंपर दुर्भाग्य	२३ वा. मणिबंध कीर्ति
४ उत्तरोष्ठ धनक्षय	१४ उदरपर शुभमंडन	२४ नख धनलाभ
५ अधरोष्ठ धनऐश्वर्य	१५ पृष्ठ पर बुद्धिनाश	२५ मुखपर मिष्टान्नभोजन
६ नासिका व्याधिपीडा	१६ जानुओंपर शुभ	२६ टकनोंपर बंधन
७ दा. कान आयुष्य	१७ जंघाओंपर शुभ	२७ केशोंपर मरण
८ बायां कान बहुतलाभ	१८ हाथोंपर वस्त्रलाभ	२८ दाहांपाव मार्गचलाना
९ नेत्रोंपर बंधन	१९ कांधोंपर विजय	२९ वामपद बंधुनाश
१० बाहु राजासम	२० नाभिपर बहुधन	३० मध्यपाद स्त्रीनाश

छिपकली अंगोंपर गिरे अथवा गिरगिटचढै तो सचैल स्नानकरके तिल उडद दानदे और ब्राह्मणको दानदे और शिवको नमस्कार करके ११०० शिवमंत्र जपै और शिवके मंदिरमें दीपक घृतको प्रज्वलित करे तो दोषनिवृत्ति होजाय.

अंगस्फुरण–मनुः ॥ ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानिअशुभानिशुभानिच ॥
सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठत्वंहिसर्वंविबुद्ध्यसे ॥

टी०मनु मत्स्यप्रति प्रश्नकरतेहैं हेधर्मधारियोंमेंश्रेष्ठ!शुभाशुभफल वर्णनकीजिये.

अंगस्यदक्षिणेभागे प्रशस्तंस्फुरणंभवेत् ॥
अप्रशस्तंतथावामे पृष्ठस्यहृदयस्यच ॥

टी०अंगस्फुरण दक्षिणभागमें और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदयमें अशुभ.

अंगानांस्पंदनंचैव शुभाशुभविचेष्टितम् ॥तन्मेविस्तरतोब्रूहि येनस्यात्ताद्विधोभुवि ॥ ॥मत्स्यउवाच॥ ॥पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्नि ललाटेरविनंदन ॥स्थानवृद्धिसमायाति भ्रूनसोःप्रियसंगमः ॥ भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगपांतेधनागमः ॥ उत्कंठो-

पगमेमध्ये दृष्टराजन्विचक्षणैः ॥ दृग्वंधनेसंगरेच जयंशीघ्रम-वाप्नुयात् ॥ योपिल्लाभोपांगदेशे श्रवणांतेप्रियश्रुतिः ॥ नासि-कायांप्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ॥ कंठेतुभागलाभःस्या द्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥ सुहृच्छ्रेष्ठश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधना-गमः ॥ पृष्ठेपराजयोत्सेधो जयोवक्षस्थलेभवेत् ॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननंभगे ॥ स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अंत्रे चैवधनागमः ॥ जानुसंधौपरैः संधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप ॥ एकेदेशे भवेत्स्वामीजंघाभ्यांरविनंदन ॥ उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणेनृप ॥ अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप ॥

टीका—मनु प्रश्नकरतेहैं कि, अंगके स्थान स्फुरणका विचार शुभाशुभ फल विस्तार सहित वर्णन कीजिये ॥

१ मस्तकस्फुरण	पृथ्वीलाभहो	१४ दोनोंबाहु	मित्रकामिलाप
२ ललाटस्फुरण	स्थानकीवृद्धि	१५ दोनोंहाथ	धनप्राप्ति
३ भ्रुकुटीके मध्यमें	प्रियदर्शन	१६ पृष्ठमें	दूसरेसेजयहोय
४ नेत्रोंमें	भृत्यमिले	१७ ऊरूमें	जयप्राप्ति
५ नेत्रोंकीकोरोंमें	धनप्राप्ति	१८ कुक्षिमें	प्राप्तिहोय
६ कंठमध्ये	राजप्राप्तिहोय	१९ शिश्नइंद्रि.	स्त्रीप्राप्ति
७ दृग्बंधन	युद्धमेंजानेसेजय	२० नाभिमें,	स्थानभ्रंश
८ अपांगदेशमें	स्त्रीलाभहोय	२१ आंतोंमें,	धनप्राप्ति
९ कर्णांतमें	प्रियमित्रकी सुधि	२२ जानुसंधीमें	बलवानशत्रुओंसेसंधि
१० नासिकामें	प्रीतिसुखहोय	२३ जंघाके एकदेश	एकदेशका स्वामीहोय
११ अधरोष्ठमें	प्रियवस्तुकी प्राप्ति	२४ पादोंमें	उत्तमस्थानमें मान्यता.
१२ कंठमें	ऐश्वर्यप्राप्ति	२५ तलुओंमें	अलाभ और गमन.
१३ कंधोंमें	भोगवृद्धिप्राप्ति		

स्त्रियोंका अंगस्फुरण ।

लांछनंपीठकंचैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा ॥ विपर्ययेणविहितः सर्वे स्त्रीणांविपर्ययः ॥ दक्षिणेपिप्रशस्तेंगे प्रशस्तंस्याद्विशेषतः ॥

टीका–स्त्रियोंका अंगस्फुरण भ्रूमध्यमेंहो तो पुरुषोंहीके समानहै परंतु और सब अंग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अंग स्त्रियोंका शुभ कहाहै ॥

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशस्तस्यचनिंदितस्य ॥ अनिष्टनिद्रोपगमेद्विजानां कार्यंसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात् ॥

टीका–हेराजा ! अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे, सुवर्ण दान करे तो अंगस्फुरणका दोष जाता रहै ॥

नेत्रस्फुरण ॥ नेत्रस्योर्ध्वं हरतिसकलं मानसंदुःखजालं नेत्रोपांते दिशतिधनं नासिकांतेचमृत्युः ॥ नेत्रस्याधः स्फुरण मसकृत्संगरेभद्रहेतुर्वामेचैतत्फलमविफलं दक्षिणेवैपरीत्यम् ॥ स्त्रीणांविपर्ययो ॥

टीका–नेत्रोंके ऊर्ध्वप्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण होय तिसका फल कहतेहैं–नेत्रके ऊपरका पलक स्फुरण होय तो मनका दुःख जाय और धनकी प्राप्ति होय और नासिकाके निकट स्फुरण होय तो मृत्यु नेत्रके नीचेकी पलकमें स्फुरण होय तो युद्धमें पराजय होय ये सर्वफल वामनेत्रके स्त्रियोंको और दक्षिणके पुरुषोंके नेत्रका विचार जानो ॥

–त्रिशूलयंत्र ॥ रोगिणश्चकुजाद्यर्क्षं दिनाद्यर्क्षंचयुद्धतः ॥ कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्ररविदीयते ॥

टीका–रोगीके प्रश्नका त्रिशूल मध्याग्रमें जिसनक्षत्रका मंगल होय तिसको धरे और चंद्रमा जिस स्थानविषे यंत्रमें होय तो फलदेवे इस प्रमाणसे आगे फल जानो. युद्धमें जाना होय तो दिवसनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिने और गमन करना होय तो कृत्तिकासे दिवस नक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंके सूर्य नक्षत्रसे चन्द्र नक्षत्रतक इस क्रमसे जाने ॥

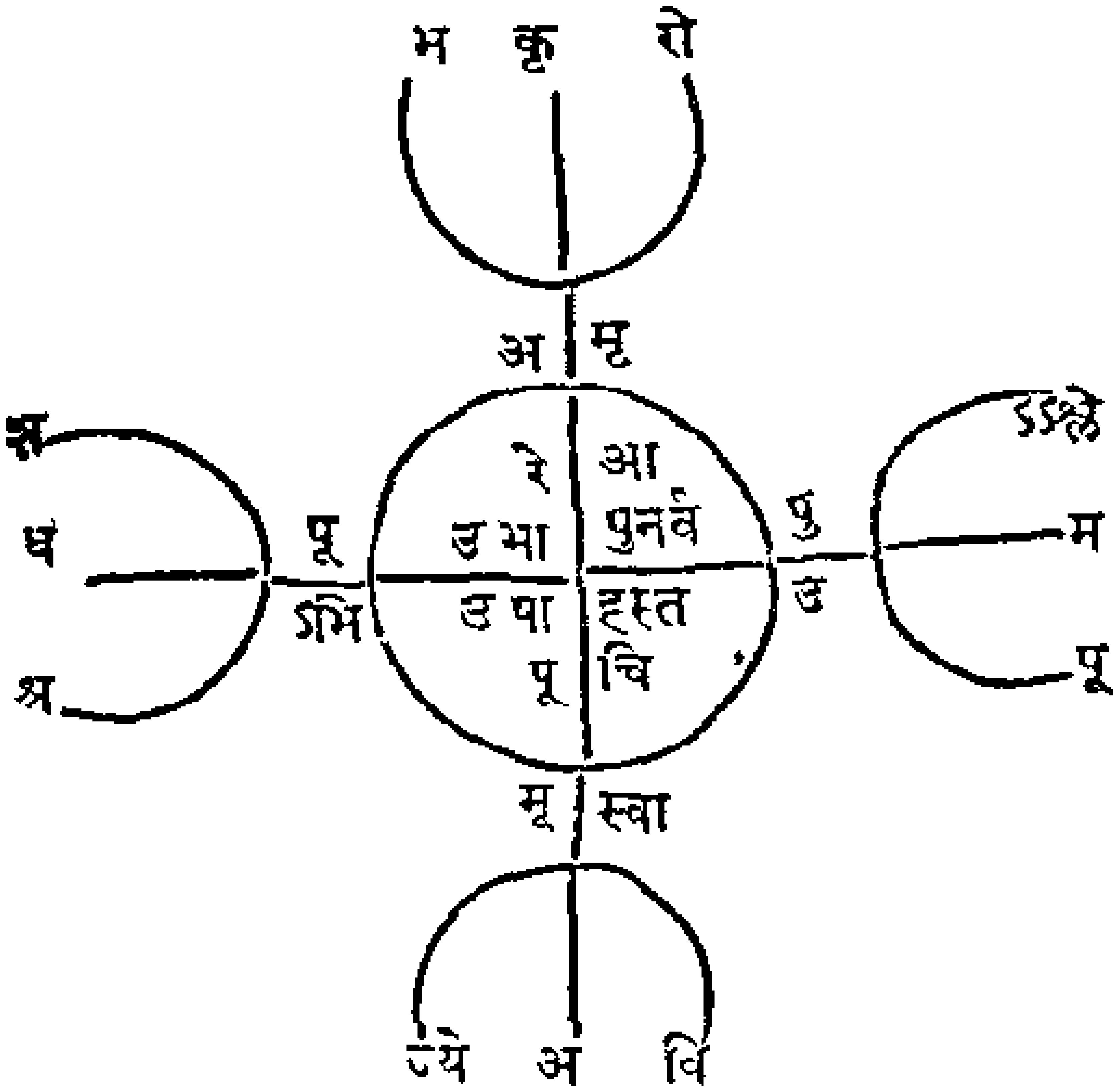

त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमंबाहिरष्टकम् ॥
लाभंक्षेमं जयारोग्यं चंद्रगर्भेषुसंमतम् ॥

टीका—त्रिशूलके अग्रभागमें दिवस नक्षत्र होय तो मृत्यु और बाहिरी अष्टकमें होय तो मध्यम मध्याष्टकमें होय तो लाभ क्षेमजय आरोग्य ये सर्व संमतजानिये ॥

गमनकीलग्न ॥ चरलग्ने प्रयातव्यं दिस्वभावे तथा नरैः ॥
लग्नेस्थिरेनगंतव्यं यात्रायांक्षेममीप्सुभिः ॥

टीका—चरलग्न कहिये कर्क तुला मकर ये चार और द्विस्वभाव मिथुन कन्या धन मीन ये चार इन आठोंमें गमन करना शुभफलदायकहै और बाकी चारलग्न स्थिरहै उनमें गमन न करे ॥

दूसराप्रकारलग्नका ।

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्यविलंबान्नृणां पंचत्वंमकरे तथैवचघटे तद्वत्फलंवृश्चिके ॥ सिंहेकर्कटकेवृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यं शुभान्नंवसु ॥

टीका—धन मेष तुल इन तीन लग्नोंमें गमन करे तो कार्यमें विलंब होय और मकर कुंभ वृश्चिक ये तीन लग्न मृत्युकारक सिंह कर्क वृष इनमें कार्यसिद्धि

होय कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभकारक अन्न और धनदायक जानिये ॥

द्वादशस्थानोंके अनुसार गमनलग्नमें ग्रहबल।

प्रथमस्थान॥ जन्मस्थंचाष्टमंत्याज्यं लग्नेद्वादशमेवच ॥
ग्रहाणांचबलंवीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयंनृपः॥

टीका—लग्न, अष्टम और द्वादशमें पापग्रह वर्जिके ग्रहबल देख गमन करे तो दिग्विजय और कार्यसिद्धि होय ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राःसिद्धचंतिकार्याणिचपंचमेह्नि ॥
राज्ञःपदंवासुखदेशलाभं मासस्यमध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥

टीका—लग्नमें गुरु अथवा बुध शुक्र होय तो पांचदिवसमें अथवा एक मासमें राज्यपद सुख किंवा देशलाभ होय ॥

दूसरेस्थानके फल॥ जीवोबुधोवा भृगुनंदनोवा स्थानेद्वितीयेगमनस्यकाले ॥ सुवस्त्रलाभंचतुरंगलाभंमासस्यमध्येचचतुर्दशेह्नि ॥

टीका—दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होय तो वस्त्र और तुरंगलाभ एकमास मध्यमें अथवा चौदहदिवसमें होय ॥

क्रूराधनस्था रविराहुभौमाःसौरिश्चकेतुस्त्रिभिरेवमासैः ॥
वित्तस्यनाशंचददातिमृत्युं सत्यंहिवाक्यं मुनयोवदंति ॥

टीका—२ रे स्थानमें रवि अथवा राहु मंगल शनि केतु इनमेंसे कोईभी क्रूरग्रह होय तो तीनमासमें मृत्यु और वित्तनाश होय यह मुनीश्वरोंने सत्यवाक्य कहाहै ॥

तृतीयस्थानकेफल ॥ स्थानेतृतीये गुरुभार्गवौच सोमस्यसूनुश्च निशापतिश्च ॥ करोतिकार्यं सफलंचसर्वं पक्षद्वयेनापिदिनत्रयेण ॥

टीका—तृतीयस्थानमें गुरु शुक्र अथवा चंद्र बुध होय तो दो पक्ष अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

चतुर्थस्थान ॥ क्रूराश्चतुर्थे गमनेयदातुनस्युश्चशेषाःशुभदा हि कार्ये ॥ तत्रापिदैवेन भवेच्चसिद्धिर्मासत्रयेणापिदशाहमध्ये ॥

टीका—क्रूरग्रह जो कहेहैं उनमें से कोई ग्रह चतुर्थस्थानमें होय उसे वर्जिके शेष ग्रह होंय वे शुभ परंतु दैवयोग करके तीन मास वा दशवें दिवसके अंतमें कार्यसिद्ध होय ॥

पंचमस्थान ।

गुरुर्भृगुश्चंद्रबुधो यदास्याच्छुभेचलग्नेतु सुतेचयुक्ता ॥
कुर्वंतिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदंतिसत्यम् ॥

टीका–गुरु शुक्र चंद्र अथवा बुध चारों ग्रह पंचमस्थानमें होय तो शुभहोय और दो मासमें इष्टकार्यसिद्धि होय ॥

षष्ठस्थान ।

जीवश्चशुक्रश्च बुधश्चषष्ठे करोतियात्रां सुफलांविलग्नात् ॥
पक्षद्वयेनापि वदंति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्चचंद्रः ॥

टीका–शुक गुरु अथवा बुधमें चारि ग्रह शुभस्थानमें होय तो यात्रा सफल और मृग नक्षत्रका चंद्रमा उस स्थानमें होय तो सकलकार्य एक मासमें सिद्धहोय ॥

सप्तमस्थान ।

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वंतियात्राविजयंनृपाणाम् ॥
सर्वेनृपास्तस्यभवंतिवश्या मासद्वयेनापिचपंचभिर्दिनैः ॥

टीका–सप्तमस्थानमें गुरु अथवा सोम बुध होंय तो यात्रामें विजय होय और सर्व राजा दो मास वा पांचदिवसमें वशीभूत होंय ॥

अष्टमस्थान ।

क्रूराश्चसर्वेयदिलग्नकाले मृत्युस्थितामृत्युकराभवंति ॥
सौम्योगुरुर्वाभृगुनंदनश्च दीर्घायुषंमृत्युकरश्चचंद्रः ॥

टीका–क्रूर कहिये शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें होंय तो मृत्युकारक और ये न होंय सौम्यग्रह होंय तो आयुष्यकी वृद्धि परंतु चंद्र होय तो मृत्युकारक जानिये ॥

नवमस्थान ।

धर्मस्थितायदिभवंतिहिपापखेटाः प्रयाणकालेचतथैवचंद्रमाः ॥
तदाजयंवैसबलेचचंद्रे मासत्रयेणापिदिनैश्चतुर्भिः ॥

टीका–नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्र होय और चंद्र सबल होय तो तीन मास व चार दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

धर्मस्थितौवायदिजीवशुक्रौ सोमस्यसूनुर्यदिलग्नकाले ॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा कार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः ॥

टीका—धर्मस्थानमें गुरु शुक्र अथवा सोम बुध ये ग्रह चर अथवा स्थिरलग्नमें स्थित होंय तो कार्यसिद्धि और लाभ होय ॥

कर्मस्थान।

कर्मस्थिताःपापखगास्तुसौम्याः कुर्वंतिकार्यंशनिवर्जिताश्च ॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा मासत्रयेणापिचचैकमासः ॥

टीका—दशमस्थानमें शनि आदिके पापग्रहोंको छोडके सौम्यग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें होंय तो उक्त तीन मासमें अथवा एकमासमें कार्यसिद्धि होय॥

लाभस्थान।

लाभस्थितौगुरुर्बुधौभृगुनंदनोवा क्रूराश्चसर्वेंशशिनैवयुक्ताः ॥
सद्यःफलातिश्चभवेद्धियात्रा पक्षैकमध्येदिवसत्रयेच ॥

टीका—एकादशस्थानमें रविको आदिले पापग्रह चंद्रसहित अथवा गुरु आदिले सौम्यग्रह होंय तो एक पक्षमें वा तीनदिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

व्ययस्थान।

सर्वैंशुभाद्द्वादशसंस्थिताश्च यात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः ॥
पापाश्चसर्वैव्ययदाभवंति यात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतम् ॥

टीका—द्वादशस्थानोंमें सर्वग्रह शुभहोंय तो विचित्र लाभहोय और पापग्रह होंय तो व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनिने कहाहै ॥

प्रस्थानरखना।

सुमुहूर्तैस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यम् ॥ श्लोक ॥ यज्ञोपवीतकंशस्त्रं मधुचस्थापयेत्फलम् ॥ विप्रादिकमतःसर्वं स्वर्णधान्यांबरादिकम् ॥

टीका—मुहूर्तके समय जो किसीकार्यवशसे आप न जासके तो प्रस्थान करना योग्यहै उसकी विधि ब्राह्मणादिक अनुसार कहतेहैं, ब्राह्मण यज्ञोपवीतका और क्षत्रिय शस्त्रका, वैश्य मधुका और शूद्र फलका प्रस्थान करे इसक्रमसे जानिये और सुवर्ण वस्त्र धान्य सबोंको युक्तहै ॥

प्रस्थानकितनेदिवसतकउपयोगी होय।

राजादशाहंपंचाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत् ॥
अंगप्रस्थानसंपूर्णं वस्तुप्रस्थानकेर्द्धकम् ॥

टीका--राजाओंको प्रस्थान करनेपर दशदिवस औरोंको पांच दिवस-तक मुहूर्त उपयोगी रहताहै परंतु वस्तुप्रस्थानमें आधा फल जानिये और अंगके प्रस्थानमें पूर्णफल जानिये ॥

प्रस्थानके स्थानकाविचार।

गेहाद्गेहांतरंगर्गः सीम्नः सीमांतरंभृगुः ॥ बाणक्षेपंभरद्वाजो व-सिष्ठोनगराद्बहिः ॥ प्रस्थानेपिकृतेनेयान्महादोषान्वितेदिने ॥

टीका—गर्गजीके मतसे दूसरे घरमें और भृगुजीके मतसे सीमाके बाहर तथा भर द्वाजके मतसे बाणकेपतनस्थानमें अर्थात् जितना तीर जाताहै और वसिष्ठके मतसे नगरके बाहर प्रस्थानकरै तिसपरभी महादोषयुक्त दिवसमें यात्रानकरे.

प्रस्थान दिवसमें वर्ज्यपदार्थ।

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडघृताश्रुदुग्धासवक्षाराभ्यंगभयासि तांबरवमिस्तैलंकटुह्युद्गमे ॥ क्षीरक्षौररतीःक्रमात्रिशरसप्ता-हंपरंतद्दिनेरोगंरुग्यातवकंसितान्यतिलकं प्रस्थानकेपीतिच ॥

टीका--कोप क्षौर स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड घृत रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्यविषयक भय श्वेतवस्त्र गमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तु प्र-स्थान दिन वर्जितहै तिनमें दूध क्षौर स्त्रीसंग ये क्रमसे ३। ५। ७ दिवस प्र-स्थान दिनसे पहिले वर्जितहैं ॥ शेष और कहीहुई वस्तु केवल प्रस्थान दिनमें वर्जितहै और श्वेतसे भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि तिलक और रोगविषयक चिंताभी प्रस्थानके दिन वर्जितहै ॥

मात्स्योक्तदुष्टशकुनकहतेहैं।

ओषध्याचनियुक्तोहि धान्यंकृष्णंतुयद्भवेत् ॥
कार्पासश्चतृणंशुष्कं शुष्कंगोमयमेवच ॥

टीका—ओषधी युक्त मनुष्य, कालाधान्य, कपास, सूखातृण अर्थात् भूसाइत्यादि वस्तु उपला ये प्रस्थानसमय आगेसे आवें तो अशुभ जानिये ॥

इंधनंचतथांगारं गुडंसर्पिस्तथाशुभम् ॥
अभ्यक्तोमलिनोमंदस्तथानग्नश्चमानवः ॥

टीका–ईंधन भस्म गुड घी दुष्टपदार्थ तेल लगानेसे मलिन मंद नग्नमनुष्य ये अशुभ जानिये ॥

मुक्तकेशोरुजार्तश्च कापायांबरधारिणः ॥
उन्मत्तःकथितोसत्वोदीनोवाथनपुंसकः ॥

टीका–खुले केशयुक्त मनुष्य रोगी गेरुआवस्त्र पहिने मनुष्य, उन्मत्त कंथायुक्त पुरुष,पापी पुरुष,दीन अथवा नपुंसक येभी अशुभ शकुन जानिये ॥

आयःपंकस्तथाचर्म केशबंधनमेवच ॥
तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादितथैवच ॥

टीका–लोहेके खंडकी चर्म केशबांधता हुआ मनुष्य, जिनके सारनिकाल लिये गयेहैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक ये भी अशुभ जानिये ॥

चांडालस्यशर्वंचैव राजबंधनपालकाः ॥
वधकाःपापकर्माणोगर्भिणीस्त्रीतथैवच ॥

टीका–चांडाल प्रेतबंधुओंके रक्षक वधकर्ता पापीपुरुष गर्भिणी स्त्री येभी अशुभ जानिये ॥

तुषंभस्मकपालास्थि भिन्नभांडानियानिच ॥ रक्तानिचैवभांडानि मृतसारंगएवच ॥ एवमादीनिचान्यानिह्यप्रशस्तानिदर्शने ॥

टीका–तुष भस्म कपाल अस्थि रीते वा फूटे बर्तन, मराहुआ सारंगपक्षी ये गमनकालमें हानिकारक हैं ॥

क्वयासितिष्ठआगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु ॥
अन्यशब्दाश्चयेनिष्टास्तेविपत्तिकराअपि ॥

टीका–कहाँ जाते हो ठहरो आओ वहाँ जानेसे तुमको क्या होगा ये तथा औरभी अनिष्टशब्द विपत्तिकारक होतेहैं ॥

ध्वजादौवायसास्थानं क्रव्यादानंविगर्हितम् ॥
स्खलनंवाहनानांच वस्त्रसंगस्तथैवच ॥

टीका–ध्वजा वा पताकाके ऊपर काक बैठे अथवा मांसका लाना और वाहनोंका गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष येभी अशुभ जानिये ॥

दुष्टशकुनदोषनिवारण ।

दुष्टेनिमित्तेप्रथमे अमंगल्यविनाशनम् ॥
केशवंपूजयेद्विद्वान्स्तवेनमधुसूदनम् ॥

टीका—यात्रासमयमें ऊपर कहेहुए अपशकुनोंमेंसे जो प्रथम अमंगल दृष्टि आवे तो नाशकारक होय इसके निवारणके लिये विष्णुकी पूजा और मधुसूदनके स्तोत्रपाठ करावे ॥

द्वितीयेचततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्गृहम् ॥
अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मंगलानितथानघ ॥

टीका—जो दूसरी वारभी अशुभ शकुन दृष्टि आवें तो घरमें प्रवेशकरे इसके बाद मंगलकारक शकुन कहतेहैं ॥

गमनकालमें उत्तम शकुन ।

प्रशस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवास्तथा ॥ पुरतःशब्दएहीति शस्यतेनतुपृष्ठतः ॥ गच्छेतिचैवपश्चाद्यः पुरस्तात्सुविगर्हितः ॥

टीका—गमन कालके शुभ शकुन कहतेहैं.बाजनेके शब्द भेरी अर्थात् नक्कारोंके शब्द और आओ यह आगेसे होय तो शुभ और पृष्ठ भागमें अशुभ और जाओ यह शब्द पीठपीछे होयतो शुभ और आगे होयतो अशुभ जानिये॥

श्वेताःपुष्पाःसुमनसःपूर्णकुंभस्तथैवच ॥
जलजाःपक्षिणश्चैव मांसंमत्स्यस्यपार्थिव ॥

टीका—बडेबडे श्वेतपुष्प पूर्ण कुंभ जलकेपक्षी मत्स्यका मांस ये शुभ जानिये

गावस्तुरंगमोनागो वृद्धएकःपशुस्त्वजा ॥
त्रिदशाःसुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः ॥

टी०-गाय,तुरंग,हस्ती,वृद्ध,एकपशु,बकरी देवता;मित्र,ब्राह्मण,जलताअग्नि.

गणिकाचमहाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्चागोमयम् ॥
रुक्मंरौप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ ॥

टीका—गणिका हरितदूर्वा गोबर सोना रूपातांबा और सर्वरत्न येशुभजानिये.

औषधानिचसर्वज्ञा यवाःसर्वार्थकास्तथा ॥
खड्गपात्रंपताकाच मृत्तिकायुधपीठकम् ॥

टीका–औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव श्वेतसरसों खड्गपात्र पताका मृत्तिका आयुध आसन ये शुभहैं ॥

राजलिंगानिसर्वाणि शवंरुदितवर्जितम् ॥
घृतंदधिपयश्चैव फलानिविविधानिच ॥

टीका–समस्त राजचिह्न रोदनरहित मृतक घृत दधि दूधनानाप्रकारके फल.

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नंद्यावर्तःसकौस्तुभः ॥
वादित्राणांशुभःशब्दो गंभीरःसुमनोहरः ॥

टीका–आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभमणिके साथ नंद्यवर्त्तमणि वाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशकहै ॥

गांधारषड्जऋषभा येगीताःसुस्वराःस्वराः ॥
वायुःसशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥

टीका–गांधार षड्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाये स्वर सुंदर मीठा पवन अथवा उष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्द्विजः ॥
अनुकूलोमृदुःस्निग्धःसुखस्पर्शःसुखावहः ॥

टीका-वर्णसंकर मनुष्य तैसेही नीच मुसलमानादिक ब्राह्मण बडेभयंकर होते हैं अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे और सुखस्पर्श मनुष्यादिक सुखकारीहोतेहैं.

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसःप्रियम् ॥
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम् ॥

टीका-हेधर्मज्ञ ! ऊपर कहेहुये शकुन शुभ जानिये और जो अपने मनको प्यारी वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम और तुष्टिकारक तथा जयदायक जानिये.

चित्तोत्सवत्वं मनसःप्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ॥
मांगल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञां ज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि ॥

टीका–यात्रासमयमें मनमें हर्ष शुभ तथा लाभकारक विजयवाद और मंगलप्राप्तिका श्रवण शुभजानो ॥

क्षेमंकरानीलकंठाः श्वोलूकखरजंबुकाः ॥
प्रस्थाने वामतःश्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाःशुभाः ॥

टीका—मयूर कुत्ता उलूकपक्षी गर्दभ, जंबुक, प्रस्थान समय वामभागी होय तो गमनमें शुभ और प्रवेश समय दक्षिणभागमें शुभ जानिये ॥

अथ शिवद्विघटीमुहूर्त्ताः ।

देव्युवाच॥श्रीशंभोप्राणनाथेश वदमेकरुणानिधे ॥ त्रिपुरस्यवधेप्रोक्ता मुहूर्तायेशुभप्रदाः ॥ भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ॥ यातुरर्थप्रदंब्रूहि करुणाकरसुन्दर ॥ ईश्वर उवाच—शृणुदेविप्रवक्ष्यामि ज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम् ॥ ज्योतिःसारस्ययत्सारं देवानामपिदुर्लभम् ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रं नयोगंकरणंतथा ॥ कुलिकंयमयोगंच नभद्रानचचंद्रमाः ॥ नशूलयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः ॥व्यतीपातेचसंक्रांतौ भद्रायामशुभेदिने ॥ शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशांतये॥ कदाचिच्चलतेमेरुःसागरश्चमहीधरः॥ सूर्यः पततिवाभूमौ वह्निर्वायातिशीतताम् ॥ निश्चलश्चभवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ॥ तत्रादौकथयिष्यामि मुहूर्तानिचषोडश ॥ गुणत्रयप्रयोगेण चलन्त्येवअहर्निशम् ॥ अथषोडशमुहूर्त्तम्॥ रौद्रंश्वेतंतथामैत्रं चार्वटंचचतुर्थकम् ॥ पंचमोजयदेवश्च षष्ठंवैरोचनंतथा ॥ तुरगादिकंसप्तमंच तथाष्टौचाऽभिजित्तथा ॥ रावणंनवमंप्रोक्तं बालवंदशमंतथा विभीषणंरुद्रसंज्ञं द्वादशंचसुनंदनम् ॥ याम्यंत्रयोदशंज्ञेयं सौम्यंज्ञेयंचतुर्दशम् ॥ भार्गवंतिथिसंज्ञंच सविताषोडशंभवेत् ॥ अथमुहूर्तकार्याणि ॥ रौद्रेरौद्रतरंकार्यं श्वेतकुंजरबंधकः ॥ स्नानदानादिकंमैत्रे चार्वटेस्तंभनं भवेत् ॥ कार्यंजयदेवसंज्ञे सर्वार्थकरमुच्यते ॥ तद्वैरोचनसंज्ञकेप्रभवति पट्टाभिषेकंक्रमात् ॥ ज्ञात्वैवंतुरदेवतानिविदिते शस्त्राधिकंसाधयेत्॥ सत्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ रावणेसाधयेद्वैरं युद्धकार्यंचबालवे॥विभीषणंशुभंकार्यं यंत्रकार्यंसुनंदने ॥ याम्ये भवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्येस-

भायानुपवेशनंस्यात् ॥ स्त्रीसेवनंभार्गवकेमुहूर्त्ते सावित्रिनाम्निप्रपठेत्सुविद्याम् ॥ अथमुहूर्त्तोदयंवारपरत्वेन ॥ उदयेरौद्रमादित्येमैत्रंसोमेप्रकीर्त्तितम् ॥ जयदेवंकुजेवारे तुरदेवंबुधे तथा ॥ रावणंचगुरौज्ञेयं भार्गवेचविभीषणम् ॥ शनौयाम्यंमुहूर्त्तंच दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ अथमुहूर्त्तागत्वेनगुणोदयम् ॥ गुरुसोमदिनेसत्वं रजश्चांगारकेभृगौ ॥ रवौमन्देबुधेचैव तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ सत्यंगौररंरजश्श्यामं तामसंकृष्णमेवच ॥ इमंवर्णंविजानीयात्सत्वादीनांयथोदितम् ॥ अथसत्वादिगुणानांफलम् ॥ सत्वेनसाधयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदाम् ॥ तमसासाधयेन्मोक्षं इतिज्ञेयंसदाबुधैः ॥ सत्वेरजसिसत्कार्यमथवा शुभमेवच ॥ तमसाछेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ अथ मुहूर्त्तागत्वेनरेखाज्ञानम् ॥ शून्यंनभःखादिभिरेववर्णैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युंतथापादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ अमृतश्चोर्द्ध्वरेखैका कालरेखात्रयंभवेत् ॥ विघ्नमावर्त्तकंतत्र शून्येशून्यमितिक्रमात् ॥ अथरेखाफलम् ॥ शून्येनैवभवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तकेभवेत् ॥ कालरेखामृत्युकरी सर्वोसिद्धिस्तथामृते ॥ धनुर्मीनेककर्कटानां घातसत्वेविनिर्दिशेत् ॥ तुलालिवृषमेषाणां घातोरजसिनिश्चितम् ॥ कन्यामिथुनसिंहानां कुंभस्यमकरस्यच ॥ घातस्तामसवेलायां विपरीतंशुभावहम् ॥ धनुःकर्कटमीनाख्या गौरवर्णः क्रमोदितः ॥ वृषेमेषेतुलायांच वृश्चिकेश्यामवर्णता ॥ मिथुनेमकरेकुंभेकन्यासिंहेचकृष्णता ॥ गौरश्चाम्रियतेसत्वे श्यामवर्णोरजोगुणे ॥ कृष्णंतामसवेलायां म्रियतेनात्रसंशयः ॥ यस्मिन्वर्षेभवेन्मासो गौणाधिकयस्तथाक्षयः ॥ मासेनगृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थसाधने ॥ माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखेश्रावणेतथा ॥ नभस्येमासवाराणां मुहूर्त्तानियथाक्रमात् ॥ रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानं शिवायैरुद्रयामले ॥ गोपनीयंप्रयत्नेन सद्यःप्रत्ययकारकम् ॥

रवौनभः केशवविघ्नराजौ गोविन्दनामानभ आखुगामी ॥ रात्रौ नृसिंहौयुगलं नभोयत्लक्ष्मीशलम्बोदररामसञ्ज्ञौ ॥

रवि	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६६		६६		ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६६		६६	

श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
ƃ	ƃ	ƃ	६६		०	[illegible]	ƃ	ƃ	ƃ	६६		६	६	ƃ	ƃ	०

सोमेहरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुतविष्णुसञ्ज्ञौ ॥ एवंनिशायांखखविष्णुशून्यंयुग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥

सोम	मे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	ƃ	ƃ	६६		६६		ƃ	ƃ	ƃ	०	६६		६६		ƃ	ƃ

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
[illegible]	०	०	ƃ	ƃ	०	६६		ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६६		६६		०

भौमेयमौमारमणोऽथयुग्मंयुग्मंहरिश्चैव गजाननश्च ॥ नक्तं च विघ्नंद्विपदोःमुकुंदपदत्रयं श्रीपतिखंनभः श्रीः ॥

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	मा	रौ	श्वे	मे	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	[illegible]	[illegible]	ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६६		६६		ƃ	ƃ	६६		६६	

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६६		[illegible]	[illegible]	ƃ	ƃ	ƃ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ƃ	ƃ	ƃ	०	०	०	०

बुधेधनुः कृष्णयमौ च शौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ॥ रात्रौसुपर्णध्वज एवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुञ्जरास्यौ ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	६६		ƃ	ƃ	[illegible]	[illegible]	ƃ	ƃ	ƃ	६६		ƃ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ƃ

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	म	र	र	त	त	रात्रौ
ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६	६	०	ƃ	ƃ	ƃ	ƃ	६	६	६	६	०

गुरोगोपिनाथस्तथाविघ्नराजोनभः केशवःकुंजरास्यस्तथैव ॥ निशायांपदंनंदजः सूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकंहरिश्च ॥ ३८ ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	८	८	६६		६६		०	८	८	८	६६		६६	

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	८	८	८	👣	👣	👣	👣	०	८	८	८	६६		८	८	०

शुक्रेकृष्णेस्याधमः खंमुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिःशून्यमेकम् ॥ नक्तंकालःकेशहाखंच युग्मंपादद्वन्द्वोवामनः खंचपादौ ॥ ३९ ॥

शुक्र	वि	तु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	८	८	👣	👣	०	८	८	८	६६		६६		८	८	८	०

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
👣	👣	८	८	८	६६		👣	👣	८	८	८	८	०	👣	👣	०

शनौपदःश्रीः खनभोनभःखं नारायणौ नाहरिखंहरिश्च ॥ रात्रौचशून्यं ग्रमयुग्ममाधवौखविघ्नराजौनृहरिश्चपादौ ॥ ४० ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	👣	८	०	०	०	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	८

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	👣	👣	८	८	८	०	६६		६६		८	८	८	👣	👣	०

तथाश्विने कार्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तयोगाः ॥ नामाक्षराणां प्रचनं प्रवृत्त्याविचारपूर्वंविबुधैर्विचिन्त्यम् ॥ ४१ ॥

सूर्येनृसिंहोद्विपदं च चापोहरिर्नभः खेपदमच्युतोंऽघ्रिः ॥ रात्रौपदंचापखमच्युतं चयुग्मंयमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ४२ ॥

रवि	रौ	श्वे	म	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	८	८	👣	👣	६६		८	८	०	०	👣	८	८	८	👣

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
👣	६६		०	८	८	८	६	६६		👣	👣	८	८	८	८	०

सोमेऽग्निचापंखनगो मुकुन्दोनभश्वयुग्मंहरिखंहरिश्व ॥ पदंनिशायांखयुगंमुरारिविनायकौविष्णुनभश्वविष्णुः ॥ ४३ ॥

सोम	मे	चा	ज	वे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	मे	श्वे	चा	ज	वे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	सोम
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	म	रात्रौ
०	🦶	६	६	०	०	ƅ	ƅ	ƅ	०	६	६	ƅ	ƅ	ƅ	ƅ	ƅ	🦶	६	६	०	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	६	६	ƅ	ƅ	०	ƅ	ƅ	०

भौमेमहेभाग्यनभोऽथ विष्णुंनभोयुगंगोपति खंगणेशः ॥ नक्तंगजेंद्रास्य खमच्युतंचयुग्मंचशून्यं नृहरिश्वयुग्मम् ॥ ४४ ॥

भौम	ज	वे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	वे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	भौम
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
०	६	६	६	६	०	ƅ	ƅ	०	६	६	ƅ	ƅ	ƅ	०	६	६	६	६	६	६	०	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	०	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	०

बुधेधनुःश्रीपतिपादयुग्मंनारायणःस्याद्गणनाथसिद्धिः॥रात्रौतुकालोहरि शून्यकालोगोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥४५॥

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वे	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वे	तु	बुध
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	६	६	ƅ	ƅ	ƅ	🦶	🦶	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	६	६	ƅ	ƅ	🦶	🦶	ƅ	ƅ	०	🦶	🦶	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	६	६	०	ƅ	०

गुरौहरिःशून्ययुगंसुरेशः श्रीविघ्नराजोगगनंतथाश्रीः ॥ निशांघ्रिदैत्यारिखकार्मुकंच पदेमुरारीखयुगंपुनःश्रीः ॥ ४६ ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वे	तु	अ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वे	तु	अ	रा	गुरु
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
•	ƅ	ƅ	•	६	६	ƅ	ƅ	ƅ	ƅ	६	६	६	६	०	०	ƅ	🦶	ƅ	ƅ	ƅ	०	६	६	🦶	🦶	ƅ	ƅ	ƅ	०	६	६	ƅ	०

नर्क्कंचयुग्मं नृहरिःखयुग्म नृसिंहयुग्मं गगनंचयुग्मम् ॥ ४७ ॥

शुक्रेऽमृतंचापमरिन्दमश्चलम्बोदरःकेशवशून्यपादम् ॥

शुक्र	नि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	ь	६	६	ь	ь	ь	ь	६	६	६	६	ь	ь	ь	०	👣

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	ь	ь	ь	०	६	६	ь	ь	ь	६	६	०	६	६	०

॥ रात्रोपदेखंपदनदसूनुगआननोगोपतिशून्यपादः ॥ ४८ ॥

शनौपदंश्रीर्नभोनकृष्णः खंश्रीपदंविष्णुनभोहरिःपदं

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	त	स
ь	👣	ь	०	०	०	ь	ь	०	👣	👣	ь	ь	ь	ь	ь	👣

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
👣	०	👣	ь	ь	ь	ь	६	६	६	६	ь	ь	ь	ь	👣	०

३ थक्रं ॥ ज्येष्ठमासेतथापाढे तथैवचमलिम्लुचे ॥ सूर्यादिवारे संशोध्यमुहूर्त्तानिक्रमादिह ॥ ४९ ॥

अर्कसूर्यंचकृष्णोयुगपदयुगलंखंहरिर्विष्णुचापं ॥ रात्रौशल्मीशयुग्मंयुगलहरियुगंयुग्मकृष्णांत्रिशून्यम् ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	स	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	०	०	ь	ь	६	६	👣	०	६	०	ь	ь	ь	ь	६	६

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	ग	वा	नि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
ь	ь	ь	६	६	६	६	ь	ь	६	६	६	६	ь	ь	०	०

सोमेचापेद्वयंनो नृहरिखयुगलंपीतवासश्च शून्यंचापद्वंद्वंनिशायामजखपदमजश्चापपद्मेशपादम् ॥ ५० ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	६	६	६	६	०	ь	ь	ь	०	६	६	ь	ь	ь	ь	०

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
६	६	६	६	ь	ь	👣	ь	👣	ь	६	६	६	६	ь	👣	०

भौमेशून्येचकृष्णोयुगगगनहरिस्त्रीणिचापानिसिद्धि नक्तंयुग्मंघ्रिशून्यंयुगलयुगपदंश्रीखचापंहरिश्च ॥

भौम	ज	वै	त	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	०	०	८	८	६	६	०	८	८	६	६	६	६	६	६	८

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स		र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	६	६	६	६	👣	८	०	६	६	८	८	०

सौम्येश्रीविघ्ननाथोथहरिगणपतिःपद्मनाभश्चपादः ॥ दोषायासिद्धियुग्महरिखगजमुखाकृष्णशून्येचकृष्णः ॥

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	८	८	८	८	👣

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुधे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	६	६	६	६	८	८	०	०	८	८	०

जीवेविष्णुश्चचापोगगनभजितखमंघ्रियुग्मनृसिंहः ॥ रात्रौनोखंमुरारिर्गगनयुगनजोविष्णुचापोंघ्रियुग्मम् ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	६	६	०	८	८	८	०	👣	👣	👣	👣	👣	८	८

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	०	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	👣	👣	०

शुक्रेयुग्मेमुरारिर्गगनयुगलजोविष्णुचापांघ्रियुग्मम् ॥ तत्रादौयुग्मगोपीपतियुगगगनंश्रीवरः खंपदश्रीः ॥

शुक्र	वि	सु	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	👣	👣

सु	वा	सौ	भा	सा	रा	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	८	६	६	०	८	८	८	८	👣	👣	८	०

मंदेश्रीयुग्मसिद्धिःखहरिहरिनभःशौरिखसिद्धिखंवा ॥ नक्तंश्रीयुग्मसिद्धिःखगयुगलहरिर्व्योमगोविन्दशून्यम् ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	०

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	अ	शनि
र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	०	६	६	८	८	०	८	८	८	०	०

अथ चौउहरा मुहूर्त श्रीमुछंदर गोरखनाथकृतयात्रानिमित्तारम्भः ॥ तृतीया त्रयोदशीका फल १ चौथ चतुर्दशीकाफल १ पंचमी पूर्णिमाका फल १ अमावास्याकेदिन गमन न करे-मूल काम अनुष्ठानकरे। कृष्ण वा शुक्लपक्षकी तिथिको फल १ जिस मासकी तिथिको जायतो अपने चित्तसे गमनकरे-चंद्रमाको बल भरणी भद्रा दिशा शूल योगिनी काल वास तिथिवात नक्षत्रघात चंद्रमाघात व्यतीपात कल्याणी संक्रांतिअनेक कुयोगके दोष नहोंगे यह गोरखनाथने कहा है जो तिथि साधिके यात्रा करेगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्यसिद्ध करिके आवेगा ॥ शुभम्

पौष	माघ	फा	चैत्र	वैशा	ज्येष्ठ	आषा	श्राव	भाद्र	आ.	कार्ति	मा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

हर	चतुर्थप्रहर	तिथि	ग	पश्चिम	उत्तर
ग्र	राजपद	१		शुभ	गमनार्थ
ोय	अतिसुख	२		विघ्न	मध्यम
ुख	निग्रहा	३		अर्थप्राप्त	धनप्राप्ति
द्ध	अतिभय	४		मंगल	धनलाभ
य	कार्यसिद्ध	५		धनागम	सुखहोय
ख	कर्जदेना	६	न	मित्रलाभ	अर्थगव
ट	सर्वसुख	७		द्रव्यलाभ	सुखप्राप्त
ख	यमघट	८		क्लेश	सौख्य
आ	सर्वसुख	९		कार्यसिद्ध	कष्ट
द्ध	सुखसेआ	१०		अर्थगवन	धनप्राप्त
वे	सुखप्राप्त	११		द्रव्यनाश	मृत्युप्रद
म	कार्यसिद्ध	१२		अशुभ	कष्टप्रद

अथगोरक्षकमतेनतिथिचक्रम् ।

फलञ्च ।

मासेशुक्लादिकेपौषे तिथिः प्रतिपदादितः ॥ द्वितीयाद्यास्तुमाघेस्युस्तृतीयाद्यास्तुफाल्गुने ॥ एवंचान्येषुमासेषु तिथ्योद्वादशसंज्ञिकाः ॥ लेख्याश्चक्रेत्रयोदश्यां संविहायतिथित्रयम् ॥ तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिकेफलम् ॥ यानेप्राच्यादिकाष्टासु वक्ष्येद्वादशधाक्रमात् ॥ सौख्यंशून्यंधनार्त्तिश्च लाभो लाभभयंधनं॥कष्टंसौख्यंकलिर्मृत्युःशून्यंप्राच्यांफलंक्रमात्॥ क्लेशोनैःस्वंव्यथासौख्यं द्रव्यार्तिर्लाभपीडनं॥सौख्यंलाभःकष्टसिद्धिर्लाभःसौख्यंतुदक्षिणे ॥ भयंनैःस्वंप्रियार्तिश्च भयद्रव्यंमृतिर्धनम् ॥ क्लेशाल्लाभोर्थसिद्धिःस्वं लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ॥ धनंमिश्रंधनंलाभः सौख्यंलाभःसुखंसुखम् ॥ कष्टंद्रव्यत्वशून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥

यथाचक्रम् ।

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भय	अर्था०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व	नैःस्व	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्ले	दुःख	प्रिया	अर्थः
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सौख्य	भय	वित्तला
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द्रव्यप्रा	धनप्रा	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भयभी	लाभः	मृत्यु	अर्थला
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभः	कष्ट	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभः	कार्य	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टांग	अर्थसि	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभः	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

अथ आनन्दादिशुभाशुभयोगाः।

सूर्येश्विभात्तुहिनरोचिषिचंद्रधिष्ण्यात्सार्पाच्चभूमितनयेथवुधेचहस्तात् ॥ मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदेवाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशःस्युरेवम् ॥ आनंदः कालदंडश्च धूम्राख्योथप्रजापतिः ॥ सौम्योध्वांक्षो ध्वजोनाम्ना श्रीवत्सोवज्रमुद्गरः ॥ छत्रंमैत्रोमानसश्च पद्माख्योलंबकस्तथा॥उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सिद्धिश्चैवशुभोमृतः॥मुसलोथगदाख्यश्च मातंगोराक्षसश्चरः ॥ स्थिरःप्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिःक्रमात् ॥ ॥ फलम्॥ ॥ आनंदेलभतेसिद्धिं कालदंडेमृतिंतथा ॥ धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापतौ॥ सौम्येचैवमहत्सौख्यं ध्वांक्षेचैवधनक्षयम् ॥ ध्वजनाम्निचसौभाग्यं श्रीवत्सेसौख्यसंपदः॥वज्रेक्षयोमुद्गरेच श्रीनाशस्तुतथैवच ॥छत्रेचराजसन्मानं मैत्रेपुष्टिर्नसंशयः ॥ मानसेचैवसौभाग्यं पद्माख्येच धनागमः ॥ लंबकेधनहानिश्च उत्पातेप्राणनाशनम् ॥ मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणेचक्लेशमादिशेत् ॥ सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिः शुभेकल्याणमेवच ॥ अमृतेराजसन्मानो मुसलेचधनक्षयः ॥गदाख्येचाक्षयाविद्यामातंगेकुलवर्द्धनम् ॥ राक्षसेतुमहत्कष्टं चरेकार्यंचसिद्ध्यति ॥ स्थिरयोगेगृहारंभो प्रवृद्धेपाणिपीडनम् ॥

योगोंके नाम		रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल.
१	आनद	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा.	शत	सिद्धि
२	कालदंट	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वा	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती	मूल	श्रव.	उत्त	असुख
४	प्रजापति	रोहि.	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.	धनि.	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा	शत	अश्वि	अधिकसो.
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्व	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रव	उ.भा.	कृत्ति	सौभाग्य
८	श्रीवृत्स	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.षा.	धनि	रेवती	रोहि	सौख्य
९	वज्र	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा.	शत	अश्वि	मृग	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीना.
११	छत्र	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रव	उ.भा.	कृत्ति.	पुन	राजसन्मा
१२	मैत्र	उत्तरा	विशा	पूर्वापा	धनि	रेवती	रोहि.	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनु	उत्तरा	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	सौभाग्य
१४	पद्माख्य	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा.	मघा	धनप्राप्ति
१५	लुंबक	स्वाती	मूल	श्रव.	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा	धनहानि
१६	उत्पात	विशा	पू.षा.	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा	उ.षा.	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	मृत्यु
१८	काणाख्य	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूळ	श्रव	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा.	स्वाती	कार्यसि.
२०	शुभ	पू.षा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	विशा	कल्याण.
२१	अमृत	उ.षा	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु.	राजसन्मा
२२	मुसल	अभि	पू.भा.	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गदाख्य	श्रव.	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा	स्वाती	मूळ	अक्षयवि०
२४	मातंग	धनि.	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.षा.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा	महाकष्ट
२६	चर	पूर्वाभा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि०	कार्यसि.
२७	स्थिर	उ.भा.	कृत्ति	पुन	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रवण	ग्रहारंभ
२८	प्रवर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा	विशा	पूर्वा.	धनि	लग्न

टीका—आनंदादियोग अट्ठाईसहैं तिनमें—एक १ योगका ७ वार और ७ नक्षत्र तिनका क्रम ऐसे जानिये रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलवारको आश्लेषा, बुधवारको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको उत्तराषाढा, शनिवारको शततारका, इन वारोंमें नक्षत्रोंका संयोग होय तो

आनंदादिक योग जानिये ऐसे अट्ठाईस योगोंका क्रम पीछे लिखाहै ॥

चरयोगः।

रवौपूषागुरौपुष्यः शनौमूलंभृगौमघा ॥ सौम्येत्राहयं विशा भौमे चंद्रेद्रांचरयोगकः॥ ॥क्रकचयोगः॥ ॥ रवौतुद्वादशी प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ॥ चंद्रेचैकादशीप्रोक्ता नवमीबुधवासरे ॥ शुक्रेचसप्तमीज्ञेया शनौचैवतुषष्ठिका ॥ गुरौचाष्टमिकाज्ञेयो योगस्तुक्रकचोबुधैः ॥ ॥ दग्धयोगः ॥ ॥ बुधेतृतीया कुजपंचमीच षष्ठ्यांगुरावष्टमीशुक्रवारे ॥ एकादशीसोमश निर्नवम्यां द्वादश्यमर्कामतिदग्धयोगः ॥ ॥ मृत्युदा ॥ ॥ रवौभौमेभवेन्नंदा भद्राजीवशशांकयोः ॥ जयाशुक्रेबुधेरिक्ता शनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ ॥ सिद्धियोगः ॥ ॥ शुक्रेनंदाबुधेभद्रा जयाभौमेप्रकीर्तिता ॥ शनौरिक्तागुरौपूर्णा सिद्धियोगाउदाहृताः ॥ ॥ उत्पातादियोगाः ॥ ॥ विशाखादिचतुष्कंतु भास्करादिक्रमेणतु ॥ उत्पातमृत्युकालाख्यसिद्धियोगाःप्रकीर्तिताः ॥ ॥ यमदंष्ट्रयोगः॥ ॥ मघाधनिष्ठासूर्येतु चंद्रेमूलविशाखके ॥ कृत्तिकाभरणीभौमे सौम्येपूषापुनर्वसुः ॥ गुरौपूषाश्विनीशुक्रे रोहिणीचानुराधिका ॥ शनौविष्णुःशतभिषक् यमदंष्ट्रःप्रकीर्तितः ॥ ॥ यमघंटः ॥ ॥ रवौमघाबुधेमूलंगुरौचे वह्निकृत्तिका ॥ भौमेचाद्राशनौहस्तः शुक्रेचैवतुरोहिणी ॥ चंद्रेविशाखायोगोऽयं यमघंटःप्रकीर्तितः ॥ ॥ मुसलवज्रयोगः॥ चंद्रेचित्राभृगौज्येष्ठा शनौचैवतुरेवती ॥ चांद्रेतुधनिष्ठोक्ता रवौतुभरणीतथा ॥ उपाश्चैवतुभौमेच गुरौचैवोत्तरातथा ॥ अयंमुसलवज्राख्ययोगोवर्ज्यःशुभेबुधैः॥ ॥अमृतसिद्धियोगः॥ आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणीच ॥ सोमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनीचामृतसिद्धियोगः ॥

टीका–चरयोगादिक त्रयोदश योग और वार सात कोठकमें लिखेहैं तिनमें जिस वारमें नक्षत्र किंवा तिथि होय सो योग उस दिन जानिये ॥ .

योगांकेनाम		रविवार	सोमवार	मंगळवा.	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	चरयोग	पूर्वाषाढा	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२	क्रकच	१२तिथि	११ तिथि	१०तिथि	९ तिथि	८ तिथि	७ तिथि	६ तिथि
३	दग्धयोग	१२तिथि	११ तिथि	५तिथि	३ तिथि	६ तिथि	८ तिथि	९ तिथि
४	मृत्युदा	१ ६ तिथि ११	२ ७ ति. १२	१ ६ तिथि ११	४ ९ तिथि १४	३ ८ तिथि १२	२ ७ तिथि १३	५ तिथि १०
५	सिद्धियो.	१ ति ०	६ ति ०	३ ८ तिथि १३	३ ८ तिथि १२	१० ५ तिथि. १५	१ ६ तिथि ११	४ ९ तिथि १४
६	उत्पात	विशाखा	पूर्वा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७	मृत्युयोग	अनुराधा	उत्तरा	शततार	अश्विनी	मृग	आश्लेषा	हस्त
८	काल	ज्येष्ठा	अनु.	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उत्तरा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती
१०	यमदंष्ट्र	मघा धनि.	मूलविशा.	कृत्ति.रो.	पु.पा.पुन.	उ.षा.अ.	रोहि.अ.	श्रव.श.
११	यमघट	मघा	विशाखा	मृग	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
१२	मुसलवज्र	भरणी	चित्रा	उ.षाढा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३	अमृतासि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

दासदासीलेनेका मुहूर्त्त।

दासचक्रम्॥नराकारंलिखेच्चक्रं सेवार्थंमृत्युसंग्रहे ॥ शीर्षेत्रीण्यर्थलाभःस्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम्॥हृदिपंचधनंधान्यं पादेषट्कंदरिद्रता॥ पृष्ठेद्वेप्राणसंदेहो नाभौवेदाःशुभावहम् ॥ गुदेद्वेभयपीडाच दक्षहस्तैकमर्थकम् ॥ एकंवामेनाशकरं भृत्यभात्स्वामिभांतकम् ॥

टीका–नराकारचक्रके अवयवस्थानोंमें स्थापितकरे शिरपे ३ नक्षत्रधरे तिसका फल अर्थलाभ,मुखमें ३ फल नाश,हृदयमें ५ फल धनधान्यवृद्धि,पावोंपर ६ फल दारिद्र,दृष्टिपर २ फल मृत्यु,नाभिमें ४ फ.शुभ,गुदापर २ फल भयपीडा, वाम हाथपर १ फल अर्थप्राप्ति नवस्थान,दाहिने हाथपर १ फल नाश होय ॥ .

दासीचक्रम्॥ दासीचक्रंप्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभांतकम्॥शी

शीर्षेत्रीणिमुखेत्रीणि स्कंधयोश्चद्वयंस्मृतम् ॥ हृदयेपंचऋक्षाणि नाभौपंचभगेकैकम् ॥ जानुद्वयेद्वयंज्ञेयं पादयोश्चत्रयंत्रयम् ॥ ॥ फलम् ॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभोमुखेहानिःप्रजायते ॥ स्कंधे चस्वामिनोमृत्युर्हृदयेपुष्टिवर्द्धनम् ॥ नाभौहानिप्रदंप्रोक्तं भगेचैवपलायनम् ॥ जानौसेवांलभेन्नित्यं पादयोस्तुधनक्षयः॥

टीका–दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामी के जन्मनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका क्रम सीसपर ३ फललाभ, मुखमें ३ फल हानि, कंधापर २ फल स्वामीकी मृत्यु, हृदयमें ५ फल पुष्टिहोय, नाभिमें ५ फल हानि, भगपर १ फल पलायन, जानुपर २ फल सेवाकरे, पदपर ६ फल धनक्षयकारक इनमें शुभफल देखिके रक्खे॥

गवादिपशुलेनेका मुहूर्त ।

गोवृषमहिषीचक्रम्॥शीर्षेत्रयंमुखेद्वेच पादेष्वष्टौविनिर्दिशेत्॥ हृदयेपंचऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौभगेकैकम् ॥ ॥ फलम्॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभो मुखेहानिःप्रजायते ॥ पादयोरर्थलाभःस्या द्धृदयेसौख्यवर्द्धनम् ॥ स्तनयोस्तुमहालाभो गुह्यस्थानेमहद्भयम्॥अर्यमादिगवांज्ञेयं महिष्यांसूर्यभान्न्यसेत् ॥ इदमेववृषेज्ञेयंविशेषःपत्सु षोडश ॥

टीका–गाय अथवा वृषभ लेना होय तो उत्तराफाल्गुनीसे दिवसनक्षत्रतक गिने उसमेंसे मस्तकपर ३ फल लाभदायक, मुखमें २ फल हानि, पदपर ८ फल अर्थलाभ, हृदयमें ५ फल सुख, स्तनमें ८ फल महालाभ, भगपर १ फल प्रजावृद्धि, गुह्यपर ४ फल भय जानिये॥ और महिषी लेनी होय तो भी इसीक्रमसे शुभाशुभ फल जानिये. परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक गिने और वृषभ लेना होय तो भी यही क्रम जानिये परंतु पदपर १६ नक्षत्र धरे शेषस्थानमें २ धरे और गायके समान शुभाशुभ फल जाने ॥

अश्व मोललेनेका मुहूर्त ।

अश्वेतुसूर्यभाचैव साभिजिद्धानिविन्यसेत् ॥ पंचस्कंधेजन्मभांतं

पृष्ठेतुदशकंन्यसेत् ॥ पुच्छेज्ञेयंद्वयंप्राज्ञैश्चतुष्पादेचतुष्टयम् ॥ उदरेपंचधिष्ण्यानि मुखेद्वेचप्रकीर्त्तिते ॥ फलम् ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्चस्त्रीनाशोरणभंगता॥ नाशश्चह्यर्थलाभश्चफलंप्रोक्तंमनीषिभिः॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रतक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे इस क्रमसे स्थानोंका फल कंधेपर ५ फल सौभाग्य, पीठपर १० फल अर्थलाभ, पूंछपर २ फल स्त्रीनाश, पैरोंपर ४ फल रणभंगता, उदरपर ५ फल नाश, मुखमें २ अर्थलाभ, ऐसे फल पंडितोंने कहे हैं ॥

हाथीमोललेनेका मुहूर्त ।

गजाकारंलिखेच्चक्रं जन्मभांतंचसूर्यभात्॥कर्णेशीर्षेद्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्रयोजयेत् ॥ शुंडायांतुद्वयंयोज्यं वेदाःपृष्ठोदरेमुखे ॥ षड्वैचतुर्षुपादेषु साभिजिद्वैन्यसेत्क्रमात्॥ ॥ फलम् ॥ ॥कर्णेचैवमहाँल्लाभो मस्तकेलाभएवच ॥ दंतेचैवभवेल्लाभो पुच्छेहानिःप्रजायते ॥ शुंडायांतुशुभंज्ञेयं पृष्ठेतुसुखसंपदः ॥ उदरेरोगसंभूतिर्मुखेतुमध्यमंस्मृतम् ॥ पादयोश्चभवेल्लाभो गजेचैवंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रथम सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक स्थापित करनेका क्रम लिखाहै, परंतु इसके स्थानों और फलों तथा नक्षत्रोंकी संख्या भिन्नहै प्रथम कानोंपर २ फल लाभ, मस्तकपर२फल लाभ, दाँतोंपर २ फल लाभ, पूँछपर २ हानि, सूंडपर २ शुभ, पीठपर ४ सुखसंपदा, पेटपर ४ रोग, मुखपर ४ मध्यम, पाँवोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥

शिबिकारोहणचक्र मुहूर्त ।

सूर्यभाद्दिनभंयावत्पंचपंचचतुर्दिशि ॥ मध्येतुसप्तदेयानिचक्रं ज्ञेयंसुखावहम्॥ ॥ फलम् ॥ पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकम् ॥ पश्चिमेकृशताचैवह्युत्तरेव्याधिसंभवः॥ मध्यमंचशुभंप्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंपरं ॥ पालकारोपणंचैतद्बालकस्यबुधोर्हितं॥

प्रथम अग्रपर५हानि, शराग्रपर५लाभ,शरमूलपर५जय,फिर संधिपर५शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग इनमेंसे शुभफल देखके धनुष धारण करावै ॥

रथचक्र ।

रथाकारंलिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदंडे रथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेचभत्रयंज्ञेयं षट्ऋक्षाण्यंतिमेऽध्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोमुखे ॥ ॥ फल ॥ ॥ शृंगेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदंडके ॥ रथाग्रेदंडअध्वानं मध्येचैवसुखंशुभम्॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभांतंक्रमेणच ॥ गर्गेणोक्तानिचक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ॥

टीका—रथके आकारचक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ॥

तिलोंकीघानीकरनेकामुहूर्त ।

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्धाणकेशुभम् ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेवच ॥ स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखोंका रसकाढनेकामुहूर्त ।

वेदद्विनेत्रभूतबाणहस्तरसाःक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीर्द्वितीयेहानिमेवच॥तृतीयेसर्वलाभंच चतुर्थेचक्षयंतथा ॥ पंचमेचभवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमिक्षुयंत्रेनियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक घानीचक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके भाग घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखेहैं ॥

प्रथम अग्रपर ५ हानि, शराग्रपर ५ लाभ, शरमूलपर ५ जय, फिर संधिपर ५ शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग इनमेंसे शुभफल देखके धनुष धारण करावे ॥

रथचक्र ।

रथाकारंलिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जानिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदंडे रथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेचभत्रयंज्ञेयं षडृक्षाण्यंतिमेऽध्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोमुखे ॥ ॥ फल ॥ ॥ शृंगेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदंडके ॥ रथाग्रेदंडअध्वानं मध्येचैवसुखंशुभम्॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभांतंक्रमेणच ॥ गर्गेणोक्तानिचक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ॥

टीका—रथके आकारचक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ॥

तिलोंकीघानीकरनेकामुहूर्त ।

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्धाणकेशुभम् ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेवच ॥ स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखोंका रसकाढनेकामुहूर्त ।

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाःक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीर्द्वितीयेहानिमेवच॥तृतीयेसर्वलाभंच चतुर्थेचक्षयंतथा ॥ पंचमेचभवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमिक्षुयंत्रेनियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक घानीचक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके भाग घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखेहैं ॥

प्रथम अग्रपर५हानि, शराग्रपर५लाभ,शरमूलपर५जय,फिर संधिपर५शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग इनमेंसे शुभफल देखके धनुष धारण करावे ॥

रथचक्र।

रथाकारंलिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जानिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिहि... णि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदंडे रथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेचभत्रयंज्ञेयं षड्क्षाण्यंतिमेऽध्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोमुखे ॥ ॥ फल ॥ ॥ शृंगेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदंडके ॥ रथाग्रेदंडअध्वानं मध्येचैवसुखंशुभम्॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभांतंक्रमेणच ॥ गर्गेणोक्तानिचक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ॥

टीका—रथके आकारचक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ॥

तिलोंकीघानीकरनेकामुहूर्त।

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्धाणकेशुभम् ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेवच ॥ स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखोंका रसकाढनेकामुहूर्त।

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाःक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीर्द्वितीयेहानिमेवच॥तृतीयेसर्वलाभंच चतुर्थेचक्षयंतथा ॥ पंचमेचभवेन्मृत्युः षष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमिक्षुयंत्रेनियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक घानीचक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके भाग घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखेहैं ॥

धाना.		ऊखोंका रस.	
६ प्रथमभाग	हानि	४ प्रथमभाग	लक्ष्मी
३ भाग	ऐश्वर्य	२ भाग	हानि
३ भाग	आरोग्य	२ भाग	सर्वलाभ
३ भाग	नाश	१ भाग	क्षय
३ भाग	द्रव्य	५ भाग	मृत्यु
३ भाग	स्वामिघात	५ भाग	शुभ
३ भाग	निर्धन	२ भाग	पीडा
३ भाग	मृत्यु	६ भाग	धनक्षय
३ भाग	सुख.इनमें जिस दिन शुभफल आवे उस दिन काढे.		

कृषिकर्मका मुहूर्त।

स्वातीब्राह्मयमृगोत्तरादितियुगे राधाचतुष्कंमघारेवत्युत्तरविष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ॥ गोकन्याझपमन्मथाश्च शुभदा वाराः कुजार्कांतरे षष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्यं द्वितीयाद्वयम् ॥

टीका–स्वाती रोहिणी मृग उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा मघा उत्तराफाल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मिथुन ये लग्न शुभहैं मंगल शनि और षष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्वणी अर्थात् १५।३० और दोनों द्वितीया इनको छोडके कृषिकर्मका आरंभ और बीजादिकोंका वपन करावे ॥

हलचक्रम्।

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपंच त्रिकंपंचत्रिकंत्रिकम् ॥
सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमशुभंचशुभंक्रमात् ॥

टीका–प्रथम हल धारण करनेका मुहूर्त सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत गिने तिनके भाग ८ तिनका क्रम प्रथम ३ फल अशुभ, द्वितीयभाग

३ शुभ, तृतीय भाग३अशुभ, चतुर्थ५ शुभ, पंचम ३ अशुभ, षष्ठ ५ शुभ, सप्तम ३ अशुभ, अष्टम २ नक्षत्र शुभ, जिस नक्षत्रके भागमें दिवसनक्षत्र आवे उस दिन धारण करे ॥

नौकाबनाने वा जलमें उतारनेका मुहूर्त।

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्रशीतोष्णरश्मिवसुजीवक भान्यमूनि ॥वारेचजीवभृगुनंदनकौप्रशस्तौ नौकादिसंघट-नवाहनमेषुकुर्यात् ॥

टीका—रेवती पुनर्वसु अश्विनी आश्लेपा शततारका अनुराधा चित्रा मृग हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु-शुक्र ये वार शुभहैं इनमें नौका बनवाना वा जलमें उतारना उत्तमहै ॥

नौकाचक्रम्।

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात्रीण्युदयेचषट् ॥ नाल्यांत्रीणिहृदित्री-णिपृष्ठभूःपार्श्वगंत्रयम् ॥ शुक्काणेत्रीणिषण्मध्ये नौकाचक्रेभसं-स्थितिः ॥ उपरिस्थंचमध्यस्थं षट्श्रेष्ठंचपरंनसत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे तीन ३ नक्षत्र लिखनेका क्रम ऊपरके भागमें ६ नालीमें ३ हृदयपर ३ पीठपर १ पार्श्व ३ शुक्कणमें ३ नौकाके मध्यभागमें ६ दीजिये तिन तिनमेंसे ऊपर और मध्यके नक्षत्र शुभ और अन्यस्थानों-के अशुभ जानिये ॥

लग्न और ग्रहबल।

त्रिषडायगतःसूर्यश्चंद्रोद्विन्यायगःशुभः ॥ कुजार्कीत्रिषडाय-स्थौ त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ द्विसुतास्ताष्टरिःफायरिपुसंस्थोबु धःस्मृतः ॥ सुखांत्यारीन्विनायत्र नौयानेशुभदःसितः ॥

टीका—नौकामें माल भरने अथवा चलानेकी लग्नका ग्रहबलज्ञान तृतीय षष्ठ एकादश इन स्थानोंमें सूर्य अथवा चंद्रमा मंगल शनि ये होंय तो शुभ और ३।६।१० इन स्थानोंको छोडकर अन्यस्थानोंमें गुरु शुभ

२।५।७।८।१२।६ इनस्थानोंमें बुध होय तो शुभ ७।१२।६। इनस्थानोंमें छोड अन्यस्थानका बुध शुभ जानिये ॥

नौकास्थानकेग्रह।

नाल्यांपापखगाःसौम्याः शुक्काणेशुभकारकाः ॥ व्यस्तामृत्युकराःक्रूराः पृष्ठकूपेंचभीतिकृत् ॥ अंतेबाह्येस्थितास्तेचह्यला-भायस्मृताबुधैः ॥ एवंविचार्यदैवज्ञो नौयानसमयंवदेत् ॥

टीका—लग्नकुंडली लिख तिसमें जो२ग्रह जिस२स्थानमें पडाहोय तिसका तैसा फल,नालीमें पापग्रह,शुभ शुक्काणपर शुभग्रह शुभ ये विपरीति होंय तो अशुभ और क्रूरग्रह पीठपर अथवा कूपपर आवे तो भयदायक और इन ग्रहोंमेंसे बाहर आवे तो लाभ होय-यह विचारकरिके ज्योतिषी बनावे.

दीपिकाचक्रं।

दीपिकायांमुखेपंच राजसन्मानलाभदः ॥ कंठेनवधनप्राप्तिर्मध्ये-ऽष्टौस्वामिमृत्युदाः ॥ दंडेपंचभवेद्राज्यमग्निऋक्षाच्चदीपिकाम् ॥

टीका—कृत्तिका नक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम मुखपर ५ लाभ राजसन्मान; कंठपर ९ धनप्राप्ति, मध्यमें ८ स्वामिमृत्यु, दंडपर ५ राज्यप्राप्ति, इसरीतिसे नक्षत्रक्रम जानिये ॥

कूपचक्र।

कूपवाप्योस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैःशुभम् ॥ रोहिणीगर्भमेतस्यत्रि-त्रिऋक्षाणिचंद्रभम् ॥ मध्येपूर्वेतथाग्नेये याम्येचैवतुनैर्ऋते॥पश्चि-मेचैववायव्यां सौम्येशूलिदिशिक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ शीघ्रं जलंनजलंमध्यमजलमजलंबहुजलंच ॥ अमृतजलंबहुक्षारं सज-लंमध्यजलंक्रमाज्ज्ञेयम् ॥ मत्स्येकुलीरेमकरे बहुजलंतथैवचार्धे वृषभकुंभयोश्च ॥ अलौचतौलौचजलाल्पतामताशेषाश्चसर्वेऽज लदाःप्रकीर्तिता ॥

टीका—नवीनकूप और वापी खोदनेका मुहूर्त रोहिणीसे वर्तमानदिवस-के नक्षत्र पर्यंतका क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियोंका चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले,वृष कुंभ इनका पद होय तो उसका आधाजल रहे, वृश्चिक तुल इनका चंद्रमा होय तो अल्पजल रहे शेषराशियोंके चंद्रमामें खोदे तो जल नहीं निकले यह बात सिद्धहै ॥

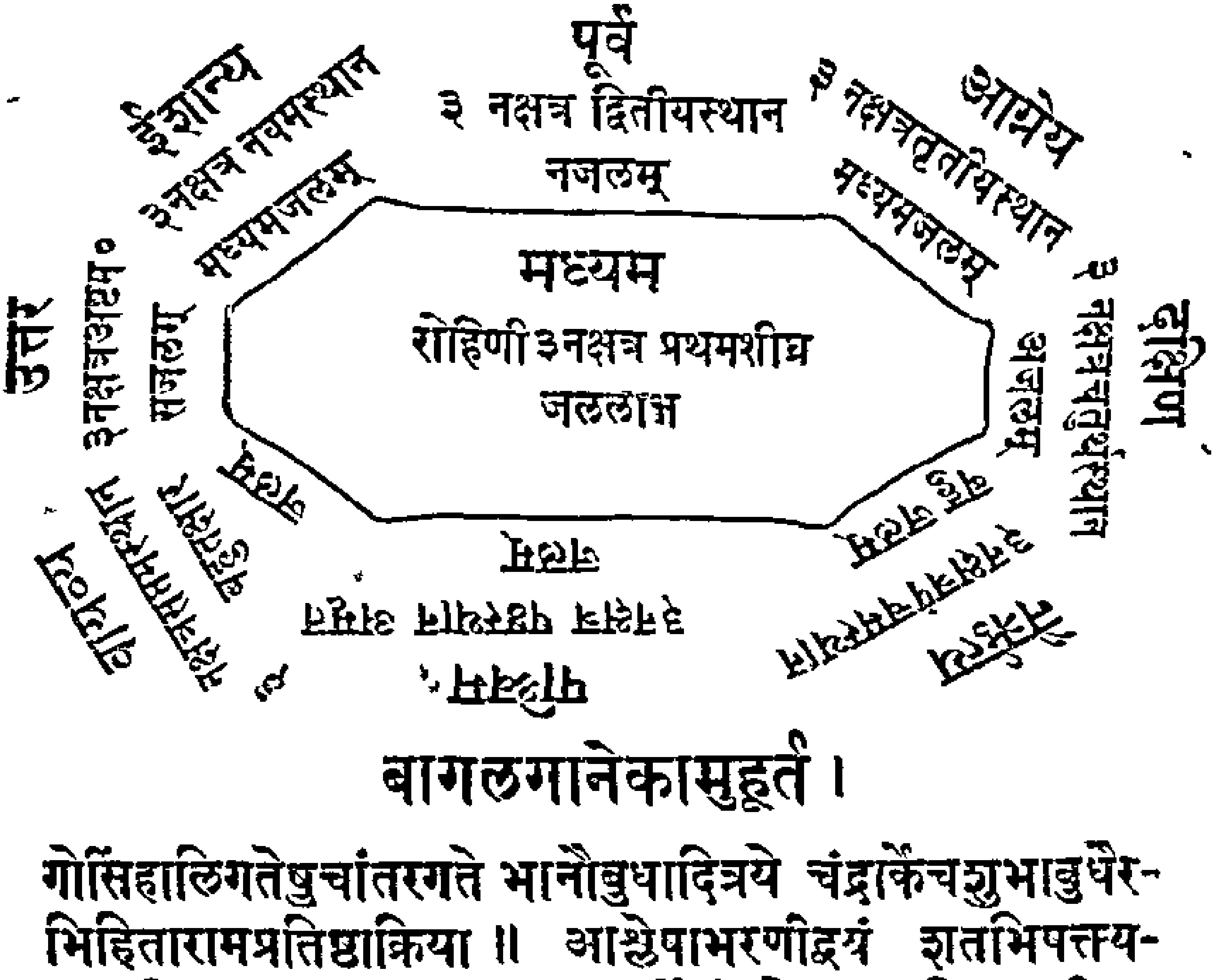

बागलगानेकामुहूर्त ।

गोसिंहालिगतेषुचांतरगते भानौबुधादित्रये चंद्रार्कैचशुभाबुधैर-भिहितारामप्रतिष्ठाक्रिया ॥ आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषत्त्य-क्त्वाविशाखांकुहूं रिक्तापक्षतिमष्टमींपरिहरेत्षष्ठीमपिद्वादशीम् ॥

टीका—उत्तरायणमें वृष अथवा सिंह वृश्चिक इनराशियोंका सूर्य और बुध गुरु शुक्र चंद्र रवि इनमें कोई वार होय ऐसा शुभदिन देखिकर नवीन बाग लगावे और आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावस्या रिक्तातिथि द्वितीया अष्टमी षष्ठी द्वादशी इन सबोंको छोडकर अन्यदिनोंमें बाग लगावे ॥

सिक्काढालनेकामुहूर्त।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषु योगेप्रशस्तेशनिचंद्रवर्ज्यम् ॥
वारेतथापूर्णजलाह्वयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ॥

टीका—मृदुध्रुव क्षिप्र चर इननक्षत्रोंमें शुभ और शनि चंद्र ये वार वर्जितहैं.

अथ प्रश्नप्रकरण।

तिथ्यादियुक्तप्रश्न।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता॥ अग्निभिस्तुहरेद्भागं शेषंसत्वंरजस्तमः॥ ॥ फल ॥ ॥सिद्धिस्तात्कालिके सत्वे रजसातुविलंबिता॥ तमसानिष्फलंकार्यं ज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः॥

टीका—जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहरमें प्रश्न करे तिसका उत्तर नीचे लिखतेहैं; उदाहरण—तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोडातो हुए १७ इसमें ३ का भागदिया तो भोग्य १५ शेष २ जिसका नाम दूसरा रज तिसका फल कार्यमें विलंब इस प्रमाणेसे ३ बचैं तो तम निष्फल, १ बचैं तो सत्व फल कार्यसिद्धि होय ॥

अपनीछायासेप्रश्न।

आत्मच्छायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता॥ वसुभिश्वहरेद्भागं शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिःपंचमसप्तके॥ द्वयोर्हानिश्चतुःशोकं षष्ठाष्टेमरणंध्रुवम् ॥

टीका—आपनी छायाको तिगुनी करके उसमें १३ मिलावे फिर आठका भागदे शेष बचै वह फल जानिये ॥

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ	हानि	सिद्धि	शोक	वृद्धि	मरण	वृद्धि	मरण

अथपंथाप्रश्न।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं तुफलमादिशेत् ॥ वर्तमानंचनक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः॥ सप्त

भिश्वहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सतभिर्भा जिततंथा ॥ फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांद्दिशुभाशुभम् ॥

टीका—तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करिके सातका भागदे शेषबचैं वह फल जानिये ॥ दूसराप्रकार—कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतक गिनके सातका भागदे ॥ तीसराप्रकार--प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाके सातका भागदे शेषबचैं वह फल जानिये ॥

फल-एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पंचमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं वदेत् ॥ शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥

टीका—१शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, २ रहै तो मार्गमें, ३ बचे तो अर्धमार्गमें, ४ बचैं तो ग्राममें आया जानिये, ५ बचैं तो मार्गसे लौट गया कहिये, ६ बचैं तो रोगग्रस्त, ७ बचैं तो शून्य अर्थात् मरणं जानिये ॥

दूसराप्रकार ।

धनसहजगतौसितामरेज्यौकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥
तनुहिबुकगताविमौचतद्वज्झटितिनृणांकुरुतोगृहप्रवेशम् ॥

टीका—द्वितीयस्थानी शुक्र तृतीयस्थानी गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होय तो परदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये.

अथकार्याकार्यप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अष्टाभिस्तुहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ ॥ ॥फल॥ ॥ पंचैकेत्वरितासिद्धिःषट् तुर्येचदिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलंबश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥

टीका-पृच्छकका मुख जिसदिशाको होय वहदिशा और प्रहर वार नक्षत्र इन सबको एकत्र करिके आठका भागदे शेष बचैं तिनमें शुभाशुभ फल जानिये.१अथवा५शेषबचैं तो शीघ्र कार्यसिद्धि जानिये,६।४ बचैं तो तीन दिनमें कार्यसिद्धि,३।७बचैं तो विलंबसे, १।८ बचैं तो कार्यनहीं होय ॥

अंकप्रश्न—अर्कांद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम्॥त्रयोदशयु तंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि ॥ स्त्रीलाभःपंचशेषेस्यात्षष्ठे बंधुविनाशनम् ॥ सप्तमेईप्सितासि द्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ॥ नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—जितने अंकका नाम होय उनको दूनाकरके फल और नामके अक्षरोंको मिलावे फिर १३जोडकरी नवका भागदे शेषबचे तिसकाफल कहिये-एकसे धनवृद्धि,२से धनक्षय,३से आरोग्य,४से व्याधि,५से स्त्रीलाभ,६से बंधुनाश,७से कार्यसिद्धि, ८से मरण, ९से राज्यप्राप्ति,यह गर्गमुनिका वचनहै ॥

नवग्रहात्मकंयंत्रं कृत्वाप्रश्नंनिरीक्षयेत ॥
फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका—नवग्रहात्मकयंत्र बनाके उसमें अवलोकनकरै जो अंक आवै उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ॥

दूसरामत—सप्तत्रयांकेक्कथयंतिवार्ता नवैकपंचत्वरितंवदंति ॥
अष्टौद्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्ववेदा घटिकात्रयंच ॥

टीका—पूर्व जो अंक कहेहैं तिनके प्रमाणसे कृत्य परंतु फल भिन्नहै शेष ७ वा ३रहैं तो वार्त्ता करना जानिये और जो ९ । १ । ५ बचैं तो शीघ्र कार्य होय २।८बचे तो कार्य नहीं होय६।४बचैं तो तीनघडीमें कार्यहो.

वारनक्षत्रयुक्तपंथाप्रश्न।

बुधेचंद्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरे श- नौचपरिपीड्यते ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशेभवेत्॥ व्याधितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तुचान्द्रभम् ॥

टीका—बुध अथवा सोमवारको प्रश्नकरे तो मार्गमें चलताहुआ जानिये और जो गुरु तथा शुक्रको प्रश्नकरै तो समीप आया जानिये रवि तथा भौमके दूरजानिये और शनिको पीडायुक्त जानिये.सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र पर्यंत लि-

भिश्वहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सप्तभिर्भा
जितंतथा ॥ फ़लमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांद्विशुभाशुभम् ॥

टीका–तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करिके सातका भा-
गदे शेषबचैं वह फल जानिये ॥ दूसराप्रकार–कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतक
गिनके सातका भागदे ॥ तीसराप्रकार--प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाके सा-
तका भागदे शेषबचैं वह फल जानिये ॥

फल-एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्द्धमा-
र्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पंचमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं
वदेत् ॥ शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥

टीका–१शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, २ रहै तो मार्गमें, ३ बचे तो
अर्धमार्गमें, ४ बचैं तो ग्राममें आया जानिये, ५ बचैं तो मार्गसे लौट गया
कहिये, ६ बचैं तो रोगग्रस्त, ७ बचैं तो शून्य अर्थात् मरणं जानिये ॥

दूसराप्रकार ।

धनसहजगतौसितामरेज्यौकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥
तनुहिबुकगताविमोचतद्वज्झटितिनृणांकुरुतोगृहप्रवेशम् ॥

टीका–द्वितीयस्थानी शुक्र तृतीयस्थानी गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र
चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होय तो परदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये.

अथकार्याकार्यप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अष्टाभिस्तुहरेद्भागं
शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ ॥ ॥फल॥ ॥ पंचैकेत्वरितासिद्धिःषट्
तुर्येचदिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलंबश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥

टीका-पृच्छकका मुख जिसदिशाको होय वहदिशा और प्रहर वार नक्षत्र
इन सबको एकत्र करिके आठका भागदे शेष बचैं तिनमें शुभाशुभ फल
जानिये.१अथवा५शेषबचैं तो शीघ्र कार्यसिद्धि जानिये,६।४ बचैं तो तीन
दिनमें कार्यसिद्धि,३।७बचैं तो विलंबसे, २।८ बचैं तो कार्यनहीं होय ॥

अंकप्रश्न—अर्कद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम्॥त्रयोदशयुतंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि ॥ स्त्रीलाभःपंचशेषेस्यात्षष्ठे बंधुविनाशनम् ॥ सप्तमेईप्सितासिद्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ॥ नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—जितने अंकका नाम होय उनको दूनाकरके फल और नामके अक्षरोंको मिलावे फिर १३जोडकरी नवका भागदे शेषबचे तिसकाफल कहिये-एकसे धनवृद्धि,२से धनक्षय,३से आरोग्य,४से व्याधि,५से स्त्रीलाभ,६से बंधुनाश,७से कार्यसिद्धि, ८से मरण, ९से राज्यप्राप्ति,यह गर्गमुनिका वचनहै ॥

नवग्रहात्मकंयंत्रं कृत्वाप्रश्नंनिरीक्षयेत ॥
फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका—नवग्रहात्मकयंत्र बनाके उसमें अवलोकनकरै जो अंक आवे उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ॥

दूसरामत—सप्तत्रयांकेकथयंतिवार्ता नवैकपंचत्वरितंवदंति ॥
अष्टौद्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्ववेदा घटिकात्रयंच ॥

टीका—पूर्व जो अंक कहेहैं तिनके प्रमाणसे कृत्य परंतु फल भिन्नहै शेष ७ वा ३रहें तो वार्ता करना जानिये और जो ९ । १ । ५ बचें तो शीघ्र कार्य होय २।८बचे तो कार्य नहीं होय६।४बचैं तो तीनघडीमें कार्यहो.

वारनक्षत्रयुक्तपंथाप्रश्न।

बुधेचंद्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरे शनौचपरिपीड्यते ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशेभवेत्॥ व्याधितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तुचान्द्रभम् ॥

टीका—बुध अथवा सोमवारको प्रश्नकरे तो मार्गमें चलताहुआ जानिये और जो गुरु तथा शुक्रको प्रश्नकरे तो समीप आया जानिये रवि तथा भौमके दूरजानिये और शनिको पीडायुक्त जानिये.सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र पर्यंत लि-

खनेका क्रम प्रथम ७ नक्षत्र पर्यंत चंद्रमा आवे तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्ष-त्रतक चंद्रमा आवे तो जीवता जानिये, तृतीय नवनक्षत्र पर्यंत चंद्र आवे तो रोगकी उत्पत्ति जानिये इस भाँति पंथाप्रश्न समुझि लीजिये ॥

नष्टवस्तुप्रश्न ।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंवह्निविमिश्रितम् ॥ पंचभिस्तुहरेद्भागंशेषं तत्वंविनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पृथिव्यांतुस्थिरंज्ञेयमप्सुव्यो-म्निनलभ्यते ॥ तेजस्तुराजसंज्ञेयं वायौशोकंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रश्न तिथिवार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाके ५का भागदे शेष १ बचैं तो पृथ्वीमें, २ बचैं जलमें, पर मिले नहीं ३ बचैं तो आकाशमें यहभी मिले नहीं, ४ बचैं तो तेजमें नह राजमें वई जानिये, ५ बचैं तो वायु इसमें शोक जानिये.

गर्भिणीप्रश्न।

तत्पृच्छलग्नेरविजीवभौमे तृतीयसप्तेनवपंचमेच ॥ गर्भः पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहेस्त्रीविबुधैःप्रणीता ॥

टीका—गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्नकहै उस लग्नमें प्रश्नकहैं. लग्नके तृतीय अथवा सप्तम नवम पंचम स्थानमें रवि भौम गुरु ये ग्रह स्थितहोंय तो पुत्र होय और इन्हीं स्थानोंमें अन्यग्रह पडे होंय तो कन्याहोय ॥

मुष्टिप्रश्न ॥ मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम्॥कर्केचपांडुरं ज्ञेयं सिंहेधूम्रंप्रकीर्तितम् ॥ कन्यायांनीलमिश्रंतु तुलायांपीतमिश्रितम् ॥ वृश्चिकेताम्रमिश्रंच चापेपीतंविनिश्चितम् ॥ नक्रेकुंभेकृष्णवर्णं मीनेपीतंवदेत्सुधीः ॥

टीका-प्रश्नकर्ताकी मुष्टिमें किसरंगकी वस्तुहै तिसके बतानेकेरीति जो मेष लग्न होय तो लाल रंगकी वस्तु मुष्टिमेंहै, और वृषहोय तो पीत, मिथुन होय तो नील, कर्क पांडुर, सिंह धूमिली, कन्या नीलमिश्रित, वृश्चिक ताम्रमिश्रित, धन पीतमिश्रित, मकर और कुंभ लोहमय अर्थात् काली, मीन पीतवर्ण ॥

लग्नसेमनचिन्तितप्रश्नकहना ।

मेषेचद्विपदांचिंता वृषेचिंताचतुष्पदः ॥ मिथुनेगर्भचिंताच

• व्यवसायस्यकर्कटे ॥ सिंहेच जीवचिंतास्यात्कन्यायांचस्त्रि-
यास्तथा ॥ तुलेचधनचिंताच व्याधिचिंताचवृश्चिके ॥ चा-
पेचधनचिंतास्यान्मकरे शत्रुचिंतनम् ॥ कुंभेस्थानस्यचिंता
स्यान्मीनेचिंताचदैविकी ॥

टीका—लग्नसे प्रश्नका उत्तर मेषलग्नमें प्रश्नकरे तो मनुष्यकी चिंता कहिये, वृषमें गाय भैंसकी, मिथुनमें गर्भकी, कर्कमें व्यापारकी, सिंहमें जीवकी, कन्यामें स्त्रीकी, तुलामें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें शत्रुकी, कुंभमें स्थानकी, मीनमें भूतपिशाचादि बाहरी बाधाकी चिंताहै ॥

संज्ञाके अनुसारलग्नोंके नाम।

धातुमूलंचजीवश्चचराद्याःस्युः क्रमादिह ॥
मेषादयःक्रमेणैवज्ञातव्याःप्रश्नकोविदैः ॥

टीका—मेषादिक्रमसे बारहलग्न तिनके नामकी दो दो संज्ञा कहतेहैं—धातुचरसे मेषलग्नकी संज्ञा, मूलस्थिर वृषकी, जीव द्विस्वभाव मिथुनकी, धातु चर कर्ककी, मूल स्थिर सिंहकी, जीव द्विस्वभाव कन्याकी, धातुचर तुलाकी, मूलस्थिर वृश्चिककी, जीव द्विस्वभाव धनकी, धातुचर मकरकी, मूलस्थिर कुंभकी, जीवद्विस्वभाव मीनकी, इस प्रकारसे बारह लग्नोंकी संज्ञाजानिये॥

अंकप्रश्नः।

अष्टोत्तरशतांकेषु प्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ॥ शेषंद्वादशभिर्भक्तं
शेषंचैवशुभाशुभं॥फलं॥एकंदुर्गासप्तकेचैविलंबश्चांगेतुयेंदिक्षुभूते
षुनाशः।रुद्रेसिद्धिर्युगुलेवृद्धिरुक्ताशीघ्रंकार्यस्य।त्रिपड्द्वादशेषु॥

टीका—पृच्छकके कहे एकसौ आठ अंकोंमेंसे एक अंकका नाम लिखावे और उसमें बारहका भागदे शेष बचें तिससे फल कहिये, १।७।९ बचें तो देरमें कामहो।८।४ १०।५ बचें तो नाश ११ सिद्धि २ वृद्धि ६।० बचें तो शीघ्र प्रश्नकार्य होय ऐसा जानिये ॥

रोगीप्रश्नः।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंप्रहरएवच ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंतु

फलमादिशेत् ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ हयाग्नौदेवताबाधा पैत्रीवैनेत्र दंतिषु ॥ षट्चतुर्षुभूतबाधा नबाधाएकपंचके ॥

टीका—तिथिवार नक्षत्र और प्रहर लग्न इन सबको एकत्र करके ८ का भागदे शेष बचें तिससे फल कहिये ७ अथवा ३ बचे तो देवताकी बाधा २।८ पितरोंकी ६।४ भूतकी १।५ बचें तो बाधा नहीं जानिये ॥

केवललग्नसे प्रश्न ।

मेषेचदेवीदोषःस्याद्वृषेदोषश्चपैतृकः ॥ मिथुनेशाकिनीदोषः कर्कटेभूतदोषकः॥सिंहेसहोदराणांवै कन्यायांकुलमातृजः ॥ तुलेदोषश्चंडिकाया नाडीदोषोहिवृश्चिके॥चापेचयक्षिणीपीडा मकरेग्रामदेवतात्॥अपुत्राद्दष्टिजःकुंभेमीनेआकाशगामिनः ॥

टीका--जिस लग्नमें रोगी प्रश्नकरे तिसका उत्तर मेष लग्नमें देवीका दोष वृषमें पितृदोष, मिथुनमें शाकिनी, कर्कमें भूत, सिंहमें भाइयोंका, कन्यामें कुलदेवताका, तुलामें चंडिकाका, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणी, मकरमें ग्रामदेवता, कुंभमें अपुत्रास्त्रीकी दृष्टिका, मीनमें आकाशगामियोंका दोष, ऐसे प्रश्न बतावे ॥

मेघका प्रश्न ।

आषाढस्यासितेपक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥ रोहिणीकालमाख्यातिसुखदुर्भिक्षलक्षणम्॥रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभाते मेघडंबरम् ॥ मध्याह्नेजलबिंदुःस्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥

टीका—आषाढ कृष्णपक्षकी दशमी किंवा एकादशी द्वादशी इन तीनों दिवसोंमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तीन फल तिथिक्रमसे जानिये और रात्रि मेघरहित होय प्रातःकाल मेघगर्जे मध्याह्नमें बूंदें पडें ऐसे लक्षण जिस संवत्सरके होंय उसमें महर्घता जानिये ॥

जललग्नम् ।

कुंभकर्कवृषोमीनमकरोवृश्चिकस्तुला ॥ जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम् ॥ लभत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥

टीका–कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये७जल लग्न हैं इनमें जो सूर्य नक्षत्र मिले तो वर्षा जानिये ॥

मेघनक्षत्रम् ।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासुच ॥
स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ॥

टीका–अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वाति इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक होय ॥

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्रम् ।

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥ मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ वायुर्नपुंसकेभेच स्त्रीणांभेचाभ्र दर्शनम् ॥ स्त्रीणांपुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥

टीका–आर्द्रा आदि स्वातिपर्यंत १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञकहैं और विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक मूल आदि मृगपर्यंत १४ पुरुष नक्षत्रहैं. नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवे तो वायु चले और दोनों स्त्रीनक्षत्र आवे तो मेघदर्शन होय जो स्त्री पुरुषनक्षत्रोंका योग होय तो निश्चयकरके वर्षा होय ॥

सूर्य तथा चंद्रनक्षत्रकी संज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादेः पंचकंतथा ॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम्॥उक्तानिशशिभान्यत्र प्रोच्यंतेसूर्यभान्यथ ॥ रोहिणीचमृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिकातथा ॥ सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चं द्रेचंद्रेनवर्षति ॥ चांद्रसूर्येभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥

टीका–अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्रनक्षत्र और शेष सूर्य नक्षत्र जानिये ॥ फल ॥ दिवसनक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों जो सूर्यके होंय तो वायु चले और जो दोनों चंद्रके होंय तो मेघ नहीं वर्षे जो चंद्र और सूर्य नक्षत्रका योग होय तो वर्षा अच्छी होय ॥

धान्यप्रश्नः ।

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौ मित्राणिसर्वेशुभं गोरायेप्रियभुग्धना-
निलपरे लाभारिनाशादिकम् ॥ रप्याङ्गिकलहःश्रियश्चबलगे स्था-
नानिमित्रागमौ रोरोरांविपदःपरांगकलहःखालेयशोकावहः ॥

टीका—सत्ताईस दानें धान्यके लेकर एक राशिकरे उसी राशिमेंसे एक चुटकी भर निकालकर रक्खे ऐसे तीन राशिकरे उसमेंसे तीन २दानें जूदे जूदे करता जाय जो तीन राशियोंमेंसे एक२बचे तो जय और लाभ होय १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये ऐसी तीन राशियेंसे पृथक् २ एक २ बचे उसका फल जय और लाभ ॥

२ कु	क०	१ गी	क०	३ रौ	क०	२	मितादिसर्वसिद्धि
३ गो	क०	३ रा	२ ये	१	प्रियभोग धनप्राप्ति		
४ ल	३ प	१ रे	३	लाभ और पुत्रका नाश			
५ र	२ प	१ ग	३	कलह होय			
६ ब	३ ल	३ ग	३	लक्ष्मी और मित्रलाभ			
७ रो	२ रो	२ रां	२	विपत्तिप्राप्ति			
८ प	१ रां	२ ग	३	कलह			
९ खा	२ ला	३ य	१	शोकप्राप्ति--ऐसे ३ वारकरनेसे बुरा			

भला फल जानिये और राशिकी गणनाके समय तीन २ दानें गिने ॥

पशुके विषयमें प्रश्न ।

द्युमणिभान्नवभेषुवनेपशुस्तदनुषट्सुचकर्णपथेस्थितम् ॥
अचलभेपुगतं गृहमागतं द्वयगतंगतमेव मृतंत्रिषु ॥

टीका—जो सूर्यनक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्र नवम होय तो पशु वनमें जानिये और जो६नक्षत्रांत आवे तो मार्गमें जानिये तिसके आगे७नक्षत्रांत आवे तो घरमें आया जानिये तिस पीछे २ नक्षत्रांत आवे तो आवनहार नहीं तिसके आगे ३ नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा जानिये ॥

राज्यभंगादियोगः।

यदिभवतिकदाचिच्चाश्विनीनष्टचंद्रा शशिरविकुजवारे स्वातिरायुष्मयोगे॥गगनचरपशूनां जंगमस्थावराणां नृपतिजनविनाशो राज्यभंगस्तुचोक्तः॥

टीका–कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वारकरि युक्त अमावास्याको अश्विनी किंवा स्वातिनक्षत्र और आयुष्मान् योग होय जो ऐसा योग पडे तो पक्षी पशु जंगम स्थावर व राजा व जन इनका नाश और राज्यभंग होय॥

सूर्यतथाचंद्रकेपरिवेषअर्थात्मंडलका फल।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामेचपीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामे चवृष्टिः॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे॥

टीका–रविका अथवा चंद्रका मंडल जो प्रथम प्रहरमें होय तो जनोंको पीडा होय, दूसरे प्रहरमें होय तो मेघ वर्षे, तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश, चौथे प्रहरमें राज्यभंग होय॥

उत्पातोंका फल।

रात्रौधनुर्दिनेउल्का तारांचैवदिनेतथा॥ रात्रौतुधूमकेतुश्च भूकंपश्चतथैवहि॥ एतानिदुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणिच॥

टीका–रात्रिमें धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतुका उदय तथा भूमिकंप ऐसे दुष्टचिह्न लक्षित होंय तो देशक्षयकारक जानिये॥

अथ छायाबलयात्रा।

शनौसप्तपादः कवौषोडशस्यू रवौभौमके रुद्रसंख्याविधेया॥
निशेशेवधेष्टेशसंख्याविधेया गुरावाग्निभूसंख्यछायाविधेया॥
नलग्नानपालं व्यतीपातघातं नभद्रानसंक्रांतिशूलंतथाच॥
नरोयातिसंशोध्य छायायदाहि तदाकार्य्यसिद्धिस्त्वर्श्यंभ

वेत्र ॥ स्वच्छायात्रिगुणाविश्वयुताभाज्याष्टभिःफलम् ॥ ला-
भो१र्थ२हानी३रुग्४वृद्धि५र्भयं६सिद्धि७र्मृतिः ८ क्रमात् ॥

टीका—शनिवारको ७ पाँवकी छाया शुक्रवारको १६ पांवकी छाया रविवार तथा मंगलमें ११ पांवकी छाया विधान करीहै, चंद्रवारको ८ और बुधवारको ११ संख्या विधान करी है—गुरुको १३ संख्या विधान करी है—इस छाया बलमें जो यात्रा करते हैं उनको लत्तापात व्यतीपात भद्राघात संक्रांति दिशाशूल नहीं फल देता अपनी छायाके साधन करनेमें मनुष्यको कार्यसिद्धि अवश्य होतीहै, पुनः अपनी छायाको तीन गुणा कर फिर १३ युक्त करे, ८ का भाग देय जो १ बचें तो लाभ, २ बचें तो लक्ष्मीप्राप्ति. ३ बचें तो हानि, ४ बँचे तो रोग, ५ बचें तो वृद्धि, ६ बचें तो भय, ७ बचें तो सिद्धि ८ बचें तो मृत्यु इस क्रम करनेसे यथावत् फल देती है सो यात्रामें विचार लेना चाहिये ॥

अथ वायुपरीक्षाकथनम् ।

आषाढमासस्यचपौर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवातिवातः ॥
पूर्वस्तदासस्ययुताचमेदिनी नन्दंतिलोकाजलदायिनोघनाः॥

टीका—जो आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त कालमें पवन पूर्व दिशाकी होय तो पृथ्वी धान्य युक्त लोक सुखी मेघकी वृष्टि करे ऐसा फल जानना॥

कृशानुवातेमरणंप्रजानामन्नस्यनाशःखलुवृष्टिनाशः ॥
याम्येमहीसस्यविवर्जितास्यात्परस्परंयांतिनृपाविनाशम् ॥

टीका—अग्निकोणकी वायु चाले तो प्रजाका मरण अन्नका नाश और वर्षाका नाश होय, और दक्षिणदिशाकी पवन होय तो पृथ्वी धान्य करके वर्जित होय और परस्पर राजोंमें विरुद्ध होय यह फल दक्षिणदिशाका जानना.

नैशाचरोवारियदात्रवातो नवारिदोषक्षतिकारिभूरि ॥
तदामहीसस्यविवर्जितास्यात्क्रंदंतिलोकाःक्षुधयाप्रपीडिताः ॥

टीका—नैर्ऋत्य कोणकी जो पवन होय तो थोडी वर्षा होय और पृथ्वी धान्य करके वर्जित क्षुधा करिके रोगी और पीडित लोग रुदन करें ॥

आषाढमासेयदिपौर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवारुणेऽनिलः ॥
प्रवातिनित्यंसुखिनःप्रजाःस्युर्जलान्नयुक्तावसुधातदास्यात् ॥

टीका—आषाढ मासमें पूर्णिमाके दिन जो सूर्यास्त कालमें पश्चिम दिशाकी पवन होय तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न करके पूरित होय ऐसा पश्चिमकी दिशाका फल जानना ॥

वायव्यवातेजलदागमःस्यादन्नस्यनाशःपवनोद्धताद्यौः ॥
सौम्येनिलेधान्यजलाकुलाधरानंदंतिलोकाभयदुःखवर्जिताः ॥

टीका—जो वायव्य कोणकी पवन होय तो जलका आगमन अन्नका नाश और पृथ्वी प्रचंडपवन करके युक्त और उत्तर दिशाकी पवन होय तो श्रेष्ठ वर्षा और धनधान्य करके पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःख करके वर्जित ऐसा कहना चाहिये ॥

ईशानवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धराचगावोबहुदुग्धसंयुताः ॥
भवंतिवृक्षाःफलपुष्पदायिनोवातेभिनंदंतिनृपाःपरस्परम् ॥

टीका—जो ईशान कोणकी पवन चले तो पृथ्वी जलसे पूरित होय और गौदुग्ध करिके पूरित और वृक्ष फल पुष्पोंसे युक्त और राजाओंकी परस्पर मैत्री ऐसा जानना चाहिये ॥

वर्षनिकालनेका प्रकार।

गताब्दवृंदैर्भुविखाभ्रचंद्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैःसुभक्ता ॥
त्रिधाफलंवारघटीपलानि स्वजन्मवारादियुतानिइष्टम् ॥

टीका—वर्तमान संवत्में जन्म संवत् हीन करे तो गताब्द संज्ञा होगी गताब्दोंको भुवि १ ख० अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १००से गुणा किया, नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० का भाग देय ३ इसमें स्थापना करे जो फल प्राप्त होय सो वार इष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड देय और ऊर्ध्वांकमें ७ का भाग देय तो वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा. उदाहरण—वर्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४ इन्होंका अंतर २ इसको १०० मे गुणा तो २०१४ हुये और इसमें ८०० का भाग दिया तो २ शनि हुये और

शेष४१४रहे इनको६०से गुणा तो२४८४०ये हुये फिर इनमें ८००काभाग दिया तो३१मिले और शेष ४० रहे इनको ६० से गुणा तो २४०० हुये तो इनमें८००का भाग दिया तो ३ मिले इस कारण०२वार३१घटी० ३ पल सिद्ध हुये इनमें जन्मवारादि ६।४५०५ जोडे० ९।१६।०८ ऊर्द्धांक ९ में ७ के भागसे शेषांक०२।१६।०५ यह वर्षका इष्ट हुआ ॥

अथ तिथिबनानेका क्रम।

याताब्दवृंदोगुणवेदरामै३४३र्निघ्नःकुरामै३१र्विहृतोदिनाद्यम् ॥
यत्तैःसहोत्थैःसहितंखरामै३०र्भक्तंचशेषातिथिरत्रवर्षे ॥

टीका—गत वर्षोंको ३४३से गुणा करे पुनः ३१ का भाग देय जो अंक प्राप्ति होय सो तिथि जानना इसमें जन्मकी तिथि युक्त करे फिर३०से जो शेष रहे सो वर्षकी तिथि होगी परंतु तिथिमें१ऊनाधिक कहीं होजाती है ॥

अथ नक्षत्रलानेकाक्रम।

व्योमेन्दु१०भिःसंगुणितागताब्दाःखशून्यवेदाश्वि२४०लवैर्वि-
हीनाःजन्मर्क्षयोगैःसहिताप्रवस्था नक्षत्रयोगो भवतोभ२७तष्टौ ॥

टीका—गत वर्षोंको १० गुणा करे फिर दो जगह रक्खे और एक जगहमें २४ का भाग देय जो बल प्राप्ति हो वह दूसरे में घटादे और जन्मर्क्ष या योग जोड दे उस नक्षत्रमें२७का भाग से शेष नक्षत्र होगा ॥

अथ ग्रहचालनकथनम्।

स्वेष्टकालोयदाग्रेस्यात्पंक्तिंचशोधयेद्धनम् ॥
पंक्तिश्चैवयदाग्रेस्यादिष्टंचशोधयेदृणम् ॥

टीका—इष्टकाल पंचांगस्थ पंक्तिसे आगे होय तो पंक्तिमें कालशोधन करना तो चालनधन करना होताहै और जो पंक्ति इष्टकालसे आगे होय तो इष्टमें पंक्ति शोधन करना तो चालन ऋण होता है ॥

अथ ग्रहस्पष्टीकरणम्।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखपङ्कृता ॥
लब्धमंशाधिकंशोध्यं योज्यंस्पष्टोभवेद्ग्रहः ॥

टीका—गत दिनसे अथवा आगत दिनसे सूर्यादि ग्रहोंकी गतिको गुण देना और ६० से भाग देना लब्धि अंशादि जो आवे सो गत दिनका होय तो ग्रहमें कम करना और आगत दिनका होय तो युक्त करना इससे ग्रह स्पष्ट होता है ॥

अथ भयातभभोगबनानेकी रीति।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः ॥
भभुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाःशुद्धाःसुयुक्ताश्चभभोगसंज्ञकाः ॥

टीका—गत नक्षत्रकी घडीको ६० में शुद्ध करना और वर्षमें सूर्योदय से जो इष्ट घटी होय सो युक्त करना तो भयात होताहै.और६० में शुद्ध किया जो नक्षत्र उसमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी युक्त करना तो भभोग होताहै॥

अथ चंद्रस्पष्टक्रममाह।

स्पष्टभंभयातंभभोगोद्धृतंतत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तंद्विनिघ्नम् ॥
नवाप्तंशशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः खखाभ्राष्टवेदाभभोगेनभुक्ताः ॥

टीका—बीते हुये नक्षत्रका पिंड बांधके ६० से गुणे और भभोगका पिंड बांधके तीनवार भाग देय गत नक्षत्रको ६० से गुणे और जो भभोगके भागसे प्राप्त हुआ जो भयातहै उसे इसमें जोड देय फिर इसे दुगुणा करे और ९ का भाग देय तीनवार तो चंद्रमा अंशपूर्वक होताहै और अंशोंमें ३० का भागसे राशि करे और ४८००० में भभोगका भागदेय दोवार तो चंद्रमाकी भुक्ति स्पष्ट हो जायगी ॥

अथ लग्नसाधनम्।

समागणश्चंद्रकृशानुनिघ्नः खचंद्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः ॥
तष्टोदिनेशैःकिलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥

टीका—गताब्दको ३१ से गुण देना १० से भाग देना उसमें जन्म लग्न युक्त करना १२ से उसे वष्टित करना जो शेष बचे तो सामान्यरीति से वर्षलग्न जानना चाहिये ॥

अथ मुंथा ।

सैकागताब्दाविरताःपतंगैस्तच्छेषभावे मुथहाजनुर्भात् ॥

टीका–गताब्दमें १ युक्त करना १२ से भागदेना जो शेष रहे सो जन्मलग्नसे मुंथाका स्थान जानना चाहिये ॥

अथ पंचाधिकारि ।

मुंथेशो वर्षलग्नेशस्त्रैराशिकनायकः । दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौचंद्रर्क्षनायकः ॥ जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपंचाधिकारिणः ॥

टीका–वर्षमें पंचाधिकारी बनानेका क्रम–मुंथेश १ वर्षलग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिनमें वर्षप्रवेश होय तो सूर्यके राशिका स्वामी रात्रिमें वर्षप्रवेश होय तो और चंद्रके राशिका स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्षमें यह पंचाधिकारी शुभाशुभ फलके लिये ग्रह अधिकार देखना जिसके दो तीन अधिकार आवें सो बलवान् जानना चाहिये ॥

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्कशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ॥
मेषाच्चतुर्णांहरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचंद्राः ॥

टीका–त्रिराशिपति होते सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिनमें मेषसे आदि लेकर कर्क राशितक चक्रसे प्रतीत होगा ॥

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू.	शु.	श.	शु.	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वामी	वृ.	चं.	बु.	चं.	वृ.	चं.	बु.	मं.	बु.	चं.	बु.	मं.
सदास्वामी	श.	मं.	वृ.	मं.	श.	चं.	वृ.	मं.	श.	मं.	वृ.	मं.

दृष्टिक्रममाह ।

पादंत्रिरुद्रे१५सदलंस्वतुर्ये२० पादत्रयंस्यान्नवपंचमेपि ॥
पश्यंतिपूर्णंसमसप्तकेच ग्रहानचान्यत्रविलोकयंति ॥

स्पष्टार्थचक्रं विलोकयंति।

१	४	०५	०४	भाव
११	१०	९	७	
१५	३०	४५	६०	कलादृष्टि

लग्नस्थमुंथाप्रकरोतिसौख्यंनृपप्रसादं विजयंरिपूणाम्। हर्षोदयं बाहुबलप्रतापं बुद्धिविलासं धनलाभमुग्रम्॥ मुंथाधनस्थानगेलाभमुग्रं करोतिमिष्टान्नसमागमंच॥ सर्वार्थसिद्धिंनिजबाहुवीर्यात्सुखोदयंमित्रसुतोदयंच॥ लोकाजयंनिजजनाश्चमहोत्थसौख्यं देहार्त्तिकीर्तिंशुभकार्यसमृद्धिदात्री॥ सत्संगतिश्वसबलातनुतेह मैत्री मुंथाचप्राक्क्रमगतानृपतिप्रसादम्॥ वित्तक्षयंरिपुजनादयशस्यवृद्धिं वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात्॥ गुप्तार्त्तिकृद्धदरुजस्यविवर्त्तिदात्री तुर्येन्थिहाविविधरोगभयानिपुंसाम्॥ प्रतापमाहात्म्यसुरार्चनंच सुबुद्धिवृद्धिर्यशसःप्रवृद्धिः॥ वित्तप्रलाभो जनताप्रसादः पुत्रातिसौख्यं सुथनेथिहायाम्॥ नृपाद्भयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजंभयंच॥ कार्यार्थहानिःकुमतीष्टवैरं षष्ठेथिहारुष्टरुजंविदध्यात्॥ सौख्यार्थनाशोवनितादिकष्टं चिंतामनोमोहमनल्परोगम्॥ क्लेशोदयं स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेथिहायाम्॥ दुष्टभयार्त्ति धनधान्यनाशो विपक्षभीतिर्व्यसनानिमोहाः॥ कांतिविनाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेथिहायाम्॥ धर्मार्थलाभं स्वजनेषुमैत्रीनृपोत्तमैःप्रीतियशःप्रवृद्धिः॥ प्रमोदभाग्योदयकार्यसिद्धिः पुण्योपगेथा प्रकरोतिसौख्यम्॥ मनोरथाप्तिस्वजनेषुसौख्यं निजेष्टमंत्री स्वजनोपकारकः॥ भूपात्प्रसादो दशमेथिहायां पुण्योदयःस्याद्विपुलंयशश्च॥ सुखार्थलाभं शुभबुद्धिवृद्धिर्मनोरथाप्तिं नृपतिप्रसादम्॥ निजेष्टसौख्यं मनसिप्रहर्षं करोतिमुंथा भवगेवशित्वम्॥ निरुद्यमत्वं

निजमित्रकष्टं दुष्टातिरुक्नृपतेर्भयंच ॥ धर्मार्थनाशो रिपु चौरभीतिः स्वाभीष्टपीडा व्ययगेंथिहायाम् ॥

अथ त्रिपताकीचक्रका प्रकार ।

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ॥
स्मृतंबुधैस्तत्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा ग्रहवर्षलग्नात् ॥

टीका—रेखा ३ टेढी ३ सीधी करे और परस्पर ईशान कोणसे रेखा का वेध करे इसको पंडितजन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्वकी मध्य रेखापर वर्ष लग्नका न्यास करना ॥

तत्र ग्रहन्यासमाह ।

न्यसेद्ध्रचक्रंच विलग्नकार्या ताराब्द संख्या विभजेन्नभोगैः ॥ शेषोन्मिते जन्मगचारराशेस्तुल्येचराशौ विलिखेच्छशांके ॥ परेचतुर्भाजितशेषतुल्येस्थानेखराशेखचरास्तुलेख्याः ॥

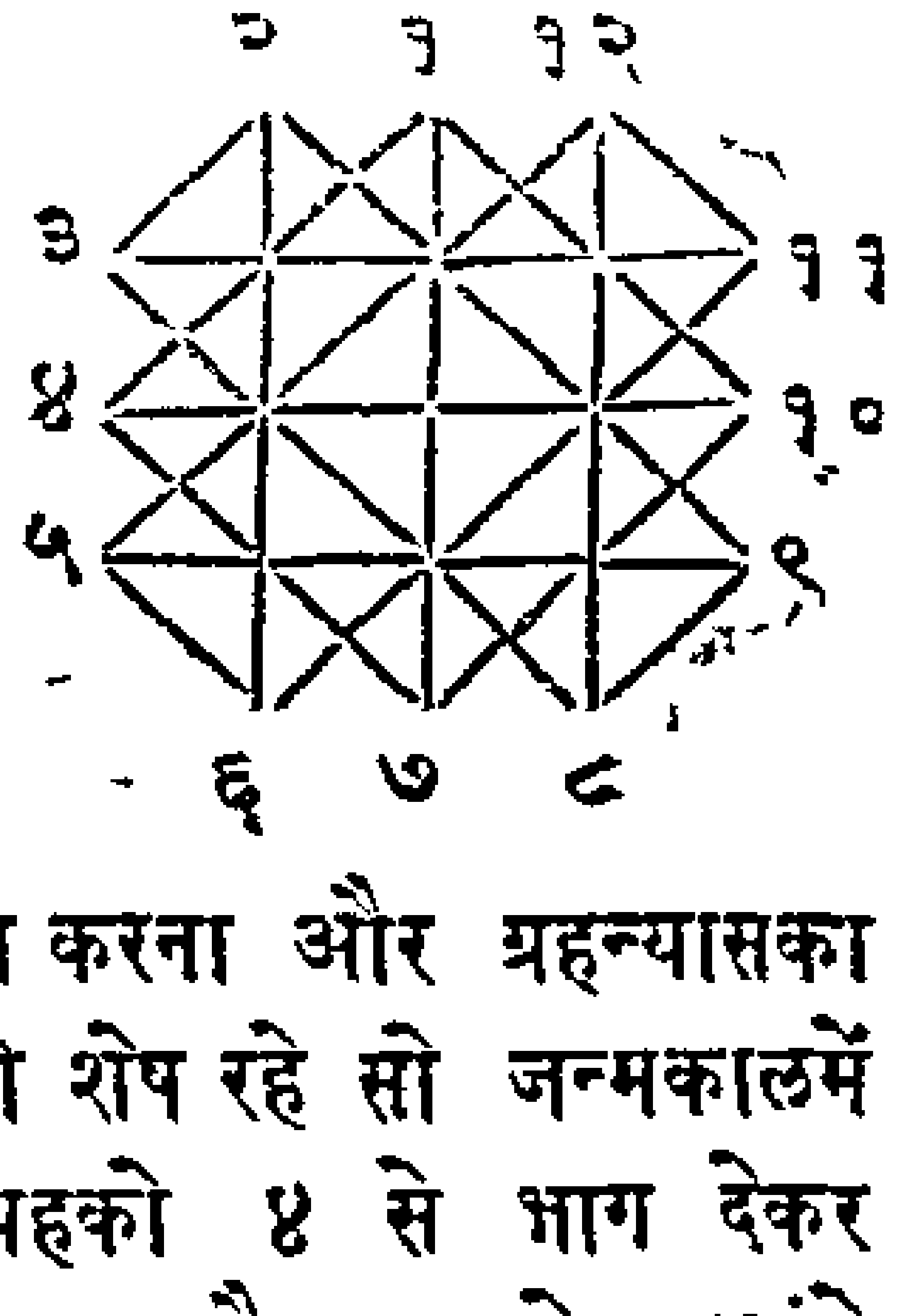

टीका—त्रिपताकी चक्रपर १२ राशि कन्या करना और ग्रहन्यासका प्रकार गतवर्षमें १ युक्त करना ८ भाग लेना जो शेष रहे सो जन्मकालमें चंद्रराशिसे शेषस्थानमें चंद्रमा लिखना और ग्रहको ४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे वहां अपने स्थानसे लिखना. और राहु केतु अपने स्थानसे पीछे लिखना तो त्रिपताका चक्र स्पष्ट होताहै ॥

वेधविचार ।

स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोर्कविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ॥
महीजविद्धेतु शरीरपीडा शुभैश्वविद्धे जयसौख्यलाभाः ॥
शुभाशुभाख्यामगवीर्यगोत्रफलंतुवेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥

टीका—त्रिपताकी चक्रमें वेध देखनेका प्रकार सर्वग्रहोंका वेध चंद्र-

भासे देखना और राहुसे चंद्रसे वेध होय तो अरिष्ट जानना, सूर्यसे वेध होय तो ताप जानना,शनिसे वेध होय तो रोग जानना, मंगलसे वेध होय तो शरीरकी पीडा जानना, और शुभ ग्रहसे वेध होय तो जयप्राप्ति सौख्य लाभ और शुभग्रहका वीर्य देखकर वेधमें फल कहना ॥

मुद्दादशा।

जन्मर्क्षसंख्या सहितागताब्दा द्व्यूनितानंदहृतावशेषात् ॥
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वं भवंतिमुद्दादशिकाक्रमोयम् ॥

टीका—जन्म नक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलावना और दोनोंकी जो संख्या होय उसमेंसे दो दो कमती करना और९से भाग देना जो अंक शेष रहें सो दशा जानना, १शेष रहे तो सूर्यकी दशा, २शेष रहे तो चंद्रमाकी दशा, ३शेष रहे तो मंगलकी दशा, ४-शेष रहें तो राहुकी दशा ५ शेष रहें तो गुरुकी दशा, ६ शेष रहै तो शनिकी दशा,७ शेष रहें तो बुधकी दशा, ८ शेष रहें तो केतुकी दशा, ० शेष रहे तो शुक्रकी दशा जानना, यह दशाका क्रम ज्योतिषशास्त्रके आचार्योंने कहाहै ॥

मुद्दादशाचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	१	०	१	१	१	१	०	०	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

मासबनानेका क्रम।

मासार्कस्यतदासन्नपंक्तस्थर्केणसहांतरम् ॥ कलिकृत्यार्कगत्याप्तदिनाद्येनयुतोनितम् ॥ तत्पंक्तिस्थंयातपूर्वं मासार्केधिकहीनके॥ तद्वाराद्येमासवेशोद्युप्रवेशःकलासमः ॥

टीका-वर्ष सूर्य मासको जो सूर्य सो वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट होय हीन वा अधिक तो उसका अंतर करे राशि छोड फिर उसका पिंड बांधि कर सूर्य पंक्तिके गतिका पिंड बांधिके भाग दे तीन दफे तो उससे वार आदि प्राप्त होयँगे, फिर जिस पंक्तिके सूर्यका अंतर किया है उसे उसी मिश्र- मान में घटा दे अथवा जोडदे, जो सूर्य वर्षकी पंक्तिके सूर्यसे अधिक होय तो जोडदे और हीन होय तो घटा देय तब मास वारादि स्पष्ट होगा ॥

अथ ग्रहचक्रप्रकरणम्।

सूर्य॥ ऋक्षसंक्रमणंयत्र द्वेवक्रेविनियोजयेत् ॥ चत्वारिदक्षिणे बाहौ त्रीणित्रीणिचपादयोः ॥ चत्वारिवामबाहौच हृदयेपंच निर्दिशेत् ॥ अक्ष्णोर्द्वयंद्वयंयोज्यं मूर्ध्निचैकैककंगुदे॥फलम् ॥ रोगोलाभस्तथाध्वाच बंधनंलाभएवच ॥ ऐश्वर्यराजपूजाच अपमृत्युरितिक्रमात् ॥ ॥चंद्र॥ चंद्रचक्रंप्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकं त्रीणिदक्षिणहस्तके॥हृदि षट्कंप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ कुक्ष्योः षट्कंचदातव्यं पादैकैकं विनिर्दिशेत्॥ ॥फलम्॥ ॥ शीर्षेलाभकरंज्ञेयं मुखेतु द्रव्यहारकम् ॥ हानिदंदक्षिणेहस्ते हृदयेच सुखावहम् ॥ वा- महस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्तथैवच॥पादयोर्हानिरोगौच जन्मधिष्ण्यादि चंद्रभम् ॥ ॥ भौम--भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ण्यादिभौमभम्॥शीर्षे षट्कं मुखेत्रीणि त्रीणि वै द- क्षिणेकरे ॥ पादयोः षट्प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ गुह्ये चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेवच ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ विजयश्चैवरो गश्च लक्ष्मीः पंथा भयंतथा ॥ मृत्युर्लाभः सुखंचापि फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥

सूर्य.			चंद्र			मंगल		
सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्रमें होय उससे जंन्म नक्षत्र पर्यंत गणनेसे जितने नक्षत्र आवें वे फल जानिये।			जन्म नक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें चंद्रहोय तिस पर्यंत गिनै जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें मंगल होंय तिनके गिननेसे जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मुखमें	३	रोगप्राप्ति	मस्तकमें	६	लाभ	शिरपर	६	विजय
दाहिनेहा	४	लाभ	मुखमें	१	द्रव्यहरण	मुखमें	३	रोगप्राप्ति
पायोंमें	६	मार्गचलन	दाहिनेहा	३	हानिकर-	दायाहाथ	३	लक्ष्मीप्रा.
बाईबाहु.	४	बंधन	हृदयमें	६	सुखप्राप्ति	पायोंमें	६	मार्गचल.
हृदयमें	५	लाभ	बायेंहा.	३	रोगप्राप्ति	बायांहाथ	३	भय
नेत्रोंमें	४	लक्ष्मीप्रा	कुक्षिमें	६	शोक	गुदामें	१	मृत्यु.
मस्तकमें	१	राजसेपूजा	दाहिनेपा.	१	हानि	नेत्रोंमें	२	मृत्यु
गुदामें	१	अपमृत्यु	बायापाय.	१	रोगप्राप्ति	हृदयमें	३	सुख

॥ बुध ॥ बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मऋक्षादि सौम्यभम् ॥ शिरसित्रीणिराज्यंस्याद्वक्रेकंधनधान्यदम् ॥ नेत्रेद्वे प्रीतिलाभौच नाभौश्रीः पंचकंतथा ॥ पादयोः षट्प्रवासश्च वामेवेदा धनंतथा ॥चत्वारि दक्षिणेहस्ते धनलाभस्तथैवच ॥ गुह्यस्थाने भद्वयंच बंधनंमरणंफलम् ॥ ॥ गुरुः॥गुरुचक्रंप्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्मऋक्षकम् ॥ दद्याच्छिरसिचत्वारि चत्वारि दक्षिणेकरे ॥ एकं कंठे मुखे पंच पादयोः षट्प्रदापयेत् ॥ करेवामे च चत्वारि त्रीणि दद्याच्चनेत्रयोः ॥ ॥ फलम् ॥ राज्यं लक्ष्मीर्धनप्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ॥ सुखंचैव क्रमेणैवं फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ॥ शुक्र॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तुजन्मभम्॥मुखेत्रीणि महालाभः शीर्षेपंच शुभप्रदाः॥ त्रिकंतु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ॥ तथैववामपादेच

त्रीणिभानितुयोजयेत् ॥ हृदयेद्वे धनंसौख्यं भाष्टकंहस्तयो-र्द्वयोः ॥ मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणि तथैवच ॥स्त्रीलाभश्च फलंप्रोक्तं भृगुपुत्रस्यसूरिभिः ॥

बुध ॥			गुरु ॥			शुक्र ॥		
जन्म नक्षत्रसे बुध जिस नक्षत्रमें होय तिस पर्यंत गिनै जिस स्थान बुध पडे उसका फलजानिये ॥			जिननक्षत्रमें होयउससे जन्मनक्षत्रतक गिन्नेसे जिसस्थानमें पडाहोय उसका फलजानिये ॥			शुक्रजिसनक्षत्रमेंहोय उससेजन्मनक्षत्रपर्यंत गणनेसे जिसस्थानमें पडाहोय उस स्थानका फलजानिये—		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	४	राज्यप्राप्त	मुखमें	३	उत्तमला॰
मुखमें	१	धन	दाहिनेहा॰	४	लक्ष्मीप्राप्त	मस्तकमें	५	[illegible]
नेत्रोंमें	२	प्रीतलाभ	कंठमें	१	धनलाभ	दाहिनेपा.	३	क्लेशहानि
नाभिमें	५	लक्ष्मी॰	मुखमें	५	पीडा	वामेंपादमें	२	क्लेशहानि
पायोंमें	६	प्रवास	पायोंमें	६	मृत्यु	हृदयमें	२	धनसौख्य
वायेंहाथ॰	४	धनलाभ	वायेंहाथ	४	सुखप्राप्ति	हाथोंमें	८	मित्रसुख
दाहिनेहा॰	४	धनलाभ	नेत्रोंमें	३	सुखप्राप्त	गुह्यमें	३	स्त्रीलाभ
गुदामें	२	बंधबमर.	०	०	०	०	०	०

॥ शनिः ॥ सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभम् ॥ मूर्ध्न्येकंच तथावक्रे करेचत्वारि दक्षिणे ॥ विन्यसेत्पादयुग्मे षट् वामबाहौ चतुष्टयम् ॥ हृदये पंचऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः॥हस्तेद्वयं गुदे चैकं मंदस्य पुरुषाकृतेः॥ ॥फलम् ॥ मूर्द्ववक्त्रस्थभेरोगो लाभो वै दक्षिणेकरे ॥स्यादध्वा चरणद्वंद्वे बंधो वामकरे नृणाम् ॥ हृदये पंचलाभेवै नेत्रप्रीतिरुदाहृता॥ पूजामस्ते परानूनं गदेमृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ ॥ राहुः॥राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभम् ॥मूर्ध्नित्रीणि तथाप्रोक्तं करे

चत्वारि दक्षिणे॥पादयोः षट्चऋक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम्॥ हृदयेत्रीणि कंठेकं मुखेद्वौ नेत्रयोर्द्वयम् ॥ गुह्येद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभादतः ॥ फलम्॥ राज्यं रिपुक्षयः पंथा मृत्युर्लाभोऽथरोगकः ॥ जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः ॥ ॥ केतुः ॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुऋक्षभम्॥ मूर्ध्निपंचजयश्चैव मुखेपंच महद्भयम् ॥ हस्तयोर्भानिचत्वारि विजयश्चजयस्तथा ॥ पादयोः षट्चसौख्यंस्याद्धृदिद्वेशोककारके ॥ कंठेचत्वारिचव्याधिर्गुह्यैकंच महद्भयम् ॥

शनि			राहु.			केतु.		
शनि जिसनक्षत्रमें होय उससें जन्मनक्षत्र पर्यंत गिने जिसस्थलमें नक्षत्रपडाहोय वह फल जानिये			जन्मनक्षत्रसे राहुनक्षत्र पर्यंत गिने जहां नक्षत्र पडाहोय वह फल जानिये ॥			जन्मक्षत्रसे केतु जिस नक्षत्रमें होय उसतक गिने जितने नक्षत्र पडे वे फल जानिये ॥		
स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	दायांहा.	४	रिपुक्षय	मुखमें	५	वडाभय
दक्षिणहा.	४	लाभ	पायोंमें	६	मार्गचलन	हाथोंमें	४	विजय
पायोंमें	६	मार्गचलन	बायेंहाथ.	४	मृत्यु	पायोंपर	६	सुख
बायांहाथ	४	बंधन	हृदयमें	३	लाभ	हृदयमें	२	शोक
हृदयमें	५	लाभ	कंठमें	१	रोग	कंठमें	४	व्याधि
नेत्रोंमें	४	प्रीतिला.	मुखमें	२	जय	गुह्यपर	१	वडाभय
मस्तकमें	१	पूजा	नेत्रोंमें	३	सौख्य	०	०	०
गुदामें	१	मृत्यु	गुदामें	२	कष्ट	०	०	०

जन्मनक्षत्रकहाँपडाहै तिसका ज्ञान।

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं च रविभादेकैकभं स्कंधयोरेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पंचोदरे ॥ नाभौ गुह्यतलेच जानु-

युगले चैकैकमृक्षं क्षिपेज्जंतोः केचिदितिब्रुवंतिगणकाः शेषाणिपादद्वये ॥ अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनं देशांतरंजानुभे गुह्येस्यात्परदारलंभनमथो नाभौचसौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यंहृदि चौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलं वैमुखे मिष्टान्नंचलभेच्च मानवगणो राज्यं स्थिरंमूर्द्धनि ॥

टीका—केवल मनुष्यचक्र सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक देखनेका क्रम प्रथम ३ नक्षत्र मस्तकपर फल राज्यप्राप्ति, मुखपर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्न-भोजन, स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजापर २ नक्षत्र फल बल, हाथके तरवेपर २ नक्षत्र फल चोर, हृदयपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभिपर १ नक्षत्र फल सुख, गुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसे लंपट, जानुपर २ नक्षत्र फल देशवास, पादपर ६ नक्षत्र फल थोडा आयुष्य, ऐसा जन्मनक्षत्रसे स्थानविचार करना ॥

लग्नशुद्धिपंचकदेखना।

गततिथियुतलग्नं नंदहृच्छेषकंच वसुयमयुगषट्के क्षोणिसंख्या क्रमेण ॥ रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपंचकंस्याद्व्रतगृहनृप मार्गोद्वाहके वर्जनीयम् ॥

टीका—गततिथिको लेकर उसमें लग्न मिलावे और नवका भागदे शेष बचें तिसका फल जानिये, ८ बचें तो रोगपंचक वे यज्ञोपवीतमें वर्जित, २ बचें तो अग्निपंचक वे गृहारंभमें वर्जित, ४ बचें तो राज्यपंचक ये और ६ बचें चौरपंचक ये दोनों पंचक गमनलग्नमें वर्जित हैं, १ बचें तो मृत्युपंचक ये विवाहमें वर्जित, इनसे अधिक जो शेषांक बचे तो निष्पंचक जाने ये सर्वकार्यमें उक्तहैं ॥

वारोंमें पंचकवर्जित।

रवौरोगं कुजेवह्निं सोमेतुनृपपंचकम् ॥
बुधेचौरं शनौमृत्युं पंचकानितुवर्जयेत् ॥

टीका-रविवारमें रोगपंचक, मंगलमें अग्निपंचक, सोमवारमें राजपंचक बुधवारको चौरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक, ऐसे ये पंचक इनवारोंमें वर्जित जानिये ॥

दिनमान रात्रिमान।

अयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशांकयुताः ॥
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका कर्कादिनिशा मकरादिदिनम् ॥

टीका-अयन कहिये कर्क संक्रांतिसे मकरसंक्रांतितक ६ महीने तैसेही मकरसे कर्कतक ६ महीने जिस दिवसका दिनमान जानना होय तिस पर्यंत कर्क संक्रांतिसे दिन गिनके उसको ३ से गुणा करे जो अंक आवे उसमें १५३० मिलावे और ० का भागदे जो बचे वह रात्रिमान और जो मकरसंक्रांतिसे गणना करे तो दिनमान आवे यह जानिये ॥

दिन कितना चढाहै यह जाननेकी रीति।

पादप्रभा नगयुता रहिताचमेषात्षट्स्विन्दुनात्रियुगबाणशराब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजको दिनदलस्य नगाहतस्य पूर्वे गताः स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ॥

टीका-अपनी छायाको पाँवसे नापे जितने पाँव आवें उनमें ७ मिलावे और मेषसंक्रांतिसे कन्या संक्रांतिपर्यंत इन्दु कहिये एक उसमें घटावे तिसके आगे तुलासे मीनपर्यंत जो संक्रांति होय उसका क्षेपक तो घ ऐसे तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इसप्रमाणसे घटावे जुदे लिखे तिस पीछे दिनदल कहिये १५ इसको ७ से गुणाकि तो हुए तुला १०५ इनमें पीछे लिखेहुए अंकको भागदे जो भागांक आवे ५ घटि जानिये परंतु दिनके पूर्वार्द्धमें दिवसकी घटी आवें और उत्तरार्द्धमें दिन शेष आवे यह जानिये ॥

रात्रि कितनीगई यह जाननेकी रीति।

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सततसंख्याविशोधितम् ॥

विंशतिघ्नंनवहृतं गतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥

टीका-रात्रिमें जो नक्षत्र होय तिसपर्यन्त सूर्यनक्षत्रसे गिनके ७ घटादे शेष रहे उसको २० से गुणा करे और ८ का भागदे जो अंक शेष रहे उतनी ही गतरात्रि कहिये ॥

अंतरंगबहिरंगनक्षत्र ।

सूर्यभादुडुगणंपुनः पुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ॥
अंतरंगबहिरंगसंज्ञकं तत्रकर्मविदधीततादृशम् ॥

टीका--सूर्यनक्षत्रसे चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इसप्रकार वर्त्तमान नक्षत्र तक वारंवार गिने तो वे क्रमसे अंतरंग बहिरंगसंज्ञक होते हैं इनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करे ॥

सूतिकास्नान ।

करेंद्रभाग्यानिलवासवांत्ये मैत्रेंदवाश्विध्रुवभेऽह्निपुंसाम् ॥ तिथावरिक्तेशुभमामनंति प्रसूतिकास्नानविधिमुनींद्राः ॥ इति श्रीशुकदेवविरचिते ज्योतिषसारे संवत्सरादिप्रकरणं समाप्तम् ॥

टीका-हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुनी स्वाति घनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्विनी और ध्रुवनक्षत्र इनमेंसे कोई नक्षत्र जिसदिन होय उस दिन सूतिकास्नान शुभ कहाहै, परंतु रिक्तातिथि वर्जित है यह मुनींद्रोंने कहाहै ॥

इति पं०केशवप्रसादविरचितज्योतिषसारभाषा समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई,

विक्रय्यग्रन्थ.

नाम.			रु० आ०
लीलावती सान्वय भाषाटीका अत्युत्तम	...	...	१—८
बृहज्जातकसटीक भट्टोत्पलीटीकासमेत जिल्द...		...	१—८
बृहज्जातकमहीधरकृतभाषाटीका अत्युत्तम	...	...	१—८
वर्षदीपकपत्रीमार्ग (वर्षजन्मपत्र बनानेका)...		...	०—४
मुहूर्त्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफ् रु० १ ग्लेज		...	१—८
मुहूर्त्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका	...	...	२—८
ताजिकनीलकंठीसटीक तंत्रत्रयात्मक	...	...	१—०
ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत भाषाटीका अत्युत्तम टैपकी छपी	...	...	१—८
ज्योतिषसार भाषाटीकासहित ...	...	...	१—०
मुहूर्त्तचिंतामणिभाषाटीका महीधरकृत	...	...	१—०
मानसागरीपद्धति (जन्मपत्रबनानेमेंपरमोपयोगी)...		...	१—०
बालबोधज्योतिष	...	...	०—२
ग्रहलाघव सान्वय सोदाहरण भाषाटीकासमेत स्पष्ट उदाहरण गणिताभ्यासियोंको परमोपयोगी		...	१—४
जातकसंग्रह (फलादेश परमोपयोगी)	...	...	०—१२
चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका ...	...	...	०—४
जातकालंकार भाषाटीका ...	...	...	०—६
जातकालंकारसटीक ...	...	...	०—६
जातकाभरण	...	...	०—१२
प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका ...	...	...	०—१२
पंचपक्षी सटीक	...	...	०—४
पंचपक्षी सपरिहार भाषाटीकासमेत	...	...	०—६
लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित	...	...	०—३
मुहूर्त्तगणपति ❋	...	...	०—१२

नाम.	रु० आ०
मुहूर्त्तमार्त्तंड संस्कृतटीका भाषाटीकासहित ...	१—०
शीघ्रबोध भाषाटीका	०—६
षट्पंचाशिका भाषाटीका	०—४
भुवनदीपक सटीक ४ आ० भाषाटीका	०—८
जैमिनिसूत्र सटीक चार अध्यायका	०—६
रमलनवरत्न	०—८
बृहत्पाराशरी (होरा)	६—०
सर्वार्थचिंतामणि	०—१२
लघुजातकसटीक	०—५
लघुजातक भाषाटीका	०—८
सामुद्रिकभाषाटीका	०—४
सामुद्रिकशास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका	१—४
यवनजातक	०—२
पंचांग तिथिपत्र संवत् १९५७ का	०—१॥
पंचांग सं० १९५७ पं०महीधरकृत	०—४
पंचांग १० वर्षका (ज्योतिर्विदोंको लाभदायक) ...	१—८
हायनरत्न	१—८
अर्घप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इसमें—तेजी मंदी वस्तु देखनेका विचार है	०—४
ज्योतिषकी लावणी	०—१
शकुनवसन्तराज भाषाटीकासहित इसमें नानाप्रकारके शकुन वर्णित हैं ऐसा पूर्ण शकुनका ग्रन्थ और नहीं छपा है	३—०
रत्नद्योतभाषाटीका	०—५
लग्नचंद्रिका मूल ४ आने और भाषाटीका	०—१०

नाम.	रु० आ०
मकरंदसारिणी उदाहरणसहित	०—८
भावकुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै) ...	१—०
प्रश्नपयोनिधि	०—२
वर्षबोध (ज्योतिष)...	०—१२
सिद्धांतदैवज्ञविनोद ज्योतिष भाषा—जिसमें भूगोल और खगोल विद्या सूर्यसिद्धांतका उदाहरण और पंचांग बनानेकी पद्धति आदि महर्घ्य समर्घ्य चमत्कारी योगों सहित और धर्मशास्त्रसहित	२—०
संकेतनिधि सटीक पं०रामदत्तजीकृत इसमें संस्कृत काव्यरचना बहुत सुंदरहै और जन्मपत्र देखनेके चमत्कारी योग बडे विलक्षण और अनुभवसिद्धविद्या करके विभूषित हैं	१—०
मुकुन्दविजय चक्रों समेत	०—१२
पद्मकोष भाषाटीका (ज्योतिष)...	०—२
स्वप्नप्रकाशिका भाषाटीका	०—३
स्वप्नाध्याय भाषाटीका	०—२
परमसिद्धान्त ज्योतिष (यह ग्रन्थ ज्योतिश्चक्र के ज्ञानमें अत्यंत उपयोगी है)	२—०
विश्वकर्मप्रकाश भाषाटीका	१—८
विश्वकर्मविद्याप्रकाश [घर बनानेकी सम्पूर्ण क्रिया वर्णित हैं]	०—६
सूर्यसिद्धान्त संस्कृतटीका और भाषाटीका समेत (ज्योतिष)	२—०

नाम.	रु० आ०
मानसप्रश्नदीपिका भाषा	०—३
विवाहवृन्दावन सटीक	१—०
राजमार्तण्ड (भोजराजप्रणीत)	०—१२
ताजिकभूषण भाषाटीका(अत्युत्तम स्पष्टार्थ स०) ...	०—८
नष्टजन्माङ्गदीपिका और पंचांगदीपिका गद्यपद्य-टीका समेत (ऐसी उपयोगी कुंजीहैं जो हजारों रु० खर्चसेभी अलभ्यहैं ज्योतिषी इससे अमूल्य लाभ पावेंगे	०—४
प्रश्नवैष्णवभाषाटीका (अनेकप्रश्नोंका भली-भांति वर्णनहै)	०—१०
ग्रहगोचर (ज्योतिष)	०—२
भुवनदीपक सं० टी० भा० टी०	०—८

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना (मुंबई)